ओ३म्

[illegible]

पूर्वार्द्ध

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(मूल्य [illegible])
[illegible]

❀ ओ३म् ❀

* संगीत रत्न प्रकाश *

पूर्वार्द्ध

पाचों भाग ५

जिसमें ६८७ भजन व ग़ज़लें व लावनियाँ व ठुमरियाँ
व दादरे व होलियाँ आदि विविध विषयों पर
मशहूर २ भजन रचयिताओं के दर्ज हैं।

जिसको

मुन्शी द्वारकाप्रसाद अत्तार

बाज़ार बहादुरगंज शाहजहांपुर ने
सर्व सज्जन महाशयों के हितार्थ संग्रह किया।

प्रथम बार } सन् १६१४ { मूल्य ||=)
१२००० } { सजिल्द |||)

(3) 10 kg/m (4) 10 kg/m
6 Experiments indicate that 13 6 eV is required
to separate a hydrogen atom into a proton

❀ निवेदन ❀

प्रिय पाठकगण ! मुद्दत से मुझे मेरे कितने ही शुभचिन्तक यह लिखरहे थे कि तुम संगीतरत्नप्रकाश के पांचोंभागों के प्रत्येक विषय के भजनों को एक स्थान पर एकत्रित करके छाप दो, ऐसा कर देने से इनको जहां यह लाभ होगा कि प्रत्येक विषय के भजन एकही स्थान पर मिलेंगे ढूढ़ने में अधिक कष्ट न होगा, वहां आप को यह लाभ होगा कि जब कभी कोई भाग चुक जाता है तभी विक्री बंद होजाती है।

इन्हीं सब दिक्कतों के दूर करने के लिये मैंने संगीत-रत्न-प्रकाश के पांचों भागों के प्रत्येक विषय के भजनों को अलग २ करके छाप दिया है, जोकि आप के संमुख है, जिसे देख कर आशा है कि आप बड़े ही प्रसन्न होंगे।

इसके सिवाय कितने ही महाशयों के पत्र छठे भाग के लिये आते रहते थे जिनमें यही तक़ाज़ा रहता था कि आपने इस सिलसिले को क्यों बंद कर दिया है, उनकी सेवा में निवेदन है कि मैंने अब पांचों भागों को एकत्रित छापकर उनका नाम संगीतरत्नप्रकाश पूर्वार्द्ध पांचों भाग रख दिया है, इसके पश्चात् आगे को उत्तरार्द्ध का क्रम जारी किया है, जिस का प्रथम व द्वितीय भाग छप चुका है जिसमें (३५०) भजन हैं और मूल्य ॥) है इन्हें भी शीघ्र ही मंगाकर पूर्व के पाचों भागों की भांति अपनाइये और घर २ पहुँचा दीजिये॥

ता० १३ अप्रैल
सन् १९१४

आर्य सेवक
द्वारकाप्रसाद अत्तार
शाहजहांपुर-यू. पी.

विषय सूची ।

6 Experiments indicate that 13 6 eV is required to separate a hydrogen atom into a proton

ध्यान दीजिये:—संगीत रत्नप्रकाश उत्तरार्द्ध का प्रथम व द्वितीय भाग भी अर्थात् छठा सातवां भाग भी छप गया है शीघ्र मंगा कर देखिये। मूल्य ॥) स० ॥≈) है सातों भाग सजिल्द १।) में।

❁ सूची-पत्र ❁

संगीत-रत्न-प्रकाश पूर्वार्द्ध ।

❁ पाचों भाग ❁

संख्या टेक भजन	संख्या टेक भजन
१०८ करिये स्वीकार विनती०	२६१ क्यों करता है भाई अ०
११३ क्यों दीन बन्धु तुझ पै०	२७२ कैसा बिगड़ा ज़माने का०
१२६ कहे दश मनु महाराज०	२८१ कैसा शोक है रे भा०
१५४ क्या कीन्हा रे तन पाय०	२८२ कर लेहु सुधार फिर०
१६८ करो कुछ अब उपकार०	२६० क्या अब भी नहीं उठो०
१७५ किसे देख दिल तू हुआ०	३०० क्या करना था क्या०
१८१ कर्मों का फल पाना०	३०५ कभी हम बलन्द इ०
१८४ करले सौदा समझ सो०	३०६ कभी तेरा भारत नाम०
१६३ कभी मत भूल ईश्वर०	३१० क्या हुआ तुझ अय०
१६६ काल तोहिं ओचक में०	३२२ क्या हुआ ढङ्ग बेढङ्ग०
२०८ काहे खोवे उमरिया०	३३७ कैसी होगई है हालत०
२०६ कोई तेरे काम न आवे०	३३६ कभी हम जहां में थे०
२१६ कर लेहु प्रशंसित का०	३५२ कम उमर के व्याह ले०
२२१ क्या तन मांजतारे०	३५३ क्यों बाल विवाह रचा०
२२६ कब लेगा प्रभु का नाम०	३५४ कहो बचपन की शादी०
२३० कर मल २ कर पछता०	३६६ कैसा ग़ज़ब है आह०
२३१ करो सदा सत कर्म०	३८१ कहां तक चुप रहें या०
२३३ कोई दम का यहां है०	३८६ कह रोई विधवा बाल०
२३४ करोरे भाईयो वैदिक०	३६२ क्या २ सितम हम पर०
२४६ क़ौल वेदों का नहीं०	४११ कन्या विचारियो पै जो०
२४८ कल्याण रूप जो वाणी०	४१५ कन्या पढ़ें जासो खोलो०
२५२ करके विद्या कूंच यहां०	४१८ कौशल्या माता भई जग०
२५४ करो विद्या विस्तार जो०	४१६ कैसी शिक्षा दें माता ह०

(3) 10 ... (4) 10 ... ( )

6 Experiments indicate that 13.6 eV is required to separate a hydrogen atom into a proton

संख्या टेक भजन

संख्या टेक भजन

संख्या	टेक	भजन	संख्या	टेक	भजन
५५४ जब से छोड़ी चान०			५६२ ढूँढ हारी मेरा प्यारा०		
५७८ जग ठगने का व्यवहार०			त		
५६० जो पत्थर पै ईमान०			२ तेरा ओ३म् नाम मुझे०		
६०७ जो दुख सागर से०			११ तेरा निशां कहां है अय०		
६१२ ज्योतिष का जाल०			१५ तेरी अज अविकार०		
६३४ जिनकी धर्म पै हो कु०			१८ तेरा नूर सब में समा०		
६६८ जागो २ हो भाई विपत०			२१ तूही अज निर्विकार०		
६८१ जलसा सबको मुबा०			२३ तेरो नाम ओंकार०		
६८५ जय जगदीश हरे०			२५ तु परिपूरन नाथ ज०		
झ			६० तुम ही अब नाथ उ०		
१८५ झूठी देखी जगत की०			६१ तेरी शरन में आनन्द०		
५६१ झूठे ध्यान से जी०			७० तु ही है प्रभु नाथ ह०		
ट			७२ तु ही प्रभु अविकारी तू०		
२६५ टुक देखो तो आंख०			७६ तुम सुनो दीन के ना०		
ठ			८१ तुम हो पिता हमारे०		
६१० ठग बहुत फिरें संसार०			८३ तुम ही रक्षक हो मह०		
ड			१४६ तुम भूले जगत पिता०		
४६६ डूबे जाते हो क्यों यार०			१५२ तेरा बिन ईश्वर कोई०		
ढ			१७२ तुम चलो मित्र इस०		
२८५ ढूँढा शारे शास्त्र पुरान०			१७८ तैने प्रभु का नाम वि०		
			२०० तू क्यों करता अभिमान०		
			२६२ तुने सारी उमरिया०		

6 Experiments indicate that 13 6 eV is required to separate a hydrogen atom into a proton

संख्या	टेक	भजन

संख्या टेक भजन

संख्या टेक भजन

॥ इति ॥

प्रार्थना

ओ३म् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रन्तन्न आसुव ॥ यजु० अ० ३० । मं० ३ ॥

(हरिगीतिका)

हे सप्त भू नव खण्ड रवि शशि आदि आदि चराचरम् ।
विश्वानि देव सदेव देवम् एकमेव गुणागरम् ॥
सर्वस्य जगदाधार जाननहार व्यापक सर्वकम् ।
सवितर विधाता सर्व अन्त प्रकाशकस्य प्रकाशकम् ॥
प्रभु आप मम त्रय ताप शाप विलाप जग कारण करण ।
दुरितानि खान परासुव अथवा विथा कीजै हरण ॥
यदि सत्य भद्रम् मुक्तिपथ अंकित सुमति चित दीजिये ।
कल्याण पद अर्थात् तन्न कृपाल आसुव कीजिये ॥

अनुचर,
द्वारकाप्रसाद अत्तार.

❀ धन्यवाद ❀

महाशयवर ! परम पिता परमात्मा को धन्यवाद देने के पश्चात् आप सर्व सज्जनों को भी धन्यवाद है कि "संगीत रत्न-प्रकाश" जैसी तुच्छ पुस्तक का आपने उम्मीद से बढ़कर मान किया, यह आप सर्व महानुभावों के सहर्ष ग्रहण करने का ही कारण है कि मैं इस पुस्तक को लगभग दो लाख के आर्य-जगत् में फैला चुका हूं।

इस के पश्चात् मैं अपने परम मित्र कुं० कर्णसिंहजी कवि स्थान चहँडौली प्रान्त अलीगढ़ को धन्यवाद देता हूँ - कि जिन्हों ने मेरे ऊपर ही नहीं किन्तु समस्त आर्य्य-जगत् के ऊपर कृपा कर और महान् कष्ट उठाकर कई मास के लगातार परिश्रम से "संगीत-रत्न-प्रकाश" के पाचों भागों से उन सब दोषों को दूर कर दिया है कि जो छन्द भ्रष्टता आदि के इन पर लगाये जाते थे, यही नहीं किन्तु अधिकतर मामूली और पुराने भजनों को निकाल कर नये २ बड़े ही उत्तम २ भजन आदि को उनकी जगह दर्ज करके इस की शोभा को और भी बढ़ा दिया है।

साथ ही मैं अपने परम हितैषी बाबू श्यामसुन्दरलाल जी B. A. L L. B. वकील हाईकोर्ट मैनपुरी, तथा पूज्यवर बाबू श्यामाचरण साहब बनर्जी वकील लखनऊ को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सक्ता कि जिन्हों ने मुझे इस के कतिपय दोषों के दूर करने में सहायता दी।

विशेष धन्यवाद मैं उन समस्त कवि महाशयों को देता हूं कि जिनके अमूल्य २ भजन इस की शोभा को बढ़ा रहे हैं, और खास कर उन कवियों को जो अपने नवीन और अमूल्य भजन प्रकाशनार्थ भेजते रहते हैं, इस कृपा की मुझे उन से आगे को भी विशेष आशा है।

मैं बड़े हर्ष के साथ आपको यह भी सूचित करता हूँ कि मैंने १२ दिसम्बर सन् १९११ ई० से श्रीमहाराजाधिराज जार्ज पंचम के राजतिलक उत्सव के हर्ष में इस के पांचों भागों का मूल्य जो कि पहले |||-) था घटाकर ||=) कर दिया है।

वैदिक धर्म का सेवक—

द्वारकाप्रसाद अत्तार

शाहजहांपुर, यू. पी.

ओ३म्

संगीत-रत्न-प्रकाश पूर्वार्द्ध

॥ पांचों भाग ॥

❀ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना ❀

दादरा १

टेक—अब मैं हूँ प्रभु शरण तिहारे।

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्व१र्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥

यह तीन काल के व्यवहारों का है तू ज्ञाता।
तूही है सर्व पदारथ का करता औ हरता॥
तू सुखस्वरूप न दुःख लेशमात्र भी सहता।
तुझ ही को मेरा नमस्कार प्रेम से होता॥
तू दीनबन्धु है दीनों की नित पुकार सुनेरे। अब० १॥

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्।
दिवं यश्चक्रे मूर्द्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥

तू सर्व लोक और लोकान्तर को रचता है।
और उनके अवयवों में व्यापक हो पूर्ण रहता है॥
तेरीहि बुद्धि का इन से प्रचार होता है।
तुझी को मेरा नमस्कार नित्य होता है॥
तू करुणासिन्धु है अधमन का भी उद्धार कररे। अ० २॥

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः।
अग्निंयश्चक्रेआस्यं १ तस्मै ज्येष्ठायब्रह्मणेनमः॥

यह सूर्य चन्द्र दिये हम को नेत्र हैं तुमने।
जिन्हें यह सृष्टि के आदि में रचि दिया तुमने॥
यह सुखस्वरूप अग्नि को प्रकट किया तुमने।
सदा तुम्हीं को नमस्कार भी किया हमने॥
तू सर्व स्वामी है, सब काहि बेड़ा पार कररे। अ० ३॥

यस्य वातःप्राणापानौ चक्षुरङ्गिरसोऽभवन्।
दिशोयश्चक्रेप्रज्ञानीतस्मैज्येष्ठायब्रह्मणेनमः॥

तुम्हीं ने कर दिया वायु को प्राण और अपान।
तुम्हीं से सब किरणें होती हैं सदा निर्मान॥
तुम्हीं से होता है इन दश दिशाओं का भी विधान।
तुम्हीं को मेरा नमस्कार होवे अय निर्वान॥
किशोर भी तेरा निज नाम ओंकार भजेरे॥ अब० ४॥

भजन २

तेरा ओ३म नाम मुझे प्यारा, तू है सखा पिता माता।
सूर्य चन्द्र जल, थल, आकाश में, रहो करतार, अज-अविकार।
तूही दीखे है अपरम्पारा ॥ तेरा ओ३म्० १ ॥
जीव चराचर गुण तेरे गावें, अय दीनानाथ करके सनाथ।
मुझे कीजे दुखों से न्यारा ॥ तेरा ओ३म्० २ ॥
मैं लवलीन तुझी में रहता, दर्शन दीजे, दुख दूर कीजे।
इस दीन को तेरा सहारा ॥ तेरा ओ३म्० ३ ॥
परदेशी यन जगत् हितैषी, तव गुण गाय, सुख पाय।
चाहै भव से सदा निस्तारा ॥ तेरा ओ३म्० ४ ॥

राजगीत ३

हे सकल उत्पादकेश्वर, एक तूही सार है।
वेद सम्यक् रीति से, यह कह रहा हरबार है॥
भूल जाता एक भी, जो प्राणियों में से तुझे।
अन्त में वह दुःख की, सहता अनेकों मार है॥
पा न सकता वह कभी सुख दूसरे भी जन्म में।
मन सभी को हे महेश्वर, ठीक यह स्वीकार है॥
रँग जमाना चाहिये, तेरा हमें हृद्-भूमि में।
लाभदायक जीवनी का, और क्या व्यापार है॥
ध्यान से तुझ में समाहित, जो कि वर्णाधम रहें।
तो उन्हें है सौख्यसागर, क्या दुखद संसार है॥

ग़ज़ल ४

पितु मातु सहायक स्वामि सखा,
तुमहीं एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं,
तिनके तुमहीं रखवारे हो।
प्रतिपाल करो सगरे जग को,
अतिशय करुणा उर धारे हो।
भुलिहैं हमहीं तुमको तुमतो,
हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं,
छिनही छिन जो बिसतारे हो।
महराज ! महा महिमा तुम्हरी,
समुझै बिरले बुधवारे हो।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेम-निधि,
मन-मन्दिर के उजियारे हो।
वहि जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय "प्रताप" हरी,
केहि के अब और सहारे हो।

क़व्वाली ५

जगदीश ! जो बशर हैं एक तेरी चाहवाले।
उनकी नज़र में क्या हैं यह अज्जोजाहवाले ॥१॥

भिक्षुक हैं तेरे दरके सब अज्ज़ोजाहवाले ।
मुहताज हैं तेरे सब मुल्को सिपाहवाले ॥२॥
जाहो जलाल तो क्या मिटजाय जिस्म भी गर ।
करते नहीं हैं परवाह इस बारगाहवाले ॥३॥
दे लाख उनको कोई गर राज चक्रवर्ती ।
मंजूर कब हैं करते इस बारगाहवाले ॥४॥
मंजिल का दे पता कुछ ऐ रहनुमाय कामिल ।
रस्ता भटक रहे हैं हम सारे राहवाले ॥५॥
आकाश पृथ्वी को भी है गा नियम में बांधा ।
अद्भुत है तेरी रचना ओ मेहरमाहवाले ॥६॥
यह उच्चभाव हमको वरदान कीजियेगा ।
खोटी नज़र न देखें हम बदनिगाहवाले ॥७॥

क़व्वाली ६

ईश्वर फ़कत तुम्हीं हो दुख के मिटानेवाले ।
आवागमन छुड़ाकर मुक्ती दिलानेवाले ॥
सूरज ज़िमीं सितारे सब आसरे तुम्हारे ।
सारे निज़ाम शमशी तुम हो चलानेवाले ॥
हरजा तुम्हीं हो हाज़िर हर बात पर हो क़ादिर ।
छोटे से ज़र्रे में भी तुम हो समानेवाले ॥
दरिया पहाड़ जंगल हरजा तुम्हारा जलवा ।
मूरख हुये तुम्हारी मूरत बनानेवाले ॥

यों वासुदेव गाता है, जो तुम्हें हृदय लाता है।
वही जन होवे पार ॥ प्रभो० ६ ॥

ग़ज़ल ९

मद्दाह सब हैं तेरे, जो हैं ज़बान वाले।
सुनते हैं नग़मा तेरा, यहां जो हैं कान वाले ॥ १ ॥
बन्दे हैं खाक दर के, सिजदे में सर झुके हैं।
तौक़ीरो शान वाले, नामो निशान वाले ॥ २ ॥
चौखट पै तेरी करते, जो सल्तनत को कुरबां।
दिल के ग़नी हैं कैसे, ये आसितान वाले ॥ ३ ॥
मन्दिर ही मसजिदों में, वह खासकर नहीं है।
क्यों शोर गुल मचाते, टनटन अज़ान वाले ॥ ४ ॥
दिल में तेरे निहां है, क्यों ढूंढ़ता नहीं तू।
बाहर न वह मिलेगा, आहो फ़िग़ान वाले ॥ ५ ॥

ग़ज़ल १०

किस परदे में निहां है, कौनो मकान वाले।
तेरा निशां कहां है, ऐ बे निशान वाले ॥ १ ॥
बुलबुल ने तुझ से सीखा, पुरसोज़ नग़मा खाली।
गुल रंगो बू है तेरा, ऐ गुलसितान वाले ॥ २ ॥
ज़ुल्मत कदा में जाकर, तुझ को टटोलते हैं।
नादां वह कम समझ हैं, वहमो गुमान वाले ॥ ३ ॥
बिजली की खुश अदाई, तारों की जगमगाहट।

सब में है नूर तेरा, अय ऊंची शान वाले ॥ ४ ॥
इसरार मारफ़त की, क्या जाने शेखो पण्डित ।
नाकूस वाले यह हैं, वह हैं अजान वाले ॥ ५ ॥
गर वस्ल का है तालिब, हो जा फ़िदा तू उसपर ।
यह सच्ची बन्दगी है, अय ज्ञान ध्यान वाले ॥ ६ ॥

ग़ज़ल ११

तेरा निशां कहां है, अय बेनिशान वाले ।
ढूंढें तुझे कहां हम, ऐ लामकान वाले ॥ १ ॥
पर्दों में तू निहां है, आता नहीं नजर में ।
कैसे पहुंच हो तुझ तक, ऐ आसमान वाले ॥ २ ॥
हर गुल में बू है तेरी, हर शय में रंग है तेरा ।
तू है मुहीत सब में, ऐ दो जहान वाले ॥ ३ ॥
पहिचाने कोई क्योंकर, अकलो खिरद है हैरां ।
हसरत में सब पड़े हैं, यहां ज्ञान ध्यान वाले ॥ ४ ॥
साधू की यह सदा है, जग रैन का है सुपना ।
हो तू फ़िदा न इस पर, ऐ ज्ञान ध्यान वाले ॥ ५ ॥

राग विष्णुपद १२

दीनबन्धु जग विदित नामभव, वेग सुनो हरि मेरी टेर ॥टेक॥
हा ! मैं बड़ा दुराचारी हूं, धर्म न धारा अविचारी हूं ।
लीजे लीजे मम दिशि हेरि ॥ १ ॥

छलबल मैंने खूब कमाये, अब प्रवाह में सुकृत बहाये।
होगी होगी तब क्यों तेर ॥ २ ॥
कर्णा निरन्तर श्री यश गावें, भक्तिभाव उरमें उपजावें।
तारो तारो कैसी देर ॥ ३ ॥

ठुमरी ध्वनि काफी १३

पास खड़ा तेरे नज़र न आवे महबूब पियारावे।
घट २ व्यापक सबकी जाने रहै सबन से न्यारावे।
ढूँढ २ कोई खोज न पायो सब जग हारावे।
ध्यान धारणा योग समाधी नेम अचारावे।
जाके हेत करत सुर नर मुनि विविध प्रकारावे।
वेद वेदांग शास्त्र उपनिषदें बहुत विचारावे।
सभी अपार अगम्य अगोचर अलख पुकारावे।
छोड़िके निज अज्ञान कल्पना कुमति निवारावे।
मिला कबीर तिन्हें दिल अन्दर सिरजन हारावे ॥

भजन १४

किया जिसने पैदा जहान है, वह महान से भी महान है।
न वह बाल वृद्ध जवान है, वह प्राण का भी प्राण है ॥१॥
न जन्म धरे न वह दुख भरे, न हो रोगी न वह कभी मरे।
उसे ढूंढो जहां वह वहीं मिले, न रहने का खास मकान है ॥२॥
कोई उस का रंग न रूप है, वह सदा ही ज्ञान स्वरूप है।
वही एक सब से अनूप है, नहिं कोई उसके समान है ॥३॥

वह अजर अमर और है अभेद, वह पूर्ण ब्रह्म और है अछेद।
उस का न कहा जावे विभेद, वह हुआ न अब तक मान है ॥४॥
नहिं खाली उससे कोई ठौर, कर खूब देखा हम ने गौर।
वह है सभी के सिर का मौर, उसे तीनों काल का ज्ञान है ॥५॥
वह हर एक ऋतु में है रमा, मन को न तू उस से भ्रमा।
उस में ही निज को ले जमा, वही सारे विश्व की जान है ॥६॥

भजन १५

तेरी अज अविकार, महिमा अपार, नहिं पाया पार, गये कितने हार, बर बुद्धिमान कर कर विचार।

तू है अजर अमर, तुझे किसी का न डर, सब से बरतर, तू है ईश्वर, सर्व विश्व को पूरण अधार ॥ १ ॥

सर्व शक्तिमान करुणानिधान, सब को हर आन, तू ही देता दान, हर वक्त खुला तेरा भण्डार ॥ २ ॥

तू है शाहों का शाह, सब तेरे गदा, अदना आला, तेरे दरप खड़ा, बरणी न जाय लीला अपार ॥ ३ ॥

तू आनन्द घन, तू पतित पावन, ले तेरी शरण, सब तन मन धन, करे खन्नादास तुझ पर निसार ॥ ४ ॥

क़व्वाली १६

मशहूर हो रहा है खलकत में नाम तेरा ॥
तू है सभी का अफसर, साहिब गरीब परवर।

मामूर हो रहा है, कुदरत कलाम तेरा ॥१॥
जल थल के जीव सारे, सूरज व चांद तारे।
मशकूर हो रहा है, आलम तमाम तेरा ।२॥
आलम में तूही तू है, गुल में व मिस्ल बू है।
भरपूर हो रहा है, सब में मुक़ाम तेरा ॥३॥
सुनले पुकार मेरी, करता है अब क्यों देरी।
मजबूर हो रहा है, ग़म से गुलाम तेरा ॥४॥
करुणा निधान तेरा, बलदेव जैसा चेरा।
मखमूर हो रहा है, पीकर के जाम तेरा ॥५॥

क़व्वाली १७

जल्वा दिखा रहा है मुझ को ज़हूर तेरा ॥
व्यापक है तू जहां में, हाज़िर हर एक जां में।
सब में समा रहा है, निर्मल है नूर तेरा ॥ १ ॥
रचना है तेरी सुन्दर, बलिहारी जिसपै मुनिवर।
अमृत चखा रहा है, मुझ को सरूर तेरा ॥ २ ॥
तेरा ही नाम प्यारा, जपता जहान सारा।
गुण तेरे गा रहा है, जन है ज़रूर तेरा ॥ ३ ॥
बलदेव दुःख दल से, बचने को नर्क थल से।
खिदमत में आ रहा है, बन्दा हुजूर तेरा ॥ ४ ॥

ग़ज़ल १८

तेरा नूर सब में समाया हुआ है।
कुल आलम तेरा ही बनाया हुआ है ॥ १ ॥
रमा है तू हर गुल में मानिन्द बू के।
जगत् में तुही जगमगाया हुआ है ॥ २ ॥
चमकते हैं दुनिया में जो चांद सूरज।
उजियाला तुझ से ही पाया हुआ है ॥ ३ ॥
बदो नेक आमाल देखे तू सब के।
नहीं छिपता तुझ से छिपाया हुआ है ॥ ४ ॥
सज़ा वो जज़ा तूही देता है सब को।
भरेगा जो जिसने कमाया हुआ है ॥ ५ ॥
शिफारिश न झूठी चलेगी किसी की।
यह वेदों में सब को बताया हुआ है ॥ ६ ॥
तू है सबका मालिक गरीबों का परवर।
जहां कुल तेरा ही बसाया हुआ है ॥ ७ ॥
तेरी सिफ्ते कुदरत पै कुर्बान हूं मैं।
दिलो जान तुझ से लड़ाया हुआ है ॥ ८ ॥
खबर लेलो बलदेव की अब तो साहब।
तुम्हारी ही खिदमत में आया हुआ है ॥ ९ ॥

भजन १९

परम पिता के प्रीति से यश गाओ सदा।

परम पिता के जग रचता के प्रीति से यश गाओ सदा। हम को इंसान किया, अशरफ़े जहान किया, पैदा जो सामान किया सब हमको प्रदान किया। हैं हैरानी, पर यह प्रानी, कर नादानी कुछ नहिं मानी, रह हक्कानी छोड़। एसी मत कर ओ नादान प्रति दिन अति प्रीति से चित धर गाओ ॥ सदा० १ ॥

दो०—वह दाता करतार है, सबका पालनहार।
पर हम कुछ नहिं जानते, हैं मतिहीन गँवार ॥

दिल में विचार करो, पर उपकार करो, ईश्वर से प्यार करो, खन्ने दिल निसार करो ॥ गाओ सदा० २ ॥

भजन २०

क्या कोई गावे क्या सुनावे, प्रभु महिमा तेरी लखि किसी से न जावे रे
ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर तपी तपीश्वर हज़ार।
लखि २ के हारे, व सारे विचारे, न पाया वले तेरा पार ॥क्या०१॥
तेरी वेद है वाणी, कहे ऋषी ज्ञानी, है प्राणी का जिससे उद्धार।
जो पढ़े पढ़ावे, अमल करावे, हो भवसागर से पार ॥ क्या० २ ॥
तुही सृष्टि कर्ता, सकल दुःख हर्ता, तू संतन का प्रतिपाल।
मुझे कामक्रोधसे, खुदी लोभमोहसे, बचाओ हरि तत्काल ॥क्या०३॥
तुही है भंडारी, मै तेरा भिखारी, मागूं यही वरदान।
मै तुझको ही ध्याऊं, तेरी महिमा गाऊं कहे दास खन्ना नादान ॥क्या०४॥

चौताल २१

तूही अज निर्विकार, तूही है जगदाधार।

ऋषि मुनि नहिं पाएँ पार, भव रचि रचै संहार॥
तेरी ही चन्द्र भान, पृथ्वी है विद्यमान।
वायु यह वेगवान, सूक्ष्म नाम निराकार॥
तूने रचे देश काल, ऋतुदिन क्या मास साल।
नद नदी सर गिरि विशाल, हमरे हित वेद्चार॥
तुही प्रभु है अनन्त, निर्गुण महा शक्तिवन्त।
आश्रित सब जीव जन्तु पाठक, पितु लो सँभार॥

भजन २२

ईश्वर तू मंगल मूल है—ऐसा वेदों ने गाया।
तू सर्वज्ञ महा सुखदाता, सर्व शक्ति सम्पन्न विधाता।
तेरा शुद्ध ज्ञान साधक के, साधन तरु का मूल है॥
जिस में फल मुक्ति समाया॥ ऐसा० १॥

तू अज अमित अनन्त कहावे, कभी न तुमको क्लेश सतावे।
तब तेरा अवतार बताना, मन्द मतों की भूल है॥
तू निर्गुण नित्य निकाया॥ ऐसा० २॥

जिसने तुझे योग कर जाना, तेरा दिव्य रूप पहँचाना।
समझ लिया उस बड़भागी ने, सांसारिक सुख धूल है॥
तूने उसको अपनाया॥ ऐसा० ३॥

भवसागर से तर जावेगा, फेर न कोई दुख पावेगा।
राम नरेश दास जो तेरा, आज्ञा के अनुकूल है॥
जिसके मन मोह न माया॥ ऐसा० ४॥

भजन २३

तेरो नाम ओंकार, पावै कोऊ नहिं पार ।

महा मुनीश गये हार, गाय गाय, धाय धाय १ ॥
सत् चित आनँद स्वरूप, रहित सदा रंग रूप ।
तू अनूप जगत भूप, निराकार निर्विकार २ ॥
अजर अमर नित्य अभय, सर्व शक्तिमान सदय ।
शुद्ध बुद्ध मंगल मय, तू अपार तू अपार ३ ॥
तू अभेद तू अछेद, पावै नहीं तू है खेद ।
नवलसिंह चारों वेद, कहत यही बार बार ४ ॥

भजन २४

पिता तुम पतित उद्धारन हार ।

मोसे परम पातकी जन के संकट मोचन हार । पिता तुम० १ ॥
आया हूं मैं शरण तुम्हारी अपना भला विचार ।
जैसे बने कीजिये मेरा भवनिधि से उद्धार । पिता तुम० २ ॥
हित अनहित कुछ नहीं विचारा मैं मतिमन्द गँवार ।
अपनी अतुल दया के द्वारा मुझको दीजै तार । पिता तुम० ३ ॥

भजन २५

तू परिपूरण नाथ जगत का, महिमा तेरी अपरम्पार ।
जगत पिता तुम सब से महा हो, कहते चारो वेद पुकार ॥

सूर्य्य, चन्द्र, पृथिवी, नभ आदिक, हैं तेरे ही, रचे सँभार।
निश दिन करता दान पदारथ तू सबको अति भले प्रकार॥

इस मन को ज्ञान दे, मत विषयों में जान दे।
पापों से ये छुटे, तेरे ध्यान में जुटे।
असत को छोड़ दे, बन्धन तोड़दे।
बन्ना तुझ पै रहै सदा हीं जाँ निसार॥

भजन २६

नहीं बुद्धि हमारी गावे महिमा तुम्हारी तुम साधु सुखकारी प्रभु ओ३म् ३।
दया भक्तन पै कीजे, सब दुख हर लीजे, निज भक्ती को दीजे प्रभु ओ३म् ३॥

(हरिपद छन्द)

ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर कभी न पावें पार।
तुमको किस विधि गा सक्ता हूँ मैं मतिमन्द गँवार।

हारे योगी योगीश्वर, सारे ऋषी ऋषीश्वर, जाने महिमा मुनीश्वर न ओ३म् ३॥
थलचर जलचर नभचर आदिक हैं जितने जग माहिं।
तुम बिन इनकी सुन्दर रचना दिखा सके कोउ नाहिं॥
तुम ऐसे अपार, कोऊ पावे न पार, सब बैठे हैं हार।
प्रभु ओ३म् ३॥

हे जगदीश्वर जग के स्वामी सदा सत्य सुख धाम।
दीनदयालु कृपालु दयामय हे प्रभु पूरणकाम॥

प्रभु तुम हो कर्तार, सारे जग के अधार, सभी कहते पुकार
प्रभु ओ३म् ३॥

शिवनारायण के तुम ही हो प्रभु पार लगावनहार।
टूटी नैया बिन केवट के नाथ पड़ी मँझधार॥

नहीं तुम बिन हमारा, कोई जग में सहारा, तुम्हीं जीवन
अधारा प्रभु ओ३म् ३॥

भजन २७

ख्याल

ईश्वर के निज ओ३म नाम को अर्थ सहित गाना चहिये।
सायं समय अरु प्रात काल नित ध्यान बीच लाना चहिये॥
ध्यान धारणा का शुभ अवसर कभी न टल जाना चहिये।
तेजसिंह नित शान्त चित्त रह सारा सुख पाना चहिये॥

टेक—मय अर्थों के बोलो तुम ओ३म ३।

तीन अक्षर का ओंकार, अकार उकार मकार, सज्जन करके
विचार कहो ओ३म् ३।

सब में उत्तम है नाम, जपो सुबह और शाम, तज कर सब
दुनियां के काम, गहो ओ३म् ३॥

जैसे अकार से विराट, अग्नि और विश्व जानों तुम ओ३म् ३।

अर्थ है विराट का खास, करता जग को प्रकाश, करके पूर्ण विश्वास, कहो ओ३म् ३॥

अग्नि है ज्ञान स्वरूप, जिसकी उपमा अनूप, व्यापक छाया वा धूप, है वह ओ३म् ३।

बसे जिसमें सब देश, रहे कर हैं प्रवेश, प्रविष्ट होकर भी शेष, रहा ओ३म् ३।

इतने आकार से जान, मत भूलेरे नादान, नित्य धारना चहिये ध्यान, कहकर ओ३म् ३॥

हिरण्यगर्भः तेजस वायू, मानो उकार से तुम ओ३म् ३।

इस लिये हिरण्यगर्भ कहलाया, सबको गर्भ बीच ठहराया सब लोकों को आप बनाया, है वह ओ३म् ३।

करू तेजस का अर्थ बयान, है प्रकास स्वरूप जान, सब जग का प्रकाशक मान, है वह ओ३म् ३।

ये था अक्षर उकार, जिसका किया विस्तार, इस लिये नर और नारि, कहो ओ३म् ३।

मकारसे ईश्वर और आदित्य है तीसरा प्राज्ञ कहो ओ३म् ३।

ईश्वर सब जग का उत्पादक, सर्व शक्तिमान सहायक, न्याय कारी सब फल दायक, है वह ओ३म् ३।

बस आदित्य का अर्थ यही है, जिसका हो कभी नाश नहीं है, यह वेदों से साफ़ सही है, है वह ओ३म् ३।

यही अर्थ प्राज्ञ का जानो, इसको ज्ञान स्वरूप मानो, है वो ओ३म ३।

इतने प्रकार से बतलाये, कथकर छन्दों के बिच गाये, फिर तुम क्यों ग़फ़लत में आये, कहो ओ३म् ३।

तेजसिंह जो मुक्ती चाहो, अर्थों सहित बोलो ओ३म् ३।

काटे स्वामी जी ने फन्द, पाके दया और आनन्द, अब तो बोलो मतिमन्द, मुख से ओ३म् ३।

लावनी २८

ओ३म् नाम को त्याग और के गुण गाना नहिं चहिये।
ओ३म् नाम ही सार मंत्र है इसे भुलाना नहिं चाहिये॥
बना धर्म का ध्यान रहे, अघ ओघ कमाना नहिं चहिये।
साधु सन्त गुरु देव आदि का चित्त दुखाना नहिं चहिये॥
पास द्रव्य नहीं होय, वृथा दानी कहलाना नहिं चहिये।
द्रव्य होय तो फेर दान से हाथ हटाना नहिं चहिये॥
दुर्जन का सहवास पाय निज नाम लजाना नहिं चहिये।
बढ़ती रहे महा शुभता दुर्गोत्र बढ़ाना नहिं चहिये॥
धर्म समझ गंगा यमुना के जल में न्हाना नहिं चहिये।
मन मानी कर वैदिक मत का नाम मिटाना नहिं चहिये॥

मन्दिर मठ बनवाय मूर्त्ति में ध्यान जमाना नहिं चहिये ।
निराकार की तज उपासना दुःख उठाना नहिं चहिये ॥

भजन २९

सबसे उत्तम ओ३म् पियारे ।

अकार उकार मकार मिला है, व्यापक है प्रति लोम, पियारे ।
चाँद वो सूरज जिमीं सितारे, जिस ने बना बना कर धारे ।
महिमा उसकी अपने में यह, भर नहिं सकता व्योम पियारे ॥
धी बल सम्पति जो जग प्यारी, है जिसके अधिकार विचारी ।
यदि इच्छुक हो पाने के तुम 'कृष्ण' भजो एक ओ३म् हियारे ॥

भजन ३०

(प्रश्न) ख्याल ।

ईश्वर के लक्षण बतलाओ ईश्वर किसे बताया है ।
बिना बताये कैसे जानें हम को सम्भ्रम छाया है ॥
किसी ने मन्दिर अथवा मसजिद, गिरजाघर बनवाया है ।
किसी ने अपनेही को सच्चा ब्रह्म रूप बतलाया है ॥
विधिवत् जाने बिना उसे जा भक्ती अथ सिधाया है ।
तेजसिंह यह सब निष्फल है समझो प्रिय समझाया है ॥

सब लक्षण कहो सुझाय के,
किस को ईश्वर मानें हम । टेक—

किसको ईश्वर तुम जानो हो, बतलादो किसको मानो हो ।

किस लक्षण से पहचानो हो सच्चाई दरशाय के।
सब अलग अलग छानो तुम। किसको० १ ॥

अब लक्षण दरशाना होगा, सारा भेद बताना होगा।
ऐसा गीत बनाना होगा, मधुर स्वरों से गाय के।
भेजो सब के कानों तुम ॥ किसको० २ ॥

बतलादो भारी सुख होगा, तुर्त पलायमान दुख होगा।
सुन सब हर्षित मुख होगा, इस उत्तर को पाय के।
मन में निश्चय मानो तुम ॥ किसको० ३ ॥

उत्तर हो तो देना चहिये, शीरीं जुबां से कहना चाहिये।
नहिं हो तो चुप रहना चहिये, तेजसिंह ग़म खाय के।
फिर क्यों झगड़ा ठानो तुम ॥ किसको० ४ ॥

भजन ३१

(उत्तर) ख्याल

ईश्वर के लक्षण बतलाऊँ इधर ध्यान देना चहिये।
आसन मार बैठ चुपके ही तुमको सुन लेना चहिये ॥
जहां तुम्हें शंका हो प्यारे निश्चय ही कहना चहिये।
किसी भांति से भी संशय में तुमको नहिं रहना चहिये ॥

कहते हैं इधर ले कान कर जिसको ईश्वर मानें हम। टेक-
अति सर्व सुखदायक अजर अमरादि जिस के नाम हैं।

अद्भुत अतुल इह लोक में जिस के अनेकों काम हैं ॥
गुण-कर्म जिस के सह प्रकृति माने गये परिशुद्ध हैं।
लक्षण कहीं लावण्य से उसके न बुद्धि-विरुद्ध हैं ॥
वह सुख स्वरूप कहलावे। नहीं जन्म मरण में आवे ॥
जीवों के दुःख मिटावे। यों बार बार श्रुति गावे ॥
है भारी अपरम्पार, न पावें पार, सभी गये हार, यथाविधि ध्यान कर। इस प्रकार से जाने हम ॥ जिसको० ॥१॥

वह है महा अद्भुत, अलख, अमर्यादि लक्षण युक्त विभु।
जगदीश मंगल मूल सत् चित आनमय सर्वेश प्रभु ॥
उसको न कोई प्राप्त हो सब भांति वह अविकार है।
मल युक्त वपु से रहित उसको श्रुति रही निरधार है ॥
वह सबको भोग भुगावे। कर्मों का फल पहुँचावे।
वह पुनि पुनि जगत रचावे। रचने में चतुर कहावे ॥
ये जीव हैं सब अल्पज्ञ, ब्रह्म सर्वज्ञ, महा मर्मज्ञ, उसी को जानकर। अनुभव से पहचाने हम ॥ जिसको० ॥२॥

वह सदा ही नित्य शुद्ध और बुद्ध मुक्त सुभाव है।
बस एक उसके ही सहारे विश्व का ठहराव है ॥
जिस में भरी है शक्ति भारी कौन गा सकता उसे।
कर भेद अवगत न्यून मति से कौन पा सकता उसे ॥
वह है प्रभु अपरम्पारा। परिपूरण नाथ हमारा ॥
उसने ही यह जग सारा। करके उत्पादन धारा ॥

बस यही लक्षण हैं मूल, इनको मत भूल, चलें अनुकूल, इन्हीं को छानकर। लगे क्यों धोखा खाने हम ॥ जिसको० ॥३॥

जितना बताया है गया सब वेद के अनुकूल है।
कुछ भी नहीं इस में रही अस्पष्टता की भूल है॥
जिस में घटें लक्षण सभी ये, ईश उसको मानिये।
विषयादि में फँस जानना, उसका कठिन ही जानिये॥

अय मित्र अगर सुख पाओ। तो ईश्वर के गुण गाओ॥
मत अवसर व्यर्थ गँवाओ। कुछ ध्यान भले का लाओ॥

कहें तेजसिंह समझाय, ईश गुण गाय, सुनो चित लाय, खूब आसान कर, लगे तुमको दर्शाने हम ॥ जिसको० ॥४॥

भजन ३२

(प्रश्न) ख्याल।

ईश्वर २ कहो सिद्ध कर उसको दिखलाना चहिये।
ईश्वर सिद्धि विधायकही शुभ रचा ख्याल गाना चहिये॥
समझाने में रहे कमी तो फिर भी समझाना चहिये।
तेजसिंह ऐसे वर्णन को ले समीप आना चाहिये॥

ईश्वर के सिद्ध करने में,
कोई प्रमाण दिखलाओ ॥ टेक ॥

उसको ईश्वर कैसे जाने, है ईश्वर वो कैसे माने।
बिना प्रत्यक्ष नहीं पहचाने, कर प्रत्यक्ष दरशाओ ॥ को० १ ॥

ईश्वर अति महान कहलावे, जीव बापुरो पता न पावे।
कैसा वो, समझा नहिं जावे, कर विस्पष्ट सुनाओ ॥ को० २ ॥
हम मुद्दत से भ्रमे पड़े हैं, पट महान्धता रूप अड़े हैं।
जोड़ हाथ सामने खड़े हैं, भेद भाव समझाओ ॥ को० ३ ॥
मिटा दीजिये शंका मेरी, मिल जावे शुभ शान्ति घनेरी।
क्यों करते हो इस में देरी, तेजसिंह कथ गाओ ॥ को० ४ ॥

भजन ३३

उत्तर।

दोहा—अय जिज्ञासू क्यों वृथा, संशय रहा बढ़ाय।
सिद्ध करूं जगदीश को, सुनले कान लगाय ॥

वह प्रत्यक्षादि प्रमाण ले,
ईश्वर के सिद्ध करने में ॥ टेक ॥
ज्यों पांच ज्ञान इन्द्री और मन है भाई।
दें विषय भी इनके जुदे जुदे दिखलाई ॥
विषयों से मिलकर जो कि ज्ञान होजावे।
बस वही ज्ञान-मित्रों प्रत्यक्ष कहलावे ॥

हो ज्ञान भी ऐसा भारी, मिटजावे शंका सारी।
अनुभव सच्चा होजावे, कुछ भेद न रहने पावे ॥
लेकिन यह दूषित गात, सुनो प्रिय भ्रात, मुख्य हालात,
अगाड़ी जानले। कर्त्ता तीनों के जड़ने में ॥ ईश्वर० १ ॥

देखा विचार मन और इन्द्रियों के ताईं।
है गुणों का सब प्रत्यक्ष गुणी का नाहीं॥
फिर गुणों के पीछे गुणी को ऐसे पावे।
इस आत्मयुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जावे॥

ऐसे ही सृष्टि में भाई, हम विशेष रचना पाई।
गुण ज्ञान आदि लख सारा, हुआ ईश्वर सिद्ध हमारा॥

ले दूसरा भी दृष्टान्त, इस के उपरान्त, सुन होके शान्त,
इधर कर कान ले, यह शिक्षा उर भरने में॥ ईश्वर० २॥

जिस समय जीव किसी कर्म में मन लाता है।
फिर उसी समय प्रमाण प्रत्यक्ष आता है॥
हो अशुभ कर्म तो भय शंका लज्जा आवे।
शुभ हो तो हर्षित अंग मोद- दरशावे॥

भय अभय जो दे दिखलाई, है ब्रह्म की ओर से भाई।
म र जीव की ओर से जानो, यह सत्य कथन पहँचानो॥
जीव है स्वतन्त्र, तभी करे, पीछे दुख भरे, इसी से डरे,
मित्र पहँचान ले, नहीं क्या हासिल डरने में॥ ईश्वर० ३॥

प्रमाण तीसरा प्रत्यक्ष यह पाता है।
हर काम नियम अनुकूल नज़र आता है॥
बनना व बिगड़ना सभी नियम से होता।
कर विचार मन की क्यों नहीं शंका खोता॥
देखो सृष्टि में भाई, ये अटल नियम दिखलाई।
ज्यों माली बाग़ लगावे, कहीं फ़र्क़ ज़रा नहिं आवे॥

हुआ इसी से ईश्वर सिद्ध, समझले सिद्ध, छोड़कर जिद, तेजसिंह जान ले, इस बुद्धि रूप करने से ॥ ईश्वर० ४ ॥

भजन ३४

प्रश्न ।

दोहा–किसी पुरुष का प्रश्न यह, जब कि ईश निराकार।
फेर बताओ किस तरह, वेद बनाये चार ॥

टेक–वेद फिर कैसे बनाये हैं जब निराकार जगदीश।

नहिं ईश्वर का कोई अंग है, नहिं रूप है न कोई रंग है।
नहिं इन्द्रियादि का संग है, शब्द कैसे फरमाये हैं ॥ वे०१ ॥
कर लेकर के वेद विचारो, खुद आंख पसार निहारो।
यह भ्रम की बात विसारो, शब्द नहिं सुनने में आये हैं ॥२॥
हमने जब ये देखे विचारे, हुई हृदय में शंका हमारे।
इस लिये ही सम्मुख तुम्हारे, प्रश्न अपना ये लाये हैं ॥३॥
तब तो फिर उत्तर लाओ, हमें साफ २ समझाओ।
मेरे हृदय की शंका मिटाओ, तेजसिंह कह चुप लाये हैं ॥४॥

भजन ३५

उत्तर ।

दोहा–अय जिज्ञासु समझ तू, हो करके खामोश।
वेद रचे निराकार ने, कुछ नहीं आवे दोष ॥

रचने का भेद निराकार में,
कोई दोष नहीं आता है ॥ टेक ॥

जब है सर्व व्यापक जगत में वह जगराई ।
फिर मुखादि अंगों की क्या ज़रूरत भाई ॥
जो हो आप से भिन्न दूसरा कोई ।
उसके लिये मुख जिह्वा की ज़रूरत होई ॥
देखो तो तुम अपने ताई, कुछ मुख की ज़रूरत नाहीं ।
जब अन्तर्यामी है भाई, फिर ये शंका क्यों आई ॥
जब है सर्व शक्तिमान, उसकी क्या हान, निश्चय लो जान,
दोष ये आता है साकार में, बिन मुख नहीं फ़र्माता है ॥कोई०१॥

है दूसरा दृष्टान्त इन में मेरे भाई ।
मन में मुखादि अवयव देते न दिखाई ॥
मत मुख से बोलो मत कुछ जुबां हिलाओ ।
फिरभी संकल्प विकल्प सैकड़ों पाओ ॥
ऐसे ही ईश्वर में जानो, मत शंका इस में मानो ।
है मिले हुए नहीं प्यारे, तभी बिन मुख शब्द उचारे ॥
वेदों ने दिया बताय, है ईश्वर अकाय, न लेत सहाय, वही
संसार में, सबको फल पहुंचाता है ॥ कोई० २ ॥

यह जीव अलप शक्ती वाला है जैसे ।
मत कदापि समझो ईश्वर को तुम ऐसे ॥
क्यों इस पर तुम को ध्यान मित्र नहिं आया ।
बिन शरीर के सारा ही जगत बनाया ॥

यह क्यों नहिं बात विचारी, होती शक रफै तुम्हारी ।
कर विचार शंका तेरी, हो दूर लगे नहीं देरी ॥
कर विचार शका कटै, तिमिर सब हटै, अविद्या घटै,
काहे व्यर्थ विचार में, नित २ शका लाता है ॥ कोई० ३ ॥

वेदों की विद्या कही गई सूक्षम है ।
क्या जगत् में चक्षू आदि की रचना कम है ॥
जब रचना अचरज भरी करी यह सारी ।
फिर निराकार को वेद रचन क्या भारी ॥

जो सवाल तुमने कीन्हा, उसका उत्तर दे दीन्हा ।
हां और अगर कुछ कहना, तो कहो मौन क्यों रहना ॥
कहे तेजसिंह मतिमन्द, बना के छंद, मिले आनंद, दुखी
नर संसार में, बिन विचार दुख पाता है ॥ कोई० ४ ॥

भजन ३६

प्रश्न (ख्याल)

यह तो सब कुछ ठीक आपने जैसा कुछ फर्माया है ।
पर एक बात है शेष इसी से नहीं समझ में आया है ॥
जब प्रकाश से युक्त ईश को वेदों ने बतलाया है ।
प्रकाश है तो है क्या वो जो आंखों से न लखाया है ॥
प्रकाश सबको दीखना चहिये जैसे धूप और छाया है ।
फिर ईश्वर का प्रकाश हमको क्यों न दीखने पाया है ॥

उत्तर—

दोहा—अय जिज्ञासू समझकर, कर इस पर विश्वास।
कभी नज़र आवे नहीं, जो प्रकाश है खास॥

कभी देख न सक्ता कोई, उस स्वतः प्रकाश को भाई। टेक॥
ललन ज्यों सूर्य की शुआयें, किसी छिद्र में होकर आयें।
पड़ें नज़र कि जहां रुक जायें, दें बिच में न दिखाई॥ उस० १॥
जाके शुत्रा जिस शै में पड़ी है, देखो वहां भी नज़र से परी है।
उस शै की ही दमक रही है, सफ़ेदी सुर्खी स्याही॥ उस० २॥
इस से भी अब वह सूक्षम है, व्यापक जगह जगह जो सम है।
किसी जगह में ज्यादा न कम है, कैसे पड़े लखाई॥ उस० ३॥
उत्तर दे दिया इसका जानों, नेक न शंका मन में सानो।
तजदो पक्ष न झगड़ा ठानो, तेजसिंह दरशाई॥ उस० ४॥

भजन ३७

भूला काहे प्राणी रे प्रभु की सत्ता नहिं पहचाने।
सत है सदा से चित चेतन है, नित आनन्द स्वरूप।
उस स्वामी से विमुख पड़, तुम अन्धकार के कूप॥ भूला० १॥
सुनते लखते चलते सूंघते, छूते जिनके द्वार।
सब इन्द्रिय सहाय है उसकी, ऐसा सर्वाधार॥ भूला० २॥
आँख न देखे, वाणि न पहुँचे, मन तक जावे नाहिं।
सोचो मित्रो! कैसे पहुँचे, ब्रह्म की सत्ता माहिं॥ भूला० ३॥
जो कुछ तुमने अब तक जाना, सब इंद्रिय के द्वार।

ज्ञात वस्तु मे ऊपर है वह, अज्ञात से परे निहार ॥ मूला० ४॥
पाठक कहे मैल तज मन से, तब उपजे सत ज्ञान।
आसन आदि समाधि अन्त ले, योग से हो पहँचान ॥ मू० ५॥

दादरा ३८

ईश्वर लीजै खबरिया हमारी।
हो निराश सब ओर से स्वामी, आन पड़े हैं शरण तुम्हारी ॥ १
भारत आरत बिलख रहा है, रहा न कोई धर्म व्रत धारी ॥ २
भक्ति तुम्हारी तज कर हमने, जड़ पूजे बन दुष्ट पुजारी ॥ ३
नर तन पाय तुम्हें नहिं खोजा, जीतो बाजी जगत में हारी ॥ ४
काम क्रोध मद लोभ के बश में, हमने सुध बुध सभी बिसारी ॥ ५
बाल युवा और वृद्ध अवस्था, विषयों मे खो बैठे सारी ॥ ६
वासुदेव कहे विद्या बल दो, भिक्षा मांगे खड़े हम भिखारी ॥ ७

दादरा ३९

जगदीश्वर तुम्हारा सहारा हमें,
यहां सूझे न कोई हमारा हमें।
दान दशा मे आन तनक प्रभु!
तुमही ने तो उबारा हमें ॥ १ ॥
ढूँढ फिरे हम सभी ओर हैं,
मिला न तुमसा पियारा हमें ॥२॥
चहिये दाद शुभ एक मोक्ष पद,
सारे सुखों का भंडारा हमें ॥३॥

अन्धकार से दूर हटाओ,
निज ज्ञान का दे उजियारा हमें ॥४॥
भवसागर की धार प्रबल है,
इससे भी दो छुटकारा हमें ॥५॥
आर्य्य पुरोहित विनय करे प्रभु!
निज से न कीजे न्यारा हमें ॥६॥

रेखता ४०

स्वामिन् दयालुता से दुख दर्द सर्व हरिये।
उर में विवेक भरिये चित को प्रसन्न करिये॥
पशु तुल्य काम क्रीड़ा गां ग्राम में न उलझें।
परिपक्व शुक्र होवें विनती सु कान धरिये॥
कर्णान्धता विदूरे वैदिक सुविज्ञता से।
आनन्द की सुचरचा मस्तिष्क माहिं भरिये॥

ग़ज़ल ४१

शरण हम प्रभू तेरी आये हुये हैं।
दो कर जोड़े सर को झुकाये हुये हैं॥
न भक्ती न श्रद्धा में मन चित लगाते।
बने पापी पुण्य को भुलाये हुये हैं॥
त्यागा पुरुषार्थ अहंकार में फँस।
कुसंगति से हरदम दबाये हुये हैं॥

न बल है न बुद्धी न विद्या की शक्ती।
अधोगति पै अपनी भुलाये हुये हैं॥
स्थिरता न मन को भटकता फिरे यह।
विषयों से बहुत हमें सताये हुये हैं॥
करो हम पै कृपा दयामय पिता जी।
उठाओ हमें जो गिराये हुये हैं॥
प्रवृत्ती हो शुभ कर्म और शुभ गुणों में।
मिले धर्म धन जो गँवाये हुये हैं॥
हो सत विद्या और ज्ञान से शुद्ध हृदय।
नियम पालें जो तू बनाये हुये हैं॥
धरम भूख हम को सदा हो प्रभू जी।
बढ़े शान्ति भारी जलाये हुये हैं॥
गंगाराम सप्रीति पर उपकार सीखें।
मिटे कपट मन में जो लाये हुये हैं॥

ग़ज़ल ४२

भगवन् दया की दृष्टी, अब टुक इधर भी करदो।
रहमत से अपनी दामन, इस दीन का भी भरदो॥ १॥
आज्ञा का तेरी पालन, निशि दिन करू मैं स्वामी।
भिक्षुक हूँ नाथ तेरा, भक्ती का मुझ को वर दो॥ २॥
माता बहिन व कन्या, समझूं, पराई नारी।
समभाव सब को देखूं, ऐसी मुझे नज़र दो॥ ३॥
वे पुत्र ही है बेहतर, गर हो अधर्मी बालक।

कुल की करे बड़ाई, ऐसा प्रभू पिसर दो ॥ ४ ॥
पुरुषार्थ करके जो कुछ, मिल जाय नाथ स्वामी ।
उसमें ही हे दयामय ! सन्तोष और सबर दो ॥ ५ ॥
बेकार है वह धन जो, परस्वार्थ में न व्यय हो ।
दुखिया अनाथ पालन, करने को नाथ जर दो ॥ ६ ॥
कर्मानुसार यदि मैं, मानव शरीर पाऊं ।
हे ईश ! जन्म मेरा, सत आर्यों के घर दो ॥ ७ ॥
संकट हजार पड़ते, पर भी धरम न छोड़ूं ।
निर्भय, अशोक, बल से पूरित प्रभू जिगर दो ॥ ८ ॥
कर जोड़ मित्र तुम से, है नाथ अब विनय यह ।
अपना ही ध्यान मुझको, नित शाम और सहर दो ॥ ९ ॥

भजन ४३

टेक—कर कृपा पार उतारियो, मेरी टूटीसी किश्ती है ।
तुम अविनाशी अजर अमर हो, सारे भूमण्डल के घर हो ।
सब के बाहर और भीतर हो, कारीगर बड़े भारी हो ॥
रची सकल अजब सृष्टी है ॥ मेरी० ॥
सब का न्याय करो हो न्याई, बिन वज़ीर और बिना सिपाही ।
करो फैसले क़लम न स्याही, ऐसे न्यायकारी हो ॥
नहीं ग़ल्ती पड़ सकती है ॥ मेरी० ॥
अब तक दुख भोगे हैं भारी, बहुत हुई दुर्दशा हमारी ।
अब आये हम शरण तुम्हारी, तुमहीं देश हितकारी हो ॥
तारो तो तर सकती है ॥ मेरी० ॥

बिना कृपा दयानिधि तेरी, कुछ नहिं पार बसाती मेरी।
तेजसिंह भारत की बेड़ी, काट सभी दुख टारियो॥
जो हृदय कुमति बसती है॥ मेरो०॥

ग़ज़ल ४४

शरण अपनी में रख लीजे, दयामय दास हू तेरा।
तुझे तजकर कहां जाऊं, हितु को और है मेरा॥
भटकता हू मैं मुद्दत से, नहीं विश्राम पाता हू।
बचा दे सब तरह से अब, मुझे आफ़ात ने घेरा॥
सताया राग द्वेषों का, तपाया तीन तापों का।
दुखाया जन्म मृत्यू का, हुआ तँग हाल है मेरा॥
दीन दुख मेटने वाला, तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आ गिरा अब तो, उठा ले किस लिये गेरा॥
क्षमा अपराध कर मेरे, फकत अब आश है तेरी।
दया बलदेव पर करके, बना ले नाथ निज चेरा॥

ग़ज़ल ४५

हे न्यायकारी! हे निर्विकारी!! हे ज्ञानधारी!!! तुम्हीं हमारे।
न और कोई हितू हमारा, हमें बचाओ हम हैं तुम्हारे॥
बग़ौर दुनिया को हमने देखा, खुद मतलब के हैं यार सारे।
किस से कहें अब दिलदर्द अपना, हैं जानी दुश्मन कि जो थे प्यारे॥
ज़माना भी कुछ निराली सजधज, बदल रहा है अजीब रँग ढँग।

जो थे कभी नूर में चूर भरपूर, फिरते हैं दर दर वह मारे मारे ॥
जो थे समझते कि हम हैं सारे मुल्कों के मालिक ग़रीब परवर ।
वली पहलवां लाखों हुनर वर, नहीं पता वह किधर सिधारे ॥
इस दुनिया फ़ानी में हमने देखे, हज़ारों बनते बिगड़ते लाखों ।
फिर किस की शादी ग़मी मनावें, किसे बनावें आंखों के तारे ॥
लगी है अबतो तुम्हीं से आसा, बलदेव को निज बनालो दासा ।
जैसा है खोटा खरा या खासा, तुमने तो लाखोंहि पापी तारे ॥

ग़ज़ल ४६

हमारी एक विनय तुम से, दयामय दीन हितकारी ।
मिटाओ मेरे हृदय की, अविद्या रूप अँधियारी ॥
प्रकाशित ज्ञान अपने का, हृदय में कीजिये सूरज ।
मिले कल्याण का रस्ता, बनें हम सुख के अधिकारी ॥
गया है छूट वह मारग, हमारे पूर्व पुरुषों का ।
बिना उसके हमारी हो गई अब दुर्दशा भारी ॥
हमारा धर्म वैदिक था, उपासक आप के हम थे ।
हुये अब पन्थ नानाही, औ नाना इष्ट औतारो ॥
अहिंसा त्याग चोरी था, धर्म व्रत पूर्व पुरुषों का ।
वहां हिंसक औ बटमारी, शराबी चोर औ ज्वारी ॥
जहां ऋषि मुनि थे ब्रह्मचारी, पुरुष नारी सदाचारी ।
वहां अब प्रायः नर नारी हुये कुलटा औ व्यभिचारी ॥
यहां के दीन औ दुखिया, नहीं इम्दाद पाते हैं ।
मुचण्डे भांड़ औ वेश्या, उड़ावें माल बदकारी ॥

मचा अन्धेर अब ऐसा, हुवा बदली जमाने को।
तुम्हीं पर आशा है भारी, तुम्हीं पितु बन्धु महतारी॥
तुम्हीं हो धर्म के पालक, अधर्मी दुष्ट कुल घालक।
समझ बलदेव निज बालक, बचाओ वेग बलधारी॥

भजन ४७

प्रभु तुही पालनहार दयामय आश तुम्हारी है।
द्वेष नृपति है अविद्या राज्य पर, हुआ अन्धेर अकाज दिये कर।
हास्य की नौबत बजे, क्रोध की ध्वजा पसारी है॥ प्रभु०॥
फूट बर छल हठ हैं घर घर, वैरन बढ़गई इतनी यहां पर।
प्रीति प्यार नहिं भ्रात, पुत्र प्रिय नहिं महतारी है॥ प्रभु०॥
गति संसार का पार न जाना, मूरख मनवा फिरे दिवाना।
चेतो अब करें हाय, धार में नाव हमारी है॥ प्रभु०॥

ग़ज़ल ४८

सुनो जगदीश! विनती को तुम्हीं से आश भारी है।
सुधारो अब कृपा करके दशा बिगड़ी हमारी है॥
अविद्या देश में फैली हुआ मूरख यह भारतवर्ष।
बिगाड़ा रीति नीतों को परस्पर वैर जारी है॥
रहा ना धन यहां पर कुछ न अब रहने की आशा है।
निरुद्यमता ने आ दाबा हुआ भारत भिखारी है॥
नहीं है देश की ममता किसी भारत निवासी को।
करें अब क्या यतन प्रभुजी! पड़ा दुख सर पै भारी है॥

नहीं है ऐसा कोई जन जो हम को आके धीरज दे।
यह क्यों रोते हो तुम साहिब हगों से रक्त जारी है॥

भजन ४९

दयानिधि सब दुख दूर करो।
हम को सुख भोगन को मारग कितहुँ न सूझि परो।
लौकिक हाय हाय में हारे अब तव ध्यान धरो॥
जोर बटोर पाप की पूंजी करम कपाल भरो।
'कर्ण' समान भीरु भक्तन के हे हरि शोक हरो॥

क़व्वाली ५०

मालिक मेरी मदद कर मुश्किल हटाने वाले।
जब से नज़र कड़ी है आफ़त में जाँ पड़ी है।
अब तो बचाले, बन्धू सब के कहाने वाले॥ १॥
सुत मित्र नारि भाई नहीं वक्त के सहाई।
यहां के यहां रहेंगे रिश्ता बढ़ाने वाले॥ २॥
आलम को मैंने देखा अच्छी तरह परेखा।
सब ऊपरी हैं अपने बातें बनाने वाले॥ ३॥
जब कूच मेरा होगा सब कुछ यहीं रहेगा।
आमाल ही रहेंगे दुख से बचाने वाले॥ ४॥
यह अर्ज़ है चरन की कर शुद्ध चाल मन की।
तुझको ही जान जावें मुक्ती दिलाने वाले॥ ५॥

भजन ५१

दो०-हे अखिलेश विशुद्ध विभु, कुछ तो लेहु निहार।
विन अधार किस भांति हम, डूब रहे मँझधार॥

ईश्वर तुम सर्वाधार हो,
मेरी लेहु खबर जल्दी से॥ टेक॥

सबके तुम्हीं सखा पितु माता, धर्म अर्थ कामादि प्रदाता।
शरण आप के जो भी आता, करो उसी को पार हो॥१॥
तुमने रचे पदार्थ सारे, पृथ्वी सूर्य चन्द्र नभ तारे।
आंखों से तुम नहीं निहारे, निराकार करतार हो॥२॥
यद्यपि रहा धर्म से न्यारा, विषय भोग में समय गुजारा।
अब तो आपका लिया सहारा, तुमही परमोदार हो॥३॥
भवसागर से मुझे बचाओ, नैया मेरी पार लगाओ।
वासुदेव पर अब दुर आओ, दीनों के आधार हो॥४॥

भजन ५२

दीजो प्रभु दान अपनी हमें भक्ती का।
हम आये शरण तुम्हारी, तुम रक्षा करो हमारी।
होय सब का कल्यान॥ अपनी०॥
मत करो नाथ अब देरी, हो नष्ट अविद्या मेरी।
मिटै सारा अज्ञान॥ अपनी०॥
भारत की दशा सुधारो, सब के दुःखों को टारो।
होय आनन्द महान॥ अपनी०॥

कहे वासुदेव करजोरी, इक विन्ती सुनियो मोरी।
न होने पावे हान ॥ अपनी० ॥

भजन ५३

भवसागर से नैया दीजो पार उतार।

मुझे काम क्रोध ने घेरा, मँझधार पड़ा है बेड़ा।
किस विध उतरूं पार ॥ भव० ॥
मेरी नाव बही जाती है, यहां कोई नहीं साथी है।
सब मतलब के यार ॥ भव० ॥
सुत मात पिता अरु भ्राता, अब कोई नज़र नहीं आता।
सहायक प्रिय परिवार ॥ भव० ॥
मेरा लोभ और मोह हटाओ, अपनी भक्ती सिखलाओ।
जिससे हो जाऊं पार ॥ भव० ॥
बल वासुदेव को दीजो, यह विनय मेरी सुन लीजो।
तुम्हीं को रहा पुकार ॥ भव० ॥

पूर्वी ५४

पाप से लाद भरी मोरी नैया, डूब रही मँझधार रे।
नदिया अमित अपार बहत है, उमड़ रही जल जल धार रे।
भ्रमर भयानक उठत अनेकन, तापर चलत बयार रे ॥ १ ॥
छाय रह्यो चहुँदिशि अंधियारो, सूझे न हाथ पसार रे।
गरजत घन अरु दमकत दामिन, बर्षत मूसलधार रे ॥ २ ॥

प्रबल ग्राह भक्षण हित मो कहँ, चहुँ दिशि रहे निहार रे।
झांझर गुन विहीन है नैया, टूट गयो पतवार रे॥ ३॥
शिवनारायण काहू करूं अब, कोऊ न खेवनहार रे।
पाहि! पाहि! प्रभुशरण तिहारी, अब मोंहि लेहु उबार रे॥४॥

ग़ज़ल ५५

हुई है हालत बुरी हमारी बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्
कुकर्म हमने किये हैं भारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन
न ध्यान हमको भले का आया, वृथाही सारा समय गँवाया।
जगत् में फँसकर तुम्हें भुलाया, कियाजो हमने वह आगे आया॥
इसीसे धुनते हैं सरकोभारी, बचाओस्वामिन् बचाओस्वामिन् ॥१॥
न कर्म कोई भला किया है, सर्वस्व अपना लुटा दिया है।
किसी की कुछ भी नहीं खता है, कुसूर अपनाही सर्वथा है॥
तुम्हारे आगे है शर्मसारी, बचाओ स्वामिन बचाओस्वामिन्॥२॥
न यश भी तो किया उमर भर, भजाभी यकदम न तुमको ईश्वर।
हुई भलाई न नेक जिस पर, कि हमको होवे फखो तकब्बुर॥
दया तुम्हारी पै आसा भारी, बचाओस्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥३॥
किये पै अपने नजर जो डालें, तो शर्मसारी से मुँह छिपालें॥
सदा से उलटी चली हैं चालें, बताओ कैसे सुनेम पालें॥
जीती बाज़ी सभी है हारी, बचाओस्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥४॥
लगा रखी है तुम्हीं से आशा, पिलाओ अमृत मिटे निराशा।
न कोई तुमसे मिला है बेहतर, हुआ ये हमको अभी है जाहिर॥
क परस्तिश सदातुम्हारी, बचाओस्वामिन् बचाओस्वामिन्॥५॥

ग़ज़ल ५६

हुये हैं अपराध हमसे भारी, दशा सुधारो हमारी भगवन् ।
अजब तरह की है शर्मसारी, दशा सुधारो हमारी भगवन् ॥
बुरे हैं आमाल जिस क़दर हैं, ख़राब अफ़आल सर बसर हैं ।
ज़मीम हैं आदतें हमारी, दशा सुधारो० १ ॥
सितम है ख़िफ़्फ़त ग़ज़ब निदामत, निपटही रुसवाई व ख़िज़ालत ।
है अपने हाथों यह अपनी ख़्वारी, दशा सुधारो० २॥
कभी है गिर्जा में हम भटकते, कभी हैं मसजिदमें सर पटकते ।
बने हैं मन्दिर में गर पुजारी, दशा सुधारो० ३ ॥
दया बिचारी व न्याय छोड़ा, नियम जो धारण किया वह तोड़ा ।
हुये हैं सब नेकियों से आरी, दशा सुधारो० ४ ॥
हैं बन्दे हम नफ़्से परबारी के, ग़ुलाम है हुस्ने ज़ाहिरी के ।
है ग़फ़लते बातिनी से तारी, दशा सुधारो ० ५ ॥
कभी हैं देते किसी को धोका, नहीं हृदय को बदी से रोका ।
हिमाक़तों ने है अक़्ल मारी, दशा सुधारो० ६ ॥
अहंकार वह हमको ऐसा भाया, कि अपना कर्त्तव्य तक भुलाया ।
न ज़िक्र हक़ है न हम्द बारी, दशा सुधारो० ७ ॥
प्रभू तुम्हीं से विनय है अबतो, शरण में अपनी क़बूलो अबतो ।
रहें सुनाते क्या आहो ज़ारी, दशा सुधारो० ८ ॥

ग़ज़ल ५७

बहुत आश तुमसे लगाई हुई है ।
न क्यों मेरी अब तक सुनाई हुई है ॥

सुना था कि तुमने बहुत पापी तारे।
जभी से मैंने लौ लगाई हुई है॥
गरीबन निवाजीकी सुनकरके शुहरत।
तबीयत मेरी तुझपै आई हुई है॥
जहूरा है प्यारे तेरा कुल जहां में।
तेरा ज्योति घट घट समाई हुई है॥
तू साहब है सबका व नाचीज़ हूँ मैं।
शरण ली तो मैं, क्या बुराई हुई है॥
किये पतित उद्धार तुमने हजारों।
मेरी बार क्यों नींद आई हुई है॥
तेरे दरपै बल्देव अबतो पड़ा है।
कहो नाथ क्यों देर लाई हुई है॥

भजन ५८

मेरी सुनियो नाथ पुकार, सबके हितु कहाने वाले।
यहां थी पहले धर्म बहार, अबदी सब ने हिम्मत हार
होगा तुमसे ईश सुधार, सबके धीर बँधाने वाले १
पहले यहां पर थे ब्रह्मचारी, उनकी जगह हुये व्यभिचारी
वेश्या लगतीं जिनको प्यारी, ऐसे पाप कमाने वाले २
है फिर तुमसे ईसे पुकार, नैया करो हमारी पार
यह तो डोले है मँझधार, बेड़ा पार लगाने वाले ३
कहता रामप्रसाद है टेर, मेरी दशा लीजिये हेर
कुछ न होवे इसमें देर, तुमने बड़े २ काज सँभाले ४

भजन ५९

प्रभो प्रभु पार उतारो, धर्म की नाव पड़ी मँझधार।
मतवादी ही मगर मच्छ हैं, रहे जो टक्कर मार॥ ध० १॥
अन्धकार इंजील कुरां का, सूझे वार न पार।
पौराणिक चट्टान राह में, पाप है भाटा ज्वार॥ ध० २॥
रूको दशा की आंधी आई, झूठ की बरस धार।
विषय भोग का जल चढ़ आया, किश्ती डूबन हार॥ ध० ३॥
कर से छूट गई श्रुति पल्ली, कैसे होवें पार।
सत्य का सूर्य घटा में छुप गया, छाया है अंधकार॥ ध० ४॥
ब्राह्मण जो मल्लाह थे इसके, सो गये पैर पसार।
विनय यही बाबू की ईश्वर, करो वेगि उद्धार॥ ध० ५॥

भजन ६०

तुमहीं अब नाथ उबारो, भारत दुखसागर में डूबता।
अति आरत भारत नरनारी, कहां लग सहैं विपति अति भारी।
देख रहे अब ओर तुम्हारी, हितू न कोई सूझता॥ तुम० १॥
दशा भई है दीन हमारी, क्षमा करो सब चूक बिसारी।
तुम सर्वज्ञ सकलदुखहारी, करो दया की पूरता॥ तुम० २॥
भारत सुतन फूट फल खाया, याते दुसह रोग बढ़ि आया।
बढ़त जात नहिं घटत घटाया, हठधर्मी अरु मूढ़ता॥ तुम० ३॥
जो जो कुछ हम यतन बिचारे, झूठ पड़े मनोरथ सारे।
तभी तुम्हारी शरण सिधारे, भूल गये निज शूरता॥ तुम० ४॥

भारत की अब दशा सुधारो, करुणामय करुणा कर डारो।
सब प्रकार बलदेव तुम्हारो, दमिये इसकी क्रूरता ॥ तुम० ५ ॥

गजल ६१

तेरी शरण में आन के सर को झुकाते हैं।
ईश्वर तुझी को जान के आनन्द पाते हैं ॥
दुनियां में तुझ से ज्यादा कोई दीखता नहीं।
सब से हटा के दिल को तुझी से लगाते हैं ॥
मुद्दत हुई भटकते हुए खाक छानते।
दे ज्ञान हमको तुझ पै हम विश्वास लाते हैं ॥
माता पिता अजीजो अकारिब कोई नहीं।
यह हमने खूब जान लिया झूठे नाते हैं ॥
अफ़सोस का मुक़ाम है हमें सोचते नहीं।
इकजाई तुझ को मान के क़ाबा में जाते हैं ॥
मूरखपने से लोभ के फन्दे में आन कर।
तुझ को नचा के रास में पैसे उधाते हैं ॥
शर्मा जमीं के पर्दे में करदो यह मुश्तहर।
वैदिक धरम को छोड़ के हम दुख उठाते हैं ॥

भजन ६२

ईश्वर करो दूर हमारी, सब बुरी वासना मनकी।
यह चंचल पापी नहिं रुकता, ज्ञान ध्यान की ओर न झुकता।

तुझसे हा ! फिरता है लुकता बड़ा दुष्ट है भारी ॥
कुछ भय नहीं वेद वचन की ॥ सब बुरी वासना० १ ॥
संध्या करने में नहिं लगता, कर्म धर्म से कोसों भगता ।
विषय भोग में दूना जमता, खोई आयू सारी ॥
इच्छा नहीं करी भजन की ॥ सब बुरी वासना० २ ॥
अनित्य वस्तु से हित कीना, योग आदि का नाम न लीना ।
ज़हर पिया अमृत तज दीना माना नहीं अनारी ॥
रही सदा लालसा धन की ॥ सब बुरी वासना० ३ ॥
कभी नहीं तेरा गुण गाया, राग द्वेष में समय गँवाया ।
उच्च दशा से मुझे गिराया, अब है शरण मुरारी ॥
काटो बेड़ी बन्धन की ॥ सब बुरी वासना० ४ ॥

ग़ज़ल ६३

जगदीश शान्ति शीलता मुझ में बढ़ाइये ।
अपनी कृपा की पूर्णता कर यों दिखाइये ॥
होकर के साक्षात् मेरे मन में आइये ।
और आके यहां फिर कभी बाहर न जाइये ॥
अन्तःकरण को ज्ञान से भरपूर कीजिये ।
सब भांति से अज्ञानता मेरी मिटाइये ॥
लौलीन आप में रहे भागा फिरे न मन ।
इस के लिये विवेक का पहरा बिठाइये ॥
दुनियां के जमघटों से अलग करके रातदिन ।

अपनाही प्रेम मन में मेरे खुद बढ़ाइये ॥
बेखुद मुझे हमेशा रखे आपकी लगन ।
प्याला मुझे निज प्रेम का आकर पिलाइये ॥
भूला फिरू हूं खाता हूं पग २ पै ठोकरें ।
जल्दी से मुझको रास्ता सीधा बताइये ॥
अनुकूल सारी जिन्दगी, अपनी बनाऊं मैं ।
अहकाम वेद कानों में मेरे सुनाइये ॥
भारी प्रलोभनों ने है घेरा हुआ मुझे ।
निष्कर्म के आधिक्य से बरियत कराइये ॥
पापों की वासना से मेरे मन में इन दिनों ।
फैली हुई अनुताप मय अग्नि बुझाइये ॥
भिक्षा मैं मांगता हूं तेरे दर पै, प्रेम से ।
हृदभूमि में आनन्द की गंगा बहाइये ॥
बस आप का भरोसा है हू आपकी शरण ।
जीवन मरण के रोग से मुझको बचाइये ॥
केवल है प्राप्ति आपकी करना सुखों का हेतु ।
इस कार्य की शुभ कामना पैदा कराइये ॥

भजन ६४

मुझे भवसागर से लीजिये, करुणानिधि वेगि उबारी ।
बीच भँवर में पड़ी नाव है, कैसे निकले नहीं ताव है ।
मिटगया मेरा सभी दाव है, कर निस्तारा दीजिये ॥
विपता है सिर पै भारी ॥ करुणा निधि० १॥

अलख निरंजन है अविनाशी, पारब्रह्म घट २ के वासी।
सकल सृष्टि कर्त्ता सुखराशी, भारी करुणा कीजिये॥
सुधबुध खोदी है सारी॥ करुणा निधि० २॥
हमने बहुतक कष्ट उठाया, नहीं कभी किंचित सुखपाया।
अबतो तुम से ध्यान लगाया, अपने जान पसीजिये॥
करते हैं भक्ति तुम्हारी॥ करुणा निधि० ३॥
दीनों को तुम पार लगाते, करुणा का नहिं भाव मिटाते।
सोहन लाल सदा गुण गाते, पार हमें भी कीजिये॥
हम दीनों की है बारी॥ करुणा निधि० ४॥

भजन ६५

प्रभु रक्षक मेरा, प्रभु रक्षक मेरा, मुझको सदा है सहारा तेरा।

जल थल में तू ही व्यापक है हे प्रभु सर्वाधार।
ऋषि मुनि ज्ञानी ध्यानी भी तो पावें न तेरा पार॥ प्रभु० १॥
अगम अथाह तुही सर्वोत्तम जग का पालन हार।
आदि अन्त तेरा नहिं स्वामी तुही करे संहार॥ प्रभु० २॥
मुर्ख लोग तेरा बतलावें जग होना औतार।
कहां से आवे सब में है जब छोड़ा हाय विचार॥ प्रभु० ३॥
तेरी सत्ता सब में फैली रचना है संसार।
शरण रहूँ मैं तेरी स्वामी जल्दी से दे तार॥ प्रभु० ४॥
कर्त्ता धर्त्ता जीव मात्र का तुझ को कर स्वीकार।
पाठक उर आनन्द मनाता सहित कुटुँब परिवार॥ प्रभु० ५॥

भजन ६६

जगत् पिता हम तेरी ही नित आशा करें।
जगत् पिता हम अज्ञानीजन तेरीही नित आशा करें॥
तूने अपना ज्ञान दिया, सूर्य्य द्युति मान दिया।
आवश्यक सामान दिया, बुद्धि का फिर दान दिया॥
मट्टी पानी वायु अग्नी, लाखों प्राणी है लासानी।
ज्ञानी ध्यानी जान, सदा करते तेरा ध्यान, हम निर्गुण औगुन वारे तेरी शरण परें॥ जगत पि० १॥
दोहा–तू घट घट के बीच है, व्यापक सर्वाधार।
पै हम मूढ़ कुबुद्धि वश, तुझ को रहे विसार॥
सुधार, पालन हार! तू निर्धार! दुःखहार! हो संसार पार, पाठक जन आनन्द भरें॥ जगत् पि० २॥

ग़ज़ल ६७

अब तो प्रभु दया करो आया हूं मैं तेरी शरण।
तुमहीं हो सर्वक आत्मा क्लेशों को टारो दुःख हरण॥
भूला हुआ फिरा बहुत मथुरा प्रयाग देखता।
तूहीं बसा है घट मेरे तुझ से मेरी लगी लगन॥
मुझ को मिले जो पादड़ी ईसू बताया सुत तेरा।
कैसे भरोसा होसके तुम हो प्रभु अनिर्वचन॥
ऐसे ही मौलवी मिले कहते रसूल मित्र है।
सोचा कि न्यायकारी हो विषयों में क्यों करें रमन॥

जैसी कबीर पन्थिये लाखों ने त्रेग था मुझे।
तेरी कृपा से ऐ प्रभू मेरे कटें वे सब विघन॥
तुम्हीं तो न्यायकारी हो तुमहो अजर अमर अभय।
पाठक अधम कृतघ्न है बनता न इस से कुछ यतन॥

गज़ल ६८

दया करो जन पै मेरे स्वामी, तुम्हारा हमने लिया सहारा।
तुम्हीं हो कर्ता तुम्हीं हो भर्ता, तुम्हीं हो रक्षक हे सर्वाधारा॥
हो सबके घट २ में बसने वाले, न कोई तुम से अलहदा किंचित्।
न होगा वह जन कभी सुखारी, कि जिसने तुमको नहीं विचारा॥
हे सच्चिदानन्द! सर्व सुखमय, ये सारी खल्कत रचाई तुमने।
हमारी हालत सुधारो स्वामी, जगत् के भ्रम में तुम्हें विसारा॥
हे न्यायकारी! हे ज्ञान सिन्धो! पिता हमारे हो प्राण दाता।
विचारा अच्छी तरह तुम्हारा न कोई बेटा न कोई दारा॥
अजर अमर हो अभय अनूपम, तथा अगोचर अनादि अविचल।
नियम में स्थिर हैं सूर्य पृथ्वी, आकाश के लोक चन्द्र तारा॥
तुम्हारी सत्ता बड़ी अनोखी, क्या हम से जन उसका पार पावें।
ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर, बताते पाके समाधि द्वारा॥
है इच्छा पाठक की ऐ प्रभू जी, तुम्हें न दिल से कभी विसारें।
रहें भलाई में नित्य तत्पर, लिया है आश्रय तभी तुम्हारा॥

भजन ६९

सत्ता तुम्हारी बुद्धि हमारी ये क्या विचारी पाती है।

हे न्यायकारी ! हे निर्विकारी ! ये आयु सारी जाती है ॥
आगम अपारी रचन तिहारी आत्म हमारी भाती है ।
तुही प्रभु अब अपनी दया कर ज्ञान दे हम को तिमिर मिटाकर ।
मोह घटा को शीघ्र हटा यह क्रोध घटा दुख दाई घटा ॥
हे लोभ डटा तुझे नहीं रटा जिससे पावें प्रकाशी छटा १ सच्चा

भजन ७०

तूही है प्रभु नाथ हमारा, तूही दुख से छुड़ावन हारा ।
तू सच्चिदानन्द अनूपम, हैं हम सारे अधमाधम । जी ।
रखें तेराही एक सहारा ॥ तूही० १ ॥
तुम सब कुछ जानन हारे, हम मोह में हैं मतवारे । जी ।
तुम्हें सब विधि स्वामी निहारा ॥ तूही० २ ॥
तुमहीं करुणा सागर स्वामी, हम क्रोधी भी हैं अरु कामी ॥ जी ।
मैं तो न्याय पै तेरे बलिहारा ॥ तूही० ३ ॥
तुम्हें बुद्धी व मन और वानी, नहीं पावे साधारण ज्ञानी । जी ।
तेरी महिमा है अपरम्पारा ॥ तूही० ४ ॥
यह धर्म की नाव हमारी, प्रभु डोलत है मँझधारी । जी ।
गहरी नदिया है दूर किनारा ॥ तूही० ५ ॥
हमने यत्न भी सब अजमाये, अब तेरी शरण में आये । जी ।
कहे पाठक ये दास तुम्हारा ॥ तूही० ६ ॥

दादरा ७१

प्रभु रक्षा करो मेरी, पिता जी ।

हित चिन्तक तुमसा नहिं कोई, सब सुखदाता, जनके त्राता ।
माता तुमही भ्राता ॥ प्र० १ ॥

न्याय तुम्हारा जग विस्तृत है, तुम्हीं विधाता, यों जग गाता ।
नहीं किसी से नाता ॥ प्र० २ ॥

शान्ति न पावें तेरी शरण तजि, ऋषि प्रकटाता, मुनि दिखलाता ॥
ज्ञान दिलाता धाता ॥ प्र० ३ ॥

पाठक भव दुःख से विकल है, इसे उबारो, शीघ्र सुधारो ।
तुम हो मन के ज्ञाता ॥ प्र० ४ ॥

भजन ७२

तूही प्रभू अविकारी । तूही पर उपकारी ।

तुही प्रभू अविकारी । तूही उपकारी । तूही देवन को देव कहावे स्वामी । मैं मूर्ख, मैं मूर्ख, मेरी टूटी सी नैया लगाओ स्वामी पार ॥ तू ही० ॥ हम सबको प्रभु शरण में लेलो । अपना ज्ञान प्रभु हमको देदो । मुझे पापों से अब तो छुड़ाओ स्वामी तू०॥ काम क्रोध ने मुझे दबाया । लोभ मोह के वश में आया ॥ मुझे अपनी शरण में लेलो स्वामी ॥ तूही० ॥ विद्यादान हम दो स्वामी । बुरे काम हरलो सब स्वामी ॥ हमें विद्या का भूषण पहनाओ स्वामी ॥ तूही० ॥ बिना ज्ञान मूरख हम स्वामी । तूही है प्रभु अन्तर्यामी ॥ मेरी सारी अविद्या मिटाओ स्वामी ॥तूही०॥

भजन ७३

दीनबन्धु दीनों के दुख टाल प्रभु करतार । हमारी, हमारी, तुझ से यही पुकार ॥ होकर व्याकुल शरण तेरी हम आये पालनहार । हरी, हरी, भवसिन्धु पार उतार ॥ मोह माया में मन लपटाया, छल और कपट को जाना प्यारा । धन संग्रह में समय गँवाया निष्फल जन्म गँवाया सारा ॥ मानुषजन्म दियो तुम विषयों ने गन्दा कर दिया सारा । हो बेआश शरण तेरी आयो तुम बिन और न कोई सहारा ॥ तू यहां, तू वहां बे निशां, तू महा- तुझे समान होवे ना- ओंकार, दया, दया, हमपै करो दया ॥ दीन० ॥ दीनदयालु न तुम सम कोई चरण- कमल में देवो वासा नाम तेरा हरी, पतित उधारन भक्ती जल की लागी प्यासा । तू ईश्वर सब का प्रतिपालक हम तेरे दासा अनुदासा नाम जपाओ जल्दी ईश्वर जीवन की है थोड़ी-आसा । ओंकार अपरम्पार, निराकार, निराधार, श्रद्धा हो वेदों पर महान् दया, दया, आजिज पै करो दया ॥ दीन बन्धु० ॥

दादरा ७४

दीनानाथ तुम्हारा सहारा हम्हें ।
यहां सुझ ने कोई हमारा हम्हें ॥

अपने स्वारथ के सब साथी, नहीं दीखे कोई दिलदारा हम्हें १
पड़ी भवर बिच नैया पुरानी, कीजे प्रभू अब पारा हम्हें २

पतित उधार कहाय जगत में, फिर क्यों हाय विसारा हम्हैं ३
काम क्रोध और लोभ मोह ने, सब विधि नाथ विगारा हम्हैं ४
कुछ बलदेव और नहिं चाहै, बस काफी तुम्हारा नजारा हम्हैं ५

राग विष्णुपद ७५

मेरा मन मातंग स्वामि हा ! नेक न वश में आता है ॥ टेक ॥
पापों पापी में ले जाता, सत्य मार्ग से दूर हटाता।
सबसे निपट निराले ढँग का, दुर्मदान्ध कहलाता है ॥ मेरा० १ ॥
बढ़ने नहीं बोधबल देता, बुद्धि विचारी को हरलेता।
सर्व प्रकार प्रवलता अपनी, सिद्ध हुई दरसाता है ॥ मेरा० २ ॥
कोसों की चक्कर फर लगाता, एकघड़ी विश्राम न पाता।
मेरे जैसे दुर्बलांग का, या विधि हृदय जलाता है ॥ मेरा० ३ ॥
सामाधिक साधन विधि खोता, कर शुभ कर्म सचेत न होना।
हा तब कृपा अमर हो कैसे, विषरस घोल पिलाता है ॥ मेरा० ४ ॥

ग़ज़ल ७६

दयामय छोड़कर तुझको शरण किसकी भला जाऊं।
तुम्हीं रक्षक तुम्हीं पोषक कहो पितु मात कहँ पाऊं ॥
पदारथ प्राकृतिक जेते न शान्ती दा न देवेंगे।
सभी कुछ करलिये अनुभव भला फिर क्यों मैं अजमाऊं ॥
जहां दे बैठते उत्तर सखा संसार सम्बन्धी।
वहां तेरे भरोसे पर प्रभू निर्भय मैं कहलाऊं ॥

अँधेरी रात भयकारी जहां सुन सान जंगल हो।
घिरा हूं दुष्ट जीवों से वहां भी मैं न घबराऊं॥
तुम्हीं स्वामी सुखद मेरे तुम्हीं प्राणों के प्यारे हो।
हो पाठक पर दया दृष्टी तेरा दिन रैन गुण गाऊं॥

भजन ७७

मेरी पड़ी भँवर में नैया, नाथ इसे तारदे ३ ॥ टेक ॥
नहीं आवैं नजर किनारे, हम इसी से हिम्मत हारे।
हैं त्रिविध दुखों के मारे, कृपा कर इन्हें टारदे ३ ॥ मेरी० १ ॥
मेरे पांचो तो वैरी संग में, नहिं बाहर भीतर इसी अंगमें।
करदिया इन्होंने तंग मैं, नाथ इन्हें मारदे ३ ॥ मेरी०० २ ॥
यह मनुष्य देह दुशवार है, यह मौका न बारम्बार है।
हे ईश्वर तू! सदाधार है, जीवन का हम्हें सारदे ३ मेरी० ३ ॥
जो तेरे दरपै आवै, वह मन इच्छा फल पावै।
पद तेजसिंह कथ गावै, हम्हें भी फल चारदे ३ ॥ मेरी० ४ ॥

भजन काफ़ी ७८

राखो २ प्रभु जन की लाज।
आयो शरन तुम्हारी कैसी तुम कैसी तुम देर लगाई।
करो हमरी सहाई, तुम जन सुखदाई, मेरी सुरत बिसारी॥राखो०१॥
दीजे प्रभु दीजे प्रभु, बल बुद्धि दान, राख लीजे मेरो मान।
तुम सर्व शक्तिमान, सदा दीन हितकारी ॥ राखो० २॥
विनती करत तेरो दास बलदेव, तुम देवन के देव, मेरी सुध

क्षिन लेव, तुम दीन दुख हारी ॥ राखो० ३ ॥

लावनी ७६

तुम सुनों दीन के नाथ विनय यह मेरी ।
कर गहो आपनो जानि करो ना देरी ॥
यह दास आप ही की पनाह में आया ।
रख लीजे लाज महाराज करिये अब दाया ॥
तव नाम अनन्त अपार वेद में गाया ।
गुण गावत शुक सनकादि पार नहिं पाया ॥
मैं क्या वर्नन कर सकूं अलप मति मेरी ॥ कर० १ ॥
तुम निर्विकार निर्मल पवित्र हो स्वामी ।
मैं महामलिन मतिमन्द कुटिल खल कामी ॥
सच्चिदानन्द सर्वज्ञ सकल घट यामी ।
मोहिं कीजे नाथ अब शुद्ध जानि अनुगामी ॥
देवो आनँद पद में वास आस निरवेरी ॥ कर० २ ॥
इस जगत् में जन्मत मरत महा दुख पाया ।
लख चौरासी में भ्रमत २ घबड़ाया ॥
पाया जब भारी क्लेश समीप सिधाया ।
करुणानिधान फिर क्यों न तर्स उर आया ॥
काटो करुणामय कठिन कर्म की वेरी ॥ कर० ३ ॥
मैं किसे सुनाऊं व्यथा नाथ निज मन की ।
यहां अपना कोई नहीं आश करूं जिसकी ॥

निज स्वारथ को संसार आश करे धनकी ।
तुमही जानत सर्वज्ञ पीर निज जन की ॥
अति आरत है बलदेव कहत यह टेरी ॥ कर० ४ ॥

भजन ८०

कीजे वेगि सहाय प्रभू मैं तो शरन में आया ।
अगम अगोचर नाम तिहारो, चारों वेद ने गाया हरी ॥ मैं० ॥
महिमा तेरी वरनी न जावे, अद्भुत जगत रचाया हरी ॥ मैं० ॥
ऋषि मुनि प्रभु तेरा ध्यान लगावें, अन्त तेरा नहीं पाया हरी ॥मैं०॥
गंगाराम तेरा यश गावे, तुझ से ही ध्यान लगाया हरी ॥ मैं० ॥

दादरा ८१

हमें आशा पिता है तुम्हारी ।
जननी जनक प्रभु तुमही हमारे । कुल परिवारा, निज सुत दारा, है सब स्वारथ का संसारा । हा ! हमें आशा० १ ॥
अनुपम दयालु दया दृष्टि कीजै । काम अरु क्रोधा, हैं बड़े योधा, करन देत नहीं सत्य का बोधा । हा ! हमें आशा० २ ॥
निशदिन मुझे स्वामी आलस ने घेरा । वृद्धि आई दुख अधिकाई, होत नहीं अब कोई सहाई । हा ! हमें आशा० ३ ॥
बिगड़ी दशा को सुधारो दयामय । मदन मुरारी, कहत पुकारी मेरे हेत क्यों करत अवारी । हा ! हमें आशा० ४ ॥

भजन ८२

है विनती तुम से हमारी, प्रभु जी बार बार बार ।
हम आशा करें तुम्हारी, तुम हो सब के हितकारी ।
करो पार यह नाव हमारी, जगदाधार धार धार ॥ है० १ ॥
है तुम्हारा हमें सहारा, नहीं और है कोई हमारा ।
क्या भ्रात बन्धु सुत दारा, करे जो पार पार पार ॥ है० २ ॥
ऐसी है तुम्हारी प्रभुताई, पर्वत से कर दो राई ।
वेदों ने प्रशंसा गाई, सर्वाधार धार धार ॥ है० ३ ॥
प्रभु तुम दुःख मिटाओ, मेरा लोभ मोह विनशाओ ।
सुखदायक भक्ति सिखाओ, हो जाऊं पार पार पार ॥ है० ४ ॥

भजन ८३

कुछ नहीं है पास हमारे, प्रभु क्या तेरी भेंट करूं ।
खाली हाथ यहां पर आया, नहीं साथ कुछ अपने लाया ।
कोई भी न पदारथ पाया, सन्मुख जिसे धरूं ॥ कुछ० १ ॥
मूरख तुझ को भोग लगावें, जल देवें और पट पहनावें ।
फिर अपना अहसान जतावें, कहते हुए डरूं ॥ कुछ० २ ॥
जीवन मूल पदारथ जो हैं, दिये हुए आप ही के सो हैं ।
अपने कहे मूर्ख नर वो हैं, मैं तो शरण परूं ॥ कुछ० ३ ॥
बड़ा यहां पर धोखा खाया, अधम प्रकृति से चित्त लगाया ।
शर्म्मा नहीं ईश गुण गाया, इस से दुःख भरूं ॥ कुछ० ४ ॥

भजन ८४

ईश्वर निराकार, मेटो ताप संसार के।
त्राहिमाम् त्राहिमाम् त्राहिमाम् त्राहिमाम् ॥
प्रभो ! प्रभो !! प्रभो !!! प्रभो !!!!

हमपर, इनपर, उनपर, सबपर, अपनी दया कर करुणा सागर।
हमने तेरा ध्यान भुलाया, वेदों का विज्ञान भुलाया ॥
होम यज्ञ और दान भुलाया, यथा योग्य सन्मान भुलाया।
हरी ! हरी !! हरी !!! हरी !!!!

दाता धाता जग के त्राता, पाठक तेरी स्तुति गाता।
पाहिमाम् पाहिमाम् पाहिमाम् पाहिमाम् ॥

भजन ८५

शरण मैं तेरी आया प्रभु अब भटक २ गया हार।
कोई नहीं बिन तेरे मददगार ॥

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, ढूंढा सब संसार।
तूही तूही है दुख का मोचनहार ॥

मैं पापी तुम पतित उधारन, वेग कृपा कर मोहि उबारो।
रैन दिवस फिरा धन के कारन, लिया न इक छिन नाम तुम्हारो
नाम पिता तेरा कष्ट निवारण, पाप ताप प्रभु मेरे टारो।

सत् विद्या को कण्ठ में धारया, छल और कपट रहे सब न्यारो ॥
तू करतार, सिरजनहार, तेरा कार अपरम्पार मैं बलिहार।
तेरा मुझे अधार, दाता दाता, तुम हो मोक्ष के दाता ॥
मोसम और न कोई पापी, सब पतितन में नामी भारा।
और ठौर जब कोई न पाया, तब पाया एक तेरा द्वारा ॥
सुख के हैं सब मेरे सनेही, मात पिता भगिनी सुत दारा।
सारी उमर हा! पाप कमाया, क्योंकर हो मेरा निस्तार ॥
तू दयाल, तू कृपाल तु प्रतिपाल, तू रक्षपाल, मेरा हाल।
तुझ पै आशकार, खन्ना तेरा अलीम गुनहगार ॥

भजन ८६

दीनानाथ दया कर वेग, नैया भारत पार लगाओ। टेक,
नैया पड़ी बीच मँझधार, पाता नहीं वार और पार।
मचरहा भारी हाहाकार, ईश्वर! तुमहीं इसे बचाओ ॥दीना०१॥
छाया हुआ अँधेर महान, सक्ते नहीं हैं कुछ पहिचान।
ग़ाफ़िल पड़े हैं किश्तीवान, इनको अबभी चेत कराओ ॥दीना०२॥
पड़ रहे महामारी और काल, होगया हाल बहुत बेहाल।
ईश्वर! लीजै तुर्त सँभाल, इसमें नेक न देर लगाओ ॥दीना०३॥
इस में हैं जो लोग सवार, कर रहे आपस में तकरार।
उनमें बढ़गया पोच विचार, उनमें मेल मिलापबढाओ ॥दीना०४॥
फँसकर खुदग़र्ज़ी में पापी, अब भी कर रहे आपा धापी।
मूरख समझे नहीं कदापी, चाहे कितनाही समझाओ ॥दीना०५॥

तुम विन हे प्रभु ! दीनानाथ, देगा कौन विपति में साथ ।
स्वामी बढ़ा दया का हाथ, तट की ओर खैंच लेजाओ ॥दीना०६॥
कहता सालिग्राम पुकार, तुमसे हे हरि ! जगदाधार ।
होने पावै नहीं अबार, अबतो करुणा हस्त बढ़ाओ ॥दीना०७॥

दादरा ८७

प्रभु नैया किनारे लगादो जी ।

सोये पडे हैं सारे खिवैया, निद्रा से इनको जगादो जी ॥ १
डोल रही है नैया भंवर में, करुणा हस्त बढ़ादो जी ॥ २
डूबने में कुछ कसर नहीं है, देकर सहारा बचादो जी ॥ ३
भटक रहे हैं अन्धकार में, भूलों को राह बतादो जी ॥ ४
वैदिक मारग पर हम सब को, फिर आरूढ़ करादो जी ॥ ५
सत्य धर्म की देकर औषधि, मुर्दों का जिन्दा बनादो जी ॥ ६
कुहतो वबा ने दुखित किये हैं, इनको यहां से भगादो जी ॥ ७
सालिग्राम कहे प्रभु मेरी, नैया पार लगादो जी ॥ ८

भजन ८८

निरन्तर तेरा ध्यान धरूं । टेक,
भक्ति बढ़े तव चरण सुखावह, दुष्कृत नाहिं करूँ ।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूँ ॥ १ ॥
भवसागर की धार अगम है, धीरज धार तरूँ ।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूँ ॥ २ ॥

'कर्ण' कहे भटकूं न शान्ति लहु, उर आनन्द भरूँ।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूँ ॥ ३ ॥

भजन ८६

विनती करुणा निधान निधान सुनिये मेरी भगवान !
सुनिये मेरी भगवान !! सुनिये मेरी भगवान !!! विनती० ॥
करो शुद्ध जीवन, चलन और तन मन, हृदय में उत्पन्न हो तेरी लगन। दयालु, कृपालु, रक्षा करो, मांगू यही वरदान ॥ विनती० ॥ भक्ती न शुद्धी, न बल है, न बुद्धी, विद्या न शक्ती, सदर तेरी आस। धरम. करम. जनम सुधार, दूर करो अज्ञान ॥ विनती० ॥ आजिज़ हैं बन्दे तेरे दर पै आये, ऐ दानी हमें दान भक्ती का दो। पुकार, हरबार, स्वीकार करो, अय सर्व शक्तिमान ॥ विनती० ॥

भजन ९०

सर्व नियन्ता स्वामी जन के दुखके मोचन हार।
रक्षक ! रक्षक ! सहायक सर्वाधार ॥ सर्व० ॥
काम क्रोध और लोभ मोह में, फँसा रहा तुझ नहीं विचारा।
जगन्नाथ काशी अरु मथुरा, फिरा भटकता दर दर मारा ॥
धन अरु कुटुम्ब सहायक समझा, अब जाना वह भी निःसारा।
किसकी आस करूं मैं भगवन, तुझ बिन नहीं कोई और सहारा ॥
परमेश्वर ! जगदीश्वर ! सर्वेश्वर ! विश्वम्भर !
पाठकको सुन पुकार-प्रभु ! प्रभु ! निज जनको शीघ्र उबार ॥सर्व०॥

कव्वाली ९१

तुमही पिता हमारे, हो वेद ज्ञान वाले।
जग में भी रम रहे हो, हो बेनिशान वाले॥
छिन छिन तुम्हीं को ध्याऊं, ऐ न्यायकारी स्वामी।
ज्योती तुम्हारी चमके, हो चन्द्र भान वाले॥
दुखों से तुम छुड़ा दो, हम दास हैं तुम्हारे।
सिखला दो अपनी भक्ती, आनन्द खान वाले॥
पाठक के तुम हो सर्वस, ऐ दीनबन्धु स्वामी।
आवागमन छुड़ा दो, हो मोक्ष दान वाले॥

ग़ज़ल ९२

बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को क़रारी है।
कमल ज्यों नीर बिन सूखे, पपीहा ध्वनि पुकारी है।
बिना जल मीन नहिं जावे, वही गति अब हमारी है॥ बिना०
नहीं है और की इच्छा, तेरा ही नाम कारी है।
फिरा दृग दे इधर को तू, यही बिनती हमारी है॥ बिना०
भला कैसे हो दृग ? लगी मिटो श्रुतबोधिनी विद्या।
बढ़ा दे फेर इसको अब यही उर आश धारी है॥ बिना०
न देखूं जब तलक तुमको मुझे जीना भी भारी है।
मुझे दर्शन दिखादे क्यों वृथा सुध बुध बिसारी है॥ बिना०
नहीं हम मान के भूखे नहीं दौलत पियारी है।
फ़कत चाहें शरण तेरी निहाल ने यों पुकारी है॥ बिना०

भजन ६३

तुमही रक्षक हो महाराज! दीनानाथ कहाने वाले ॥ टेक ॥

हम तो पापों में हैं लीन, कुछ नहिं रहा ठिकाने दीन।
बनगये बुद्धि विवेक विहीन, विषरस पान करानेवाले ॥ तु०
तुमहीं सब के हो आधार, जाना हमने इसे विचार।
पूरा न्याय विवेचन धार हो तुम न्याय चुकाने वाले ॥ तु०
देते दुष्ट जनों को दण्ड, करके धारण रूप प्रचण्ड।
तुम में रौद्र प्रभाव अखण्ड, क्या गुण गावैं गानेवाले ॥ तु०
हम सब तुम्हरी हैं सन्तान, अपना चाह रहे कल्यान।
पाठक त्यागे भ्रम अज्ञान, हों सब तुम्हरे ध्याने वाले ॥ तु०

लावनी ६४

अय सनम तू दिखा, मुझे जलवा ज़रा, कहां जाके छुपा,
नहीं आया नज़र।
मैंने ढूंढ़ा जंहान, सब दोनों मकान, नहीं पाया निशान,
तू गया किधर ॥
मसजिद मेंभी जा, मैंने सिजदा किया, चित गहरा दिया,
नहीं मिला मगर।
गया गंगो जमन, नहिं दिल को अमन, सहरा ओ चमन,
नहीं आया खबर ॥
काबा में गया, वहां तू न मिला, मैंने हज भी किया,
तेरी खातिर।

वैरागी हुआ, सर्व त्यागी हुआ, बड़ भागी हुआ,
कहना के फकर ॥
तू मिला ही नहीं, मुझे माहजवीं, दिल बेतसकीं, रहता,
मुजतर ॥ मैंने ढूंढा जहान० १ ॥
मन्दिर में भी जा, मैंने सर को झुका, लिया तिलक लगा,
पूजे ठाकुर ।
सभी देखे पुरान, पढ़ी आयत कुरान, तू रहा ही निहां,
न हुआ ज़ाहिर ॥
कभी शिव जी के जा, वेल पत्ती चढ़ा, कभी डौंरू बजा के
कहा हर हर ।
कभी आफताब, पूजा शिताब, इसे दिया आब, नहा
धोके फजर ॥
मैं शबो रोज, फिरा गम अन्दोज, आतिश बशोज, कभी
बनके नघर ॥ मैंने ढूंढा जहान० २ ॥
उर धारे मज़हब, मैंने तेरे सबब, सूझा कोई न ढब,
तो हुआ शशदर ।
मैं हुआ हैरा, अब जाऊं कहां, कर सनम अयां,
तूही आकर ॥
जब हार चला, तो ईसाई मिला, उसने यूं कहा,
तुम आओ इधर ।
मैं गया वहां, हुआ इंजीलख्वां, मेरा दिल नादान,
गया गिरजाघर ॥

तू मिला न सनम, मुझ को इकदम, लगा दुगना ग़म,
दिल को आखिर ॥ मैंने ढूंढा० ३ ॥

जब ढूंढ भाल, हुआ बेहाल, पाया विसाल,
दिल के भीतर ।

खुला दशम द्वार, मिला अपना यार, किया खूब प्यार,
गले मिल मिल कर ॥

बधावा राम, कर प्राणायाम, तू सुबू शाम, मुतलक़
नहीं डर ।

वीर भान, यह ठीक जान, दिल में पहचान,
अपना दिलवर ॥

खन्नादास, मत हो निरास, दिलवर के पास, रहो शामो
सहर ॥ मैंने ढूंढा जहान० ४ ॥

ग़ज़ल ६५

रहा मैं डूब भवनिधि में, उबारोगे तो क्या होगा ।
तसद्दुक़ जानो दिल तुम पर, निहारोगे तो क्या होगा ॥
हो लड़का कैसाही नाक़िस, पिता को रहम लाज़िम है ।
मुझे कर माफ ! बिगडी को, सँभारोगे तो क्या होगा ॥
अधम कैसाही गो मैं हूं, पतित पावन हो तुम स्वामी ।
सभी मम दोष की गणना, विसारोगे तो क्या होगा ॥
मुझे मद मोह आलस ने, प्रभू कुछ दिन से घेरा है ।
इन्हें ले ज्ञान का खंजर, जो मारोगे तो क्या होगा ॥
शरण ली आप की अब तो, झुकाये सर हूँ मैं आगे ।

निगह एक रहम की करके जो तारोगे तो क्या होगा ॥
तुम्हें तज और को पूजें, नवायें सर जो नीचों को ।
ये मूरखता को भारत से, निकारोगे तो क्या होगा ॥
चहै कुछ भी कहो हमको, नहीं घटती है कुछ इज्जत ।
अधम या दास मूरख कह, पुकारोगे तो क्या होगा ॥

भजन ९६

दोहा—विनय करूं कर जोड़ कर, सुनिये नाथ पुकार ।
इस असार संसार से, लीजे मोहि उबार ॥
टेक—करुणानिधि वेगि उबारो, नाथ मेरी विनय तुम्ही से है ।
बनकर अधम अधिक व्यभिचारी, विषय भोग में उमर गुजारी ।
शरणागत अब हुआ तिहारी, चाह नहीं और किसी से है ॥ क० ॥
काम क्रोध ने बहुत सताया, लोभी बन इत उत को धाया ।
सुमिरण में नहिं चित्त लगाया, हुई यह चूक मुझी से है ॥ क० ॥
मन मूरख चहुँ दिशि को धावे, सुत धन दारा में भटकावे ।
आखिर को धक्के ही खावे, पाता दुःख नाफहमी से है ॥ क० ॥
भूपीराज को है शोक ने घेरा, दूर करो तज विलंब घनेरा ।
दीपचन्द एक मित्र है मेरा, इसे भी आश तुम्हीं से है ॥ क० ॥

भजन ९७

जप जगदाधार जीवन प्राण हमारे ।
अज्ञान महा तम टारो, विज्ञान प्रकाश पसारो ।

करो ध्रुव धर्म प्रचार ॥ जीवन० १ ॥
आलस असुर को मारो, पुनि पातक पुंज पजारो ।
हरो भ्रम जनित विकार ॥ जीवन० २ ॥
भवसागर पार उतारो, सुधि लेहु देहु फल चारो ।
दया निधि परम उदार ॥ जीवन० ३ ॥
शिवशंकर नाम तिहारो, सब संकट काटन हारो ।
जपें जन बारंबार ॥ जीवन० ४ ॥

भजन ९८

जा दिन अपनावेंगे आप ।

वेद पढ़ावेंगे हम सबको ज्ञानी गुरु मा बाप ।
स्वामी छूट जायंगे छिन में घोर कुकर्म कलाप १ ॥
पौरुष पावक में पजरेंगे आलस के अभिशाप ।
वैर विसार सुपन्थ गहेंगे करके मेल मिलाप २ ॥
व्रत वारिधि में बूड़ मरेंगे जन्म जन्म के पाप ।
फिर व्याकुल कबहूं न करेंगे मोह शोक सन्ताप ३ ॥
भूले भारत में न बसेंगे दम्भ अविद्या दाप ।
परम शुद्ध वे पद गावेंगे जिन में शंकर छाप ४ ॥

भजन ९९

मेरी नैया पार लगाओ जगत पिता ।
विपता से मुझे बचाओ जगत् पिता ॥

आन पड़ी मझधार में नया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया।
तुमहीं हो एक धीर धरैया, करुणा हस्त बढ़ाओ ॥ जगत्० ॥
मैं मूरख मतिमन्द अनारी, आन पड़ा प्रभु शरण तुम्हारी।
पाऊं किस प्रकार सुख भारी, सुमतिसुधा बरसाओ ॥ जगत्० ॥
मुझ को विद्याहीन जान कर, दानो से भी दीन मानकर।
हे प्रभु लीजे पेख नजर भर, नेक नहीं बिसराओ ॥ जगत्० ॥
कठिन पन्थ घोर देश बिगाना, सूझ पड़े हा नहीं ठिकाना।
हृदय बीच भारी भय माना, हिम्मत फेर बँधाओ ॥ जगत्० ॥

भजन १००

प्रभु विनती सुनो हमारी, हम हैं सब शरण तुम्हारी।

अति गाढ़ मोह तम नाशो, उर विद्या अर्क प्रकाशो (जी)
हों सुखी देश नर नारी ॥ प्रभु विन० १ ॥

सुख दायक मार्ग दिखाओ, दुष्कृति से हमें बचाओ (जी)
हा! बुद्धि गई है मारी ॥ प्रभु विन० २ ॥

धन धैर्य्य प्रतिष्ठा दीजे, शुभ गति अधिकारी कीजे (जी)
यह चाह रहे है भारी ॥ प्रभु विन० ३ ॥

हमसे सब जन सुख पावें, हितकारी भाव बढ़ावें (जी)
ऐसी उर आशा धारी ॥ प्रभु विन० ४ ॥

है जितने मित्र हमारे, हों भक्त अनन्य तुम्हारे (जी)
मिट जाय बुरी मति सारी ॥ प्रभु विन० ५ ॥

भजन १०१

अब तो दया करो करतार ।

विषय भोग में मैंने फँसकर तुम को दिया विसार ।
अपने हित की बात न जानी कैसे हो उद्धार ॥
ज्ञान ध्यान सिखलाकर मुझ को दीजे भवनिधि तार ।
बार बार यह 'कृष्ण' पुकारे अनहित भई विचार ॥

भजन १०२

मोसे भई दयामय भूल ।

तुमसे सुखदाता की स्वामी भक्ति करी न कबूल ॥
फंसा रहा निशि दिन विषयों में इतनी मम उर शूल ।
करो पार तुमही हो मेरे पिता परम सुख मूल ॥

भजन १०३

विनती है मेरी आप से जी ओंकार ।

भारत के वासी नर नारी रहे न अब तो नेक सुखारी ।
श्रेष्ठ आर्य्य से भये अनारी तज वर वेद प्रचार ॥ विनती है० १ ॥
द्वेषभाव आपस में छाया सारा मेल मिलाप मिटाया ।
अबतक भी उर चेत न आया रहे कुमतिही धार ॥ विनती है० २ ॥
भारत फिरसे लासानी हो सच्चा शूर वीर दानी हो ।
कोई न इसमें अज्ञानी हो कुल कठोर महिभार ॥ विनती है० ३ ॥

सबकी कुमति निवारण कीजे विद्या भर घट २ में दीजे।
तेजसिंह को शरण में लीजे हे प्रभु जगदाधार ॥ विनती है० ४ ॥

भजन १०४

प्रभु नाव मेरी मँझधारा, तूही पार लगावनहारा।
यह भँवर बीच में आई, आँधी भी ऊपर छाई (जी)
बस तेरा ही तकूं सहारा ॥ तूही० १ ॥
है पाप बोझ से भारी, चहुँ ओर मगर भयकारी (जी)
हा! मैंने साहस हारा ॥ तूही० २ ॥
अब देर करो मत स्वामी, हे सबके अन्तर्यामी (जी)
गहरी नदिया है दूर किनारा॥ तूही० ३ ॥
कोई साथी काम न आया, अब लेहु खबर जगराया (जी)
कहे जगन ये दास तुम्हारा ॥ तूही० ४ ॥

भजन १०५

प्रभु जग करतार-तुझे नमस्ते मेरा। टेक,
प्रभु आदि अन्त नहिं तेरा, सब तुझ में करें बसेरा।
अमित तेरा विस्तार ॥ तुझे० १ ॥
तेरे गुण ज्ञानी गाते, गाते गाते थक जाते।
है तू अपरम्पार । तुझे० २ ॥
सृष्टी का तू कारण है, तेरा ही उर धारण है।
परम सुख का भण्डार ॥ तुझे० ३ ॥

तू कर्मों का फल देता, न्यायानुसार सुखिलता।
सकें नहीं तुझे विचार ॥ तुझे० ४ ॥
नहीं देह कभी तू धरता, तू अमर कभी नहीं मरता।
कहैं श्रुति शास्त्र पुकार ॥ तुझ० ५ ॥
है तुझ को क्या नहिं प्यारा, हस्ती क्या कीट विचारा।
सबका तू आधार ॥ तुझे० ६ ॥
नहिं हलका नहिं तू भारी, नहीं बाल वृद्ध नर नारी।
पीत सित नहिं रतनार ॥ तुझे० ७ ॥
रस गन्ध रूप नहिं तेरा, नहीं खट्टा मीठा कसेरा।
नहिं कड़वा नहिं खार ॥ तुझे० ८ ॥
मोहि दया दान दे दीजे, उस पार जलधि के कीजे।
जगन् विनवे बहुबार ॥ तुझे० ९ ॥

भजन १०६

प्रभु जग भर्तार, अटल प्रताप तुम्हारा। टेक—
तुम सकल विश्व के स्वामी, हो अगम अगोचर नामी।
दया के भी भण्डार, श्रुति ने सुयश उचारा ॥ प्रभु० १ ॥
तुमही हो अधम उधारण, तुम करते दुःख निवारण।
नहीं तुम हो साकार, हो निर्मल रहित विकारा ॥ प्रभु० २ ॥
तुम अविनाशी घट बासी, हो सब के स्वयं प्रकाशी।
तुमहीं हो प्राणाधार, है महिमा अपरम्पारा ॥ प्रभु० ३ ॥
अद्भुत है तुम्हारी माया, नहिं अन्त किसी ने पाया।
ऋषि मुनि सब गये हार, क्या बरनै जगन विचारा ॥ प्रभु० ४ ॥

भजन १०७

शरणागत पाल कृपाल प्रभो ! हमको एक आश तुम्हारी है ।
तुम्हरे सम दूसर और कोऊ नहिं दीनन को हितकारी है ॥
सुधि लेत सदा सब जीवन की अतिही करुणा विस्तारी है ।
प्रतिपाल करै बिनही बदल अस कौन पिता महतारी है ॥
जब नाथ दया करि देखत हो छुटि जात बिथा संसारी है ।
बिसराय तुम्हैं सुख चाहत जो अस कौन निदान अनारी है ॥
परवाहि तिन्हैं नहिं स्वर्गहु को जिनको तव कीरति प्यारी है ।
धनि है धनि है सुख दायक जो तव प्रेम सुधा अधिकारी है ॥
सब भांति समर्थ सहायक हो तव आश्रित बुद्धि हमारी है ।
परताप नरायन तो तुम्हरे पद पंकज पै बलिहारी है ॥

भजन १०८

करिये स्वीकार, विनती नाथ हमारी ।
आनन्द सुधा बरसाओ, सब के दुख दूर भगाओ ।
कहाओ हरि हितकार ॥ विनती० १ ॥
गौरव के दिवस दिखाओ, व्रत शील सुबोध बनाओ ।
सिखाओ पर उपकार ॥ विनती० २ ॥
ऋजु मारग माहिं चलाओ, नित नीके कर्म कराओ ।
रिझाओ विविध प्रकार ॥ विनती० ३ ॥
माया मय मोह छुड़ाओ, कर्णाधम को अपनाओ ।
लगाओ भव निधि पार ॥ विनती० ४ ॥

पन्द्रह बरस से कम की हैं बीस लाख बेवा।
नित शोक में पती के करती हैं हाहाकारा॥
एक २ बरस की बच्ची जिस देश में हों बेवा।
डूबे न फिर भला क्यों उस देश का सितारा॥
ऋषियों की हाय सन्तति मूरख बनी फिरे है।
हालत को देख जिनकी फटता जिगर हमारा॥
सालिग की हे दयामय है आप से विनय यह।
भारत निवासियों का दुख दूर होय सारा॥

दादरा ११२

स्वामी लीजेगा अब तो निहार, मेरी दीन दशा।
शैर—नमस्ते, धीमहे विज्ञान मुक्ति के दाता।
स्वयम्भू सच्चिदानन्द आपही पिता माता॥
अव्यक्त न्यायी निराकार जगत् है भाता।
तुम्हीं हो स्वामी सखा बन्धु और अन्नदाता॥
सुध लीजेगा सबही प्रकार॥ मेरी० १॥
महादेव हो निर्वैर आप हो ज्ञानी।
कृपालु शील हो अद्वैत प्राण के दानी॥
विभुः रुद्रः गोतीत जोत जग जानी।
हमारा कीजे कल्याण भक्त उर ठानी॥
बिन तुम्हरे न कोई अधार॥ मेरी० २॥
दयालु क्लेश हरो नाशो यह विपत सारी।
उरोत्पन्न जो सन्ताप क्रोध है भारी॥

सदा ही बुद्धि रहे शुद्ध स्वामी हमारी।
बनें सभी के प्रेमी विद्रूप मूलहारी॥
कीजे निर्मल पिता जी विचार॥ मेरी० ३॥

प्राणी भूले हुए जब कि कष्ट पाते हैं।
तो ईश तुमको ही भूले हुए बताते हैं॥
करेंगे जैसा, मिलेगा, यह कहके गाते हैं।
तुम्हें भी कर्म के आधीन कर बनाते हैं॥
प्रेम गति है तुम्हारी अपार॥ मेरी० ४॥

गज़ल ११३

क्यों दीनबन्धु मुझ पै तेरी कुछ दया नहीं।
आश्रित तेरा नहीं हूँ कि तेरी प्रजा नहीं॥
मेरे तो नाथ कोई तुम्हारे बिना नहीं।
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं॥
माना कि मेरे पाप बहुत हैं बड़े प्रभू।
कुछ उनसे न्यूनतर तो तुम्हारी दया नहीं॥
करुणा करोगे क्या मेरे आसू ही देखकर।
जी का भी मेरे दुख तो तुमसे छिपा नहीं॥
जानेगा कोई क्या कि है दासों का तुझको पक्ष।
दुष्टों का सर्वनाश जो तूने किया नहीं॥
क्यों मुझको दुःख देते हैं लेते हैं मेरा शाप।
लोगों का मैंने कुछ भी लिया और दिया नहीं॥

तुम भी शरण न दोगे तो जाऊँगा हा ! कहां ।
अच्छा हूँ या बुरा हूँ किसी और का नहीं ॥

गज़ल ११४

दयानिधान हमारी व्यथा सुनो तो सही ।
पुकार पुत्र की अपने पिता सुनो तो सही ॥
जो अपने लोगों के ऊपर दया नहीं करते ।
कहेगा आप को संसार क्या सुनो तो सही ॥
जो पापियों को भी देते हो शान्ति की आशा ।
कहां गई वह तुम्हारी दया सुनो तो सही ॥
मिलेगा आप को क्या लेके क्षुद्र कीट के प्राण ।
बिगड़ के हम से बनाओगे क्या सुनो तो सही ॥
जो हम से फेरते हो मुँह सदैव हो राजा ।
किसी की और हैं हम क्या प्रजा सुनो तो सही ॥
जो भूल बैठे हो अपने प्रताप को ऐसा ।
तो होगी इस की भला क्या दशा सुनो तो सही ॥

❁ २ उपदेश ज्ञान वैराग्य ❁

भजन ११५

विनती करो दीन दयाल की, जो है सबका हितकारी ।
नहीं भरोसा है पलभर का, काम न आवे कोई घरका ।
सुमिरन करलो जगदीश्वरका, छोड़ो प्रकृति कुचाल की ॥
इतनी है सीख हमारी ॥ जो है सब० १ ॥

जग में कोई नहीं तुम्हारा, जीते जी का धंधा सारा।
किसके मात पिता सुत दारा, पूर्ति न होगी ख्याल की॥
क्यों नाहक उम्र गुजारी॥ जो है सब० २॥
काम क्रोध मद लोभ विसारो, दशों इन्द्रियां अपनी मारो।
एक धर्म को मन में धारो, फांसी ममता जाल की॥
तोड़ो हो मुक्ति तुम्हारी॥ जो है सब० ३॥
बाग बगीचा क्रिला तबेला, दुखदायक तजो सभी झमेला।
आखिर जावे जीव अकेला, घड़ी आवे जब काल की॥
पड़ी दौलत रहे मुरार॥ जो है सब० ४॥

दादरा ११६

भूला डोले जगत में प्रानी।
करत फिरत है मेरी मेरी, सुत कुटुम्ब सम्पति रजधानी॥ १
न्याय अन्याय कछु नहिं जाने, करत फिरत अपने मनमानी॥ २
अपना धरम नहीं पहँचानत, निशि दिन काम करै शैतानी॥ ३
समझाये भी समझत नाहीं, होगी पीछे बहुत हैरानी॥ ४
हटत नहीं बलदेव बदी से, जग में तेरी तनक जिंदगानी॥ ५

ठुमरी ११७

ओङ्कार भजो, अहङ्कार तजो, पछताओ नहीं जो भई सो भई।
अविचार अनीति तजो मनसे, मदमस्त रहो मत यौवन से।
उपकार करो तन मन धनसे, इतनी वय बीत गई सो गई॥१॥
परका दुख देख सहाय करो, निगरे नहिं धर्म्म उपाय करो।

करनी शुभ अवसर पाय करो, अबलौं तुम नींद लई सो लई ॥२॥
कर ध्यान सनातन चाल चलो, अघरूप हुताशन में न जलो।
अबतो अपने दोउ हाथ मलो, तुमने विष बेल बई सो बई ॥३॥

ठुमरी ११८

अबहीं से सुधार करो अपना, नहि बिगरी का कुछ सोच करो।
अति दीन कहा प्रभु शरण गहो मत जीवन में अघ ओघ भरो।
वेदों के उपदेश सुनो, मन के ममता-मय दोष हरो।
विनती किशोर करे सबसे, शिर पै अपने मत दोष धरो॥

ग़ज़ल ११९

परम पिता का प्रेम मन में, जो तेरे मूरख भरा हुआ है।
तो मोक्ष आनन्द हाथ बांधे, हमेशा सन्मुख खड़ा हुआ है॥
है जिनको मुक्ती के पदकी इच्छा, गुजारें आयू वह इस तरह से।
कि तार ईश्वर के जपका मन में, हरघड़ी सायत बँधा हुआ है॥
जगतपिता के जो देखने को, भटकते फिरते हैं बेसमझ हैं।
तलाश उसकी अबस है बाहर, जो अपने अन्दर रमा हुआ है॥
क्लेश क्योंकर न दूरजावें, वह शान्त हरदम न होवे क्योंकर।
कि जिसका ईश्वर की यादमें मन, बड़ी लगन से लगा हुआ है॥
न मनहो स्थिर कभी भी उसका, समाधी उसकी लगे न हर्गिज़।
जो इस जहां के विषयों के अन्दर, आसक्त होकर फँसा हुआ है॥
बुरा जो औरों का चाहते हैं, बुराई होती है आखिर उनकी।

वही भला है कि जिस्से द्वापर, कभी किसी का भला हुआ है ॥
वही जहां में है मर्द मैदां, उसी को होती है कामयाबी।
पराये उपकार पर कमर को, जिस आदमी ने कसा हुआ है ॥
जगन्नियन्ता है सर्व व्यापक, हर एक हरकत वह देखता है।
वह सबसे वाकिफ है जो किसीने, किसी जगहपर कराहुआ है ॥
बुरे अमल की सजा है मिलती, अवश्य इस में नहीं है संशय।
अगरचे जाहिर में कर्म कोई, हरएक नजर से छुपा हुआ है ॥
मनुष्ययोनी का लाभ उन्हीको, उन्हीका जीवन सफल है केवल।
कि जिसने तनमनको मनके निश्चय से, ईश्वर अर्पण कराहुआहै ॥

ग़ज़ल १२०

उस को जो देखना हो, योगी हो ध्यान वाले।
आनन्द हम जो चाहें, हों ब्रह्म ज्ञान वाले ॥१॥
क्या शोक है फिर इसका, गर हम नहीं रहेंगे।
जब रहसके न यहां पर, विक्रम सो शान वाले ॥२॥
वह रोज हो खुशी का, तकदीर में उमर के।
वेदों के मोतकिद हों, ये सब कुरान वाले ॥३॥
वेदों की फिर हकीकत, मालूम हो उन्हें कुछ।
वेदार्थ करना सीखें, इंगलिश जबान वाले ॥४॥
हों ओ३म के उपासक, अमरीका और यूरप।
जापान चीन वाले, हिन्दोस्तान वाले ॥५॥
उन देशों को सुधारें, अब चन्न के आर्य लीडर।

अब तक जो मांस मदिरा, आदि है खाने वाले ॥६॥
हम को तो चाहिये है, एक आत्मिक इमारत।
हम क्या करेंगे बनकर, आली मकान वाले ॥७॥
जितने हैं दृष्टिगोचर, होंगे फ़िदा फ़ना सब।
अदना सी शान वाले, आली निशान वाले ॥८॥

ग़ज़ल १२१

प्रभु को छोड़ कर तूने लगन किस से लगाई है।
हुआ नादान क्यों ऐसा समझ क्या बेच खाई है॥
जो है सब सृष्टि का पालक भुलाया उसको तैं मूरख।
बुतों को पूज कर प्यारे नफ़ा क्या तूने पाई है॥
जो है हर वस्तु में व्यापक ईश निराकार अविनाशी।
बना कर उसका जड़ मूरत मन्दिर में जा बिठाई है॥
वह है मौजूद सब घट में हमेशा देखता सब को।
बदी नेकी का फल देता वह ईश्वर सब का न्याई है॥
नहीं वह जन्म मृत्यू के कभी बन्धन में आता है।
बताकर जन्म क्यों उसको वृथा तुहमत लगाई है॥
छुटा नहीं मैल है मनका नहाया लाख तिर्वेनी।
लिखाया नाम सन्तों में भरी दिल में खुदाई है॥
राम और कृष्ण सत पुरुषों की क्यों निन्दा करे मूरख।
बनाकर स्वांग क्यों तैंने हँसी उनकी कराई है॥
हज़ारों दीन और दुखिया न पाते एक टुकड़ा तक।

तैं दे दे दान दुष्टों को वृथा दौलत लुटाई है ॥
जरा अब होश में आजा उठा गफलत के परदे को।
भजन बलदेव कर उसका जो सब का खुशनुमाई है ॥

भजन १२२

अबतो तज माया मोह भजन हरि कीजै।

क्यों सुख की नींद सोता है, जग पाप बीज बोता है।
अनमोल समय खोता है, फिर अन्त समय रोता है ॥
इस भांति करो तदबीर, मिटै सब पीर, हिय धर धीर।
शरण प्रभु लीजै ॥ अबतो० ॥
जौलों अरोग तन तेरा, निर्बलता ने नहिं घेरा।
करलो सुमिरन प्रभु केरा, मिले अन्त में सुक्ख घनेरा ॥
फिर होत न जप तप ध्यान, मिटत सब ज्ञान, कहालो मान,
ध्यान चित दीजै ॥ अबतो० ॥
यक रोज काल आवेगा, कुछ साथ नहीं जावेगा।
कर मल मल पछितावेगा, कृत कर्म का फल पावेगा ॥
कर भक्ति सुबह अरु शाम, जपो हरि नाम, मिले आराम,
यतन कुछ कीजै ॥ अबतो० ॥
यह मात पिता सुत दारा, नहिं होवेगा कोई तुम्हारा।
तन हूँ है है जरि छारा, जिसका घमंड है सारा ॥
यक धर्म रहेगा साथ, न अरु कुछ तात, मित्र की बात,
ध्यान धरि लीजै ॥ अबतो० ॥

पूर्वी १२३

आनन्द झूला चहे जो झूलन, पैंग विचार बढ़ाय रे।
दया धर्म्म के खम्भे गाड़े, ज्ञान की डोर लगाय रे।
सत्य की पटली पै बैठि प्रेम सों, ध्यान को पैंग लगाय रे।
ह्वै एकाग्र शुद्ध चित झूले, वनिता वृत्ति बिठाय रे॥१॥
दृढ़ आसन सों बैठि धैर्य अवलम्बन छूट न पाय रे।
प्रेम सहित विज्ञान डोर नहिं, सतगुरु जबहिं झुलाय रे।
भूमि गिरन के शोक अरु भयते, निश्चय नय छुट जाय रे॥२॥
शिवनारायण यहि विधि झूलन, ऊर्ध्व पैंग जब जाय रे।
सुन्दर अमर नगर की गलियां, तब कहुं देखन पाय रे॥४॥

कव्वाली १२४

छोड़ो न तुम धरम को, चाहे जान तन से निकले।
सच्चा सखुन हो लेकिन, शीरीं दहन से निकले॥
पाया है उच्च जीवन, इसकी विचारो कीमत।
ऐसा प्रयत्न करिये, अविचार मन से निकले॥
संगति सुजन जनों की करनी सदा भली है।
जिस से कुवासना-मल, अन्तःकरण से निकले॥
उपकार ऐसा करिये, संसार कीर्ति गावे।
स्वार्थन्धता अलहदी मन से वचन से निकले॥
रहना नहीं किसी को इस लोक में सदा है।
कर्त्तव्य की सभी त्रुटि राधाशरण से निकले॥

भजन १२५

टेक-संग धर्म ही चलनहारा, कोई दम का रैन गुजारा।
करो होश लो अब भी जागो, गफलत का निंदिया त्यागो, जो।
रक्खो प्रभु प्रीतम का सहारा ॥ को० १ ॥
जब मृत्यु वारन्ट ले आवे, घड़ी पल नहीं टलने पावे, जी।
रोवे जियरा हो दीन विचारा ॥ को० २ ॥
रोवे सब दिन माय तुम्हारी, छूटे मास जहतिया प्यारी, जी।
जिया नयन दो [illegible]न जल धारा ॥ को० ३ ॥
करो दान धर्म कुछ प्यारो, अपने अन्त समय को सुधारो, जी।
चूका समय न बारम्बारा ॥ को० ४ ॥
हरिश्चन्द्र से सतव्रतधारी, बिके आप भी संग सुत-नारी, जी।
पर धर्म से पग नहीं हारा ॥ को० ५ ॥
विद्या दान है सब सुखकारी, यह गुरुकुल से को अधिकारी, जी
पाठक तन मन धन क्यों न वारा ॥ को० ६ ॥

भजन १२६

दोहा-भाई तू जो लोक में, चाहे निज कल्याण।
तो भज उस को प्रेम से, जो तुझ में रममाण ॥
टेक-प्राणी जप ईश्वर का नाम, किस गफलत में तू सोवे।
चलना है रहना न यहा पर, क्यों सोया होकर तू नेडर।
काल का धौंसा बजे शीश पर, मन होना बदनाम ॥

भजन १३८

ओ३म् जपन क्यों छोड़ दिया ॥ तूने० ॥

काम न छोड़ा क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ।
झूठे जग में दिल ललचाकर, असली वतन क्यों छोड़ दिया ।
कौड़ी को तो खूब सँभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ।
जिस सुमिरन से अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥

भजन १३९

प्यारे प्रीतम से प्रीति लगाओ रे जिन तारनारे ।
बिन भगवान कोई जन तेरे अन्त काम नहिं आवे ॥
वही भगवान, अति दयावान, प्यारे उसी की रहो शरना ।
जो भवसागर तरना, नहिं योनों में दुख भरना ।
वेद चार, बार बार, यही गहे पुकार ।
खज्ञा भजन बिन, सब अकाज, तेरा दान पुण्य करना ।
प्यारे प्रीतम से प्रीति लगाओ रे ॥

भजन १४०

जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम को पाता है ।
वह भय न काल से खाता है, निज मन में धीर बँधाता है ॥
वह शान्तिशील बन जाता है, सब दुख उसका मिटजाता है ।
दुनियां में सब को भाता है, वह महा पुरुष कहलाता है ॥
नहीं कोई उसे थकाता है, नित निर्भय हरियश गाता है ।
जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम० ॥ १ ॥

जो कर्त्ता को बिसराता है, सांसारिक मौज मनाता है।
धार्मिक उत्साह घटाता है, फिर अन्त समय पछताता है ॥
फिर आवागमन में आता है, नहि सुर दुर्लभ तन पाता है।
जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम० ॥ २ ॥
अब वह ही एक दाता है, जो सब का उदर भराता है।
वही कारन करन विधाता है, पापों से हमें बचाता है ॥
वह सब काही पितु माता है, यह वेद हमें सिखलाता है।
जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम० ॥ ३ ॥

ग़ज़ल १४१

जो जगतपिता के प्रेम जल से, यह खेत मन का हरा हुआ।
तो अवश्य होगा कि एक दिन, यह हो फूल फल से फला हुआ ॥
वले चाहिये कि उपासना, में न होने पावे तगाफ़ुली।
रहे ओ३म् शब्द के जाप का, तेरे मन में तार बँधा हुआ ॥
ये उपासना का जो बाग है, सुबह शाम इसकी तू सैर कर।
ये करेगा कुल्फतें दूर सब, ये सरूर से है भरा हुआ ॥
यहां रहती सदा बहार है, यहां से खिज़ां को फरार है।
जो गुजर हो इस में ख्याल का, रहे दिलका गुंचा खिला हुआ ॥
यहांकी फ़िज़ा है वह दिलरुबा, नहीं जिससे दिल हो कभी जुदा।
यहां गुल अजब है खिले हुए, यहां मोक्ष फल है लगा हुआ ॥
जो दगा फरेब से है अलग, वही इस में जाने का मुस्तहक़।
नहि इसकी नसीब उसे हवा, जो विषयों में होवे फँसा हुआ ॥

जो हों धर्म युक्त यती सती, वही पा सकें है यहां जगह।
न सताय उनको क्लेश फिर रहें सब दुखों से बचा हुआ॥
जिसे काशिशों के तुफ़ैल से, जगह इस चमन में अता हुई।
वही आने मरने की क़ैद से, बिला रोक टोक रिहा हुआ॥
तेरी खुश नसीबी है केवल, तेरा इस तरफ को जो मन चला।
ज़रा जल्दी २ क़दम उठा, दरे बाग़ है वह खुला हुआ॥

भजन १४२

हम तालिब हैं उस नूर के, जो नज़र नहीं आता है। टेक,
सब नूरों को बनाया जिसने, अपने नूर को छिपाया जिसने।
अब तक भी न दिखाया जिसने, बैठ रहे हम घूर के।
ढूँढ़े से नहिं पाता है॥ जो नज़र नहीं०॥ १॥
आफ़ताब की ताब नहीं है, माहताब की आब नहीं है।
छिप गई बर्क़ जवाब नहीं है, होश खतम हुये हूर के।
कुल जहां मात खाता है॥ जो नज़र नहीं०॥ २॥
लाखों सरको पटक के मर गये, शकल न देखी भटक के मर गये।
इश्क़ फन्द में अटक के मर गये, जैसे हाल मंसूर के।
चढ़ दार पै इतराता है॥ जो नज़र नहीं०॥ ३॥
नक़ाब ज़ालिम पड़ा ही देखा, जब देखा तब अड़ा ही देखा।
शोर मुल्क में बड़ा ही देखा, चक्कर काटे दूर के।
धोखा को वही आता है॥ जो नज़र नहीं०॥ ४॥

ग़ज़ल १४३

है जिसने सारे विश्व को धारण किया हुआ।
वह है हर एक वस्तु के अन्दर रमा हुआ॥
मिलता नहीं है इस लिये अज्ञानियों को वह।
अज्ञान का है बुद्धि पै परदा पड़ा हुआ॥
दुनियां के दुख रूप समुन्दर से हैं वह पार।
जगदीश से है प्रेम जिन्हों का लगा हुआ॥
सच्ची खुशी से रहते हैं जो जन सदा अलग।
मन जिनका विषय भोग में होवे फँसा हुआ॥
मन तो मलीन वैसा ही मूरख रहा तेरा।
गंगा में रोज़ जाके नहाया तो क्या हुआ॥
सोते हैं खेल कूद में जो उम्र रायगां।
अफसोस उनकी बुद्धि को क्या जाने क्या हुआ॥
अज्ञानियों से रहता है केवल वह दूर दूर।
खुल जाय ज्ञान-चक्षु तो वह है मिला हुआ॥

भजन १४४

सुमिर हरदम तू भगवन को, न खाली छोड़ इस मन को॥
मन खाली ऐसा बुरा, जैसा मर्द बेकार।
या बन जावे चोर यह, या होवे बीमार॥
लगे पापों के चिन्तन को॥ न खाली० ॥१॥
मनको खाली पावे जब, दे इसको यह कार।

स्वास २ पर यह रटे, एक अक्षर ओंकार ॥
रखो दृढ़ता से इस प्रण को ॥ न त्यागो० ॥२॥
झूंठ पाप दुर्वासना, मन व्यापे जो पाप ।
यह तीनों ही करत हैं, धर्म कर्म का नाश ॥
घटाते हैं ये ही धन को ॥ न त्यागो० ॥३॥
पहले विद्या नेत्र को, प्रकट होय जो ज्ञान ।
दर्शन होवे ब्रह्म का, तब तेरा कल्यान ॥
रक्षा करते इस साधन को ॥ न त्यागो० ॥४॥

भजन १४५

प्रभु से प्रीति लगाओ जी, ऐसा समय न पाओ ।
जिसने रचा है ये भू मण्डल उसको घट में बसाओ जी ।
चकित हो लखि जिसकी रचना उसही के गुण गाओ जी ॥
देश हितैषी समाज हितैषी सबही मिलकर आओ जी ।
निश्चल हो आडम्बर छोड़ो सत्य से प्रीति बढ़ाओ जी ॥
ता ता धिन धिन ताथेइया में नाग शुभ समय गँवाओ जी ।
सब जग को सम दृष्टि से देखो धर्म से लाभ उठाओ जी ॥
देश भक्ति शास्त्रीय भक्ति की, विमल ध्वजा फहराओ जी ।
असली जीवन अपना बनाओ, तब पाठक सुख पाओ जी ॥

भजन १४६

तुम भूले जगत पिता को, कैसा छाय रहा अज्ञान । टेक
अबतक तुम ग़फ़लत में सोये, जीवन के प्रिय वासर खोये ।

भारी बीज पाप के बोये, हुये मतिमन्द महान ॥ तुम भूले० १॥
काया रहित ईश को जानो, मन उसको साकार बखानो।
तुम या सत्य कथन को मानो, तज पूजन पाषान ॥ तुम भूले० २॥
एक जगह जो इसे बतावे, वह क्या भेद उमर भर पावे।
यह घट घट में विभु कहलावे, दया-सागर भगवान ॥ तुम० ३॥
दरिया वहा दूर तक जावे, कैसे लोटे बीच समावे।
गंगा सहाय सारे सुख पावे, धर ईश्वर का ध्यान ॥ तुम० भू० ४॥

भजन १४७

मुख भजन करन को दीना, नर छोड़ झूठ तोफान को। टेक,

सत्य कहे नहिं सत्य सुनाता, झूंठ साक्षी में क्या पाता।
नित अभक्ष्य मांसादिक खाता, दधि तज मदिरा पान को॥
धिक्कार जगत में जीना ॥ मुख भजन० ॥१॥
वेदों का न करे उच्चारण, लगा पुरानो में सर मारन।
होगा यों भवनिधि उद्धारन, भर उर में अभिमान को।
बनना चाहे परवीना ॥ मुख भजन० ॥२॥
आंखें जती सती लखने को, सन्तों के दर्शन करने को।
आप लगे रंडी तकने को, खो बैठे ईमान को।
ऐसा क्यों अधरम कीना ॥ मुख भजन० ॥३॥
चरन दिये सत पे चलने को, दौलत दीनों के पालन को।
पीटन लागे कंगालन को, हाथ दिये थे दान को॥
मत खेल जुआ मतिहीना । मुख भजन० ॥४॥

कान दिये ब्रह्मज्ञान सुना कर, ठुमरी ठप्पे सुनता जाकर।
घीसा कहे चेत में आकर, धर ईश्वर के ध्यान को॥
सत धर्म चाहिये चीना ॥ मुख भजन० ॥५॥

भजन १४८

उस जगदीश को रे, मन से कभी न भूलो भाई।
आदि जगत में सकल विश्वकी रचना वैसी कीनी।
बालक और वृद्ध नहीं कीन्हा, युवा अवस्था दीनी ॥ उस०
पुनि मैथुनी सृष्टि होने का, नियम किया निर्धार।
गर्भवास में रक्षा करके, किया अधिक उपकार ॥ उस०
अग्नि और आदित्य अंगिरा, वायु ऋषी के द्वार।
ऋग् यजु, साम अथर्व संहिता, प्रकट करी हैं चार ॥ उस०
एक पिता की जितनी सन्तति, सबका सम अधिकार।
इसी नियम को धारण करके, वेद का करो विचार ॥ उस०
ईश्वर रचे पदारथ जैसे, सब के लिये समान।
ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, को तैसे ही वेदविधान ॥ उस०
सूर्य चन्द्रमा अग्नि वायु जल, जिन से निशि दिन काम।
परम पिता ने कृपा दृष्टि से, दिये सभी बेदाम ॥ उस०
उपकारी जीवों को रच के, सुख हमको अति दीन्हा।
तिनको मार २ के खाते, मरघट पेटहि कीन्हा ॥ उस०
राधाशरण मनुष्य जन्म में, प्रभु से चित्त लगाई।
आवागमन के दुख से छूटो, नहि पीछे पछताई ॥ उस०

भजन १४६

जपो मुख से ओंकार हो कल्याण तुम्हारा।
विषयों में उमर गँवाई, लई माला बुढ़ापे में आई।
जपै गैरों को गँवार ओ३म् का छोड़ सहारा। जपो० १॥
रटे राम कृष्ण सिय राधा, चाहे विनाशिनी व्याधा।
न समझे सार असार जीतके बाजी हारा॥ जपो० २॥
ऋषियों ने जिसको गाया, मुनियों ने जिसको पाया।
उसी का ध्यान विसार, चाहि रहा निस्तारा॥ जपो० ३॥
पढ़ उपनिषदों को लीजे, सब तंत्र मंत्र तज दीजे।
तेजसिंह कहैं पुकार, तब होगा सुख भारा॥ जपो० ४॥

भजन १५०

सब मिलके हरि गुण गाओरे, प्यारे सुनो सुनो।
जो हरि सारे ही दुख हरता, जो न जन्मता अरु नहिं मरता।
उसकी शरण सिधाओरे॥ प्यारे० १॥
वही न्यायकारी सुखदाता, उससा कोई दृष्टि न आता।
उसकी भक्ति बढ़ाओरे॥ प्यारे० २॥
उसका ही उर कीर्त्तन धारो, पार्थिव पूजा वेग विसारो।
बिगड़ी बात बनाओरे॥ प्यारे० ३॥
करके स्तुति और प्रार्थना, करहु जगन फिर तुम उपासना।
या विधि ताप मिटाओरे॥ प्यारे० ४॥

ग़ज़ल १५१

मगन ईश्वर की भक्ती में अरे मन क्यों नहीं होता।
पड़ा आलस्य में मूरख रहेगा कब तलक सोता॥
जो ख्वाहिश है तुझे कट जाँय सारे मैल पापों के।
प्रभू के प्रेम जल में क्यों नहीं अपने को तु धोता॥
विषय और भोग में फँसकर न कर बर्बाद जीवन को।
दमन कर चित्त की वृत्ती लगा ले योग में गोता॥
नहीं संसार की वस्तू कोई भी सुख की हेतू है।
वृथा इसके लिये फिर क्यों समय अनमोल तू खोता॥
कभी उसको न मिल सकता है फल सुखशांति का हर्गिज़।
धरम के बीज को अन्तःकरण में जो नहीं बोता॥
धरम ही एक ऐसा है जो होगा अन्त में साथी।
न जोरू काम आवेगी न बेटा और कोई पोता॥
भटकता जावजा नाहक तू फिर सुख के लिये सालिग।
तेरे हृदय के अन्दर ही बहै आनन्द का सोता॥

भजन १५२

दोहा–कोई आये कोई गये, कोई हो रहे तैयार।
फिर मूरख अपना यहां, किसे बनाये यार॥
टेक–तेरा बिन ईश्वर के कोई नहीं, सच कहूं समझ ले मन में।
यह क्षणभंगुर अंग बनाया, कोई न साथी संग बताया,
समय तुम्हारा तंग बताया, फिर भी तो बोई नहीं।
शुभ कर्म बेल इस तन में॥ सच० १॥

बहते इस दरिया के किनारे, धोले हाथ बुद्धि के मारे,
दुर्गन्धित हैं वस्त्र तुम्हारे, दुर्गन्धी धोई नहीं ।
दुख मिला अघोरीपन में ॥ सच० २ ॥
सब कुछ जान बूझ कर प्यारे, अन्धे बने हुये हो भारे,
कहते कहते हम हैं हारे, त्यागी बदगोई नहीं ।
रही प्रीति पराय धन में ॥ सच० ३ ॥
सोता है तो अब भी जगले, ईश्वर भक्ति भाव में पगले,
बुरी कामनाओं से भगले, जो दुर्मति खोई नहीं ।
तो मिट जावेगा छन में ॥ सच० ४ ॥

भजन १५३

मन सोच समझ बन ज्ञानी, अज्ञानी क्यों होता है । टेक ॥
जो ईश्वर सब सुखनिधान है, क्यों नहिं उसका धरत ध्यान है।
नर शरीर दुर्लभ महान है, ऋषि मुनि रहे बखानी ।
क्यो सुख की नींद सोता है ॥ अज्ञानी० १ ॥
सत्य धर्म से चित्त हटाया, विषय वासना ग्रस्त कराया,
वीर्य्य रत्न अनमोल गँवाया, सोच लाभ अरु हानी ।
क्यों दुःख भार ढोता है ॥ अज्ञानी० २ ॥
मन विकार को तजके प्रानी, निर्विकार को ले पहँचानी,
दिना चार की है जिंदगानी, रे बनकर अभिमानी ।
क्यों खाता यों गोता है ॥ अज्ञानी० ३ ॥
भरा असत से सभी जगत है, केवल ओ३म् नाम एक सत है,

सदाचार युत नर है भाई, कहना इतना सार ही।
तीजा लक्षण फरमाते ॥ लक्षण मनु० ३ ॥
अपनी आत्मा को प्रिय जो है, तात्पर्य गुणाकारक सो है।
धर्म यही ऋषियों का वह है, राधाशरण निरधार ही।
चौथा लक्षण यों पाते ॥ लक्षण मनु० ४ ॥

दादरा १६०

रहना धर्म के आधार, आधार मेरे प्यारे।
बिना धर्म के कोई न साथी, मतलब का संसार २ मेरे प्यारे ॥
मरती बार यही सँग जावे, चले न कुटुम्ब परिवार २ मेरे प्यारे ॥
दम निकले सुत, नारि बन्धु सब, फैंकदें ढेलासा डार २ मेरे प्यारे ॥
कोई मरघट तक सँगजावे, धरदें चिता के मँझार २ मेरे प्यारे ॥
काठ सा फूंक अग्नि में देवें, कोई न करता प्यार २ मेरे प्यारे ॥
पीठ फेर कर घर को आते, ऐसे हुये लाचार २ मेरे प्यारे ॥
जब यह धर्म रहे है सँग में, तभी करे हित यार २ मेरे प्यारे ॥
घीसा कहे भटीपुर बासी, करता है ज्ञान उच्चार २ मेरे प्यारे ॥

दादरा १६१

भय खैहो तो कैसे धरम रैहै भय खैहो।
भय से जो तुम धर्म को तजि हो, ईश्वर के सम्मुख कहा कैहो।
ईश्वर की आज्ञा धरम है भाई, ईश्वर से लड़ के कहां रैहौ ॥
या कर लेना वा कर देना, करनी पै बस डट जैहौ।

पाप विपति की जड़ है भाई, करिहौ ता संकट सैहौ।
शीतल कहते मानो जी प्यारे, नहीं मानोगे तो पछतैहौ॥

भजन १६२

मेरी विनती सुनों धर ध्यान।
गृह आश्रम ही सब श्रेष्ठ है क्या कुछ कहँ बखान॥१॥
पुरुष तो है घर की शोभा, पुरुष की स्त्री आन॥
स्त्री का पतिव्रत है शोभा, रक्षा करे भगवान॥२॥
दोनों की शोभा प्रीति परस्पर, पानी दूध समान॥
जिस घरमें दोनों यह खुश हैं, वह घर स्वर्ग समान॥३॥
मुखकी शोभा मृदुल वचन है, हाथ की शोभा दान॥
दान की शोभा पात्र हो अच्छा, कहगये पुरुष महान॥४॥
पर उपकार है तन की शोभा, तन की शोभा प्रान॥
धर्म से शोभित प्रान बताया, मर्म यही है प्रधान॥५॥
वेद शास्त्रकी ओ३म् है शोभा, अरु जीवन की ध्यान॥
ध्यान की शोभा ओ३म् जाप है, लीजे इतना मान॥६॥
है प्रजलाल नगर की शोभा, जिस में होय समाज॥
समाजकी शोभा कर्मकाण्ड है, सदस्य हों गुणवान॥७॥

भजन १६३

नहीं ऐसा अवसर फेर सुधारो जीवन को भाई।
मत योंही प्रिय सर्वसु हारो, साहस और सुमति उर धारो।

आलस की मात्रा न बढ़ाओ, सुध बुध बिसराई ॥ नहीं० १ ॥
समता सीख सुनियम प्रचारो, पाय सुनीति अनीति बिसारो ।
उन्नति के कर्त्तव्य अहर्निशि, समझो सुखदाई ॥ नहीं० २ ॥
मात, पिता, गुरु देवों को नित, पूजो अपना देकर हित चित ।
घटै न सद्व्यवहार त्यागिये, गरु मूर्खताई ॥ नहीं० ३ ॥
सतसंगति का मान बढ़ाओ, नीच नरों के पास न जाओ ।
कर्म धर्म की गैल गही तिन, जिन कीरति पाई ॥ नहीं० ४ ॥

भजन १६४

परम पछताव है रे हमने जीवन यों ही पाया ।

पढ़े न चारु चरित ऋषियों के, नित बकवाद मचाया ।
भूलगये महिमा नरत्व की, अन्धकार अधिकाया ॥ परम० १ ॥
चोरी जारी में सुख माना, नाम भला न धराया ।
नाना विधिकर प्राप्त अधोगति, हा! उपहास कराया ॥परम०२॥
चार आंक पढ़ पत्रा बांधा, कभी न सुयश कमाया ।
विविध मतों के जालों में फँस, सच्चा ईश भुलाया ॥परम०३ ॥
कुल सपूत अब कौन कहेगा, पाप प्रपञ्च बढ़ाया ।
हाय! कर्म भारत माता को, भारी दुख पहुँचाया ॥परम० ४ ॥

भजन १६५

इंसान और हैवान में, क्या फ़र्क़ हमें बतलादो ।
खाना तो पशु भी खाते हैं । बोझा मनों उठा लाते हैं ।

रत्रो भोग सा जाते हैं । जन्म और मर जाने में, कोई इस से अलग बतादो ॥ क्या० फर्क० १ ॥

आंख तो मृगा मीन खंजन की। वाणी कोकिल मोर पिकन की। नासा शुक ग्रीवा हंसन की। चितवन सिंह बलवान में, कटि चीते की उपमा दो ॥ क्या फर्क०२ ॥

ऊनी वस्त्रों से जो बड़ाई। ऊन भेड़ दुम्बों से पाई। रेशमीन सो कीट कमाई। क्या हासिल इतपन में, इस घमण्ड का बिसरादो ॥ क्या फर्क० ३ ॥

चलन भगन में उत्तम घोड़े, बल में गज भैंसे क्या थोड़े। धन तो पशुओं के बल जोड़े। क्यों तुम भरे गुमान में, सांचा मतलब समझादो ॥ क्या फर्क० ४ ॥

कुश्ती सीखे आप शुनर से। पटे पैंतरे को बन्दर से। राग तो पक्षी पशू सुत्रर से। पढ़े नहीं हो गान में, है कौन बड़प्पन गादो ॥ क्या फर्क० ५ ॥

ज्ञान धर्म तप विद्या ना है। तो पशु सम फिर मनुष्य क्या है। गीता ने पद सत्य कथा है। श्रुती रहे नित ध्यान में, भूला तो आप सिखादो ॥ क्या फर्क० ६ ॥

गजल १६६

भाइयो हिन्दू कहाना छोड़ दो। अपने को रुसवा बनाना छोड़ दो ॥ १ ॥ तुम नहीं हर्गिज भी काफिर और चोर। खुद को तुम ऐसा बताना छोड़ दो ॥ २ ॥ जो तुम्हें हिन्दुपना अच्छा

लगे। तो ऋषी सन्तान कहाना छोड़ दो ॥ ३ ॥ आर्य हैं आपके सब खैरो ख्वाह। इनको अय मित्रो, सताना छोड़ दो ॥ ४ ॥ वेद मारग को करो सब अख्तियार। बेतुकी गप्पें उड़ाना छोड़ दो ॥ ५ ॥ सारे जग के रचने वाले ब्रह्म को। अपने हाथों से बनाना छोड़ दो ॥ ६ ॥ जो परिपूरण है कुल ब्रह्माण्ड में। उसको देह धारी बताना छोड़ दो ॥ ७ ॥ काली आदि देवियों की भेंट में। बकरे और भैंसे कटाना छोड़ दो ॥ ८ ॥ रोक दो बच्चों व बूढ़ों के विवाह। अबला कन्यायें रुलाना छोड़ दो ॥ ९ ॥ ब्याह आदी संस्कारों के समय। रण्डी भड़वों को नचाना छोड़ दो ॥ १० ॥ गर ब्राह्मण वंश के हो खैरोख्वाह। बेपढ़े ब्राह्मण जिमाना छोड़ दो ॥ ११ ॥ रस्मियातें बद में फँस कर ख्वाहमख्वाह। भाइयो! धन का लुटाना छोड़ दो ॥ १२ ॥ धर्म पालन में डरो हर्गिज न तुम। इसकी खातिर खौफ़ खाना छोड़ दो ॥ १३ ॥ पीर सैयद ताजियों के सामने। अब तो तुम सरको झुकाना छोड़ दो ॥ १४ ॥ आर्य धमकी में आवेंगे नहीं। इनको बस आंखें दिखाना छोड़ दो ॥ १५ ॥ है निवेदन तुम से सालिग राम का। बाहमी लड़ना लड़ाना छोड़ दो ॥ १६ ॥

भजन १६७

दो०—उठो सनातनधर्मियों, तुम श्री सुमिर गणेश।
भारत जननी के हरो, मिल कुल सकल कलेश ॥
मित्रो! सालिगराम यह, विनय करै कर जोड़।

करो काम उपकार का, वैर भाव को छोड़ ॥
टेक-अब त्याग के वैर विवाद को, कुछ करलो देश भलाई ।
बहुत दिवस इसही में बीते । तुम हारे हो और हम जीते ।
किये निरर्थक बहुत फजीते । नाहक उठा फिसाद को ॥
तुमने अय हिन्दू भाई ॥ कुछ० ॥
जिसने हा ! तुमको समझाया । उसीसे तुमने वैर बढ़ाया ।
तरह २ से शोर मचाया । कर के बन्द इमदाद को ॥
उलटी हानी पहुँचाई ॥ कुछ० ॥
फूट पापनी का यह फल है । भारत जो इतना निर्बल है ।
जिस घर में रहती कलकल है । क्यों ना वह बर्बाद हो ॥
बने क्यों न नरक की खाई ॥ कुछ० ॥
मानो २ प्यारे भाई । वैर भाव को दो बिसराई ।
कर के आपस में एकताई । बजा दो वैदिक नाद को ॥
जतला उसकी प्रभुताई ॥ कुछ० ॥
भारत जननी की करो सेवा । करके दूर फूट दुख देवा ।
प्रेम प्रीति का चखलो मेवा । जिसके यारो स्वाद को ॥
पाओगे अति सुखदाई ॥ कुछ० ॥
विद्या का विस्तार कराओ । कालिज और गुरुकुल खुलवाओ ।
करना बाल विवाह हटाओ । शिक्षा दो औलाद को ॥
ब्रह्मचर्य रहे रखवाई ॥ कुछ० ॥
दीन अनाथ का पालन पोषण । करने लगो पुत्रवत सज्जन ।
यह असली है धर्म सनातन । मेटो विपद विषाद को ॥
दीनो के बनो सहाई ॥ कुछ० ॥

सन्ध्या हवन करन नित लागो। बद्रस्मों को जल्दी त्यागो।
भारतवासी जागो जागो। छोड़ बुरी रस्माद को॥
बनो वेदों के अनुयायी॥ कुछ०॥
हार जीत दिल से बिसराओ। सत्य धर्म से प्रीति बढ़ाओ।
वेदों की अब शरन में, आओ। जिससे अधिक सुप्रीद हो।
और बल बुद्धि बढ़जाई॥ कुछ०॥
सालिगराम कहे समझाई। शुद्ध भाव से तुम को भाई।
कभी न घर में करो लड़ाई। मित्रो इस फ़र्याद को।
सब सुनलीजो चित लाई॥ कुछ०॥

भजन १६८

शेर—अय! सनातन धर्मियों मत आर्यों से तुम लड़ो।
यह नहीं शत्रु तुम्हारे गौर तो दिल में करो॥
भाइयो हैं आर्य्य सच्चे तुम्हारे खैरोख्वाह।
रखते हैं हरदम तुम्हारी बेहतरी पर यह निगाह॥
देश के सेवक तुम्हारे धर्म के हैं पासबान।
इन से लड़ना नामुनासिब है तुम्हें अय मिहरबां॥
छोड़ दो लड़ना लड़ाना इनसे प्यारे भाइयो।
शुद्ध हृदय करके देश और धर्म की सेवा करो॥
टेक—करो अब कुछ उपकार, देश धर्म का प्यारो।
लड़ने में समय मत खोओ, मत बीज द्वेष का बोओ॥
सँभल जाओ अय यार॥ देश०॥

लड़ने की आदत छोड़ो, शुभ कर्मों से दिल जोड़ो।
करो कुछ परउपकार ॥ देश० ॥
गुरुकुल कालिज करो जारी, जिन में औलाद तुम्हारी।
रहे ब्रह्मचर्य्य धार ॥ देश० ॥
हैं दीन अनाथ जो बालक, बनजाओ उनके पालक।
करके सच्चा प्यार ॥ देश० ॥
बदरस्मो रिवाज हटाओ, और वैदिक रीति चलाओ।
देश का करो सुधार ॥ देश० ॥
लाखों जो तुम्हारे भाई, हुए मुसलमान ईसाई।
करो उनका उद्धार ॥ देश० ॥
मत घर में करो लड़ाई, मिल जाओ प्रेम से भाई।
छोड़कर सब तकरार ॥ देश० ॥
करे सालिगराम निवेदन, लड़ना नहीं, धर्म सनातन।
करलो सोच विचार ॥ देश० ॥

दादरा १६९

मत लड़ना आपस में भाई रे।

कौरव व पांडवों ने आपस में लड़कर। भारत को दीना डुबाईरे ॥ मत० ॥ पृथीराज ने जैचन्द से लड़कर। अपने को दीन्हा मिटाई रे ॥ मत० ॥ जरासन्ध ने लड़कर कृष्ण से। करदी थी कुल की सफाई रे ॥ मत० ॥ लाखों करोड़ों राव और राजे। बिगड़े हैं करके लड़ाईरे ॥ मत० ॥ आपस के झगड़े ही

इस का सबब हैं। भारत पै आफत जो आई रे ॥ मत० ॥ आपस में यहां पर जो झगड़े न होते। न आते मुसल्मां ईसाई रे ॥ मत० ॥ सालिग जो अपने को चाहो सुधारा। वेदों के बनों अनुयायी रे ॥ मत० ॥

भजन १७०

दोहा—बोली एक अनमोल है, बोली जाय तो बोल।
हिया तराजू तोलकर, मुख से बाहिर खोल ॥

टेक—वचन तू मीठा बोल, वाणी का बाण बुरा है।

जिसकी वाणी में मीठापन है, उसको हर जगह अमन है।
जो चाहे जहां डोल ॥ वा० ॥

इस वाणी से प्रीति हो गहरी! हा! यही बने है वैरी।
कलेजा देती छोल ॥ वाणी० ॥

इसे मित्र शत्रु सब जाने, और कोयल काक पहचाने।
जब दे मुखड़ा खोल ॥ वाणी० ॥

वाणी ने हव्वा बताया, बच्चों को हू हू सुनाया।
बैठगयी सुनकर होल ॥ वा० ॥

सब की क़ीमत होती है, हीरा माणिक मोती है।
नहीं वाणी का मोल ॥ वाणी० ॥

कहे तेजसिंह सच बोलो, मत असत्य को मुख खोलो।
है कच्चो जिसकी तोल ॥ वाणी० ॥

भजन १७१

देखो रे मित्रो ! ऐसे नियम चलाना ।

चाहे कितनीही पड़े आपति, तो नहिं उन्हें छुड़ाना ॥ मि० ॥
ब्रह्मचर्य प्रथम करवाओ, उसके द्वारा बलका बढ़ाओ ।
परा अपरा विद्या को पढ़ाओ, पच्चीस वर्ष पश्चात् गृहस्थ
चाहिये उसे करानारे ॥ मित्रो० ॥
गुण कर्म और वर्ण अनुसारी, करें गृहस्थ विवाह कुमारी ।
सत्य वनज कर करहु गुजारी, हो सन्तान सुशिक्षित
तबहि व नस्प्रस्थ बतानारे ॥ मित्रो० ॥
नवम बसो पुरी तट जाके, अन्न मिले व कन्द फल खाके ।
रहे ब्रह्म में मन को लगाके, ऐसेही आश्रम साधा
फिर संन्यासी होजानारे ॥ मित्रो० ॥
परोपकार में आयु लगाकर, देश २ उपदेश सुनाकर ।
सबही को सत्मार्ग सुझाकर, झूठ पाखण्ड हटाय
जगत चाहिये आर्य बनानारे ॥ मित्रो० ॥

भजन १७२

दो०-शतपथ ब्राह्मण का वचन, सुनो लगा के कान ।
तीन सुधी शिक्षित मिलें, जब सुधरें सन्तान ॥
ख्याल-पहले माता पिता दूसरा और तीसरा आचारी ।
तभी मनुज हों ज्ञानवान सब शूरवीर और बलधारी ।

मात पिता विद्वान हों जिसके सदा रहे हों ब्रह्मचारी।
वो सन्तति अति भाग्यवान है धन्यवाद दें नर नारी॥
टेक-तुम चलो मित्र इस रीति से, बने शुभ सन्तान तुम्हारी।

है मात पिता को उचित काम जो करना।
वही रीती करूं बयान ध्यान कुछ धरना॥
मादक चीज़ों के खान पान से डरना।
करें बल बुद्धी का नाश वेद में वरना॥

उन्हीं चीज़ों को लावें। जो बल और बुद्धि बढ़ावें।
पितु मातु उन्हीं को खावें। नहीं और पै चित्त चलावें।

दोहा-गेहूँ चाँवल दूध घृत, इनको उत्तम जान।
इन्हीं का सेवन करें, पुत्र होय बलवान॥

पुत्र होय बलवान, महा विद्वान, यह निश्चय जान, बचो सदैव अनीति से, बने रहो दिव्य ब्रह्मचारी॥ पेन० १॥

अब ऋतु गमन का समय सुनो चित लाई।
रजो दर्शन से सोलह दिन मियाद बताई॥
वे प्रथम चार दिन त्याग महा दुखदाई।
एकादश त्रयोदश छोड़ रहे दश भाई॥

वह मियाद याद कर लीजे। इस में ही समागम कीजे।
फिर ऋतु दान नहीं दीजे। सब व्यर्थही वीर्य छीजे॥

दोहा-जब तक समय ऋतुदान का, पुर्नोक्त नहीं आय।
फिर आपस में समागम, हर्गिज़ किया न जाय॥

गर्भ स्थिति से तादाद, समागम स्याद, वर्ष दिन बाद, सभी विपरीति है। जो करें वही व्यभिचारी ॥ व० २ ॥

जब लेकर बालक जन्म जगत में आवे।
स्नान और नाड़ी छेदन हवन करावे ॥
पीछे फिर स्त्री को भी तुर्त नहलावे।
खाने का अति उत्तम प्रबन्ध मिलावे ॥

माता का दुध पिलाना। छै दिन से अधिक लिखा ना।
कोई धाई तुर्त बुलाना या बकरी गाय मँगाना।
दोहा–बल वर्द्धक चीजें सभी, धाई खाय हमेश।
जिस से बालक पुष्ट हो, पावे नहीं कलेश ॥

ऐसे मकान में रहै, सुगन्धी लहै, पवन शुभ बहै, बचैऊष्णता शीत से। सुखदाई हो वस्तु सारी ॥ व० ३ ॥

माता के अंग से अंग बने बालक का।
इस लिये लिखा नहीं दूध पिलाना उसका ॥
जो निर्धन हो चल सके नहीं बल जिसका।
फिर जैसा समझे उचित यत्न करे उसका ॥

बच्चे को धाय लगाओ। मत मा का दूध पिलाओ ॥
कोई ऐसी औषधि लाओ। दे औषधि दूध हटाओ ॥
दोहा–इसी रीति से नारि निज, बनी रहे बलवान।
पुरुष ब्रह्मचारी रहे, दोनो एक समान ॥

सुख पाओ सर्व प्रकार, सभी नर नार, लो मन में धार। तेजसिंह इस रीति से। फिर मिले तुम्हें सुख भारी ॥ व० ४ ॥

लावनी १७३

उमर सब ग़फ़लत में खोई, किया शुभकर्म न तैं कोई।
फिर्यो स्वारथ में दीवाना, नहीं परमारथ पहिचाना।
खेलना खाना अठिलाना, काम क्रीड़ा में सुख माना।
दोहा–जग धन्धों में खो दिया, सारा समय अमूल ।
रैन गँवाई सोय के, बीती उमर फजूल ॥
बेल तैं पापों की बोई, किया शुभ कर्म न तैं कोई ॥१॥
विमुख हुये निज प्रभु से प्यारे, किये दुर्गुण भारे भारे।
हज़ारों बेगुनाह मारे, दीन और दुखिया हन डारे ॥
दोहा–अब क्या उत्तर देयगा, न्यायाधीश दरबार ।
जहां न झूठे साक्षी, नहिं वकील मुख्त्यार ॥
चले फिर वहां न बदगोई, किया शुभ कर्म न तैं कोई ॥२॥
समझ मन अब तो सैलानी, छोड़ दे अब बेईमानी।
चले गये लाखों अभिमानी, तू है किस गिन्ती में प्रानी ॥
दोहा–हर सुमिरन कर जीव जड़, तुझे कहूँ हरबार ।
सारी उमर नींद में खोई, ऐ मतिमन्द गँवार ! ॥
वेग उठ वहुत लिया सोई, किया शुभकर्म न तैं कोई ॥३॥
सुहृद सुत पितु कुटुम्ब दारा, हुआ क्यों इन पर मतवारा।
काल का आयेगा हलकारा, छुटेगा इक दिन संसारा ॥
दोहा–सपना सा हो जायगा, सुत कुटुम्ब धन धाम।
हो सचेत बलदेव नींद से, जप ईश्वर का नाम ॥
मनुष्य तन फिर २ नहिं होई, किया शुभ कर्म न तैं कोई ॥४॥

ख्याल १७४

हिन्दूपन से धोय हाथ अब परमेश्वर के दास बनो।
करो कर्म अनुकूल वेद के फिर तुम आर्य खास बनो॥

चौक १

बिना धर्म सुख मिले न सपने क्यों नाहक मन भटकावो।
दम्भ कपट छल त्याग न जबतक सीधे मारग पर आवो॥
चाहे जितनी गंगा नहावो गया प्रयाग चाहे नित जावो।
सुखकी शकल देख नहीं पैहो चाहे दुनिया में धावो॥
सत्यधर्म में श्रद्धा लावो पैहो भोग विलास घनो॥ करो०॥

चौक २

दश लक्षण जो कहे धर्म के मनूशास्त्र में सुखदाई।
पहला धीरज क्षमा दूसरा दम तीजा जानो भाई॥
है चोथा अस्तेय पाचवा किया शौच पुनि बतलाई।
इन्द्रिय निग्रह छटा सातवें बुद्धी की निर्मलताई॥
अष्टम विद्या नवम सत्य अरु दशवें क्रोध का नाश गनो॥क०॥

चौक ३

यही धर्म है मनुष्यमात्र का इसी के ऊपर चित लावो।
क्यों दुनिया में फिरो भटकते धन दकर धक्के खावो॥
मन को करो पवित्र चित्त से राग द्वेष को बिसरावो।

स्थिर हो बैठो एकान्त में भजन करो शान्ती पावो ॥
लगन लगाओ उस ईश्वर से जग से निपट निराश बनो॥क०॥

चौक ४

वैरभाव बिसराय परस्पर प्रीति करो सब नर नारी ।
करो सत्य व्यवहार जगत् उपकार वेद गावें चारी ॥
तजो कुपथ की बान कहा लो मान हानि इस में भारी ।
करो भक्ति निष्काम छूट जाय जन्म मरण की बीमारी ॥
शरण गहो बलदेव ईश की मत विषयन के दास बनो ॥क०॥

ग़ज़ल १७५

किले देख दिल तू हुआ है दिवाना ।
नहीं तेरी इस ज़िन्दगी का ठिकाना ॥
हज़ारों शहंशाह हुए इस ज़मी पर ।
गये कूंच कर जिनको जाते न जाना ॥
जो पैदा है नापैद होगा वह एक दिन ।
फ़ना से फ़ना और बना सो बुताना ॥
धरम एक हमराह केवल चलेगा ।
रहेगा यहीं पर पड़ा सब खज़ाना ॥
है धोखे की टट्टी जहां में पुलंदर ।
समझ के चलो मुल्क है ये बिगाना ॥
करो याद उसकी जो मालिक जहां का ।

उसी की दया से मिटे आना जाना ॥

भजन १७६

दोहा-विषय भोग संसार के, हैं सब दुख के मूल।
इन में फसकर ईश को, मत मूरख तू भूल ॥

टेक-पड़ लोभ मोह के जाल, नर आयू क्यों खोता है ॥
यह जग जान रैनका सपना, जिस को कहता अपना अपना।
भूल गया ईश्वर का जपना, फँसा हुआ धन माल में ॥
क्या सुख की नींद सोता है ॥ नर आयु० १ ॥

चले अकड़ बन छैल छबीला अन्त समय सब होजाय ढीला।
काम न आये कुटुम्ब कबीला, भूला जिन के ख्याल में ॥
कोई साथी नहीं होता है ॥ नर आयू० २ ॥

अब क्यों शिर धुन २ पछतावे, रुदन करे और रौल मचावे
कुछ नहीं तेरी पार बसावे, चूका पहली चाल में ॥
क्या खड़ा २ रोता है ॥ नर आयु० ३ ॥

समझ सोचकर कदम उठाना, मुश्किल मनुष जन्म है पाना।
कहे मुरारी जो हो दाना, भज हर को हर हाल में ॥
क्यों पाप बीज बोता है ॥ नर आयु० ४ ॥

भजन १७७

टेक-दौलत की हाय माया में, तैंने सारी उमर घुलाली ॥
गज तुरग रथ ऊँट सवारी, बँगले कोठी महल अटारी।

बना छोड़ गये हफ्त हजारी, कोई साथ नहीं चाली ॥दौ०१॥
जो कि शहंशाहों में क़ैसर, कहलाते थे ग़रीबपरवर।
रहा न उनका निशां यहां पर, मौत टली नहीं टाली ॥दौ० २॥
लाखों क़त्ल बेगुनाह कराये, ज़र के लिये ज़ालिम कहलाये।
मरते वक्त वह भी पछताये, दोनों हाथ गये खाली ॥ दौ० ३ ॥
कोई जान धन के लिये खोवे, कोई पृथ्वी को है रोवे।
सुख से शर्मा वह नर सोवे, इन पैं खाक जिन डाली ॥ दौ०४॥

भजन १७८

टेक-तैंने प्रभु का नाम विसारा, इस कारण बाजी हारा ॥
कामी क्रोधी पतित अभागी, बुरे कर्म में तेरी लौ लागी।
पापी हठी सत्यपथ त्यागी, कैसे हो निस्तारा ॥ इस० १ ॥
छलिया कपटी लोभी ज्वारी, अधम पातकी औ व्यभिचारी।
हिंसक चोर कुटिल खल भारी, किस विधि होय गुज़ारा ॥इस०२॥
दम्भी गर्वी नमकहरामी, कृतघ्न अति डाकू ठग नामी।
बगुला भक्त और वेश्यागामी, धर्म सभा से न्यारा ॥ इस० ३ ॥
अपस्वार्थी लबार अधर्मी, परनिन्दक निर्लज्ज कुकर्मी।
छाई सुरारी क्या बेशर्मी, मन में नहीं विचारा ॥ इस० ४ ॥

ग़ज़ल १७९

भलाई कर चलो जग में तुम्हारा भी भला होगा।
किया जो काम नेको बद वह एक दिन बरमला होगा ॥

सताते हो ग़रीबों को न खाते खौफ मालिक का।
कभी कोइ ज़ुलमगर देखा जो फूला और फला होगा॥
खुदा के हैं सभी बन्दे बनो मत खून के प्यासे।
छुरी जल्लाद के नीचे तुम्हारा खुद गला होगा॥
समझ कर जान अपनीसी दुखाओ मत किसी का दिल।
जलावेगा तुम्हें बेशक जो खुद तुमसे जला होगा॥
फरायज अपने को हरदम अदा करते रहो फौरन।
मजा बलदेव विषयों का तुम्हें एक दिन बला होगा॥

भजन १८०

जीना दिन चार कारे मन मूर्ख फिरे मस्ताना।
मन्दिर महिल अटारी बँगले नकदी माल खजाना।
जिस दिन कूच करेगा मूरख सब कुछ हो बेगाना॥ जी० १॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी बन बैठा धनवान।
साथ न जावे फूटी कौड़ी निकल जायँ जब प्रान॥ जी० २॥
अपने आप को बड़ा जान कर क्यों करता अभिमान।
तेरे जैसे लाखों चले गये तू किस का महिमान॥ जी० ३॥
राम गये और रावण चले गये बाली अरु हनुमान।
राव युधिष्ठिर दुर्योधन और भीमसेन बलवान॥ जी० ४॥
मान ले शिक्षा रुन्नादास की जो चाहे कल्यान।
परमारथ और नित्य कर्म कर, दे दीनों को दान॥ जी० ५॥

दादरा १८१

कर्मों का फल पाना होगा ।

क्यों न अरे तू चेत में आव, सभी ठाठ तज जाना होगा ॥१॥
विषय भोग से सभी तरह बच, वर्ना न तो दुख पाना होगा ॥२॥
अन्त समय को ऐ मन मूरख, जंगल तेरा ठिकाना होगा ॥३॥
कुछ इस जग में धर्म कमाले, साथ उसे ले जाना होगा ॥४॥
जैसा जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल पाना होगा ॥५॥
अब तो चेत तू मनुआ मूरख, अन्त काल पछताना होगा ॥६॥

दादरा १८२

अब तो त्यागो तनक नादानी ।

घूमि २ चौरासी लाख में, बहुत खाक दुनियां में छानी ॥अ०॥
अगणित रोग भोग बहु भोगे, तहूँ तनक तृष्णा न बुझानी ॥अ०॥
कबहूँ बने श्वान कबहूँ शूकर, कबहूँ रंक राजा और रानी ॥अ०॥
जन्मत मरत बहुत दिन बीते, अजहूँ न छोड़ी समझ शैतानी ॥अ०॥
अबकी बार बलदेव जो चूके, हुइहै पीछे बहुत हैरानी ॥अ०॥

दादरा १८३

अब नहिं सोवो जगो मेरे भाई ।

आंख खोल संसार को देखो, समय दशा पै नज़र घुमाई ॥१॥
बदलत रंग ढंग छिन २ में, देह दशा देखो चित लाई ॥२॥

पहले देखो दया ईश्वर की, फिर देखो जरा अपनी कमाई ॥३॥
फिर कुछ शर्म करो निज मनमें, काहे करावत लोग हँसाई ॥४॥
होश करो बलदेव तनक अब, नाहीं तो रह जैहो पछताई ॥५॥

दादरा १८४

करले सौदा समझि सौदाई ।

इस दुनिया की विकट हाट में, बड़े २ चातुर गये हैं ठगाई ॥१॥
द्रोह दलाल दुष्ट सग लगे के, देत अवश्य गांठि कटवाई ॥२॥
कुटिल काम कज्जाक कठिन है, बहुतन की यान धूलि उड़ाई ॥३॥
भारत लोभ पिलाय मोह मद, कामिनि कनक जाल फैलाई ॥४॥
हैं अतिरिक्त और इनहू के, प्रबल शत्रु तेरे दुखदाई ॥५॥
बचे रहो बलदेव खलन से, हुइहै तबहीं सौदा सुखदाई ॥६॥

दादरा १८५

झूठी देखी जगत की यारी ।

अपने स्वारथ के सब साथी, मात पिता भगिनी सुत नारी ॥१॥
मिथ्या मोह जताय कुटुम्ब सब, देत अमोलक जन्म बिगारी ॥२॥
बने बने के सब कोई संगी, विपति परे फिर को हितकारी ॥३॥
या जग में अपना नहिं कोई, देख लीन हम आंखि पसारी ॥४॥
मोह फांस में फसत जीव जो, फिर शिरधुन पछतात पिछारी ॥५॥
अपनो धर्म बिसारि जगत में, दुख भोगत बहुभांति अनारी ॥६॥
छोड़ो प्रीति बलदेव जगत से, भज प्रभु भव भंजन भयहारी ॥७॥

भजन १८६

प्रभु गुण में हो लीन तभी जग में सुख पावेगा ।

माता पिता बंधु सुत नारी, जिनके अर्थ लई पाप कटारी ।
धन जोड़े है व्यर्थ अन्त कोई काम न आवेगा । प्रभु० १॥
गर्वित है जिस बल के ऊपर, है क्षण भंगुर तन जग भीतर ।
अन्तसमय जबहोय साथ, एक धर्मही जावेगा । प्रभु० २॥
जिन के ऊंचे ऊंचे मन्दिर, ओढ़े पीत रेशमी अम्बर ।
पूछो जाकर दशा बड़ाही, क्लेश सुनावेगा । प्रभु० ३॥
चढ़ने को सुन्दर असवारी, सेवक लाखों आज्ञाकारी ।
बाहर दीखे सुखी पै अन्दर, चोट दिखावेगा । प्रभु० ४॥
सच्चा बन तू शुद्धाचारी, हो जा भाई पर उपकारी ।
इस काया के चाम की क्या, जूती बनावेगा ॥ प्रभु० ५॥
करले अब भी धर्म कमाई, इस को ज़रा समझ ले भाई ।
मुट्ठी बांधे आया खोले, यहां से जावेगा ॥ प्रभु० ६ ॥
ममता मोह न रक्खे जो नर, ईश भजन में रहे नित तत्पर ।
पाठक होवे मुक्ति जभी, सच्चा सुख पावेगा ॥ प्रभु० ७ ॥

भजन १८७

छोड़ो झूठ सब व्यवहार, जो तुम कुशल मनाना चाहो ।

सदा न रहना जग में यार, यही लो अपने मन में धार ।
करो तुम सच्चे ही व्यापार, जो तुम धर्म कमाना चाहो । छो०॥

है यह मतलब का परिवार, जिससे बढ़ा रहे हो प्यार।
हो संग न अन्त की बार, इस से चित्त हटाना चाहो ॥ छो० ॥
जब हो नाव बीच मझधार, तब को उसे लगावे पार ॥
धर्म ही सच्चा खेवनहार, इसको क्यों न बढ़ाना चाहो ॥ छो० ॥

भजन १८८

यह काया की रेल रेल से अजब निराली है ।
मन का इंजिन बुद्धि ड्राइवर कलें नसों के बंधन जिनपर ।
रज का जल और वायं अग्नि मिल भाप निकाली है ॥ यह०१॥
इंद्रियों के रच के स्टेशन अंत:करण का बना जंकशन ।
शम संतोष विराग ज्ञान की लैन निकाली है ॥ यह०२ ॥
घण्टी विवेक श्वास की सीटी, नाड़ी तार ध्वनि लागत नीकी ।
जीव है सेकेंड गार्ड वस्त्र पंखा रखवाली है ॥ यह० ३ ॥
उत्तम मध्यम आदि अधम तन मेल पसेंजर लोकल मेकिन ।
टिकट कर्म के बटें धर्म को खेप लदाली है ॥ यह काया० ४ ॥
काम क्रोध मद लोभ उचक्के दाउ घात के जो बड़े पक्के ।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष की लूट मचाली है ॥ यह काया० ५ ॥
गार्ड वही प्रभु टिकट कलक्टर योग ध्यान का है लैन कलीयर ।
सेकेंड गार्ड गाड़ी में गार्ड से मिलता खाली है ॥ यह काया० ६॥
मात पिता सुत आदि यहाँ पर झंडी मोह की सब्ज दिखाकर ।
प्रीति का सिगनल गिरा वहीं बस गाड़ी थमाली है ॥ यह० ७ ॥
जब कि गार्ड रहे नहीं ड्रैवर खाली पड़ा है इंजिन यहाँ पर ।
पाठक फिर नहीं चले शोक की वृथा मचाली है ॥ यह० ८ ॥

ग़ज़ल १८९

स्टेशन जिस्म है मेरा नफ्स की रेल चलती है।
पकड़ सकता नहीं कोई कि जब फारम निकलती है॥
नहीं आता है जब तक तार उधर से लैनकिलयर का।
करो दिल की सफाई फिर ज़रा फुर्सत न मिलती है॥
टिकट नेकी का हो जिसके पास वह अन्दर निकलता है।
बग़ैर अज़ टिकट के दुनियां खड़ी ही हाथ मलती है॥
बजा करती है सीटी रात दिन यां मौत की लोगो।
बदों के वास्ते हर दम पुलिस दर पै टहलती है॥
करे नेकी अगर ज़ायद तो पाये दर्जा भी अव्वल।
टिकट लेलो अभी कुछ देर है इंजन बदलती है॥
गया बचपन जवानी ने बजाई दूसरी घंटी।
चलो जल्दी नहीं तो तीसरी घंटी उछलती है॥
उठा असबाव अपना हक़-शनासी का चढ़ो जल्दी।
नहीं तो बिछुड़ जाओगे घड़ी उसकी न टलती है॥
खड़े रह जायगे चुप चाप फाटक पर जो ग़ाफ़िल हैं।
यह चलदी रेल है "श्रद्धा" तो अब क्या पेश चलती है॥

भजन १९०

चर्खी काया रूप प्रभू ने अजब बनाया है।
गर्भ क्षेत्र में पिंडा गढ़ कर हाड़ मांस के पंखड़ मढ़ कर।
इन्द्रिय खूंटे लगा कैसे तन तनला बढ़ाया है॥ चर्खी० १॥

रग पुट्ठो की मद्द अँटचाइन, बुद्धिमान बतलाये साधन।
मन का तकला डाल मास नौ में दर्शाया है ॥ चर्खा० २ ॥
चित्त रूप हथकीरथ सुन्दर, कर संकल्प रूप प्रेरे पर।
कर्म रुई का तार जीव, कातन बैठाया है ॥ चर्खा० ३ ॥
शुभ और अशुभ तार कई आंनी, ज्ञान ईशमें रहे लव पांती।
जैसे काते तार वैसा, चर्खा कतवाया है ॥ चर्खा० ४ ॥
यह चर्खे हैं लख चौरासी, नियम पूर्वक कोई मिल जासी।
उत्तम मनुज शरीर बड़ी, मुश्किल से पाया है ॥ चर्खा० ५ ॥
जब निष्काय तार बन जावे, तब कुछ दिन चर्खा छूट जावे।
इस छुटने की आश ने तुम को यहा बुलाया है ॥ चर्खा० ६ ॥
परिमित चाल अवधि भी परिमित, मूल घुमाते हो हा जित तित।
पाठक समझो सार इसे कब, किसन गढ़ाया है ॥ चर्खा० ७ ॥

गज़ल-१६१

ज़ुल्म कर करके ज़लीलों को जलाते न चलो।
छुरी गर्दन पे गरीबों के चलाते न चलो॥
नहीं बहने का हमेशा है यह हुस्ने दरिया।
बदी की बाढ़ से बहुतों को बहाते न चलो॥
दौर दौरा सदा रहता न किसी का साहब।
सितम शमशेर से आलम को सताते न चलो॥
अक्ल से काम लो खल्क़त है खुदा की इस में।
होके बेदर्द दिल दीनों का दुखाते न चलो॥

चन्द रोज़ा है इस दुनिया में ज़िन्दगी जिस पर ।
निशां नेकी का ज़माने से मिटाते न चलो ॥
खुदा का खौफ़ करो कुछ भी तो दिल में यारो ।
रश्क से खाक में बन्दों को मिलाते न चलो ॥
अता मालिक ने किया आप को हुस्नो दौलत ।
ग़ज़ब की चाल से गरदूं को हिलाते न चलो ॥
वक्त बलदेव अब जाता है कमा ले नेकी ।
ख़्वाहिशे नफ़स में ज़िन्दगी को गँवाते न चलो ॥

भजन १६२

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में, तेरे दया धर्म्म नहीं मन में ।

जब तक फूल रही फुलवारी, बास रही फूलन में ।
एक दिन ऐसा होयगा प्रानी, खाक उड़ेगी तन में ॥ मुख० ॥

चन्दन अगर कुसुम्भी जामा, सोहत गोरे तन में ।
भर यौवन डूंगर का पानी, उतर जाय एक छन में ॥ मुख० ॥

नदिया गहरी नाव पुरानी, उतर जाय एक छन में ।
धर्मी २ पार उतर गये, पापी रहे अधमर में ॥ मुख० ॥

कौड़ी २ माया जोड़ी, सुरत लगी इस धन में ।
दस दर्वाज़े बन्द भये जब, रहगई मन की मन में ॥ मुख० ॥

पगड़ी बांधत पेच संभारत, तेल मलत अंगन में ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह क्या लड़ेंगे रन में ॥ मुख० ॥

ग़ज़ल १९३

कभी मत भूल ईश्वर को ज़माना खाकसारी है।
न कोई भी रहा जीवित सभी खलकत सिधारी है॥
न हटना धर्म्म अपने से मुनासिब है कभी तुझ को।
भजन कर हर घड़ी उसका ये जिस की फुलवारी है॥
सुप्रण धारी हरीचन्द ने न छोड़ा धर्म अपने को।
बिके रुहितास और रानी कि जिनका नाम जारी है॥
हुये ऐसे हकीकत भी कि जिसने धर्म नहिं छोड़ा।
कतल हुआ धर्म के ऊपर उसी ने जान वारी है॥
सताना जीव का प्यारे नहीं कुछ भी तो अच्छा है।
अहिंसा धर्म का पालन कहा सुख मूल भारी है॥
कहे नत्थू सनातन का अमल इख्तयार कर प्यारे।
महा सुख मूल जिन्दगानी वृथा ही क्यों बिगारी है॥

भजन १९४

आओ मित्रो हम तुम मिलकर कुछ तो पर उपकार करें।
वेग अविद्या मार भगावें विद्या का विस्तार करें॥
भारत वासी त्याग उदासी हों मुतलाशी धर्म के।
आओ उन के जीवन जग का फिर भारी उद्धार करें॥
रज उड़ाई बहुत उठाई हमने अपनी मूल से।
नाना मत पन्थो को तजकर फिर आपस में प्यार करें॥

जिसकी बदौलत हुआ उजाला फिर से भारत वर्ष में।
दयानन्द था जगत हितैषी सब उसका सत्कार करें॥

भजन १९५

सीधे मारग पर आजाओ बुद्धि भ्रमाना छोड़ दो।
अमृत रस को पियो हमेशा विष खाना छोड़ दो॥
प्रतिमा पूजन मिथ्या जानो घण्टा बजाना छोड़ दो।
सन्ध्या करो एकान्त बैठ कर शोर मचाना छोड़ दो॥
कल्पित सारी गाथाओं का पढ़ना पढ़ाना छोड़ दो।
वेदों के प्रतिकूल मतों का मान बढ़ाना छोड़ दो॥
पर उपकार हृदय में धारो धर्म यही सुख मूल है।
तात्पर्य कहने का यह है स्वार्थ कमाना छोड़ दो॥
नहीं लुटाओ मुफ़्त में दौलत अब तुम भारतवासियो।
पाप जान कर रंडी भडुवे सभी नचाना छोड़ दो॥
यम नियमों का पालन करना फर्ज़ ज़रूरी आप का।
लग जाओ इस तरफ़ देश का नाम लजाना छोड़ दो॥

भजन १९६

हुआ लोभी संसार कारे, कुछ किया न ब्रह्म विचार।
यह व्यवहार सदृश सपने के, भूला फिरे क्यों यार।
मृग तृष्णावत भटक मरेगा, देखले आंख पसार॥ हुआ० १॥
काम न आवे ऐंठ अकड़ कुछ, है दो दिन की बहार।

सुमिरन कर उस जगत पिता का, जो है सर्वाधार ॥ हुआ० २ ॥
विषय भोग में उमर गवांई, किया खूब व्यभिचार।
अन्त समय सिर धुन पछितैहै, पड़गी जमकी मार ॥ हुआ० ३॥
त्यागि नींद अबभी तुम जागो, जो चाहो उद्धार।
कहना मानो अपीराज का, त्यागो अब आचार ॥ हुआ० ४ ॥

भजन १९७

टेक–इस काल बली ने हाय, एक दिन सब को खाया है ॥

जरा आंखें तो खोलो अभिमानी, क्यों पड़ा बुद्धि पर पानी। मत काम करे शैतानी, समझ मन क्यों गवांगा है ॥ इस काल० १ ॥

चाहे राजा हो चाहे बलधारी, चाहे निर्धन हो चाहे भिखारी। चले अपनी २ बारी, बार जिस किसी का आया है ॥ इस काल० २ ॥

डाक्टर व वैद्य बेचारे, लुकमान आदि हुये सारे। अकबर से बढ़कर हारे। मौत का नुस्खा न पाया है ॥ इस काल० ३ ॥

चले काल चक्र की आरी, कटती जाय आयू सारी। कुछ मन में समझ अनारी, तेजसिंह ने पद गाया है ॥ इसकाल० ४ ॥

भजन १९८

दोहा–चेत चेत नर बावले, समय चलो सर जात।
काल खड़ो मुँह बाय तोहिं, अब कोई दम में खात ॥

टेक–अब तो सुरत सँभाल, काल तेरे शिर पर पहुँचो आय ॥

हुए पहलवान गुणवान और धन वारे।
सब लिये खाय रणधीर वीर योधारे ॥
हुए यती सती योगी संन्यासी भारे।
कोई बचे न इस ने सारे शूर सँहारे ॥

चौपाई।

या जग में जन्मे जो भाई। सब ही लिये काल ने खाई ॥
बड़े बड़े योधा बलदाई। यासे काहू की न बिसाई ॥

शेर।

बांध कर मुट्ठी तेरा दुनियां में जब आना हुआ।
आनकर फिर मोह के फन्दे में फँस जाना हुआ ॥
धर्म संचय नहिं किया नहिं ईश गुण गाना हुआ।
जन्म पूँजी हार खाली हाथ फिर जाना हुआ ॥

तैंने दुनियां में आई, नहीं कीन्हीं नेक कमाई।
तैंने विषयन में लिपटाई, दिया जन्म अमूल्य गँवाई ॥
नहीं तजा कपट अभिमान, अरे नादान, निकल गये प्रान।
ज्ञान बिन दीन्हो जन्म गँवाय ॥ अब तो० १ ॥

जो निराकार निर्विकार और अविनाशी।
धर उसका ध्यान जो है घट २ का बासी ॥

क्यों वृथा भटकता फिरे अयोध्या काशी ।
रम रहा तेरे हृदय में सकल सुखराशी ॥

चौपाई

जैसे अग्नि काठ के माहीं । है व्यापक पै दीखत नाहीं ॥
ऐसेहि प्रभु व्यापक सब ठाहीं । सर्व काल दिशि बसत सदाहीं ॥

शेर ।

नेको बद आमाल तेरे देखता सब काल है ।
याद रख हरदम उसे जो न्यायकारी दयाल है ॥
मत किसी पर ज़ुल्म कर हर वक्त वह तेरे नाल है ।
ज़ालिमी कर देख तो होना बुरा क्या हाल है ॥
कर दिलमें तनिक विचारा, कहां रावण कंस सिधारा ।
महमूद व नादिर दारा, गये छोड़ माल ज़र सारा ॥
कर धर्म कर्म निष्काम, वही सुखधाम, होत अब शाम ।
वाम सुत करें न कोई सहाय ॥ अब तो० २ ॥
तू कर नाना छल कपट जो द्रव्य कमावे ।
खुश हो हो कर२ प्यार कुटुम्ब सब खावे ॥
वह पाप अन्त में तुझे नरक भुगतावे ।
फिर कुटुम्ब कबीला कोई काम ना आवे ॥

चौपाई ।

जिनके हित तेंने पाप कमाया । सब ही तुझको सींग दिखाया ॥
खोई व्यर्थ मनुज की काया । परमेश्वर का नाम भुलाया ॥

शेर ।

पाय ऐसा जन्म गर शुभ कर्म तैंने नहिं किया ।
सख़्त नादानी करी जो खाय विषयों में दिया ॥
मुक्ति का दर छोड़ के क्यों दुःख का रस्ता लिया ।
पेट पाला पाप से तन मन दिया तो क्या जिया ॥

जब पकड़ नरक में डाला, दिया ठूस हिये में भाला ।
तैं बहुतों का घर घाला, ले उसका पवज़ लाला ॥

लाला के उड़ गये होश, हुये खामोश, करें अफ़सोस । दोष दे कर्मों को पछताय ॥ अब तो० ३ ॥

भज परमेश्वर को चाहे अगर भलाई ।
लौ लगा उसी से प्रान पवन ठहराई ॥
कर सत्य चित्त से भजन शुद्ध हो जाई ।
जब हो प्रभु दर्शन कटे कर्म की काई ॥

चौपाई ।

ईर्षा द्वेष कपट कुटिलाई । काम क्रोध मद मोह बिहाई ।
सब जीवों के बनो सुखदाई । हिंसा द्रोह सकल बिसराई ॥

शेर ।

चाहता सबका भला उसका भला होगा ज़रूर ।
दिल जलाता और का उसका जला होगा ज़रूर ॥

जो दिया औरों को उसको भी मिला होगा ज़रूर।
नेकी बद का एक दिन फल बरमला होगा जरूर॥

जो है दुनिया का न्याई, वह सबकी करे सहाई।
वहां रिशवत लगे न पाई, हो धर्म से सबकी सफाई॥

बलदेव सुमिरि ओंकार, करें तुहि पार, पतित उद्धार। प्यार कर ले गो कण्ठ लगाय॥ अब तो० ४॥

भजन १६६

काल तोहि औचक में घेरे है बड़ा भयानक हाय।

अन्त समय नर धन बतलावे, उँगली का संकेत दिखावे।
टप टप टप आंसु टपकावे, पड़ा पड़ा हेरे॥ है० १॥
दीखे पर देखा नहीं जावे, बोले है पर बोल न आवे।
यों फिर हाथ पांव पटकावे, महा दुःख मेरे॥ है० २॥
मन विचारता रहा विचारा, बुद्धि यादन किया किनारा।
हुआ मूर्छा लग वह प्यारा, जीव देह सेरे॥ है० ३॥
पाठक करले जो करना है, तुझे भी एक दिन तो मरना है।
जाना तुझे चिता पर ना है, औरों २ टेरे॥ है० ४॥

भजन २००

तू क्यों करता अभिमान, मौत आनी एक पल में है।

आवे श्वास आवे या न आवे, खबर नहीं कब काल दबावे।
ऐसेही जीवन जान, बुलबुला जैसे जल में है॥ तू० १॥

रावण कंस हुये अभिमानी, जिनकी गति मति गई न जानी।
पर वे भी नहीं रहे, घुसा जब काल बगल में है ॥ तू० २ ॥
क्या मन में सोच बैठा है, क्या फिरता पैठा पैठा है।
कुछ तो समझ नादान, हुआ क्यों फ़ितूर अक़्ल में है ॥ तू० ३॥
यह मन के संकल्प तुम्हारे, आखिर में रह जावें सारे।
जैसे भौंरा बन्द हुआ, पड़ फूल कमल में है ॥ तू० ४ ॥
या जीवन पर हो मदमाता, बासुदेव क्यों जन्म गँवाता।
कुछ तो कर ले धर्म, पड़ा क्यो ख्वाब अमल में है ॥ तू० ५॥

भजन २०१

सिर पै है मौत सवार रे, जाने कब आय घेरे।
चलते बैठे सोते खाते, करते धरते या आते जाते।
मुँह खोले है तैयाररे ॥ जा० १ ॥
वृक्षमें जलमें अग्नि पवनमें, वन उपवन गिरताल भवन में।
कहां करे कैसे अहाररे ॥ जा० २ ॥
माताभी रोवे भगिनी भी रोवे, सारा कुटुम्ब महाशोक में होवे।
कौन बचावन हाररे ॥ जा० ३ ॥
पाठक जो जीतो मौत को प्यारे, केवल ठहरो धर्म सहारे।
जप प्रभु को हरबाररे ॥ जा० ४ ॥

दादरा २०२

इस थोड़े से जीवन पै मान क्यों करे।

लाखों हुये यहां दारा सिकन्दर। बोनापार्ट से कम्पाते यूरप भर। सोचो यू दुःख के सामान क्यों करे ॥ इस० १ ॥
महमूद तैमूर नादिर से आये। लाखों ही मासूम काटे कटाये। ऐसे सितम हो इन्सान क्यों करे ॥ इस० २ ॥
दौलत के लाखों ने तूदे लगाये। काऊँ फिर भी जैसे आखिर गिराये। उत्तम समय को वीरान क्यों करे ॥ इस० ३ ॥
रावण से थे यह बड़े गर्वधारे। आखिरको एक दिन वह यहासे सिधारे। धोखे की टट्टी की पेचान क्यों करे ॥ इस० ४ ॥
ईश्वर नियन्ता है रक्षक हमारा। उस ही का पाठक तू रख ले सहारा। आनन्द में दुखों का मान क्यों करे ॥ इस० ५ ॥

भजन २०३

भूला २ रे मुसाफिर कहां गठरी तू।

वायदा कर के आया जो गर्भ में, पृथ्वी बीच गिरा भूला तू ॥ भूला० १ ॥

ब्रह्मचर्य तूने नहीं धारा, मन अपने को तैं नहीं मारा। कामदेव में भूला तू ॥ भूला० २ ॥

लोभ मोह के वश में हो कर, नियम धर्म सब अपना खो कर। धनका इकट्ठा कर भूला तू ॥ भूला० ३ ॥

रहो हुशियार भजन कर रब का, वह मालिक है सारे जग का। इन्द्रिय के वश भूला तू ॥ भूला० ४ ॥

ग़ज़ल २०४

ज़रा तो सोच ऐ ग़ाफ़िल, कि दम का क्या ठिकाना है।
निकल जब यह गया तनसे, तो सब अपना बिराना है॥
मुसाफ़िर तू है अरु दुनियां सरा है भूल मत ग़ाफ़िल।
सुबह होते तयारी कर, तुझे परदेश जाना है॥
लगाता है अबस दौलत पै क्यों तू दिलको अब नाहक़।
न जावे संग कुछ हरगिज़, यहीं सब छोड़ जाना है॥
न भाई बन्धु है कोई, न कोई आशना अपना।
बख़ूबी, ग़ौर कर देखा, तो मतलब का ज़माना है॥
रहो नित याद में हक़ की, अगर अपनी शफ़ा चाहो।
अबस दुनिया के धन्धे में, हुआ तू क्यों दिवाना है॥

क़व्वाली २०५

नर तन को पाके मूरख, खोता फ़ज़ूल क्यों है।
सुत मित्र बंधु दारा, समझे तू किस को प्यारा।
मतलब की है ये दुनियां, रोता फ़ज़ूल क्यों है॥ नर०॥
किस से तू यारी करता, कुर्बान हो हो मरता।
अश्कों से अपने मुहँ को, धोता फ़ज़ूल क्यों है॥ नर०॥
यहां यार हैं बहु रंगी, दो दिन के तेरे संगी।
उलफ़त का बीज दिल में बोता फ़ज़ूल क्यों है॥ नर०॥
क्यों बनता है दीवाना, जग है मुसाफ़िर खाना।
बेदार हो बेहूदे, सोता फ़ज़ूल क्यों है॥ नर०॥

बलदेव समझ सोदाई, सुध बुध कहां बिसराई।
रुशवा बुतों के पीछे, होता फजूल क्यों है ॥ नर० ॥

क़व्वाली २०६

भाइयों! जगत में आकर, नाहक हुआ है जीना।

मुश्किल से अय बुज़ुर्गो! पाया मनुष का चोला।
अफसोस फिर भी तुमने, कुछ भी धरम न कीना ॥ भा० ॥
इन्द्रियों के वश में होकर, मनका गुलाम बन कर।
विषयों में फँस के पापा, तन मन व धन है दीना ॥ भा० ॥
आया था किस लिये तू, कुछ भी खबर नहीं है।
बेहोश होरहा है, अय मूर्ख बुद्धि हीना! ॥ भा० ॥
बे मोल तेरा जीवन, क्षया तथा में जा रहा है।
हा! शोक है तो यह है, शुभ कर्म कुछ न कीना ॥ भा० ॥
अय वासुदेव! उट्ठो, गफलत में क्यों पड़े हो।
समझो सराय दुनियां, यहां पर नशा न पीना ॥ भा० ॥

दादरा २०७

टेक—नर तन पाके उमर क्यों गँवाई।

लख चौरासी योन भुगतकर। मुश्किल से यह मनुष देह पाई ॥
नर तन० ॥
बाल अवस्था खेल में खोई। विषयन में बीती तरुणाई।
नर तन० ॥

वृद्ध हुआ देह कांपन लागी। करनी सभी कठिन हो आई।
नर तन० ॥
ग्रसित किया रोगों ने आकर। रोवे हाहाकार मचाई।
नर तन० ॥
काल ब्याल जब सिर पर गर्जा। काम न देव एक दवाई।
नर तन० ॥
इकला लाद चला बनजारा। छोड़ सकल सुख सम्पति भाई।
नर तन० ॥
भाई बन्धु माता सुत नारी। रोरो कर सब देत दुहाई।
नर तन० ॥
यह शरीर जो सब से प्यारा। जल भुन जाय चिता में भाई।
नर तन० ॥
बता संग तैं किस का लीना। धर्म बिना हो कौन सहाई।
नर तन० ॥
बांध लई पापों की गठरी। दुनिया से ले चला है बुराई।
नर तन० ॥
हाय शोक योंही जीवन खोया। रोवे कर मल २ पछताई।
नर तन० ॥
जो चाहो तुम जन्म सफल हो। वासुदेव करो नेक कमाई।
नर तन० ॥

दादरा २०८

काहे खोवे उमरिया अनारीरे।

ममता माया के वश होकर, गरबिन है तू कुटुम्ब के ऊपर।
नाम न लीना उसका छिनभर, प्रभु बिन रहेगा दुखारीरे ॥काहे०१॥
रूप तृषित लखि मोहित होवे, जो काया विकार मय होवे।
तन मन धन सब उसपै खोवे, अब भी दशा ले सुधारीरे ॥काहे०२॥
सन्ध्या हवन तू ने बिसराया, पितृयज्ञ का ध्यान न आया।
छल से तू ने द्रव्य कमाया, क्या होगके सुगारीरे ॥ काहे० ३॥
काल तुझे नित ध्यान जगावे, घड़ी अपनी गूंज सुनावे।
क्यों नहीं चेत समय बितावे, भक्तिका बनजा भिखारीरे ॥काहे०४॥
अजर अमर जो है सर्वोपरि, जिस से तेरी रही क्यों फिरि।
पाठक यह तेरा मातृ पितृ वरं, रखले भरोसा भारीरे ॥ काहे० ५ ॥

भजन काफी २०९

कोई तेरे काम न आवे भज अजर अमर अधिकार।
सुत पितु मात भ्रात प्रिय भगिनी धन दारा परिवार ॥
मरत न काम धाम दश धाये न्हाये कुम्भ किनार।
बन बश बनत फिरत मृग बन २ मृगमद नाभि मँझार ॥
तुलसी नीर बेल यह पीपल, कदली कदम अपार।
मन उपवन वृन्दावन मधुवन, और गिरराज पधार ॥
सन्ध्या यज्ञ योग जप छोड़ा, मोड़ा मन उपकार।
आर्य धर्म का मर्म न जाना, किया नित्य आहार ॥
पढ़ पढ़ वेदिक और कुरा नम, बैठ धर्म विसार।
आदि काल की विद्या का फिर, कैसे होय प्रचार ॥

सब प्रकार से सिद्ध हो रहा, यह संसार असार।
तन धन योवन जात छिनक में, भजत न सिरजनहार॥
ऐहै काल गांसिहै घींचे खींचै फांसी डार।
फिर पछताये प्राण न बचिहैं हुइहै यह तन छार॥
खसे केस देह भई जर्जर, बीती वैस बहार।
परिहर सब पाखण्ड हजारी, प्रभु भज बारम्बार॥

भजन २१०

उस ईश्वर दीनदयाल को, वैराग्य बिना नहिं पाया॥ टेक॥

एक समय थी भरी जवानी, कामदेव निज ध्वजा फैरानी।
रूप देख हो बुद्धि दिवानी, भूला प्रभू विशाल को॥
मन विषयों को ललचाया, आंखों को रूप लुभाया।
एक दिन दिल में शरमाया। उस ईश्वर०॥१॥

जहां कामना पूर न पाई, क्रोध ने अपनी आंख दिखाई।
झट से तहँ ठन गई लड़ाई, पहुँचाया उस हाल को॥
अपना घर तक फुँकवाया, प्रण आतमघात का भाया।
आखिर एक दिन यों आया। उस ईश्वर०॥२॥

एक समय मन लोभ समाया, धन दौलत मैंने खूब कमाया।
झूठ दगा छल से घर लाया, जोड़ा बहु धन माल को॥
नहिं खर्चा नहिं खुद खाया, चोरों से बहुत बचाया।
इस में भी सार न पाया। उस ईश्वर०॥३॥

बेटा बेटी परिजन नारी, जिनके लिये सब उम्र गुजारी।
अपनेहि सुख की करें तयारी, देख के उनकी चाल को ॥
मेरे मन वैराग्य समाया, मैंने सत्संग अच्छा पाया।
मुझे निर्जन थल ही भाया। उस ईश्वर० ॥४॥

एक समय अहंकार समाया, अपने धन बल पर गर्वाया।
इसने भी नीचा दिखलाया, छल किया अहम सवालको ॥
मन निर्मल शीशा बनाया, आंखों को बन्द कराया।
वाणी को ठीक सधाया। उस० ॥५॥

आखिर उपनिषदों को विचारा, वेद ज्ञान का लिया सहारा।
पाठक तब जाना प्रभु प्यारा, छोड़ा सब जंजाल को ॥
अविनाशी ईश्वर पाया, जिस ने ये जगत रचाया।
मैं उस का भक्त कहाया। उस० ॥६॥

भजन २११

दोहा-भरता किस के इश्क में, करता किस पर प्यार।
यहां मतलब के मीत हैं, देखा गया विचार ॥

टेक-सब स्वारथ का संसार है, तू किस पै प्यार करता है।
जब तक प्यारे करे कमाई, तब तक सारे करें बड़ाई ॥
चचा भतीजे ससुर जमाई, कुनबा तावेदार है।
दिलबरी का दम भरता है। तू किस पै० १ ॥
जब तू शक्तिहीन हो जावे, अपनी हाजत कुछ फ़रमावे।

यार दोस्त कोई पास न आवे, मिट जाता सवक़ार है ॥
कम्बख़्त नाम पड़ता है । तू किस पै० २ ॥
जिस के प्यार में ईश बिसारा, धर्माधर्म न तनक विचारा ।
उस कुनबे ने किया किनारा, कौन यहां गमख़्वार है ॥
कह कह के यों मरता है । तू किस पै० ३ ॥
मत बन जान बूझकर भोला, है खुदग़र्ज़ यार मिठ बोला ।
यह बलदेव मानुषी चोला, फिर मिलना दुशवार है ॥
जप उसे जो दुख हरता है । तू किस पै० ४ ॥

भजन २१२

दोहा–धन यौवन को पाय के, क्यों करता अभिमान ।
चन्द रोज़ की चांदनी, कोइ दम का महिमान ॥

टेक–मत पैंठ मीत अभिमान में, य ज़रासी ज़िंदगानी है ।
बड़े २ शूर बीर धन वाले, अरु हकीम तरहदार निराले ॥
सितमगार मुँह कर गये काले, बसे जाय श्मशान में ।
गई छूट हुक्मरानी है । ये ज़रासी ज़िं० ॥ १ ॥
मुंसिफ़ हो के कर सरदारी, नहीं तो पीछे होगी ख्वारी ।
चली जाय सब खुदमुख़्तारी, है तू जिस के गुमान में ॥
ये जिस्म तेरा फ़ानी है । ये ज़रासी ज़िं० ॥ २ ॥
दर्द दूसरे का न विचारे, बिन अपराध ग़रीबन मारे ।
दुखी दीन को नित्य पछारे, सूझत नहिं अज्ञान में ॥
तुझे यम की मार खानी है । ये ज़रासी ज़िं० ॥ ३ ॥

लाखो गले पर छुरी चलावे, खुंख्वारी से बाज न आवे।
जुल्म करे कुछ खौफ न आवे, सोचत नहीं जहान में ॥
उस रब की राजधानी है। ये जरासी जि० ॥ ४ ॥
जुल्म किसी पर मत कर भाई, यह दुनियां ईश्वर ने बनाई।
अबहुं छोड़ कपट कुटिलाई, लगजा उसके ध्यान में ॥
बल्देव जो गत पानी है ॥ ये जरासी जि० ॥ ५ ॥

गजल २१३

ये दुनिया चन्द रोजा है प्रभू का ध्यान धर लीजे।
गुजरती आयु जाती है, सभी विधि से सुधर लीजे ॥ १ ॥
न जाने कौन से छिन में, बजेगी आखिरी नौबत।
नकारा कूंच का बजता है, इस पर गौर कर लीजे ॥ २ ॥
पड़े सोते हो तुम अबतक, गये साथी निकल कोसों।
कठिन रस्ता है मंजिल दूर, उठिये कर सफर लीजे ॥ ३ ॥
खुशी के साज और सामा, फिरे है जिनपे तू शादा।
हमारा मान कर कहना, हटा इन से नजर लीजे ॥ ४ ॥
फँसाया हम को पापों में, बुरे मन के विचारों ने।
अगर कुछ चाहते अपनी, भलाई तो सँभर लीजे ॥ ५ ॥
न इशरत काम आवेगी, मगर हसरत सतावेगी।
है बेहतर धर्म धारण कर, सुयश में हो गुजर लीजे ॥ ६ ॥
प्रभू के प्रेम साधन से, मगन होने का कर उद्यम।
जमा के मन को सध्या में, परम सुख की लहर लीजे ॥ ७ ॥

ग़ज़ल २१४

भूला है किस पै अय मनुष्य फिरता है किस पै यूं मगन ।
क्या यह ख़्याल कर लिया, कि है अमर यह तेरा तन ॥
इत्र लगा के जिस पै तू होता है दिल में सुर्खरू ।
राखिये ज़िद्दनेनशीन यह तू नाश ये होगा एक दिन ॥
गांव लिबासो मालो ज़र, जिससे है तेरा कर्रोफर ।
सब यह रहेगा यांही पर स्वर्ग को होगा जब गमन ॥
रखते हैं तुझसे अब जो प्यार, माता पिता और स्त्री यार ।
देखेंगे सब यह एक बार, जलते हुये तेरा बदन ॥
प्यारी तेरी तब आनकर मारेगी हाथ तानकर ।
छाती पै तेरी अय बशर होगा न और कुछ यतन ॥
दोस्त कहेंगे वरमला, जल्दी से ले चलो उठा ।
दिन है बहुत सा चढ़गया होती है देर श्रेष्ठ जन ॥
इससे न ऐसा काम कर, पहुँचे किसी को जो ज़रर ।
मौत का दिल में रख तू डर अन्त में हो न तामहन ॥
प्रीति परस्पर अब तू कर सब से तू मिल झुका के सर ।
निन्दा भी कोई करे अगर, स्तुति तू अपनी उसको गिन ॥
धर्म का तू प्रचार कर जान भी जाय तो न डर ।
होगा तू इस तरह अमर, गरचे करेगा यह यतन ॥
मौत है सर पर हर घड़ी, मालूम नहीं कब आपड़ी ।
तन है यह बालू की मढ़ी, जाने यह कब लगे गिरन ॥
थे जो महराज नामवर, जग में था जिनका खूब डर ।

खाते हैं ठोकर उन के सर, काल ने जब किया हनन ॥
लंकपती न अब यहां, कंस का अब कहां निशां।
शिक्षा लो इनसे मेहरबां, दास की यह लगी लगन ॥

भजन २१५

है थोड़े दिन जग रहना, मत कड़ुवे बोले बोल।
वैमनस्य घर २ है लड़ाई, दुश्मन है भाई का भाई।
जग में इसने अशान्ति फैलाई, बुद्धि तुला पर तोल ॥ है० ॥
मौन व्रत उनको बतलाया, जिन पै मीठा वचन न आया।
क्यों नहिं प्रभु का भक्त कहाया, मन की घुण्डी खोल ॥ है० ॥
आवागमनकी कट जाय फांसी, कटें फन्द तेरे लखचौरासी।
जपले निराकार अविनासी, ये है रत्न अनमोल ॥ है० ॥
किसी जीव का मन न दुखाओ, धर्म अहिंसा जग फैलाओ।
पाठक कहे यों प्रभु को पाओ, वह है अगम अतोल ॥ है० ॥

भजन २१६

भरोसा नहिं एक स्वास कारे, क्यों फूला फिरे गँवार।
बना शरीर ये हाड़ मांस का, है मल मूत्र का गार।
समझ देख तू दिल में प्यारे, क्या है इस में सार ॥ भ०१ ॥
चौरासी लख योनि भोगकर, आये मुक्ति के द्वार।
फिरभी फँसगये विषय भोग में, किया न ईश विचार ॥ भ०२ ॥
याद करहु जब मित्र गर्भ में, संकट परे अपार।

उस प्रभु को भूला अभिमानी, जिसने किया था पार ॥ भ०३ ॥
राम और रावण कुम्भकर्ण गये, अरु गये यक्षकुमार ।
ऐसेहि तू भी जायगा एक दिन, तेरा किन में शुमार ॥ भ०४ ॥
सुत धन दारा संग जायंगे, समझ सोचले यार ।
जा दिन डंका बजे काल का, छुटेगा सब परिवार ॥ भ०५ ॥
नेकी कमाले ईश को भजले, समय न बारम्बार ।
ऋषीराज की यही है शिक्षा, कहत पुकार पुकार ॥ भ०६ ॥

भजन २१७

यह है असार संसार वृथा इसमें लपटावेगा ।
कर जगत पिता का ध्यान तभी तू आनन्द पावेगा ॥

यह मनुष्य का तन पाया, जप योग में चित न लगाया ।
विषयों में व्यर्थ गमाया, अन्त में दुख ही पावेगा ॥कर०॥
हुये बड़े २ बलधारी, विद्वान और शूर खिलारी ।
गये काल गाल मारी २, एक दिन तुझे भी खावेगा ॥कर०॥
धन यौवन सुत अरु दारा, कर जांयगे तुझसे किनारा ।
कोई संग न जाने हारा, नेकी बद साथहि जावेगा ॥कर०॥
जवानी को यूंही बिताया, जब जरा ने आन दबाया ।
सीने में कफ़ रुन्ध आया, खाक फिर तू क्या बनावेगा ॥कर०॥
तू है ऋषिराज अनारी, दी प्रभु की सुरति बिसारी ।
पाता है तभी दुखभारी, नहीं हरगिज़ सुख पावेगा ॥कर०॥

भजन २१८

जरा आंखें तो खोलो यार,
क्यों बेहोश पड़े मतवाले। टेक,
तुम्हें, कैसी अविद्या छाई, सुध बुध सारी, बिसराई।
जड़ वस्तु से प्रीति लगाई, कभी हा ! जपो नहीं ओंकार।
पीते विष रस के हो प्याले ॥ जरा आंखें० १ ॥
यह धन दौलत और काया, है बादल की सी छाया।
हा ! तुम्हें चेत नहिं आया, उर में मद का अकुर धार।
नित रंग भरते रहो निराले ॥ जरा आंखें० २ ॥
जब वृद्ध अवस्था आवे, कफ खासी आन दबावे।
नहीं पाव घड़ी सुखपावे, दुखों की पड़ेगी भारी मार।
जिस दिन आके काल दबाले ॥ जरा आंखें० ३ ॥
क्यों ऐसा समय गंवाओ, ईश्वर से ध्यान लगाओ।
ध्रुव धाम सहज ही पाओ, रहे मत तेजसिंह निरधार।
सुन्दर पंथ बनाने वाले ॥ जरा आंखें० ४ ॥

भजन २१९

कर लेहु प्रशंसित काम रहो अब थोड़ी जिन्दगानी।
रहो न योंही अपयश पाते, पापी पामर पोच कहाते ॥
मंगलमय मारग अपनाओ, यह सिख सुखदानी ॥ कर० १ ॥
छल बल कपट कुकर्म बिसारो, यम नियमों को उरमें धारो।
कबहु न काहू पैठ दिखाओ, चेतो अभिमानी ॥ कर० २ ॥

दीन अनाथन के दुख टारो, देश दशा का ढंग सुधारो।
साहस पाय बनो लाखन में, शूरवीर दानी ॥ कर० ३ ॥
कीरति की नित सम्पति जोड़ो, पतित समागम से मुख मोड़ो।
साथ न होगी हाय देह भी, त्यागो मनमानी ॥ कर० ४ ॥
ऐसी देह न पुनि पाओगे, करलो कुछ तो पछताओगे।
कर्ण अन्त की घड़ी सामने, समझाते ज्ञानी ॥ कर० ५ ॥

भजन २२०

टेक—पल पल आयु रही है बीत।

संग्रहकर परहित की पूंजी यही भली सिख मीत ॥पलपल० १ ॥
विषयों में फँसना न भला है लीजे बाजी जीत ॥ पल पल० २ ॥
तर जाओ जगदीश्वर के तुम गाय गाय गुणगीत ॥पल पल० ३॥

भजन २२१

क्या तन मांजतारे आखिर माटी में मिल जाना।
माटी ओढ़न माटी पहिरन माटी का सिरहाना।
माटी का कलबूत बनाया जिस में भँवर समाना ॥क्या० १॥
माटी कहती कुम्भकार से तु क्या रूंधे मोय।
एक दिन ऐसा भी तो होगा मैं रूंधूंगी तोय ॥ क्या० २ ॥
चुन चुन लकड़ी महल बनावे बन्दा कहे घर मेरा।
नहिं घर मेरा नहिं घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा। क्या० ३॥
फाटा चोला भयो पुराना कब लग सीवे दर्जी।

दिल का मरहम कोई न मिलिया जो मिलिया अलगर्जी ॥४॥
दिल के मरहम सतगुरु मिलगये उपकारन के गर्जी ।
नानक चोला अमर भयो जो सन्त मिलगये गर्जी । क्या० ॥५॥

भजन २२२

जन्म सफल कर लीजिये, अवसर न विसारो ।

कर सत्संग कुसंगति त्यागो, सुमति सुधारस पीजिये । अव०
दीन अनाथन को अपनाओ, सूरन को सुख दीजिये । अव०
परम रंक भिक्षुक भारत पै, प्रम पसार पसीजिये । अव०
हिलमिल शंकर के गुण गाओ,वाद विवाद न कीजिये । अव०

भजन २२३

इस काल बली से बाजी चला तो सब हार गये ३ ।

जितना परिवार तुम्हारा, कोई संग न चलने हारा ।
सब कर गये अन्त किनारा, न संग में सुत यार गये ३ ॥ इस०
जिन वश में किया न मनको, नहीं दिया धर्म में धनको ।
तो फिजूल ही नर तनको, जगत में योंही हार गये ३ ॥ इस०
यहां लाखों जालिम आये, जिन दीन हीन तरसाये ।
वह भी न सुखी कहलाये, स्वयं को मार गये ३ ॥ इस०
जो धर्म से प्रीति लगावे, पग अधरम में न बढ़ावे ।
पद तेजसिंह कथ गावे, वही तो जन पार गये ३ ॥ इस०

भजन २२४

दोहा—पानी का सा बुलबुला, यह है अधम शरीर।
कब तक प्रिय! ठहरायगा, वृक्ष नदी के तीर॥
टेक—थोड़े से जीने पर क्यों इतना अभिमान।
ये क्षणभंगुर काया है, बादल कीसी छाया है।
जिसे रहा स्थिर जान॥ थोड़े० १॥
हुये रावण से अभिमानी, और दुर्योधन लासानी।
मिटा सब उनका निशान॥ थोड़े० २॥
नित भरी अकड़ में डोले, नहिं सीधा किसी से बोले।
चढ़ा शिर पै शैतान॥ थोड़े० ३॥
क्या इस में है चतुराई, सब छोड़ी नेक कमाई।
किये दुख के सामान॥ थोड़े० ४॥
कहे तेजसिंह शर्मा तू, कुछ अब भी होश में आ तू।
रहा बन जो इंसान॥ थोड़े० ५॥

दादरा २२५

अँखियां लागीं समय सब बीत गयो।
शैर—खुदी के जोम में बेखुद खुदा मिले क्योंकर।
अनी जो दिल में पड़ी वह अनी टले क्योंकर॥
उदू है खम से तेरे यह उदू हिले क्योंकर।
न तू मिले तो मिले वह तेरे गले क्योंकर॥
सितम है तुममें न, तुमको सितम मिले क्योंकर। अँखि० १

रहे हमेशा से ऐसे शमूल बातों में।
गुजारी उम्र को बक २ जिक़ूल बातों में ॥
कभी न खुश हुये आखिर मळूल बातों में॥
खराब वक्त किया सब फिज़ूल बातो में ॥
बतादो तुम को, हुआ क्या हसुल बातों में । आँखि० २ ॥

रहोगे कब तलक ये फिक्र ख्वाब ग़फ़लत में ।
उठो २ ये सदा आती है महश्मर में ॥
लगाना दाग है ये फायदा अपनी हुरमत में ।
अजल से बचनों नहीं और तुम मुहब्बत में ॥
हुये शहीद हो बतलादो किसकी उलफत में । आँखि०३॥

हजारों दोस्त थे अपने, किरोड़ों खिदमतगार।
हसीन लाख हुये नाज उठाने को तैयार ॥
खिरद औ अक्ल न रखते थे और थे जरदार ।
लुटाके माल जवानों को जब हुये हुशियार ॥
जो देखा गौर से प्यारे तो प्रेम था बेकार । आँखि० ४ ॥

भजन २२६

फिर दांव न ऐसा बार बार, उठ बीती जात नर तन बहार ।
भज सकल सृष्टि कर सुजनहार, जो घट २ व्यापक निर्विकार ॥
है वही मुक्तिदाता उदार, तज उसे होत क्यों जग में ख्वार ॥ १ ॥
हुये बड़े २ योधा अपार, तिन्हें जीत न लागी तनक बार ।
जिनके धन सेना बेशुमार, गये अन्त समय सब हाथ झार ॥२॥

अब समझ सोच कुछ कर विचार, कर ग्रहण सार तजदे असार।
है यही धर्म सब सुखको द्वार, हर शज़िय त्याग मन से विकार ॥३॥
जग जीवन तेरा बेक़रार, तज अजहुं नींद ग़फ़लत गँवार।
बलदेव जन्म को ले सुधार, भ्रम भारत काहे द्वार द्वार ॥४॥

दादरा २२७

बांधो न गठरिया अपयश की।
है थोड़ी उमरिया दिन दश की ॥ बांधो न० ॥

अकड़ बेग यहां कितने ही आये, गये धरणि में सब धसकी ॥१॥
कोई दिन का महिमान यहां तू, मत ले चाट विषय रस की ॥२॥
नहीं क़ज़ा से चलिहै क़ज़ाकी, ठसक रहेगी सब ठसकी ॥३॥
अजहुँ विचार धर्म अपने को, धीरे २ उमर जात खसकी ॥४॥
यम के द्वार मार पड़े मोटी, पही निकसि जाय [illegible] की ॥५॥
भज प्रभु को बलदेव बेगि अब, न तो काल लेत [illegible] असकी ॥६॥

दादरा २२८

चलना है पथिक रह जाना नहीं।

क्यों सोवे ग़फ़लत में ऐसा, यहां एक पलका ठिकाना नहीं ॥१॥
तेरे सँघाती कितने चले गये, तेरा यह कुछ थाना नहीं ॥२॥
इस सराय में चोर बसत हैं, उन से गांठ कटाना नहीं ॥३॥
बली पहलवां हजारों आये, चलते समय काहू जाना नहीं ॥४॥
जिस मालिक ने तुझ-को पाला, उसको तू पहचाना नहीं ॥५॥

फ़स मारत फिरता दुनियां में, दीवाना है तू कुछ दाना नहीं ॥६॥
यमको उत्तर दे किस मुख से, है कोई बाक़ी बहाना नहीं ॥७॥
अजहूँ जाग बलदेव नींद से, फिर फिर नर तन पाना नहीं ॥८॥

भजन २२९

कब लेगा प्रभु का नाम उमरिया गई रही थोड़ी। टेक–
कौन भूल में पड़ा सोचकर, नाचे काल कुचाली शिर पर।
लालच की लीला में फसकर, क्यों पूंजी जोड़ी। कब लेगा० १॥
केवल खेल कूद मन भाया, हित साधन में चित न लगाया।
हाय! अभागे पाप कमाया, सतसंगति छोड़ी। कब लेगा० २॥
मात पिता भ्राता सुत दारा, साथ रहे परिवार न सारा।
मानो मान मोह की धारा, रे दुर्मति मोड़ी। कब लेगा० ३॥
अबहूं जीवन को न सुधारै, करणी की जड़ "कर्ण" बिगारै।
नेक न हरि की ओर निहारै, प्रेम लता तोड़ी। कब लेगा० ४॥

भजन २३०

कर मल २ पछितावे, जब मृत्यु तेरी नियराई।

बड़े भाग्य मानुष तन पाई, किंचितहू कीन्हीं न भलाई।
वृथा समय को दीन्ह गँवाई, धर्म की अब सुध आई। जब० १॥
बाल समय सब खेल गँवायो, विद्या पढ़ी न धर्म कमायो।
इन्द्री जीत न वीर्य बढ़ायो, सोच समझ पछताई। जब० २॥
युवा अवस्था आई तन में, चूर भयो भारी यौवन में।

कौन पाप नहिं रहे भजन में, योंहीं आयु बिताई ॥जब० ३॥
वृद्धापन की बारी आई, लोभ मोह तृष्णा अधिकाई।
करी जन्मभर पाप कमाई, तुलसी आयु घटाई ॥जब० ४॥

ख्याल २३१

करो सदा सत्कर्म धर्म तुम मिलै न पुनि नर की काया।
बड़े भाग्य से प्रियवर तुमने ऐसा शुभ अवसर पाया॥
चेतो क्यों जीवन को प्यारे विषयों बीच गँवाते हो।
तज विवेक की बातें क्यों तुम ऐसा पाप कमाते हो॥
दीन अनाथ दुखी को लख के नेक तरस नहीं खाते हो।
बन सुधीर मनमाहिं विचारो दुःख को इसीसे पाते हो॥
सारी त्याग दीजिये जड़ता बहुतक तुमको समझाया॥ बड़े० १॥
करके मेल मिलाप सदा वर वेद धर्म को विस्तारो।
यही भली सामाजिक शिक्षा अपने जीवन में धारो॥
नाना मत पन्थों के झगड़े सारे के सारे टारो।
करो सदा कल्याण देश का मत अपना सर्वस्व हारो॥
ऋषि मुनियों की चलो चाल क्यों अपने कुल को शर्माया॥ बड़े०२॥
पर के दुखको निजदुख समझो पर सुखको निजसुख मानो।
पर नारी को निरख के प्यारे निज माता भगिनी जानो॥
काम क्रोध मदलोभ मोह को त्यागो अबतो सशानो।
कर संचित सुधर्म से धनको भले बुरे को पहचानो॥
क्षमा, शील, संतोष बढ़ाओ मिले सदा सुख मन भाया॥बड़े०३॥

सायं प्रातः सन्ध्या करके जगदीश्वर में चित लाओ ।
अग्नि होत्र का नियम निभाकर परमानन्द नित्य पाओ ॥
भूलो मत बलिवैश्वदेव को पितृयज्ञ भी फैलाओ ।
फैले सुख सारी दुनियां में श्रेष्ठ आर्य्य तुम कहलाओ ॥
विविध-भाव से भरा ख्याल तुलसी ने अपना कथगाया ।
बड़े भाग्य से प्रियवर तुमने ऐसा शुभ अवसर पाया ॥ ४ ॥

ग़ज़ल २३२

सुनो ऐ मित्रवर यक दिन यहां से सबको जाना है ।
करो शुभ कर्म निशि वासर तभी आनन्द पाना है ॥
बने अज्ञानी फिरते हो, न होता चेत है बिल्कुल ।
अविद्या आदि से सोचो, जरूरी चित हटाना है ॥
जिसे ठहराया वेदों ने तुम्हारा फर्ज आवश्यक ।
बड़ा अफ़सोस है देखो उसे तुमने न माना है ॥
पड़े सोते हो गफलत में ज़रा अय आंख तो खोलो ।
हुआ है प्रात उठ बैठो तुम्हें होना रवाना है ॥
न सम्पति काम आवेगी न भ्राता मित्र सुत दारा ।
अरे इनकी मुहब्बत में वृथा चित को फँसाना है ॥
महा सुख मूल जगदीश्वर सकल सृष्टी के कर्त्ता को ।
कभी मत भूल अय तुलसी वही तेरा ठिकाना है ॥

दादरा २३३

कोई दम का यहां है बसेरा रे ।

जिस घर को तू अपना जाने, यह तो नहिं है तेरारे १ ॥
बड़े २ भूप वीर अरु योधा, कर गये यहां पर डेरारे २ ॥
कालबली ने यक दिन सबको, आय यहां से खदेरारे ३ ॥
विषय भोग में फँस मन मूरख, ईश्वर से मुख फेरारे ४ ॥
ना जाने कब आवे बुलावा, करले काम सवेरारे ५ ॥
करले जीवरे धर्म कमाई, क्यों आलस ने घेरारे ६ ॥
सालिगराम ईश को जपले, पार होय तेरा बेड़ारे ७ ॥

❀ ३ वेद-प्रचार ❀

भजन २३४

करोरे भाइयो! वैदिक धर्म प्रचार।

दयानन्द भूषण कुल पूषण कह गये वारम्बार।

भूमण्डल के जो हैं मतवादी। सब माने हैं वेद अनादी। तुमने उस की याद भुलादी। बिना वेद पढ़े यह तुम मित्रो! सब मानो हो हार॥ करोरे० १॥

बिन विद्या ब्राह्मण हुये धूरत। क्षत्रिय हुये नपुंसक सूरत। वैश्य शूद्र हुये छल की मूरत। धर्म काम को करें कलंकित। करते हैं व्यभिचार॥ करोरे० २॥

एक वेद पढ़ विप्र कहावे। दो पढ़ले ऋषि पदवी पावे। तीन पढ़ै महर्षि कहावे। प्रजापती पद मिले, कहे ब्रह्मा जो पढ़ले चार॥ करोरे० ३॥

भजन २३५

धरम पथ फैलादो घर घर द्वार।
नगर नगर और ग्राम ग्राम में, वेदों का करो प्रचार १ ॥
द्वेष निकालो प्रीति बढ़ालो, मन में सद् गुण धार।
थोड़ा है जग जीवन प्यारे, लो अब याहि सुधार २ ॥
धर्म के कारण स्वामी दयानन्द, जीवन गये निसार।
आर्य्य मुसाफिर लेखराम भी, एवंसु गये हैं वार ॥ ३ ॥
धर्म के कारण गुरुगोविंद सिंह, सह गये कष्ट अपार।
हटे न पीछे धर्मक्षेत्र से, उन के राज कुमार ४ ॥
धर्म के कारण राजा हरीचन्द, राज पाट गये हार।
रानी बिकी रहिताश पुत्र संग, भूप श्वपच के द्वार ५ ॥
ग्यारह बरस का बाल हकीकत, धर्म का अंकुर धार।
जान दे गया धर्म न छोड़ा, कहै इतिहास पुकार ६ ॥
भाई तारुसिंह सा होना जग में है दुशवार।
मारे गये धर्म नहीं छोड़ा लो मन माहि विचार ७ ॥
ऐसे तुम भी बनो मित्रवर! त्याग असत् व्यापार।
तन धन धरती धाम हैं झूंटे, धर्म को जानो सार ८ ॥

भजन २३६

वेदों की आज्ञा अब तो फैला दो देश २ में ॥
ब्रह्मचर्य पूरण धारो, वेद पढ़ लो भाई चारो।
ज्ञान को बढ़ा दो देश २ में ॥ वेदों० १ ।

फिर गृहस्थ आश्रम लेना, धर्म में सदा चित हित देना।
सत्य पथ फैला दो देश २ में ॥ वेदों० २
फिर वनस्थ होना चहिये, चित हित में देते रहिये।
गुरुकुल बना दो देश २ में ॥ वेदों० ३
होय फिर संन्यासी स्वामी, सत्यमार्ग होना गामी।
धर्म को सुनादो देश २ में ॥ वेदों० ४
हिंसा झूठ चोरी बाधक, तजके सत्य बोलो पाठक।
एक मत करादो देश २ में ॥ वेदों० ५

भजन २३७

फैला दो ब्रह्म ज्ञान जगत में।

सत्य धर्म और वेद पठन में अर्पण कर दो प्राण १।
धीरज धारो मीठा बोलो, तज देहु हठ अभिमान ॥
नित प्रति पंचयज्ञ का करना, दे दीनों को दान २।
जगत् गुरू था देश हमारा, सब ने किया बखान ॥
वेदों की प्रिय आज्ञा पालो, होगा वह फिर मान ३।
देश देश में धूम मचा दो, हो जाओ सिंह समान ॥
चीन अरब आदिक देशों में, यूरुप और जापान ४।
गुरुकुल में सन्तान पढ़ाओ, तजो मोह की बान ॥
सच्चे मात पिता कहलाओ, दो गुरुकुल को दान ५।
तुम्हरे हित ऋषि अर्पण कर गये, तन मन धन और प्राण ॥
छज्जू कहै वेग ही चेतो, मिलकर ऋषि सन्तान ॥ ६ ॥

भजन २३८

आजाना रे इस वैदिक धरम पर।

आजानारे भाइयो आजानारे सभी आजानारे ॥ इस वैदिक० १ ॥
यह तो ईश्वर की है बानी, न्यारे ऋषि मुनियों की मानी।
ऋषि दयानन्द फर्मानी, कहते जिनका सब कल्यानी॥
छोड़ो झूठा करम, न गँवाओ जनम, कुछ लाओ शरम।
पकड़ो वैदिक धरम ॥ आजानारे० २ ॥

जो कोई इसको पढ़े पढ़ावे, पढ़कर भारी बोध बढ़ावे।
सो वह परमानन्द को पावे, यही वेद हमको सिखलावे॥
यही सच्चा करम, जिसे कहत धरम, जो कोई जाने मरम।
आवे इसकी शरन, आवे इसकी शरन॥ आजानारे० ३ ॥
कहे परशुराम सुन भाई, सारे हिन्दू मन चित लाई।
चाहे मुसलमान ईसाई, कोई मत वाले हों भाई॥
सबही आजानारे, फल पाजानारे, दुख उठा जानारे।
सुख पाजानारे, सुख पाजानारे ॥ आजानारे० ४ ॥

ग़ज़ल २३९

जमाने भर में वेदों की सदाकत होने वाली है।
दिलों में सब के वेदों की वह इज़्ज़त होने वाली है॥
विधी ब्रह्मचर्य की फिर भी सुजीवित होने वाली है।
तो अब सहबत परस्ती यां से रुखसत होने वाली है॥

लगी करने हैं अब कन्यायें भी जुन्नार को धारन।
बख़ाने गार्गी हर एक औरत होने वाली है॥
ज़माने भर में डंका वेद का बजता है अब मित्रो।
ज़माने भर की अब कुछ और हालत होने वाली है॥
हुई थी देव-भाषा की जो हालत कुछ दिनों पहले।
वही अब फ़ारसी की देखिये गत होने वाली है॥
शरन में वेद के सज्जन सभी आने लगे अब तो।
प्रभू की सब पै ज़ाहिर सच्ची कुदरत होने वाली है॥
लगीं करने हैं प्राणायाम अमरीका की महिला गण।
वहां भी इल्म रूहानी की कसरत होने वाली है॥
न क्यों! अय महर्षि तुझ पै दिलोजां हम करें कुर्बान।
तरक्क़ी हिन्द की तेरी बदौलत होने वाली है॥
न घबराना मेरे मित्रो कि गुरुकुल खुलगये अब हैं।
जगत से दूर यह सारी जिहालत होने वाली है॥
न हों वे आश वे है जो गिरफ्तारे मरज़ मुहलक।
कि आयुर्वेद की जारी लियाक़त होने वाली है॥
करेगा वाक़ई इंसाफ़ वह मुंसिफ़ हक़ीक़ी है।
ग़लत यह बात है उस जा शफ़ाअत होने वाली है॥
पसे मुर्दन अगर होंगे तो संग पेमाल ही होंगे।
नहीं हमराह दौलत और हशमत होने वाली है॥
पये इसलाह क़ौमी हिन्दुओं को लाख समझावें।
मुअस्सर यह नहीं उनको नसीहत होने वाली है॥

लगे वनने सभी इसजा इक़ीक़ी धर्म के ख्वाहां।
हर एक ही भक्त को ईश्वर से उल्फत होने वाली है॥

भजन २४०

आओ देखो मुक्ति साधन वेदों ही का ज्ञान है।
ज्ञान है विज्ञान है, कर्म ही प्रधान है।
जिससे उसका ध्यान है, सो सर्व शक्तिमान है॥ आओ० ॥

इंजील नहीं तौरेत में, नहिं काशा अल्लाऽवेत में।
जिन बुध के नाहिं निकेत में, है युक्ति प्रभु के हेत में।
प्राणी क्यों छाया अज्ञान, जड़ में चेतनता का भान।
मान मान दुख की खान है॥ आओ० ॥

शेर—मुक्ति उसका नाम है जो दुख छूटें ससार के।
दुख छूटें तब जब न हो आवागमन का चक्र ये॥
प्रवृत्ति तब तक है जब तक जन्म मृत्यु लग रहा।
दोष से है प्रवृत्ति अरु दोष मिथ्या ज्ञान से॥
मिथ्या ज्ञान, कंटक जान, तजो पाठक सशय वान॥ आओ०

दादरा २४१

हम वेदों की शिक्षा सुनाये जांयगे।
अपनी निन्दा पर ध्यान न देंगे, सदा स्वामी का मन्तव्य फैलाये जांयगे॥१॥

जैनी पुरानी किरानिन को मित्रो, ऋषियों के वाक्य सिखाये जांयगे ॥२॥

हिंसा न करना बता कर के सबको, कुरीती यहां से मिटाये जांयगे ॥३॥

विधवा अनाथों की टेर पर तुलसी, सारे भारत को रुलाये जांयगे ॥ हम० ॥४॥

ग़ज़ल २४२

दुनिया में चारों वेदों का प्रचार करेंगे ।
जो कुछ ऋषी की आज्ञा है उसे सरपै धरेंगे ॥
निश्चय हमारी कोशिशों का फल यही होगा ।
काबुल अरब ईरान में जा झण्डे गड़ेंगे ॥
अमरीका आदि यूरुप जो देश हैं बचे ।
बस वेद धर्म की हो आ शरणा पड़ेंगे ॥
अफ़रीका श्याम ब्रह्मा आदि जंगली जो देश ।
कल्याणी वाणी वेद की सब दिल से पढ़ेंगे ॥
होवेंगे अग्निहोत्र भी घर २ में सुबह शाम ।
पितृ अतिथ वलिवैश्व देव यज्ञ करेंगे ॥
होगा आनन्द शांति घर २ में फिर ज़रूर ।
वैदिक धर्म पै शीश जब आ आ के चढ़ेंगे ॥
ईश्वर ने वेद सब के लिये हैं दिये हुए ।
सारेही मान इनका फिर से करने लगेंगे ॥
प्रचार फण्ड को प्रथम हम करके खूब पुष्ट ।

आगे ही आगे धर्म के मैदान में अड़ेंगे ॥

भजन २४३

दोहा—केवल वेद ही जगत में, कुदरत का कानून ।
उसे त्यागि मत कीजिये, सत्य धर्म का खून ॥

तुम को सोते हो चुकीं, बरसें पांच हज़ार ।
अब तो उठकर कीजिये, बुधवर वेद प्रचार ॥

टेक—वर वैदिक धर्म प्रचार में, तन मन धन सभी लगादो ।

विन वैदिक धर्म प्रचार किये सुनो भाई ।
करो कोटि यतन नहीं मिलेशान्ति सुख दाई ॥
बस इसी में समझो अपनी कुशल भलाई ।
भारत सुधार का है यही एक उपाई ॥

शैर—पहिले भारत में इन्हीं वेदों का खूब प्रचार था ।
लोक और परलोक की खूबी का दारोमदार था ॥
उस ज़माने में ये भारत विद्या का भण्डार था ।
मातहत सब मुल्क थे भूगोल तावेदार था ॥
जब से तुम वेद विसारे । हुये गर्क नींद में प्यारे ।
तब से सुख मिट गये सारे । पाखण्ड ने पैर पसारे ॥
अबहूँ आलस को त्यागि, नींद से जागि, भूल से भागि,
लगो सदाचार में, भारत को स्वर्ग बनादो ॥ तन मन० ॥ १ ॥

अब नहीं हुक्म चंगेज़ी नादिर शाही ।
औरंगज़ेबी महमूदी क़हर इलाही ॥

सच्चा ईश्वर भक्त बनाकर, गृहआश्रम के ढंग को।
हम फिर पूरण कर देंगे ॥ हम० ३ ॥
वाणप्रस्थ की प्रथा चलाकर, आत्मा का स्वरूप लखवाकर।
ब्रह्मज्ञान पूरण करवाकर, दृढ़ आस्तिक्य विचार में।
स्थिर तन मन करदेंगे ॥ हम० ४ ॥
अन्त में संन्यासी बनवाकर, मान और अपमान छुड़ाकर।
पक्षपात से चित्त हटाकर, वेदों का सुप्रचार कर।
सुख का साधन करदेंगे ॥ हम० ५ ॥
गुण अरु कर्म स्वभाव मिलाकर, वर्ण व्यवस्था ठीक बनाकर।
नियोग-विधि को भी समझाकर, विधवन के दुख भार को।
सर्वथा दलन करदेंगे ॥ हम० ६ ॥
दयानन्द की आज्ञा शिर धर, पाखंडिन की पोल खोलकर।
राधाशरण ऐसे व्रत को चर, पर स्वारथ मन धार के।
चुकता ऋषि ऋण करदेंगे ॥ हम० ७ ॥

दादरा २४५

हम वेदों के बाजे बजाये जायंगे।
दुनिया के दुख की चिंता नहीं है,
विद्या की बातें सुनाये जायँगे ॥ हम० ॥
रक्खो विश्वास प्रभू पास लगाओ तुम दिल।
सत्यमेव जयति सदा वेद पुकारे कामिल ॥
झूठ मतलूब सदा जोड़ो न हरगिज़ तुमदिल।

उठो पाओगे फतह काम करो तुम दिल मिल ॥
आजिज वेदों के झंडे तब लहराये जायेंगे ॥ हम० ॥

ग़ज़ल २४६

क़ौल वेदों का कि जिसने नहीं माना होगा ।
दीन दुनिया में न फिर उसका ठिकाना होगा ॥
साफ़ कह दूंगा कि हूं मैं वेद के मत का क़ायल ।
हाल दिल जिसको मुझे अपना सुनाना होगा ॥
जब मैं जानूं कि हुई आज सफल यह मेहनत ।
वेद के मत में जब यह सारा ज़माना होगा ॥
आर्य्य बन जिसने तजा मोह न ईर्षा प्यारो ।
मुफ्त में वक्त उसे अपना गँवाना होगा ॥
आर्य्य बनते हो मगर दिल में यह जाने रहना ।
क्रोध भय लोभ को दरिया में डुबाना होगा ॥
द्वेष तज करते हैं जो देश की उन्नति भाई ।
ऐसे लोगों पै फिदा सारा ज़माना होगा ॥

भजन २४७

छोड़ा वेदों का पढ़ना, कैसे होवेगा उद्धार ।
ज़रा ग़ौर करो तो खबर पड़े अब भाई ।
क्या काम रहे कर मुसल्मीन ईसाई ॥
कितनी भाषा में बाइबिल क़ुरान छपाई ।
हर जगह पर अपना मजहब दिया फैलाई ॥

बच्चों को रोज़ पढ़ावें, नहीं भाषा और सिखावें।
कुरान को हिफ्ज़ करावें, यही ईसाइयों में पावें॥

पर तुम्हें ज़रा नहीं ध्यान, हुई क्या हान, कहालो मान।
देखिये अब तो आंख पसार॥ छोड़ा० १॥

किसी नामी ग्रामी पण्डित के घर जाओ।
मुश्किल से एक दो पत्रे वेद के पाओ॥
नहीं पढ़ो पढ़ाओ वेद न सुनो सुनाओ।
तज परम धर्म को कैसे आर्य कहलाओ॥

जिस धर्म की गति हो ऐसी, है वेद धर्म की जैसी।
फिर उसकी तरक्की कैसी, जिसपर कहलाओ हितैषी॥

हो अंग्रेज़ी पर ज़ोर, करो हो शोर, धर्म को छोड़।
मिटाते वेदों का विस्तार॥ छोड़ा० २॥

मुल्कों मुल्कों में बजे वेद का डंका।
क्या यूरुप औ पाताल अरब क्या लंका॥
इस देश से होवे दूर अविद्या लंका।
तो मिले फेर सुख चैन मिटे सब शंका॥

इस लिये समाज बनाये, स्वामी ने दुःख उठाये।
डूबे थे हमें बचाये, अद्भुत उपदेश सुनाये॥

उनका था यही उद्देश, सुधर जाय देश, फैले उपदेश।
वेदों को माने सब संसार॥ छोड़ा० ३॥

अब तो है भरोसा सब को मित्र तुम्हारा ।
बने जहां तक तुम से दीजे आप सहारा ॥
फैले दुनिया में धर्म मिटे दुख सारा ।
दुष्टों का हो अपमान जाय मुख मारा ॥

बच्चों को वेद पढ़ाओ, करना उपदेश सिखाओ ।
चन्दे से ट्रैक्ट छपाओ, घर घर उनको पहुँचाओ ॥

सब वैर भाव तज दीजे, तरक्की कीजे, विनय सुन लीजे ।
मुरारी सब से कहे पुकार ॥ छोड़ा० ४ ॥

भजन २४८

कल्याणरूप जो वाणी, हर जगह उसे पहुँचाओ ॥

किस गफ़लत में तुम पड़े हो जागो जागो ।
इस घोर नींद को अब तो त्यागो त्यागो ॥
करो धर्म, पाप से मित्रो ! भागो भागो ।
पर उपकारी कर्मों में लागो लागो ॥

यह है कर्त्तव्य तुम्हारा, मत इस से करो किनारा ।
इस ने सब देश सुधारा, इस बिन नहीं होय गुजारा ॥

दो सबके कानों में डाल, अभी फिलहाल, करो मतटाल ।
हुक्म लासानी । जो ऋषि सन्तान कहाओ ॥ हर० १ ॥

वेदों के प्रचार में अपना तन मन देदो ।
जो बने बांट के धन में से धन देदो ॥

चारों पन में से आप एक पन देदो।
जीवन इस के लिये संन्यासी बन देदो॥
मुल्कों मुल्कों में जाकर, सच्चे उपदेश सुनाकर।
पड़े भ्रम में जो समझाकर, उन्हें ईश्वर भक्त बनाकर॥
बनो यश के तुम भण्डार, करो उपकार, मन में लो धार।
समझें सब प्राणी, वैदिक सिद्धान्त सुझाओ॥ हर० २॥
छिपा विद्या का प्रकाश मिटा उजियाला।
हरएक ने अपना चिराग अलहिदा बाला॥
चोरों ने भी फिर चोरी का ढंग डाला।
घर फोड़ फोड़ के मित्रो माल निकाला॥
छिपा सूरज हुआ अन्धेरा, भारत चहुँ दिशि से घेरा।
कोई कहे ये मत है मेरा, सच्चा है झूठा तेरा॥
फिर करी ईश्वर ने दया, ऋषी एक भया, ज्ञान दे गया।
बड़ा वह दानी, मिलकर उसके गुण गाओ॥ हर० ३॥
जो ईश्वर का आज्ञा है उसी को पालो।
दो और काम सब छोड़ न इसको टालो॥
सब मनुष्यमात्र के हृदय में इसको डालो।
सच्चा है वैदिक धर्म और झूठ निकालो॥
सब को उपदेश सुनादो, सीधा मारग बतलादो।
दुनिया में धूम मचा दो, और सब के भरम मिटादो॥
लीजे जीवन का सार, करो अख्त्यार, वेद संचार। बनाओ
सानी, फिर मन माना सुख पाओ॥ हर० ४॥

भजन २४९

मत पढ़ो कोई जन फार्सी, बाणी है जालसाजी की ।
लिखो शब्द यद्यपि फिकराना, पढ़ा जाय वह ही फुकवाना ।
फ़र्क़ सीन से स्वाद न जाना । तर्ज दगाबाजी की ॥ बा० ॥
नहीं भेद क़ज़नी क़िस्नी में, और बहिश्नी और भिश्नी में ।
मुश्किल है बस्नी पस्नी में, दखल इस्मबाजी की ॥ बा० ॥
घर पर तर को लोट बदल कर चाहे पढ़लो लाख शकल के ।
मानस मांस समझ गुल गिलके, अक्ल न है काज़ीकी ॥बा०॥
छाद नागरी को सब दीजो, बाबू की अर्जी सुन लीजो ।
अदालतों में कोशिश कीजो, इसके सर्फ़राज़ी की ॥ बा० ॥

भजन २५०

फारसी ज़ुबान पढ़कर धर्म बिगाड़ा ।
तज शुद्ध संस्कृत बानी, पढ़ क़िस्से और कहानी ।
बिगड़ गई ऋषि सन्तान ॥ पढ़० ॥
क्यों अपनी रीति बिगाड़ी, मारी निज हाथ कुल्हाड़ी ।
स्वयं कर बैठे हानि ॥ पढ़० ॥
जबसे यह फ़ार्सी आई, हुये यवन करोड़ों भाई ।
वेद तज पढ़ें क़ुरान ॥ पढ़० ॥
सब धर्म और कर्म बिसारे, हुये उलटे आचरण सारे ।
हाय खो दिया ईमान ॥ पढ़० ॥

उर्दू में जाल बने हैं, झगड़ा हो युद्ध ठने हैं।
कुछ का कुछ करें बयान ॥ पढ़० ॥
जो आर्य्यवर्त्त कहलाया, उर्दू पढ़ भ्रष्ट बनाया।
कहन लगे हिन्दुस्तान ॥ पढ़० ॥
सुख वासुदेव जब पाओ, वेदों को पढ़ो पढ़ाओ।
जिस में है ईश्वरी ज्ञान ॥ पढ़० ॥

दादरा २५१

छोड़ो उर्दू का पढ़ना पढ़ाना।
नत्थू लिखो उसका पढ़लो वहू है सिर्फ़ एक नुक़ता डाले सकता।
खुदा जुदा में फ़र्क न रहता-हा! छोड़ो० ॥
गुलेबनफ़शही व इन्ने इलायाहिया किसने पढ़ाया किसका बनाया।
दाने इलायची था गुलबनफशा-हा! छो० ॥
फिकवादो फुकवादो दोनों हैं यकसां, लिखदो किश्ती, पढ़लोकसबी।
फ़र्क़ शकिस्ता में नहिं कुछ भी-हा! छो० ॥
आहा ये सुंदर है भाषा हमारी, शुद्ध नागरी, नागर देवी।
पाठक आव बड़े भागरी-हा! छो० ॥

भजन २५२

करके विद्या कूंच, यहां से पहुंची इँगलिस्तान में। टेक,
भारत सुतन अनादर कीना, विद्या तुरत देश तज दीना।

चलत समय भाख्यो अति हीना, भरके नीर अँखियान में ॥ क० ॥
कहां गये ब्रह्मा सनकादिक, गौतम पातंजलि उद्दालक।
रहा न कोई भी मम ग्राहक, आर्य्यों की संतान में ॥ कर० २ ॥
शिव दधीचि हरिचंद युधिष्ठर, रामकृष्ण अर्जुन क्षत्रिय वर।
कपिल कणाद व्यास से ऋषिवर, राखें थे प्रियप्रान में ॥क० ३॥
महाभारत पश्चात हमारा, त्याग दिया करना सत्कारा।
मूरखता का बजा नकारा, अबतो हिन्दोस्तान में ॥ करके० ४ ॥
मूरखता ने पांव जमाया, धर्म कर्म सब मार गिराया।
नित दुख बढ़ता गया सवाया, भारत के दरम्यान में ॥ कर० ५ ॥
प्रथम गमन विद्या ने कीना, पीछे सुख सम्पति चलदीना।
घेर देश दुर्गति ने लीना, आवे नहीं बयान में ॥ करके० ६ ॥
हे प्रभु कुमति निवारन कीजे, विद्या फिर भारत में दीजे।
सुत बल्देव शरण में लीजे, फँस रहा दुख दल्दान में ॥ क० ७ ॥

गजल २५३

विद्या पढ़ाओ, जहां तक हो तुम से।
बिगड़ी सुधारो तुम्हारी सन्तान है ॥
भारत पै छाई अविद्या की रात्री।
तिसपर घटा, घेर लाया अज्ञान है ॥
विद्या से शून्य है ये भूमि अभागिन।
कर्मों से हीन है जाती अभिमान है ॥
विदेशी भी उपहास करते हैं सारे।
इंगलैंड के वासी निवासी जापान है ॥

काले की तुमको मिली है उपाधी।
आर्यावर्त्त से बना हिन्दोस्तान है॥
वहशी जो थे आज वह हैं मुहज़्ज़िब।
विद्या की केवल फ़खर इंग्लिस्तान है॥
योरुप के विज्ञान कला कौशलों से।
बनाते हैं रेलादि नूतन सामान है॥
आकाश पर्य्यटन करने के हेतू।
रचा यथेच्छा बेलून जैसा यान है॥
बिजली के तारों से लेते हैं कारज।
निकाली है कल जिसने क्या बुद्धिमान है॥
इधर हिन्द का है निरक्षर आचार्य्य।
मुर्दे का लेता कफन तक का दान है॥
संशय निवारण अब हो इनसे क्योंकर।
अनपढ़ पुरोहित पढ़ा यजमान है॥
पढ़ना कठिन किन्तु भिक्षा सुगम है।
नहीं लोक लज्जा नहीं इनमें आन है॥
क्षत्री भी हैं तो ये कायर हैं रन के।
न भुजदण्डबल है न शास्त्रों का ज्ञान है॥
पिता औ पितामह महावीर जिन के।
कटता नहीं उन से चूहे का कान है॥
चौके पै उतरी है भारत की विद्या।
नाड़ी तो देखो कुछ बाक़ी जान है॥
धन्वन्तरी सा कहां हो चिकित्सक।

करे औषधी औ बतावे निदान है॥
कहां तत्ववेत्ता हो सांख्यी कपिल जी।
कहां बादरायन जो भारत का मान है॥
कहां है वह गौतम नैयायिक फिलास्फर।
कहते थे सब जिसको युक्ती निदान है॥
कहां है पातंजलि महर्षि तुम्हारा।
योग और महाभाष्य जिसका प्रधान है॥
कहां जैमिनी जो मीमांसा के कर्त्ता।
धर्मों का तुम को सुनाते विधान है॥
कहां है कणाद जी का दर्शन वैशेषिक।
नहीं करता अब उन पै कोई भी ध्यान है॥
वाल्मीकि और कालिदास जी कहां हैं।
अलंकार जिनका महा रस की खान है॥
कहां विश्वकर्मा शिल्पकार चातुर।
जिनकी बनावट का पुष्पक विमान है॥
सुधर्मा सभा भी बनाई थी जिस ने।
साखी, जो पूछो तो भारत पुरान है॥
ऐसे तो थे पूर्व पुरुषा तुम्हारे!
तुमसा नहीं आज मूरख नादान है॥
अविद्वान का सारा जीवन है निष्फल।
ऐसे तो जीवन से मरना प्रधान है॥
विद्या से बनता है राजा का मन्त्री।
विद्या से बनता सभा में प्रधान है॥

विद्या बिना नर है वनचर के सदृश।
विद्या बिना पुरुष पशु के समान है॥
विद्या गुप्त धन है छिनता नहीं है।
न चोरी का डर है न अग्नि से हानि है॥
विद्या बिना वृद्ध बालक के तुल्य है।
बालक भी विद्वान् वृद्ध से सुज़ान है॥
चिरंजीवी है नाम विद्वज्जनों का।
इस के लिये कैसा कैसा प्रमान है॥
शंकर और दयानन्द की विद्वता का।
द्वीप और द्वीपान्तर में प्रसिद्ध मान है॥
उन के सदृश थे और भी तो कितने।
बताये पता कोई नामोनिशान है॥
विद्या से होती है बुद्धि की वृद्धि।
विद्या से अक्षर आनन्द ज्ञान है॥
विद्या से होता है सन्तोष प्राप्त।
विद्या से गुनियों का गौरव महान है॥
विद्या से धर्म, धर्म से अभय पद।
विद्या से मिलता परब्रह्म ज्ञान है॥
संक्षिप्त कर के सुना तू अमीचन्द।
थोड़ा समय तेरा लम्बा व्याख्यान है॥

भजन २५४

करो विद्या विस्तार, जो सुख सम्पति चाहो॥ टेक॥

विद्याही बुद्धि बढ़ावे, गौरव का रंग चढ़ावे।
ज्ञान की यह भण्डार ॥ जो सुख० १ ॥
विद्या है नर का भूषण, हरती है यह सब दूषण।
मन में करो विचार ॥ जो सुख० २ ॥
इनको नहिं चोर चुरावे, नहिं राजा थाट करावे।
करो चाहे यतन हजार ॥ जो सुख० ३ ॥
राजा स्वदेशही पूजित, विद्वान लोक बिच भूपित।
लीजे यह मन धार ॥ जो सुख० ॥
गुरुओं का भी यह गुरु है, नर इसके बिन अति गरु है।
इसी को लीजे धार ॥ जो सुख० ५ ॥
यह नित २ सुयश बढ़ावे, सिर पै न कलौंच मढ़ावे।
बना देवे सरदार ॥ जो सुख० ६ ॥
यह असली धर्म बतावे और ब्रह्मधाम पहुँचावे।
मुक्ति का खोले द्वार ॥ जो सुख० ७ ॥
विद्या की है यह माया, दी पलट देश की काया।
चला दिये रेलव तार ॥ जो सुख० ८ ॥
बहु कल मशीन हुई जारी, जो लेगई दौलत सारी।
खींच कर सागर पार ॥ जो सुख० ९ ॥
यह विविध भांति के कौशल, हैं सब विद्याही के फल।
जाने सब संसार ॥ जो सुख० १० ॥
कहे सालिग पढ़ो पढ़ाओ, आगे को बढ़ो बढ़ाओ।
देश का हो उद्धार ॥ जो सुख० ११ ॥

भजन २५५

दोहा–भारत हित नहीं होयगा, बिना वेद प्रचार।
सत् विद्या सीखो तभी, होगा देश सुधार॥

टेक–बिन विद्या नहीं सुधरेगी मित्रो ये भारत सन्तान।

चाहि लेक्चर शबोरोज़ सुनाओ, मन्तक रियाज़ी घोट पिलाओ।
चाहि नर्क का डर दिखलाओ, करत न कोई कछु मान॥बिन०१॥
चाहि रोमन इंगलिश पढ़वाओ, बूट कोट पटलून पिन्हाओ।
नकली जंटिलमैन बनाओ, वृथा करो धन हान॥ बिन० २॥
चाहि लन्दन जापान को जाओ, अमरीका जर्मनी सँभ्काओ।
चाहि लेडी को गले लगाओ, करिके ब्रांडी पान॥ बिन० ३॥
चाहि सोडा लिमनेट पिलाओ, उबालकर अंडे खिलवाओ।
चाहि नित गिरजे में जाओ, बनि पूरे कृस्तान॥ बिन० ४॥
चाहि जितने कांफ्रेंस कराओ, रिज़ुलेशन चाहि पास कराओ।
टेबिल तोड़ो शोर मचाओ, समुझत नहिं अज्ञान॥ बिन० ५॥
तभी सुधरेगा देश तुम्हारा, सत् विद्या का लेउ सहारा।
वेदों का भी बजे नक़ारा, भारत के दर्म्यान॥ बिन० ६॥
सन्तति को गुरुकुल भिजवाओ, ब्रह्मचर्य से वेद पढ़ाओ।
धर्म वीर बलदेव बनाओ, जो चाहो कल्यान॥ बिन० ७॥

भजन २५६

दोहा–राजा अपने देश में, पाता है सन्मान।

बुद्धिमान जन हर जगह, पुजता एक समान ॥

टेक–उस बाप को वैरी जान, जिसने नहिं पुत्र पढ़ाया ।

बिन विद्या मूरख कहलावें, जब तक जीवें दुःख उठावें ॥
जब कहीं विद्वानों में जावें, पाते हैं अपमान ॥ जिसने० १ ॥

गुणियों में मूरख नर ऐसे, हैं बगले हंसों में जैसे ।
बैठे लगें कुशोभित वैसे, लगें न शोभावान ॥
वहां जाकर के पछताया ॥ जिसने० २ ॥

पितु का यह कर्त्तव्य कर्म है, सब से पहला यही धर्म है ।
सोचो इसका गूढ़ मर्म है, पढ़ादे निज सन्तान ॥
बस वही पिता कहलाया ॥ जिसने० ३ ॥

सुता और सुत पढ़ जावेंगे, सब दु.खों से छुट जावेंगे ।
सारे इच्छित फल पावेंगे, कीजे इसे प्रमान ॥
पद तेजसिंह ने गाया ॥ जिसने० ४ ॥

भजन २५७

दोहा–बिन विद्या संसार में, बुद्धि भई विपरीत ।
शुभ मारग तजकर चलें, तब कैसे हो जीत ॥

टेक–उलटी होगई रे बिन विद्या के बुद्धि हमारी ।

सत् विद्या का पढ़ना छोड़ा, हुआ घोर अन्धेर ।
तब से गिरा आर्य्यवर्त की, पड़ा बुद्धि में फेर ॥ उ० १ ॥

सत्य असत्य का बिल्कुल हम को, नहीं रहा कुछ ज्ञान ।
हैवानों से भी बढ़चढ़ कर, हुये आज हैवान ॥ उ० २ ॥
जन्म मरण के दुखद चक्र में, भोग रहे दुख भारी ।
भीख मांग कर खावें फिर भी, बनते ब्रह्म अनारी ॥ उ० ३ ॥
देखो मुक्ति नहीं मिलती है, बिना हुये सत् ज्ञान ।
तबतो वृथा तीर्थ व्रत पूजा, गङ्ग जमुन का न्हान ॥ उ० ४ ॥
तेजसिंह कहै जो सुख चाहो, करो वेद विस्तार ।
लड़के लड़की सभी पढ़ाओ, तभी होय उद्धार ॥ उ० ५ ॥

भजन २५८

दोहा–बिन विद्या के जगत् में, हुआ बहुत नुक़सान ।
मेरी कहने में तभी, है कमज़ोर ज़बान ॥

टेक–बिन विद्या के संसार में, होगई बहुत सी हानी ।

प्राप्त हुई नर बुद्धि बिसारी, आपस में चल रही कटारी ।
इज्जत बिगड़ी सभी हमारी, रह रह निज तकरार में ॥
सब होगये दुश्मन जानी ॥ होगई० १ ॥
निशि दिन भुजा ठोक लड़ते हैं, बिना बात अकड़े मरते हैं
अति कठोर भाषण करते हैं, नहीं रही नर नार में ॥
मंजुल मँजीर सी बानी ॥ होगई० २ ॥
जब पढ़ना वेदों का छूटा, ब्रह्मचर्य आश्रम भी टूटा ।
आर्य्यवर्त का नसीब फूटा, फँसे दुष्ट व्यभिचार में ॥
सुखदा सिख एक न मानी ॥ होगई० ३ ॥

अबभी ज़रा चेत में आओ, लड़के लड़की सभी पढ़ाओ।
सदा शक्ति अनुसार लगाओ, रुपया वेद प्रचार में ॥
तज तेजसिंह नादानी ॥ होगई० ४ ॥

❀ ४ चेतावनी ❀

भजन २५९

फँसकर प्यारे अज्ञान में, क्यों मनुष जन्म खोता है।
कुछ करलो पर उपकार जो हो निस्तारा।
यह मानुष्य देह नहीं मिलती बारम्बारा ॥
जिसने दिलमें गुण औगुण नहीं विचारा।
वह चौरासी में फिरता मारा मारा ॥
कुछ नहीं मन में शरमावे। जड़ को ईश्वर बतलावे।
कैसे फिर आनन्द पावे। शुभ अवसर बीता जावे ॥
ईश्वर से करले प्रीति, वही है मीत, कहे यह नीति, लाओ
मन ध्यान में, सुख सुमिरन से होता है ॥ क्यों० १ ॥
कहां शिवि दधीच और हरिश्चन्द्रसतधारी।
कहां मोरध्वज विक्रम से परउपकारी ॥
कहां रामचन्द्र और परशुराम बलधारी।
नहीं रह जगत में नाम हैं उनका जारी ॥
कैसा मद तुझ पर छाया। जो ईश्वर को विसराया ॥
बहुबार तुझे समझाया। नहिं ध्यान में तेरे आया ॥

अब भी कर सत्य व्यवहार, वही है सार, सब का भर्तार, मिले वह ज्ञान में, नहिं सागर में सोता है ॥ क्यों० २ ॥

बेहोश लोभ में पड़ा समझ नहीं भाई ।
घर की पूँजी को ले गये लोग चुराई ॥
अब भी आलस को त्याग चेत कर भाई ।
जो शेष रही है उसको लेव बचाई ॥

जो देह मनुष्य की पाई । करले कुछ नेक कमाई ।
भारत की चाहो भलाई । सत्य विद्या दो फैलाई ॥

है उत्तम विद्यादान, कहा ले मान, अरे नादान, नहीं मिलता सुख अभिमान में । क्यों विष की वेल बोता है ॥ क्यों० ३ ॥

हो धन्यवाद स्वामी जी को सब भाई ।
हिन्दु से आर्य्य है जिसने दिया बनाई ॥
करो मित्रो संध्या हवन रोज़ चित लाई ।
छुट जावें सारे क्लेश मुक्ति हो जाई ॥

चित सत्य काम में लाओ । जो ऋषि सन्तान कहाओ ॥
ईश्वर से प्रीति लगाओ । फिर मन वांछित फल पाओ ॥

कहे सोहन यही पुकार, लगावे पार, वही कर्त्तार, रम रहा वह सारे जहान में । क्यों इधर उधर जोहता है ॥ क्यों० ४ ॥

भजन २६०

पापी मन सोवे पड़ा, उठ जाग धर्म पहिचान ।

मुश्किल से यह देह थी पाई, सो अब तूने सोय गँवाई।
तज गफ़लत नादान ॥ पापी० १ ॥
गया वक्त फिर हाथ न आवे, पीछे से तू क्यों पछितावे।
मौत सिरे पर जान ॥ पापी० २ ॥
अर्जुन भीम से योधा भारी, जिन से कांपी थी भुवि सारी।
हैं कहां कर तू ध्यान ॥ पापी० ३ ॥
मात पिता दारा सुत जोई, धन दौलत और लश्कर कोई।
इनका क्या अभिमान ॥ पापी० ४ ॥
मनुष्य देह को नाव बनाले, कर्म धर्म का चप्पू लगाले।
ओ जल्दी कर नादान ॥ पापी० ५ ॥

भजन २६१

क्यों करता है भाई अभिमान, थोड़े से जीवन पर ॥
अर्जुन से हो गये बलकारी, रावण जैसे लङ्क भँझारी।
अरु कुबेर से मायाधारी, छोड़े सब सामान ॥थो०१॥
विद्योत्तमा सी राजदुलारी, सुलभा जैसी तत्व विचारी।
उभय भारती विदुषी नारी, हिरा गई विद्वान ॥थो०२॥
हरिश्चन्द्र से सतव्रतधारी, जमदग्नी से मूल अहारी।
गौतम कपिल से ऋषि बड़े भारी, सुख दे गये हैं महान ॥थो०३॥
देश हितैषी हो गये भारे, महर्षि दयानन्द स सारे।
लेखराम से प्राण पियारे, वारे तन मन प्रान ॥थो०४॥
होगये बड़े २ चित्त उदारी, पाठक तुमभी बनो उपकारी।

ऋषि ऋण देवहु शीघ्र उतारी, सुख पावे ऋषि संतान ॥थो०५॥

दादरा २६२

तूने सारी उमरिया गुजारीरे।

शेर–बालपन गया खेल में, खोई जवानी प्यार में।
नित्य प्रति कीन्हें कलह, बेड़ा है तेरा मँझधार में॥
अब मरने की आई है बारी रे॥ तू० १॥

शेर–खेल चौसर हिंसा कीनी, दिन का सोना बढ़ गया।
दूसरों के दोष कह व्यसनों का झगडा गड़ गया॥
फिर करते हो सुखकी तयारी रे॥ तू० २॥

शेर–विषय रस का स्वाद लीना, नाना मृदु तानें सुनीं।
गीत सुन २ नाच देखा, फिर भी दीखे अनमनी।
वृथा घूमे पिये मदवारी रे॥ तू० ३॥

शेर–कुसाली कर के काम कीन्हें, जो न करने चाहियें।
बिना कारण बैर करते, डाह कर २ दुख दिये।
पछताने की आई अब बारी रे॥ तू० ४॥

शेर–चोरी की जुआ भी खेला, गारी देते दिन गये।
लड़ते भिड़ते सबसे थे पर अबतो आयुष छिनगये।
काम क्रोध ये शत्रु हैं भारी रे॥ तू० ५॥

शेर–ध्यान कर उस ईश का, जिसने जगत पैदा किया।
अब तो चेतो नींद तज, जो पूर्ण सुख चाहा लिया।
तुमको पाठक यही सुखकारी रे॥ तू०६॥

भजन २६३

उठो अब नींद से जागो।

सोते २ उमर बिताई भैया। कैसी तुमको छ' माली आई भैया॥ तन मन धन सब दिया है लुटाई भैया। अब तो नींद को त्यागो॥ उठो अब० १॥ कैसे पुरुषा हुए हैं तुम्हारे भैया। कहलाये भारत के सितारे भैया॥ उनके तुमने नाम बिगारे भैया। शर्म करो अभागो॥ उठो० २॥ रही सही को अब तो बचाओ भैया। दुनिया में कुछ धर्म कमाओ भैया॥ मत हा योंही जन्म गॅवाओ भैया। शुभ कर्मों में लागो॥ उ० ३॥ वासुदेव कहे चेत में आओ भैया। मत ऋषियों का नाम डुवाओ भैया॥ सच्चे आर्य वीर कहलाओ भैया। हिन्दूपन त्यागो॥ उठो अब० ४॥

भजन २६४

देखो आंख उघार रे तुम भारत के प्यारो।

गौ कन्या अनाथ और विधवा विनती करें पुकाररे।
इनके दुखों को टारो॥ देखो० १॥
दुख में पड़ी है उनकी सन्तति जो थे ऋषी तुम्हाररे।
उनके चरित्र विचारो॥ देखो० २॥
जो भारत की चाहो भलाई, करो नित्य उपकाररे।
यही धर्म तिहारो॥ देखो० ३॥

तन मन धन सब अर्पण करके, विद्या करो प्रचाररे।
तुम भारत के प्यारो ॥ देखो० ४ ॥
स्वामी दयानन्द देश के कारण, अपना सब गये वाररे।
उनकी शिक्षा धारो ॥ देखो० ५ ॥
कब तक रुदन करे परदेशी, अब तो करो विचाररे।
कहा मलो हमारो ॥ देखो० ६ ॥

भजन २६५

जो चाहते हो धर्म कमाना उठ कर पर उपकार करो।
तन मन धन सब अर्पण करके वेदों का विस्तार करो॥
बहुत कष्ट, तुम उठा चुके हो वैदिक मारग छोड़ कर।
आओ भूले भटके भाइयो उसको फिर अखत्यार करो॥
मत घबड़ाओ बहुत सतावें तुम को मूरख आदमी।
प्राणी मात्र की तुम सेवा से मत दिल को बेज़ार करो॥
कृष्ण व्यास आदिक ऋषियों को दोष लगाना छोड़ दो।
अपने बड़ों की इज्जत को अब प्यारो! मत ख्वारकरो॥
विवाह वगैरह के मौक़ों पर नचा २ कर रंडियां।
मत अपनी सन्तानों को तुम उनका आशिक़ार करो॥
बाली उमर में सन्तानों का कर विवाह और शादियां।
बल वीरज को उन के खोकर मत दुर्बल बीमार करो॥
दीन अनाथ अपाहिज जितने पाओ भारत देश में।
भोजन वस्त्र उन्हें नित देकर भारत का उद्धार करो॥

अधोगती को पहुँच चुका है मित्रो ! भारत देश अब।
इसको सँभालो तुम अब भाइयो ! मिलकर यह शुभ कार करो॥
राग ईर्षा द्वेष वैर तज कर्म करो निष्काम सब।
धर्मी प्रेमी परउपकारी पुरुषों का सत्कार करो॥
बनो सहायक तुम गुरुकुल के तन मन धन से भाइयो।
कपिल कणादरु गौतम जैसे ब्रह्मचारी तैयार करो॥
परमेश्वर के बनो उपासक जो चाहो सुखधाम को।
यज्ञ हवन से नित्य सुगन्धित तुम अपना घरबार करो॥
एक ईश जगदीश ब्रह्म को अपने चित में धारलो।
किसी पैगम्बर पीर औलिया की मत पूजा यार करो॥
बहुत दिनों से वैदिक नैया पड़ी भँवर के बीच में।
विनय करे परदेशी ईश्वर अब तो इसको पार करो॥

भजन २६६

अब तो चेतियोरे तुम हो भारत राजदुलारे।
भारत जननी पर पड़ रहे हैं तरह २ के त्रास।
पर तुम करवट तक नहीं लेते हुआ देश का नाश॥ १॥
गज़नी गोर तातार से थे आये मुहम्मद शाह।
लूट खसोट ले गये धन सब, कर गये देश तबाह॥ २॥
जगह २ पर आर्यावर्त में हुये थे कत्ले आम।
जला २ दी ! वेद मुक़द्दस कीन्हें गर्म हम्माम॥ ३॥
दिखा २ तलवार का दहशत बहुत किये बेदीन।

सह्हा बिचारे राजदुलारे लिये ज़ोर से छीन ॥ ४ ॥
प्यारो ! धर्म रक्षा निमित्त हुए यहां बहुत कुर्बान ।
गुरु गोविन्द के लाड़ के पाले पुत्र त्याग गये प्राण ॥ ५ ॥
नन्हा बालक वीर हकीकत खत्री सुत बलवीर ।
धर्म न छोड़ा मर गया हक़पर खा करके शमशीर ॥ ६ ॥
और सैकड़ों के धरम के हित हुए कलेजा खाक ।
पद्मावत पतिव्रता धर्म पर जल कर होगई पाक ॥ ७ ॥
अब तो जागो निद्रा त्यागो दूर करो यह ख़्वाब ।
रही सही हालत को अपनी अब नहिं करो ख़राब ॥ ८ ॥
ऋषी दयानन्द तुम्हें जगा गया सहकर कष्ट महान ।
पर उठ करके सो गये फिर भी उलटी चादर तान ॥ ९ ॥
जो सज्जन जन रहे जगाते ऋषी का शुभ उपदेश ।
उन्होंने अब आपस में लड़कर पैदा किया क्लेश ॥१०॥
परदेशी की विनती सुनलो कहता है कर जोर ।
पापिन फूट को दूर करो अब देखो देश की ओर ॥११॥

भजन २६७

अपने देश की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो ।
आंख खोलकर देखो भाइयो ! क्या है देश का हाल ।
कैसा था अब क्या हो गया है इस पर करो ख्याल ॥ १ ॥
कभी देश यह आर्यवर्त्त था अब है हिन्दोस्तान ।
हिन्दु काफ़िर काले वहशी हो रहे ऋषि सन्तान ॥ २ ॥
किसी वक्त यह देश तुम्हारा था मुल्कों का सरताज ।

अधर्म अविद्या के कारण हैं सब से नीचा आज ॥ ३ ॥
वेद ईश्वरी ज्ञान को अब तो सारे बैठे छोड़ ।
जड़ क़बरों के बने उपासक ईश्वर से मुख मोड़ ॥ ४ ॥
नहीं खबर कुछ रही किसी को सत्य धर्म क्या चीज़ ।
बुरे भले की रही नहीं है बिलकुल हाय तमीज ॥ ५ ॥
वैदिक शिक्षा उठगई सारी रहा न धार्मिक ज्ञान ।
सत्य धर्म को छोड़ बने अब सारे पशु समान ॥ ६ ॥
यज्ञ हवन सब छुट गये हम से छूटा सत व्यवहार ।
झूठ कपट छल बढ़गये सब में भ्रष्ट हुए आचार ॥ ७ ॥
वर्ण आश्रम मिटगये ऐसे मिलता नहीं निशान ।
मूरख सब से बड़े कहावें और छोटे विद्वान ॥ ८ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र कुल हो गये हैं गुणहीन ।
नहीं एक की एक को ममता हो गये तेरह तीन ॥ ६ ॥
अस्त हुए सब खुदगर्जी में नहीं देश से प्रेम ।
विषय भोग में फँस परदेशी तोड़ा ईश्वरी नेम ॥१०॥

भजन २६८

अबतो जागियोरे कैसे सोये भारतवासी ।

उठ जागो और निद्रा त्यागो देखो आंख उघार ॥
धर्म की नैया इस भारत की डूब रही मझधार ॥१॥
देखो हालत अपने देश की समय रहा बतलाय ।
तुमको क्या मालूम नहीं है भारत बिगड़ाजाय ॥२॥

धऊकन्या अनाथ और विधवा करैं तुम्हारी आश।
हाहा करती नित दुख भरती दिन २ पाय निराश ॥३॥
बद रसमों में धनको लुटाओ खूब बढ़ाकर हाथ।
तुम को क़ज़्ज़ चढ़े खाने से भूखों मरैं अनाथ ॥४॥
नाजुक हालत आर्यावर्त्त की जिसके हम तुम वासी।
इसकी खातिर प्राण गँवाये दयानन्द संन्यासी ॥५॥
इस भारत की बुरी दशा का तुम को नहीं गुमान।
तन मन धन ले इस पर होगय गुरुदत्त कुर्बान ॥६॥
जिस बिरवे को सींच २ मरे लेखराम रणधीर।
उस बिरवे को तुम भी सींचो कहलाकर कुलवीर ॥७॥
जिसमें इज़ाफ़ा दूनी होवे घटता नहीं वह माल।
वृद्धि करो मिलकर स्वधर्म की रख उन्नति का ख्याल ॥८॥
जो कुछ असर हुआ तुम पर है मरहूमों की शिक्षा का।
अबसे अहद करो सब दिलमें भारत की रक्षा का ॥९॥
पहिले थे इस आर्यवर्त्त में ऋषी मुनी गुणवाना।
कहे परदेशी देखो उनका आगया वही ज़माना ॥१०॥

ग़ज़ल २६९

ग़ाफ़िल समय क्यों खो रहा, उठ देख क्या है हो रहा।
किस नींद में तू सो रहा, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
ले सुबह से ता शाम है, विषयों में तेरा काम है।
और हो रहा बदनाम है, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥

लालच से तुझ को प्यार है, और झूठ का व्यवहार है।
दिन रात येही कार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
धन का तुझे अभिमान है, लिया धर्म इस को मान है।
इसमें ही तू गलतान है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
कहीं मित्र गूढ़ बनाय तू, कहीं वैर कोही कमाय तू।
लाखों फरेब चलाय तू, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
तेरा जो महल और माड़ी है, सामान लाख हजारी है।
आखिर को खाक ये सारी है, कुछ ईश का भी ध्यानकर॥
यह उम्र बेबुनियाद है, नहीं मौत तुझ को याद है।
गफलत में तू अब शाद है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
सज्जन को दुश्मन जानता, सत् धर्म को नहीं मानता।
ऐसी हुई अज्ञानता, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
जान और की बर्बाद है, तेरा मजा और स्वाद है।
सुनता नहीं फ़र्याद है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
खावे शराब कबाब तू रक्खे उम्मीद सवाब तू।
आखिर को देगा हिसाब तू, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
काफिर बना आनन्द से, प्रीती करी पाखण्ड से।
हरगिज न खौफ़ है दण्ड से, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
मूरख तुझे भ्रमावे हैं, सब गप्प शप्प सुनावे हैं।
खुद को ब्रह्म बतावे हैं, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
भक्तों को जो सिखलाते हैं, वह और भी उतलाते हैं।
ईश्वर को जड़ बतलाते हैं, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
सत्संग से तुझे आर है, कुछ जानता नहिं सार है।

भूला फिरे तू गँवार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
निज धर्म सारा छोड़ कर, पत्थर से नाता जोड़ कर।
क्या होगा माथा फोड़कर, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
यह तन न बारम्बार है, करता न क्यों उद्धार है।
तुझ को महा धिक्कार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
वेद का सुप्रकाश है, करता महा तम नाश है।
ऐसा हमें विश्वास है, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
ले वेद की अब भी शरन, सुधरे तेरा जीवन मरन।
दे इस में तन मन और धन, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥

भजन २७०

भारत देश की हां! प्रभु जी बिगड़ी दशा सुधारो।
जब २ विपति पड़ी भारत पर कीन्ही तुम्हीं सहाय ॥
अब भी दया करो पतितन पर देश रहा बिललाय ॥ भारत०
स्त्री-शिक्षा उठी देश से जो उन्नति की खान।
गृह आश्रम जो स्वर्गधाम था अब है नर्क समान ॥ भारत०
पर्दे में रहना तिरियों का रहे उचित है मान।
स्याने पुजारी अरु व्यभिचारी ठगते उन्हें महान ॥ भारत०
सच्चा पर्दा जो मन का है उसकी नहिं तालीम।
जिसके बल सीता रावण घर रक्खा धर्म अज़ीम ॥ भारत०
स्त्री पुरुषों की अर्धांगी है दरजा सम बतलाय।
स्त्री अन्दर हैं पुरुष है बाहर यह कैसा अन्याय ॥ भारत०

बाल विवाह ने आन दबाया हुये सकल बलहीन।
पुरुषारथ नहिं रहा किसी में पर के हुये अधीन ॥ भारत०
पुनर्विवाह से हठकरि रोकत विधवन को नादान।
गर्भपात निश दिन करवावत जानत सकल जहान ॥ भारत०
नीच वर्ण से उच्च वर्ण में कोई नहीं जाने पाये।
विश्वामित्र आदि फिर कैसे ब्रह्मऋषी कहलाये ॥ भारत०
देशान्तर में भ्रमण किये से धर्म भ्रष्ट रहे मान।
अर्जुन ब्याहे अमरीका में इस पर दिया न ध्यान ॥ भारत०
शकर औषधी देशान्तर की करते हैं सब पान।
धर्म भ्रष्ट फिर क्यों बतलाकर करते देश की हानि ॥ भारत०
छुआ छूत ने आर्यावर्त को कर दिया तेरह तीन।
प्रायश्चित्त के बने मुखालिफ जो हैं शास्त्र विहीन ॥ भारत०
सोशल कान्फ्रेंस आदिक है यत्न करें अधिकाय।
राधाशरण कहे हे भगवन! कोई न सुनता हाय ॥ भारत०

भजन २७१

दोहा–प्यारे भारतवासियो, सुनो हमारी बात।
आंखें खोलो नींद से, भारत उजड़ा जात ॥

टेक–अब जागो भारतवासियो, भारत उजड़ा जाता है।
रयडी·मुयडी ज्वारी लूटें, पयंड और पुजारी लूटें।
दे दे दम दुराचारी लूटें, योगी अरु सन्यासियो।
ये क्या अन्धेरखाता है ॥ भारत० १ ॥

नौते और स्याने लूटें, मुर्शद अरु मौलाने लूटें।
पी पी भंग दिवाने लूटें, दुख उपजत अरु हांसियो।
कहने में नहीं आता है ॥ भारत० २ ॥

नवग्रहों के दलाल लूटें, शराब देदे कलाल लूटें।
नजूमी नन २ के धन को लूटें, दे फरेब की फांसियो।
कोई गैब की बतलाता है ॥ भारत० ३ ॥

महंत और जटाधारी लूटें, किमियागर निराहारी लूटें।
विदेश के व्योपारी लूटें, कर २ नकल नक़ाशियो।
कोई तिलस्म दिखलाता है ॥ भारत० ४ ॥

वकील अरु बैरिष्टर लूटें, क़ानूनी मुख़्तार लूटें।
रिशवतखोर सिकत्तर लूटें, सिविलपुलिस चपरासियो।
कोई फ़रेब फैलाता है ॥ भारत० ५ ॥

चढ़ा लुटेरों का दलभारी, करदिया भारत मुल्क भिखारी।
विनय करत बलदेव तुम्हारी, तुमहीं प्रभु पति राखियो।
एक तुमहीं से अब नाता है ॥ भारत० ६ ॥

दादरा २७२

कैसा बिगड़ा ज़माने का चालो चलन ॥ टेक ॥
स्वांग थियेटर में करें खर्च दिलो जांसे ज़र।
दीन बेचारे मरें सूझी नहीं उनकी खबर ॥
लाख कमज़र्फ़ों के उड़ते हैं रात दिन सागर।

फ़िजूल खर्ची में लाला ने लुटाया सब घर ॥
पाखंडी, मतिमन्दी, ये रण्डी के नाचों में होरहे मगन ॥ कै० ॥

सद्दा दीवाने बने फिरते हैं नौटकी पर।
जनाना भेस बनाना पहिन पहिन ज़ेवर ॥
हैफ़ सद हैफ नहीं ध्यान है पमालो पर।
वाह! अफ़सोस खुश हों ऐसे चाल ढालोंपर ॥
अज्ञानी, अभिमानी, मनमानी, शैतानी, यह करते कथन ॥कै०॥

अनेक बाबा भी देखे हैं जार बिलकुल हैं।
अपढ़े ढोंग रचाये गँवार बिलकुल हैं ॥
वेद आज्ञा से भी बेशक फरार बिलकुल हैं।
हमने देखा तो वह मतलब के यार बिलकुल हैं ॥
व्यभिचारी, हमारी, तुम्हारी अनारी, लगें बहिनें तकन ॥ कै० ॥

सच्चे जगदीश को तो दिल से भुला रक्खा है।
जखैया प्रेतो को भूतों को मना रक्खा है ॥
मोक्ष पदवी को भी मुट्ठी में दबा रक्खा है।
अय भुन्नीलाल यह अन्धेर मचा रक्खा है ॥
मूर्ख नहीं ब नालों को समझे हैं तारन तरन ॥ कै० ॥

ग़ज़ल २७३

प्रभु जी वेग भारत को जगा देते तो अच्छा था।
किनारे डूबती नैया लगा देते तो अच्छा था ॥
हज़ारों वर्ष से भारत पड़ा है घोर दुःखों में।

भजन २७६

उठ भारत का करो सुधार, कैसे बैठे हिम्मत हार।

क्या हुई देश की हालत, नित दूनी बढ़े जहालत।
है बदबख़ती की दलालत, पर तुम बैठे हिम्मत हार ॥उठ०॥

नित लगा अकाल सताने, ताऊन किये घमसाने।
भूकम्प मार लगे खाने, दुनियां रोवे बेशुमार ॥ उठ० ॥

कहीं रोवें यतीम बिचारे, जो थे मा बाप के प्यारे।
वह मरे भूख के मारे, होते ईसाई रोज़ हज़ार ॥ उठ० ॥

मर रहीं शोक में बेवा, नहीं रहा कोई सुख देवा।
छुटी पति अपने की सेवा, लगा डराने मुझे सिंगार ॥उठ०॥

अय देश के चाहने वालों, तहज़ीब बढ़ाने वालो।
करो हिम्मत देश सँभालो, यह डूब चला मँझधार ॥उठ०॥

करो शुद्ध पतित जो भाई, हुये मुसलमान ईसाई।
अपने तुम लेओ बनाई, वेद पढ़ाओ बे तकरार ॥ उठ० ॥

दीनो की करओ रक्षा, देओ थोड़ी २ भिक्षा।
करो पोषण और देओ शिक्षा, पुत्र बनाओ करलो प्यार ॥उठ०॥

जितनी हैं कमसिन बेवा, केवल फेरों की सेवा।
मत बनो उन्हें दुख देवा, उनका करो पुनःसंस्कार ॥ उठ० ॥

करो गुरुकुल आदी जारी, जहां पढ़ें वेद ब्रह्मचारी।
फिर बनें देश हितकारी, परदेशी की सुनलो पुकार ॥उठ०॥

ग़ज़ल २७७

उठो नींद से अब सहर होगई है ।
उठो रात सारी बसर होगई है ॥
उठो कुल सभा मुन्तशर होगई है ।
हुवा सब इधर की उधर होगई है ॥
वराक्त में नसीबे को भी लेके सोये ।
अजल को भी तुम आज दम देके सोये ॥१॥

हुई सुबह और जानवर सारे जागे ।
जनो मर्द है घर व घर सारे जागे ॥
शरारत के रसिया बशर सारे जागे ।
उठे वह भी जो रात भर सारी जागे ॥
फ़क़त ख्वाब में बेख़बर तुम पड़े हो ।
अजब नींद की नींद में तुम पड़े हो ॥२॥

उठो ऐ बुजुर्गों की पत खोने वालो ।
उठो बाप दादा की मत खोने वालो ॥
उठो अपनी असली सुरत खोने वालो ।
उठो अपनी बाक़ी की गत खोने वालो ॥
ज़रा ख्वाब गफ़लत से आँखें तो खोलो ।
गई आबरू अब तो मुँह अपना धोलो ॥३॥

वह चमका है नूरे सहिर कुल जहां में ।
नई रोशनी फैली है हर मकां में ॥

शबे ग़म ने चादर स्याह है उतारी ।
खुलीं ग़फ़लतों से न आंखें तुम्हारी ॥
सब आरायशें लुट चुकीं हैं तुम्हारी ।
बहारें हुईं पेश की तुम पै भारी ॥४॥

वह चलने लगी इज़्ज़तों की सवारी ।
बस अब है जनाज़ा निकलने की बारी ॥
ग़ज़ब ! उम्र सोने में तुम ने गँवादी ।
उठो बन गई और क़ौमों की चांदी ॥५॥

वह कुम्बे की इज़्ज़त चली अबतो उट्ठो ।
वह दौलत वह हशमत चली अबतो उट्ठो ॥
तरक्की का दिन सारा ढलने को आया ।
तनज्जुल ने यह दिन है तुमको दिखाया ॥
किया तुम पै अदबार ने अपना साया ।
मगर ग़फ़लतों ने न तुमको जगाया ॥६॥

पड़े ही पड़े आंखें मलकर तो देखो ।
ज़रा अपनी करवट बदलकर तो देखो ॥
ज़माने की रंगत बदलने लगी है ।
हवा और आलम में चलने लगी है ॥
उठो धूप दुनिया की ढलने लगी है ।
हर एक क़ौम गिरकर सँभलने लगी है ॥७॥

बड़े बनते जाते हैं छोटे तुम्हारे !
नसीबे हैं किस दर्जे खोटे तुम्हारे !!

अमूल्य शेरें २७८

प्यारो उठो कि अब तो नसीमे सहर चली।
सदियों के ग़ाफ़िलों को भी बेदार कर चली॥
आख़िर में यह है पाय के तुम्हें बेख़बर चली।
साअत जो काम की यह कहकर गुज़र चली॥
ख़्वाबे गरां को जाने दो आया है वक्त कार।
फ़ुर्सत है कम तो काम है करने को बेशुमार॥
मुर्गान सुबह कहते हैं तुम को पुकार के।
उठो यह कैसे सोये हो पाओं पसार के॥
कब तक बने रहोगे शिकार अन्धकार के।
हसरत से हाथ काटोगे मौक़े गुज़ार के॥
करता नहीं है वक्त किसी का भी इन्तज़ार।
करले जो काम वक्त पै होगा वह कामगार॥
हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारफ़ानी में।
कुछ अच्छे कामकरलो चारदिनकी ज़िंदगानीमें॥
जो अहिले करम हैं वह बुराई नहीं करते।
दुनिया में किसी से भी लड़ाई नहीं करते॥
पुरख़ार दरख़्तों की तरह उनकी है हस्ती।
दुनिया में किसी से जो भलाई नहीं करते॥
सुन ले अय मग़रूर इन्सान मको हीले छोड़दे।
राहहक़ पै आके तू इन कजरवी को छोड़दे॥
भक्ति नेकी करले ज़ालिम ऐश दुनिया छोड़दे।

मर्द है आजिज़ जो दुनियाही में दुनिया छोड़दे॥

अगर्चे खल्क़त यह जानती है, कि इसमें रहता कोई नहीं है।
फिर इसपै ग़फ़लत ये छारही है, कि सो रही है तमाम दुनिया॥

बाल और पर भी तो काम आते हैं हैवानों के।
हैफ़! इन्सान के इन्सान न गर काम आवे॥
जायइबरत है यह दुनिया, ग़ाफ़िलो डरते रहो।
ताज था जिस सर पै, है वह कासय सरज़ेरपा॥
आक़िल है गर तो सर न उठाना बज़ेर चर्ख।
आक़िल बहुत बुरा है नतीजा ग़रूर का॥
कितने ही बन के शहर के और गांव के निशान।
यों मिट गये ज़मीं पै कि ज्यों पांव के निशान॥

भजन २७१

दोहा—कुछ सलूक तो कीजिये, प्रिय स्वदेश के साथ।
बिल्कुल इसे डुबाय के, क्या आवेगा हाथ॥

टेक—तुम्हारे क्या हाथ आवेगा, इस भारत की नैया डुबाकर।

नफा कितनी देय दिखाई, जो करते हो इतनी बुराई।
क्या मरते समय भी भाई, कुछ इसमें से साथ जावेगा॥
जाबजा दीन रोते हैं, रो रो आंखें खोते हैं।
सब सुध बिसार सोते हैं, कौन इन्हें धीर बँधावेगा॥
तुम्हें दीखा है किसका सहारा, कर बैठे हो जो अब किनारा।
अब स्वामी न ज़िन्दा तुम्हारा, जो इतना दुखड़ा उठावेगा॥

उठो भाई होश सँभालो, अपने बोझ को आप उठालो।
इस गुरुकुल पै दृष्टी डालो, यही सारे दुःख मिटावेगा॥

भजन २८०

न हिम्मत हारनारे, सुख पाओ भारतवासी॥
रहो न हरगिज़ न्यारे न्यारे, मिलकर बैठो भाई सारे।
प्रीति प्रेम से सत्यासत्य नितारनारे॥ सुख०॥
हालत देश की देखो भालो, ऐसी कोई तजवीज निकालो।
सारे देश के जिस से कष्ट निवारनारे॥ सुख०॥
बड़े तुम्हारे आलिम भारी, तुमपर गफ़लत छोरही तारी।
छोड़ो गफ़लत, आँखें ज़रा उघारनारे॥ सुख०॥
देखो वेद उपनिषदें दर्शन, लाखों तरह के उनमें हैं फन।
खोलो इनको, मित्रो तनिक विचारनारे॥ सुख०॥
ब्रह्म विद्या में यह पूरन, लौकिक विद्या का भी मखज़न।
भूल के खन्ने, इनको नहीं विसारनारे॥ सुख०॥

भजन २८१

कैसा शोक हैरे, भारत माता अति दुख पाती।
वेद न कोई पढ़ै पढ़ावे, शास्त्र दिये धर दूर।
प्रणयन कर आधुनिक पुस्तकें, करी धर्म की धूर॥ कै०॥
ब्रह्मचर्य की प्रथा उठाई, बालक गृही बनाय।
वाणप्रस्थ संन्यस्त कहां फिर, चहुँदिशि कुमति लखाये॥कै०॥

राज पाट धन धर्म धाम पर, निर्भय दौड़ी हार।
दुख दरिद्र दुविधा ने घेरे, नेकहु नाहिं सुधार ॥ कै० ॥
चोर उचक्के और ठगों ने, कर राखी नित लूट।
हिल मिल 'करण' एक नहीं होते घर २ फैली फूट ॥ कै० ॥

भजन २८२

कर लेहु सुधार फिर भारत का भाई।
वर वैदिक धर्म प्रचारो। नाना मत पन्थ विसारो।
राखो सब से प्यार ॥ फिर० ॥
तन पै घर के पट धारो। धन को मत बाहर डारो।
सीखो सद् व्यापार ॥ फिर० ॥
तजि दुर्मति सुमति पसारो। कर्त्तव्य कभी न बिसारो।
पाओ उच्चऽधिकार ॥ फिर० ॥
सन्मान न शेष तिहारो। जुरि मिल अवनतिकोटारो।
कहता करण पुकार ॥ फिर० ॥

ग़ज़ल २८३

तुम्हें अय भारत निवासियों क्यों, स्वदेश वस्तू नहीं है प्यारी।
ज़रा तो दिल में विचार देखो, हुई है कैसी दशा तुम्हारी ॥
विदेश वस्तू ने अपना झंडा, यहां पर आकर है जब से गाड़ा।
हुई है रुखसत यहां से बिलकुल, तमाम सन्अनत व दस्तकारी ॥
जिलावतन करके इस जगह के, तमाम कसबोकमाल यारो।

किया है अपना रिवाज इसने, यहां के कुल मर्दोजन में जारी ॥
स्वदेश वस्तु को आपने हा ! यहां तलक दिल से है गिराया।
कि गोया छूने से इस अभागिन के, सख्त होती हतक तुम्हारी ॥
यहा की रुई कपास चमड़े, को कौड़ियों में खरीद करके।
बना रहे कौड़ियों की मोहरें, विला शुबह मग़रबी व्यापारी ॥
यहां पै बन्नातशालो अतलस, चिकन वो कमखाव और मखमल।
कभी बनें थे नफीस ऐसे, कि पहने जिन को ये ताजधारी ॥
यहां के सन्ना वो अहिलेपेशा, रहें थे खुशहाल सप हमेशा।
मगर विचारे गरीबो बेकस, बने हैं सब इन दिनों भिखारी ॥
जोलाहे, छीपी, लोहार, मोची, बढ़ी वा रंगरेज़ यां के सारे।
हुए हैं बेकार हाय ! ऐसे, करें हैं मुशकिल से दिन गुजारी ॥
सुई से लेकर तमाम जितनी, जरूरी चीजें हैं जिन्दगी की।
फ़रोख्त होती हैं आज भारत में, गैर मुल्कों से आके सारी ॥
न होवे मुफलिस क्यों अहिलेभारत, पड़े न क्यों काल यां हमेशा।
करोड़ों अर्बों जो सालियाना, ले छीन योरुप की सनाकारी ॥
विदेश वस्तु से दिल हटाकर, स्वदेश वस्तु को दो तरक्की।
इसी से क़ायम रहेगी प्यारो, तुम्हारी, फेशन व वजेदारी ॥
स्वदेश वस्तु की उन्नति परही, देश की जिन्दगी है निर्भर।
कभीभी मुमकिन नहीं यह सालिग, अकेली काफ़ी हो काश्तकारी ॥

भजन २८४

भूले जाते हो तुम हाय, भारतवर्ष के रहने वाले।
हम तुम उनकी हैं सन्तान, जो थे भूमी में विद्वान।

गौतम पातंजली महान, सब तत्वों को जानन वाले ॥
थे श्री रामचन्द्र महाराज, पितु आज्ञा पर छोड़ा राज।
नहीं स्वीकारा पद युवराज, पुरुषोत्तम कहलावन वाले ॥
अर्जुन भीष्म हुये बलवान, जिनके लख संहारी बान।
अब तज ब्रह्मचर्य की बान, हो बलछीन करावन वाले ॥
करके जाती का अभिमान, निर्बल हो गये तुम बलवान।
देते नहीं दशा पर ध्यान, जड़ को चेतन मानन वाले ॥
तुमहीं तो थे सब गुणखान, गाड़ी ये क्या रची विमान।
अब परदेशी भये धनवान, नई कल तार बनावन वाले ॥
अबभी मानो बात हमार, मिलकर करलो वेद प्रचार।
पाठक तबही होय सुधार, होजाओ मान बढ़ावन वाले ॥

भजन २८५

ढूँढ़ा सारे शास्त्र पुरान में, पद हिन्दू कहीं न पाया।
मनू वेद औ छहों शास्त्र में, पता मिला नहीं कोष मात्र में।
हिन्दू पद नहीं मिला तंत्र में, यह सत वचन सुनाया ॥पद०॥
लुगात फ़ारसी में गयास है, उस में हिन्दू लिखा खास है।
देखो खोल हो जिस के पास है, काफ़िर चोर बताया ॥पद०॥
जब संकल्प पढ़ो हो भाई, शब्द 'आर्य्य' ही देत सुनाई।
फिर क्यों छाई मूरखताई, हिन्दू वहां न आया ॥ पद० ॥
यह है पक्ष यवनों का सारा, हिन्दू रख दिया नाम हमारा।
कहे मुरारी मित्र तुम्हारा, नया गीत कथ गाया ॥ पद० ॥

भजन २८६

तुम्हें शर्म ज़रा नहीं आती, पद हिन्दू कहलाने में ।

बहुत समय हिन्दू कहलाये, अर्थ समझ में कभी न आये ।
स्वामी जीने भी समझाये, बनो 'आर्य' की ज़ाती ॥
क्या काफिर बन जाने में ॥ पद० १ ॥

लुगत में हिन्दू देखा भाला, डाकू चोर अर्थ है काला ।
अब तो खासा हुआ उजाला, कैसे अन्धेरी भाती ॥
है लाभ श्रेष्ठ बाने में ॥ पद० २ ॥

मत अब हिन्दू शब्द पुकारो, अपना आर्य नाम उच्चारो ।
सत् उपदेश सुन जन्म सुधारो, बनो धर्म के साथी ॥
नहीं देर मोक्ष पाने में ॥ पद० ३ ॥

सत् उपदेश हुआ अब जारी, खुशी मनाओ नर और नारी ।
खुदगर्ज़ों ने डिगरी हारी, कूट रहे हैं छाती ॥
धर्मा कहे सोलाने में ॥ पद० ४ ॥

दादरा २८७

इसी कारण से तुमको जगाय रहे हैं ।

टरैं विधवा अनाथ, कोई देता न साथ। त्रह रो करके हमको रुलाय रहे हैं ॥ इसी० १ ॥ धूर्त औ पाखण्डी, बनि योगी और दण्डी । मत बेद विरुद्ध चलाय रहे हैं ॥इसी०२॥ कहूँ पै किरानी कहूँ ठाढ़े हैं क़ुरानी । निज धर्म से मुक्ती बताय रहे हैं ॥इसी०३ ॥

भेड़ें बकरी व गाय, लाखों कटती हैं हाय। निज पेटों को क़बरें बनाय रहे हैं ॥ इसी० ४ ॥ साधु और पण्डे, कहुँ चोर और गुण्डे। सब भारत में लूट मचाय रहे हैं ॥ इसी० ५ ॥ जागे नेकहु न हाय! गये केतहु जगाय। अब तो सारे कारज नसाय रहे हैं॥ इसी कारण से तुमको जगाय रहे हैं ॥ ६ ॥

ग़ज़ल २८८

ऐ बुतपरस्तो, बुतों के भक्तो! रहोगे सीना फ़िगार कब तक।
हमेशा ख़ूने जिगर को पी पी रहोगे इश्क़े बीमार कब तक॥
बनते हो जोरू जने २ की भला बुरा कुछ न देखते हो।
फँसा के काकुल के पेंच में दिल करोगे ज़िन्दगी को ख़्वार कबतक॥
कंचन को देकर के कांच लेते न होगी हरगिज़ मुराद हासिल।
तुम जिनपे मरते वह तुमसे जलते निभेगी यारी ये यार कबतक॥
तुम्हारे माशूक़ बेवफ़ा हैं तुम बेहया हो जो मरते उन पर।
खाते हो मुँह पर न बाज़ आते पिटोगे बीचो बज़ार कबतक॥
हराम खोरों से दिल लगाते मज़ा न पाते हँसाते आलम।
गुलाबी चमड़े पर सर कटाते बने रहोगे चमार कबतक॥
न फ़र्ज़ अपने की कुछ ख़बर है न भूल साबिक़ पर ही नज़र है।
तुम्हारी अक़्लों पै क्या अबर है रहेगी शामत सवार कबतक॥
दुनिया में आकर धक्के ही खाये धोबी के कुत्ते न घाट घर के।
यह भी न सोचे अक़िल के दुश्मन रहोगे मिट्टीमदार कबतक॥
ये उम्दा मौक़ा मिला है तुमको आंखों से पर्दा उठा के देखो।
नशा य कैसा जमाया तुमने न जिसका उतरा ख़ुमार अबतक॥

ऐ पाकपरवर ऐ सच्चेदिलवर! हो दीद अवतो तुम्हारा हासिल।
बलदेव आके शरण पड़ा है सुनोगे इसकी पुकार कबतक॥

गजल २८९

रहेगी मुख पर ये आब कबतक, रहेगा साहब शबाब कबतक।
यह नींदगफलत काख्वाब कबतक, बचोगेआखिर अजाब कबतक॥
यह शान शौकत गजब नजाकत, ये नाज नखरे अजब कयामत।
ये जुल्म जोरो सितम शरारत, बने रहोगे नवाब कबतक॥
है चन्दरोजा बहार गुलशन, न ये हमेशा रहे जवानी।
फरेब दंदे पुलाव जर्दा पकेगा कोर्मा कबाब कब तक॥
सताते हो बेगुनाह, नाहक़, किस घमंड में फिरो हो भूले।
डरो न यारो गजब खुदा से, करोगे लाखों अजाब कब तक॥
रोते चलेगये यहां से कितने, तुम्हीं अनोखे नहीं सितमगर।
चलोगे छुपर के दांव फन तक, चलेगी पट पर में नाव कबतक॥
झूठी हजारों बातें बनाते, बदी से अब तक न बाज आते।
लाखों गले पर छुरी चलाते, रहे यह क़ातिल खिताब कबतक॥
गरीबों का जर गला दबाते, तरस न दिल में जरा भी लाते।
हरामजादों को जर लुटाते, उड़े ये गुलगूं शराब कब तक॥
क़ज़ा का पैगाम है आनेवाला, चलोगे आखिर मुंह करकेकाला।
पूछेगा हाकिम इनका हवाला, न दोगे आखिर जवाब कब तक॥
दुनियामें है येदो दिनका मेला, हिलमिलकेरहनाहैसबकोलाजिम।
इस चार दिन की ही चांदनीमें, करोगे हम से हिजाब कबतक॥

ये उम्दा मौक़ा मिले न हरदम, ऐ सोने वालो विचार देखो।
अब खोल आँखें दुनियाको देखो, रहेगा मुँहपर नकाब कबतक ॥
बेदार होकर बलदेव जल्दी, अब याद हक़ में लगा ले दिलको।
पड़ा रहेगा कुतों के दर पर, बता दे खाना खराब कब तक ॥

भजन २६०

टेक–क्या अब भी नहीं जागोगे, सूर्य वैदिक निकला भाई ॥

उठो २ ग़फ़लत को त्यागो, उम्र गुज़र गई अब तो जागो।
खो बैठ सर्वस्व अभागो, कैसी नींद छाई ॥ क्या० १ ॥

जग जाना इक़बाल तुम्हारा, हा! हा! मिला खाक में सारा।
कहते सीना फटे हमारा, सुना नहीं जाई ॥ क्या०२ ॥

इष्ट मित्र निज के सुत नारी, प्राण प्रिया सन्तान तुम्हारी।
होती जावे सारी २ यवन और ईसाई ॥ क्या० ३ ॥

आँखें मलकर मुँह धो डालो, सत्य ज्ञान के जलमें न्हालो।
पुरुषारथ का खड्ग सँभालो, शर्मा समझाई ॥ क्या० ४ ॥

भजन २६१

अबतो अबुध आलसी जागो।

उदित भयो विज्ञान दिवाकर मन्द मोह तम भागो।
डूबगयो दुर्जन तारागण वृन्द विषय रस पागो ॥ १ ॥
साहस सर में कर्म कमल वन अब फिर फूलन लागो।
प्रेम पराग हेतु सज्जन कुल भृंग यूथ अनुरागो ॥ २ ॥

सुख सम्पति चकवा चकई ने मिल वियोग दुख त्यागो।
जाय दुरो आलस उजाड़ में दैव उलूक अभागो ॥ ३ ॥
सकल कला कौशल चिड़ियों ने राग कर्यो प्रिय रागो।
हिल मिल गैल गहो उद्यम की पीछो तको न आगो ॥४॥

भजन २६२

भाई धर्म बचालो, बिगड़ी बनालो, होश सँभालो,
जीना है दिन चार १ ॥
डूब चली है नाव धर्म की बीच भँवर मँझधार।
प्राणों से प्यारा धर्म हमारा हम को छोड़ चला ॥ भाई धर्म० २॥
देखो प्यारो समझ लो तुम अब भी करलो सुधार।
धर्म मरा तो जानलो यह तुमको भी देगा मार ॥ भाई धर्म० ३ ॥
धर्म बचाओ भाइयो तुम अपना भला जो चाहो।
सब जग धन्धे झूंठे हैं इनमें न दिलको फँसाओ ॥ भाई धर्म० ४ ॥

भजन २६३

उठ मुँह धो डालो बहुत ही सुलाया आलस नींद ने।
फूट मद्य पी अरु सोये, बुद्धि बल के सर्वस खोये ॥
यवन मत दिखाया आलस नींद ने ॥ उठ० १ ॥
ग्रन्थ सत जलाये सारे, अरु जनेऊ तोड़े न्यारे।
हिन्दू पद दिलाया आलस नींद ने ॥ उठ० २ ॥
चमचमात असि दोधारे, खून से सनाये गारे।

फिर पढ़ाने वा लिखाने का करे कौन खयाल ॥
सभी रहती हैं मूर्खा गँवार ॥ भारत की० ॥ ४ ॥

शेर–थे जो द्विज वर्ण परम पूज्य और सदाचारी।
गौतमो व्यास कपिल मनु कणाद ब्रह्मचारी ॥
हाय ! उस कुल में हुए मूर्ख और दुराचारी।
धर्म-पथ छोड़ सभी बैठे हैं नर और नारी ॥
इसी कारण हुये अब ख्वार ॥ भारत की० ॥ ५ ॥

शेर–हज़ारों रुपया बेकार ही लुटाते हैं।
अनाथ अन्धे अपाहिज न कौड़ी पाते हैं ॥
किसी के द्वार अगर जा अड़ी लगाते हैं।
जवाब में कभी खाली न हाथ पाते हैं ॥
चाहे सर को पटके हज़ार ॥ भारत० ॥ ६ ॥

शेर–मन वचन कर्म से देशो धरम पै होके निसार।
सारे संसार में वेदों का करो तुम प्रचार ॥
होके दृढ़ यम वा नियमका करो पालन नरनारि।
मित्र की तुमसे विनय अब है यही बारम्बार ॥
मिलिहैं सुख तुम को अपार ॥ भारत की० ॥ ७ ॥

भजन २९६

धन धर्म बचालो प्यारा, देखो लुट रहा देश तुम्हारा ॥
पापिन फूट के दल आ छाये, ईर्षा द्वेषके बान चलाये जी
चली क्रोध की तोप अपारा ॥ देखो० १ ॥

फैले धुयें अविद्या के भारी, हुई दिन से निशा अँधियारो जी !
चहुँ ओर से मचे हाहाकारा ॥ देखो० २ ॥
चली बाल विवाह कटारी, जिसने लाखों की गर्दन मारी जी !
बही नदिया सी खून की धारा ॥ देखो० ३ ॥
नाना मतों की आग लगाई, नहिं नेक भी रक्षा पाई जी !
अब भी संभलो क्यों नहिं प्यारा ॥ देखो० ४ ॥
जल्दी मेल की फौज बनाओ, और प्रीति के बान चलाओ जी !
लेलो शांति की तोप हजारा ॥ देखो० ५ ॥
फैले ज्ञान का तेज तुम्हारा, चमके वेद धर्म रवि न्यारा जी !
तबही नाश हो वह अँधियारा ॥ देखो० ६ ॥
ब्रह्मचर्य्य का लेके कटारा, काटो शत्रु का वह दल सारा जी !
तबही बचजाय धर्म तुम्हारा ॥ देखो० ७ ॥
नाना पन्थों की अग्नि बुझाओ, उसपै श्रुति का जल वर्षाओ जी !
त्यागो गफ़लत की नींद अपारा ॥ देखो० ८ ॥
फूट शत्रु को पीछे हटाओ, बल्कि धूल में जल्दी मिलाओ जी !
कहे पाठक लो प्रभु का सहारा ॥ देखो० ९ ॥

ग़ज़ल २९७

है जाना देश देशान्तर सनातन धर्म में भाई।
उसे क्यों बन्द कर तुमने मुसीबत देश पर लाई ॥
जिसे पाताल कहते थे वह है अब देश अमरीका।
ऋषी सन्तान जाते थे वह अर्जुन कृष्ण सुखदाई ॥
गये थे व्यासजी भी वां महाभारत से साबित है।

औ उद्दालक ऋषी जी से की अर्जुन ने शिनासाई ॥
कहा तशरीफ ले जाना महाशय देश भारत को।
युधिष्ठिर ने रचा है यज्ञ उस को देखना जाई ॥
ये मैक्सीको रियासत में जो सूरज वंश के राजा।
उन्हीं की एक लड़की थी व्याह अर्जुन के सँग आई ॥
पुराने रहने वाले हैं जो मैक्सीको रियासत के।
उन्हें "रेड इंडियन", कहते मुवर्रिख धर्म ईसाई ॥
उन्हीं लोगों के अंदर हैं मसायल वेद पौराणिक।
प्रचार उनका किया जाकर जो ऋषी संतान है गाई ॥
तनासुख के वह कायल हैं हवन करते थे रोज़ाना।
निशां उसका ये है अबतक कि अग्नि नहिं बुझ नपाई ॥
हैं जिसके पारसी लोगों के रखते अग्नि को हरदम।
इन्हें आतिश परस्तों की है पदवी इसने दिलवाई ॥
हैं औतारों को वह मानें जो हैं कच्छ और मच्छादी।
परस्तिश इन्द्र सूर्य कर दिये मन्दिर हैं बनवाई ॥
जो मैक्सीकों के मन्दिर हैं है उनमें ऐसी एक सूरत।
कि जिसका जिस्म आदम का व सर हाथी का दिखलाई ॥
नहीं हाथी की पैदायश है अमरीका में ऐ प्यारो।
बिना हिन्दू धरम के ऐसी रचना किसने करवाई ॥
जो तसवीरें हैं मैक्सीको के मज़हब के पुजारिन की।
खड़ा है सांप फन काढ़े सरों पै उन के अयदाई ॥
समय सूर्य ग्रहण के वह मचा के शोर हैं नाचैं।
निगलना भूत का सूर्य को बचना इससे बतलाई ॥

यह मूरति शिव गणेशादी कथा यह राहु से मिलती।
करो अब गौर तुम दिल में सनातन धर्म अनुयाई॥
शुभ स्वामी दयानन्द का करो सब देश हितकारी।
कृपा राधाशरण स्वामी से ध्वनि यह देश में छाई॥

भजन २६८

यह धर्म हमारा प्यारा, कोई दिनका है बनजारा।
करो होश और निद्रा त्यागो, अब तो गफलत से जागो-
नहीं रंज सहोगे भारा॥ कोई० १॥
हमें खाने को लाखों बलायें, मुंह खोल२ कर धा
लगी करने वह भक्ष हमारा॥ कोई० २॥
गई फिर तकदीर हमारी, लगे कहिन भी पड़ने भा
मचा देश में हाहाकारा॥ कोई० ३॥
कई भाई भूख के मारे, गये त्याग प्रान बेचारे
पीछे छोड़ के सब परिवारा॥ कोई० ४॥
कई छोड़ वतन उठ धाये, जहां जिस के सींग
तजि बहिन भाई सुन दारा॥ कोई० ५॥
यह हालत देख ईसाई, और मिसेज रामाबाई-
उन ने लेने को हाथ पसारा॥ कोई० ६॥
हुए लाखों यतीम किरानी, होय वैदिक धर्म की हानी-
लगा औरों का बजने नक्कारा॥ कोई० ७॥

अब भी वक्त है होश में आओ, पैसा २ भी अगर मिलाओ-जी ।
तब भी बच जाय धर्म तुम्हारा ॥ कोई० ८ ॥

करो पूर्ण दया उर धारे, रक्षा दीनों की प्यारे-जी ।
होवे यश, कल्याण तुम्हारा ॥ कोई० ९ ॥

कौड़ी पैसा जो हो सोई देदो, हिस्सा परम धर्म में लेलो-जी ।
कहे खन्नादास विचारा ॥ कोई० १० ॥

भजन २९९

ऋषी ऋण कैसे उतारेंगे, लगी घर में फूट की आग ।

जिन पर थी निगाह हमारी थी जिन से आशा भारी ।
कि बन कर पर उपकारी, देश की दशा सुधारेंगे ॥ ल०१॥

उन्हें ऐसी मूर्खता छाई, लगे करने नित्य लड़ाई ।
यह देता हमें दिखाई, कि यह सब काम बिगारेंगे ॥ ल०२॥

समझे थे जिन्हें हितकारी, वही निकले दुश्मन भारी ।
क्या जाने समाज बिचारी, कि यह सब प्रेम बिसारेंगे ॥ ल०३॥

जो थे समाज के भूषण, वही हो गये उस के दुश्मन ।
लगे खुद आपस में झगड़न, औरों को कैसे सँवारेंगे ॥ ल०४॥

आपस में युद्ध मचाओ, नहीं धर्म से प्रेम बढ़ाओ ।
कुछ तो दिल में शर्माओ, तुम्हें क्या लोग पुकारेंगे ॥ ल०५॥

हा ! ईश्वर से नहीं डरते हो, गारत समाज करते हो ।
सर मुफ्त पाप धरते हो, तुम्हें जो नरक में डारेंगे ॥ ल०६॥

यों सालिगराम पुकारे, तुम्हें ईश्वर जल्द सुधारे।
बढ़ें मेल मिलाप तुम्हारे, यही हम अर्ज़ गुज़ारेंगे ॥ ल०७॥

भजन ३००

क्या करना था क्या लगे करन हमें यही अचम्भा है।
कर्तव्य था ईश गुण गाना, शुभ कर्म और धर्म कमाना ॥
पर इनमें लगाया तनिक न मन ॥ हमें यही० १ ॥
था उचित वेद का पढ़ना, नित पंचयज्ञ का करना।
अब छोड़ दिये सन्ध्या व हवन ॥ हमें यही० २ ॥
सब सत्य से प्रीति बढ़ाते, और झूठ से चित्त हटाते।
अब त्याग सत्य किया झूठ ग्रहण ॥ हमें यही० ३॥
जो सबका ईश कहाता, नहीं जिसे देख कोई पाता।
अब उसको भी लगि गये गढ़न ॥ हमें यही० ४ ॥
जिन्हें पितु मात न सेवें, पर मरों को भोजन देवें।
लगे ब्राह्मण भी कुजोपना करन ॥ हमें यही० ५ ॥
ब्राह्मण क्षत्री कहलावें, और भूतों से भय खावें।
लगे मुर्दों से जिन्दा भी डरन ॥ हमें यही० ६ ॥
वुड्ढे भी ब्याह करावें, सर सेहरा मौर बँधावें।
खुद साठ वर्ष के, छः की दुलहन ॥ हमें० ७ ॥
कैसी है अविद्या भारी, ईश्वर को कहें वपुधारी।
बतलावें उसका जनम मरन ॥ हमें० ८ ॥

ब्रह्मचर्य आश्रम खोया, बल बुद्धी तेज डुबोया।
नहीं जाते हैं गुरुकुल में पढ़न ॥ हमें० ९ ॥
ऋषियों की भूमि में आई, अब घोर अविद्या छाई।
पर नहीं देते गुरुकुलों को धन ॥ हमें० १० ॥
जो बुद्धिमान कहलावें, सब को उपदेश सुनावें।
वही खुद आपस में लगे लड़न ॥ हमें० ११ ॥
मुश्किल से नर तन पाया, उसे सालिग वृथा गँवाया।
नहीं आया तू ईश्वर की शरन ॥ हमें० १२ ॥

दादरा ३०१

हितैषी बनो सभी प्यारो, कुरीती घर २ से टारो-टेक।
दो०-बने जहां तक मेट दो, बुढ़वा बाल विवाह।
एक पुरुष रखे नार कई, होरहा देश तबाह ॥
इसने व्यभिचार बढ़ाय दिया।
देश को नीचे गिराय दिया ॥ हि० ॥
विधवाओं की लखि दशा, घर घर जिय कम्पाय।
जहँ तक तुम से हो सके, इनका दुख दो मिटाय ॥
अदालत फिरती हैं लाखों।
खून तक करती हैं लाखों ॥ हि० ॥
वेश्या आदि प्रसंग से, हुआ देश वीरान।
मद्य मांस भी छोड़ दो, है ये दुख की खान ॥

बिगड़ गये घर के घर लाखों।
गये सड़ २ के मर लाखों ॥ हि० ॥

बेटी पर धन लेय जो, है ये बड़ा ही पाप।
हानि बड़ी हो देश को, हिये विचारो आप ॥

बुड्ढों तक से व्याहें लोभी।
बहुत ही धन चाहें लोभी ॥ हि० ॥

आलस का अब दुर्व्यसन, बढ़ गया बेतादाद।
जुवे बहुत से खिल रहे, हो रहा धन बर्बाद ॥

अच्छे भाई काम करो सारे।
फिरो नहिं तुम मारे मारे ॥ हि० ॥

कुये बाग पोखर बना, पुल अरु सड़क सराय।
भोजन बस्तर दीन को, धन दो इन में लगाय ॥

सच्चे व्यवहार करो प्यारे।
धर्म अनुसार चलो सारे ॥ हि० ॥

कन्याशाला खोल दो, गुरुकुल दो बनवाय।
विद्या पावें नारि नर, यूं सुख दो फैलाय ॥

शीलता धीरज को धारो।
देश हित तन मन धन वारो ॥ हि० ॥

गुन कर्मों से वर्ण को, मानों जन समुदाय।
छूत छात के बन्ध को, देओ क्यों न तुड़ाय ॥

शूरता से काम करो सारे।
सबका उपकार करो प्यारे॥ हि० ॥

भाई जो तुम से जुदा, हुआ है या हो जाय।
संग लेलो सब काल में, धर्म से लेओ मिलाय॥

शुद्धि का खोलो दर्वाजा।
जिसका जी चाहे वह आजा॥ हि० ॥

नाना पन्थों को तजो, आर्य बनो नर नार।
एक ईश्वर का मानना, वेद विहित आचार॥

ऐ पाठक हो जाओ फिर वैसे।
हुये तुमरे पुरुषा जैसे॥ हि० ॥

ख्याल ३०२

गऊ कन्या विधवा के दुःख पर ध्यान न दोगे ऐ भाई!।
सुख स्वप्न में मिले न तब तक विचार देखो अन्याई॥
गऊ हतन होती हैं हज़ारों कन्या रात दिन रोती हैं।
लाखों विधवा बाली उमर को अँसुओं से मुँह धोती हैं॥
गऊ बैलों बिन खेती नाश भई उपाधि लाखन होती हैं।
कठिन क़ैद में विधवा कन्या जन्म अकारथ खोती हैं॥

शैर।

आह इन की ने यह भारत सारा ग़ारत कर दिया।
सुख न स्वप्ने में रहा सब दुःखही दुःख भर दिया॥

पाप करने से न डरते धर्म कर मे घर दिया ।
क्यों वह सुनते हैं किसी की मुल्क मुफ़लिस कर दिया ॥
पेखुदगरजो! डरो ईश से रहम करो तजि कुटिलाई ॥ सु० १ ॥

विधवा बाली रो रो सर दीवारों से टकराती हैं ।
काल पीस बहु उम्र गुजारें नाना कष्ट उठाती हैं ॥
तुम्हारे धन से लुच्चे लाखों वेश्या मजे उड़ाती हैं ॥
पुलाव जर्दा उड़े तुम्हारे धन से गऊ कटवाती हैं ।

शेर ।

सोचो हिन्दू भाइयो! यह जुल्म क्यों करते हो तुम ।
मुल्क दुश्मन जालिमों की पर्वरिश करते हो तुम ॥
अपने हमवतनों के दुख पर ध्यान नहिं धरते हो तुम ।
वेह्या बदजन पै क्यों दिलोजान से मरते हो तुम ॥
बेशर्मो! तुम्हें राख पेट में नाहक बोझ मरी माई ॥ सु० २ ॥

हुये हजारों शूर वीर भारत में पहले बलवाना ।
धर्मवान औ दयावान विद्या की खान जिन्हें जगजाना ॥
उन्हीं के कुल में अब तुम ऐसे कटे न चूहे का काना ।
जनखापन की चलो चाल औ सुनो रंडियों का गाना ॥

शैर ।

क्या तुम्हारी अक्लों पर अब हाय पत्थर पड़ गये ।
वकते वकते रात दिन समझाते हम तो हर गये ॥

शर्म न आवे मुँह दिखलाते धन खोकर बदमाश हुये ॥वि०

चौक ५

वेश्या को धन देदेकर गौवों का गला कटाते हो।
खूब सोचलो तुम्हीं पीर पर कुर्बानी करवाते हो॥
धर्म काज में देत न कौड़ी नाच में झट दे आते हो।
अनाथ हमवतनों के हाल पर ज़रा तरस नहिं खाते हो॥
इन कर्मों से जभी तुम्हारे देश २ उपहास हुये ॥वि०

चौक ६

इसी से पड़त काल हाल भारत का क्या बेहाल हुआ।
सत्यधर्म उठ गया मुल्क से इसी से पायेमाल हुआ॥
हमदर्दी औ भ्रातृभाव का जब से यहां हलाल हुआ।
फूट फैलगई सारे मुल्क में दिलों में सबके मलाल हुआ॥
आंख खोलकर अबतो देखो सुख सारे हैं नाश हुये ॥वि०

चौक ७

हे जगदीश्वर! जगतपिता!! अब तुम्हीं आपदा निर्वारो।
दे विद्या बुधि ज्ञान करो इस मूरखता को मुँह कारो॥
कठिन कुमति से हे करुणामय! करो दासको निस्तारो।
परब्रह्म पूरण परमेश्वर! दुष्ट कर्म से कर न्यारो॥
विनय करत बलदेव तुम्हीं से सबले निपट निराश हुये ॥वि०

❀ ५ हमारी पूर्व दशा ❀

भजन ३०४

सब देशो में मशहूर आर्य्यावर्त कहाता है।
पढ़लो इतिहास पुराना, जाने है सभी ज़माना।
चाहे अब कोई करो गरूर, गुरू यह समझाजाता है ॥ सब०१ ॥
जितनी विद्या हैं सारी, हुई भूमडल में जारी।
हुआ उनका यां से जहूर हमें इतिहास बताता है ॥ सब० २ ॥
क्या कहें अधिक हम भाई, करते आंगरेज़ बड़ाई।
मिल रही साक्षी भरपूर, यही सबकी गुरु माता है ॥ सब० ३ ॥
यूरुपके फ़िलासफर भारे, मरते यह शब्द उचारे।
प्रभु विनय करो मंजूर (हो आर्य्यवर्त में जन्म) मेक्समूलर फर्माता है ॥ सब दे० ४ ॥
अब वही देश है प्यारा, जिसे हिन्दुस्तान पुकारा।
सब इज़्ज़त मिलगई धूर, देखकर रोना आता है ॥ सब दे० ५ ॥
उठो वासुदेव अब भाई, कुछ तो कर देश भलाई।
सब आलस कर दो दूर, ऋषी उपदेश सुनाता है ॥ सब० ६ ॥

ग़ज़ल ३०५

कभी हम बलन्द इक़बाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो।
हरफन में रखते कमाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
पढ़ते थे जब हम वेद को जाने थे सब के भेद को।

रखते न अपनी मिसाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
पाबन्द थे जब कर्म के माहिर थे अपने धर्म के।
दिल में ज़रूरी सवाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
जब से जिहालत आ गई तारीकी हरसू छागई।
मुफ़लिस है जो खुशहाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
हालत दिगरगूं हो गई क़िस्मत हमारी सो गई।
रोते हैं अब जो निहाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

ग़ज़ल ३०६

कभी तेरा भारत नाम था, तुझे याद हो कि न याद हो।
कर्त्तव्य पालन काम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥१॥
तेरा बढ़ा विज्ञान था, तू विश्व बीच प्रधान था।
निर्दोष नीति-निकाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥२॥
छल-झूठ-हिंसा हीन था, सब भांति प्रेम प्रवीण था।
तू तीन लोक ललाम था, तुझे याद हो कि न-याद हो ॥३॥
न अकाल प्लेग प्रताप था, नहिं लेश भर भी पाप था।
तू स्वर्ग सम सुखधाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥४॥
तू आप अपने समान था, विद्वान वीर सुजान था।
सब विश्व करता प्रणाम था, तुझे याद हो कि न यादहो ॥५॥
ऐसा न कायर क्रूरथा, साहस सुमति भरपूर था।
आलस्य तुझको हराम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥६॥
आचार में तू एक था, पूरा विचार विवेक था।
उद्योग भी अभिराम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥७॥

सिद्धान्त तेरा उच्च था, शुभ लक्ष्य भी नहिं तुच्छ था।
तू ईश लीला धाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥८॥

ग़ज़ल ३०७

भारत के वह दिन लौट कर, कभी आयंगे कि न आयंगे।
धन वीरता इल्मो हुनर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
कहां वेद विद्या के प्रदर्शक, अग्नि वाय्वादिक ऋषी।
वह देखने में दृष्टि भर कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
जन्मे अनेकों ब्रह्मविद, ऋषि मुनि महा योगी यहां।
वह दया कर के इधर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
कहां धर्म धारी राम जैसे, और सीता सी सती।
महाराज दशरथ से पितर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
कहां भीष्म द्रोणाचार्य, एवं कर्ण अभिमन्यु यती।
अर्जुन से फिर यहां वीर वर, कभी आयंगे कि न आयंग॥
कहां द्रौपदी रुक्मिणि सुभद्रा, गार्गि और सुलोचना।
उनके चरण इस भूमि पर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
श्री कृष्ण से योगी अहो ! पैदा न हैं अवनी तले।
गौतम कपिल से मुनिप्रवर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
बुद्ध से हिंसा विरोधी, और शंकर से सुधी।
यह प्रेम से वपु धार कर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
दयानन्द जी से स्वामी वर, परमार्थ की चिन्ता यहां।
सबको जगाने दर बदर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥

बलदेव भारत वर्ष की, हालत पै अश्क बहा रहा।
करने मदद वह शेर नर, कभी आयेंगे कि न आयेंगे ॥

भजन ३०८

शेर—एक दिन भारत यह सब देशों का बस सरताज था।
जिस ज़माने में यहां पर वेदमत का रिवाज था ॥

टेक—भारत को सूना छोड़ के, वह कहां गये महाराजे ॥

गये राम लखण कहां शूर वीर बलधारी।
जिन के बल से पृथ्वी कांपे थी सारी ॥
गये कहां युधिष्ठिर भीम भीष्म तपधारी।
कहां परशुराम अर्जुन से शस्त्र खिलारी ॥

कहां कर्ण गये अभिमानी, कहां गुरु गोविन्द लासानी।
परतापसिंह बलवानी, जिन की विख्यात कहानी ॥

किये काज उन्होंने बड़े, न मन में डरे, युद्ध में लड़े, नहीं मुँह मोड़ के, रण अन्दर हरदम गाजे ॥ वह कहां० १ ॥

कहां गये वशिष्ठ और व्यास से ऋषि विद्याधर।
कहां कणाद गौतम कपिल जैमिनी मुनिवर ॥
कहां पातंजली से ऋषी और पाराशर।
जिन के प्रताप से विद्या फैली घर घर ॥

कहां गये पाणिनी भाई, जिन रचदी अष्टाध्यायी।
कहां गये कृष्ण सुखदाई, जो वेद धर्म अनुयायी ॥

गये नारद ब्रह्मा कहां, करूं क्या बयां, रहे नहीं यहां, वह

नाता तोड़ के, जाकर परलोक विराजे ॥ वह कहां० २ ॥

कहां हरिश्चन्द्र से राजा गये सतवादी।
दिये पुत्र स्त्री त्याग और रजवादी ॥
कहां गये दशरथ और जनक धर्म अनुयाई।
नहीं टरे वचन से, प्यारी जान गँवाई ॥
कहां शिवि दधीचि राजाबल, कहां मोरध्व विक्रम शल।
कहां दिलीप अज रघु निरमल, रहे बने धर्म में निश्चल ॥
अब क्या तदबीर बनायें, कहां से लायें, मुफ्त चिल्लायें,
मरें शिर फोड़ के, सब होगये काज अकाजे ॥ वह कहां० ३ ॥

क्षत्रिय कुल में होगये हैं वेश्यागामी।
दी डोर धर्म की छोड़ पाप की थामी ॥
ब्राह्मण कुल जो थे ऋषि मुनियों के नामी।
वह होगये विद्याहीन और बहु वामी ॥
संध्या गुरु मन्त्र विसारा, लगे अग्निहोत्र नहीं प्यारा।
यों भारत दीन पुकारा, कुल डूबा सभी हमारा ॥
अब भी शोवो मतिहीन, बनो प्रवीण, मुरारी दीन, कहे कर
जोड़ के, वेदों के बजाओ बाजे ॥ वह कहां० ४ ॥

भजन ३०६

टेक—भारत क्यों रुदन मचावे, सब दिन होत न एक समान।

शैर।

एक दिन वह था कि बल विद्या में हम भरपूर थे।

और दौलतमन्द सब देशों में भी मशहूर थे।
सब हमें झुकते थे वो मातहत आप हजूर थे।
जो वचन कहते थे मुख से हर तरह मंजूर थे॥
एक दिन ऐसा होना था, हमें देख २ रोना था।
गौरव सारा खोना था, पड़ ग़फ़लत में सोना था॥
अब क्यों होते दिलगीर, बांधिये धीर, मानो तदबीर। ईश का मन में कीजे ध्यान॥ भारत० १॥

शैर।

कैसे २ शूर विद्यावान और दानी हुये।
हमसरी क्या कर सकें कोई कि लासानी हुये॥
जिन के वश में देवता तक अग्नि और पानी हुये।
वहभी आफ़त में फँसे गो कैसे ही मानी हुये॥
हुये हरिश्चन्द्र सत धारी, बलि पै पड़ी विपता भारी।
सीता सतवन्ती नारी, रही वह कुछ काल दुखारी॥
तुम सोच फ़िकर दो टाल, देखो कर ख़्याल, प्रबल है काल। चक्र में जिस के सभी जहान॥ भारत० २॥

शैर।

जिसके थे सौ पुत्र और भारी कुटुम्ब परिवार था।
राज्य था धन था उन्हें हर बात का अख्त्यार था॥
उनको भी एक दिन मुसीबत ने किया बेज़ार था।
कुछ न कहता था समय के चक्र से लाचार था॥

एक दिन वह था अयोध्या में बड़ी थी धूम धाम।
था यकीं सबको यही राजा बनेंगे कल को राम॥
एक दिन हूवा मगर वह शोक़सागर में तमाम।
क्यो मरे जाते हो भाई गौर का अब है मुक़ाम॥
चले राज के बदले वनको, तज वस्त्र खाक मल तनको।
क्या मिला कहो रावनको, गया छोड़ यहीं सब धनको॥

यह है दुनियां का फेर, न आंसू गेर, दिलको रख शेर। राम नगरी चढ़ चले विमान॥ भारत० ३॥

शेर।

धीर पुरुषों का यही है नियम धीरज धारना।
धर्म अपने मन में रखना और न हिम्मत हारना॥
सब्र करना और दशा विगडी को नित्य सुधारना।
सत्य मारग से कभी मनको न अपने टारना॥
हो मित्र छोड़ घबराना, तुम भारत के हो दाना।
देखा है वड़ा जमाना, फिर क्या तुमको समझाना॥

तुम जपो सच्चिदानन्द, कटें सब फन्द, मिले आनन्द,-कहे शर्मा फिर होवे मान॥ भारत० ४॥

———o———

❀ ६ हमारी वर्तमान दशा और उसका कारण। ❀

भजन ३१०

क्या हुआ तुझे अय हिन्द! तेरा था रुतबा कभी आला ॥
कहां से तूने नाम यह पाया, असल नाम को किधर गँवाया।
उत्तम नाम तेरा आर्यवर्त था, सुन्दर अर्थवाला ॥ क्या० ॥
सब विद्याओं की तू कान थी, सब देशों की तूही जान थी।
शंकराचार्य गौतम कणाद को, तूने ही पाला ॥ क्या० ॥
राजा भोज ने घोड़ा बनाया, कल कोई उस में ऐसा लगाया।
सत्ताईस कोस चलता घंटे में, थी तु विद्याला ॥ क्या० ॥
ऐसेही उसका पंखा हिलता, दिवस रैन बिन छुए चलता।
इसी तरह के लाखों क़ायम थे, तुझ में शिल्प आला ॥ क्या० ॥
अन्य देशी सब यहां थे आये, यहां से विद्या सीख ले जाते।
अब मुहताज तु है औरों का, क्या उलटा चाला ॥क्या० ॥
कपड़ा तेरा बाहर से आवे, दिया तेरा कोई और जलावे।
सीने के लिये सुई न घर में, अजब रंग ढाला ॥ क्या० ॥
धन दौलत का क्या था ठिकाना, हासिल था सब तेरा ज़माना।
बच्चे तेरे अब भूख के मारे, करते आहो! नाला ॥ क्या० ॥
जाहो हशम जितनी थी तेरी, ग़ज़नी की जब चली अंधेरी।
चोर लूटकर ले गये सब कुछ, तोड़ ताड़ ताला ॥ क्या० ॥

रही सही जो बची बचाई, नाइत्तफाक़ी ने वह गँवाई।
अब तो ख्वाब ग़फलत से जागो, हो गया उजाला ॥ क्या० ॥
शूद्र बनकर उमर न घालो, कोई कौशल कला निकालो।
करो उद्धार कुछ देश अपने का, सेठ बाबू लाला ॥ क्या० ॥
देशी चीज बर्तो बर्ताओ, देशी पहनो देशी खाओ।
खन्नादास कहे होगी उन्नति, रहे बोलबाला ॥ क्या० ॥

ग़ज़ल ३११

इतनी जिल्लत पै भी अफ़सोस ! कि गफ़लत है वही।
धर्म के कामों से हैयात कि नफरत है वही ॥
लाख समझाया मगर अब भी न माने अफसोस।
खोटे कर्मों की तरफ हाय कि रगबत है वही ॥
बुतपरस्ती को किया वेदों से साबित मज़मूम।
मूर्ती पूजा की अफसोस कि आदत है वही ॥
सारे संसार की नजरों में हुये गरचे जलील।
पर दिमागों में भरी आप के नखवत है वही ॥
वेद मत पर चलो गर शान्ती के ख्वाहाँ हो।
सच्चा आनन्द है जिस में कि यह मत है वही ॥

ग़ज़ल ३१२

रंज क्या २ न सहे धर्म से ग़ाफ़िल होकर।
पाप क्या २ न किये विषयों पै मायल होकर ॥

राज धन सम्पदा और दौलतो इक़बाल चक्का।
हाय क्या २ न गया हाथ से हासिल होकर ॥
बुतपरस्ती करी और पूजे क़दम शूद्रों के।
तेरे अहक़ाम से मालिक मेरे ग़ाफ़िल होकर ॥
अक़्ल थी इल्म था और फ़नो हुनर सब कुछ था।
हाय ग़ज़ब कैसे बने लायक़ो क़ाबिल होकर ॥
पहले अफ़ज़ल थे कर्म जन्मकी परवाह नथी कुछ।
अब ज़लालत में गिरे जन्म से अफ़ज़ल होकर ॥
मानलो मानलो इज़्ज़त जो पुरानी चाहो।
अब भी आर्य बनो सत् धर्म में शामिल होकर ॥

प्रभाती ३१३

तजि तजि निज धर्म मित्र पते दुख पाये।
जब लग निज धर्म जलनि, अग्नि है बनाये।
हाथी अरु सिंह नरहु, सन्मुख नहिं आये ॥ १ ॥
दाह शक्ति त्यागि जबहिं, खेह नाम पाये।
तनिक सी पिपीलिकाहु, रौंदि शीश जाये ॥ २ ॥
ब्राह्मण निज धर्म पालि, ऋषि मुनि कहलाये।
महाराव राजन ने सादर शिर नाये ॥ ३ ॥
पदवी जो मिलत आज, कहत लाज आये।
पीर और बवर्ची खर, भिश्ती बतलाये ॥ ४ ॥
क्षात्र धर्म जब लग थे, क्षत्रिय मन भाये।
आवत समरांगन में, कालहु भय खाये ॥ ५ ॥

धर्म विमुख ह्वैके अब, दर दर मुँह बाये ।
सिंह नाम पाय, स्यार सन्मुख घबराये ॥ ६ ॥
बनिज करि विदेश, बनिक बहुत धन कमाये ।
गूलर कृमि भये ! यतन कछू ना बनाये ॥ ७ ॥
आदर तज द्विजन, शूद्र जबतें निदराये ।
सेवा तजि मित्र, भये जाते हैं पराये ॥ ८ ॥

भजन ३१४

वेदों का पढ़ना छोड़ दिया, हाय गजब सितम गजब ।
पंचयज्ञ का करना छोड़ दिया, हाय गजब सितम गज़ब ॥१॥
पढ़ते थे जब हम वेदों को, जाने थे सब के भेदों को ।
वेदों से मुख मोड़ लिया ॥ हाय गजब० २ ॥
कृष्ण से योगी भारी थे, अर्जुन से शस्त्र खिलारी थे ।
रामचन्द्र से आज्ञाकारी थे ॥ हाय गज़ब० ३ ॥
बुज़ुर्ग हमारे लासानी थे, दुनियां में वह तो मानी थे ।
ज़रा न वह अज्ञानी थे ॥ हाय गजब० ४ ॥
वह ब्रह्मचर्य कमाते थे, गृहस्थ में फिर आते थे ।
वानप्रस्थ फिर पद पाते थे ॥ हाय गज़ब० ५ ॥
संन्यास पद फिर पाते थे, लोगों को सत्य बताते थे ।
ईश्वर भक्ती कमाते थे ॥ हाय गज़ब० ६ ॥
शूरवीर रण पै चढ़ते थे, नहीं शत्रुओं से वह डरते थे ।
अधर्म से नहीं लड़ते थे ॥ हाय गज़ब० ७ ॥

वह पांच यज्ञ करते थे, और वेदों को ही पढ़ते थे।
ईश्वर से वह सब डरते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ८ ॥

अबी भारत में तबाही है, भाई से रूठा भाई है।
अविद्या हरसू छाई है ॥ हाय ग़ज़ब० ६ ॥

ऋषि दयानन्दने ज्ञान जगाये हैं, गुरुदत्त ने प्राण बचाये हैं।
लेखराम ने प्राण गँवाये हैं ॥ हाय ग़ज़ब० १० ॥

वेदों का पढ़ो पढ़ाओ अब, ईश्वर की महिमा गाओ सब।
आर्य कहें जागोगे कब ॥ हाय ग़ज़ब० ११ ॥

दादरा ३१५

मेरा वैदिक फुलवरिया को मन तरसे।

अंगों की सड़कें उप अंगों की रौसें, उपनिषदों की क्यारी में
गुल बरसे ॥ मेरा० १ ॥

कर्म उपासना ज्ञान ध्यान जहां, वहां जाने को विन्ती करूं हरि से।
यज्ञ हवन से हो पवन सुगन्धित, सींचे जइयो भक्ति जल से।
पुराणों ने कांटोंकी बाढ़ लगाई, मैं जाने न पाया इन्हीं के डर से।

ग़ज़ल ३१६

आज कल वैदिक धर्म झूठा फ़िसाना हो गया।
जिससे झूठे पोप जी का पुर खज़ाना हो गया ॥
पाप करते आप और कलियुग के हम ज़िम्मे रखें।
हाय भारत वर्ष तू बिलकुल दिवाना हो गया ॥

ऐसी पुस्तक से कहीं इन्सां की होती है निजात।
जो यह कहते हैं कि वह ईश्वर जनाना होगया॥
उस दयामय ईश पर झूठी कथाएं जोड़ कर।
वेद मारग छोड़ कर पापी ज़माना हो गया॥
अब अगर शर्मा न समझे यह हमारा है क़सूर।
सत्य का उपदेश कर स्वामी रवाना हो गया॥

भजन ३१७

जब तजा वेद विद्या को तभी से होने लगी हानी।

जिनके हम सन्तान, वह थे विद्वान, बड़े बलकारी।
पच्चीस वर्ष तक रहते थे ब्रह्मचारी॥
पच्चीस साल उपरांत, वह बनके कंत, ब्याहते नारी।
पच्चीस साल फिर करते खानादारी॥

फिर वानप्रस्थ में जाते। ईश्वर की भक्ति कमाते।
संन्यासी पद फिर पाते। सब को उपदेश सुनाते॥
हरफ़न में थे उस्ताद, नेक बुनियाद, जिनकी औलाद,
हुए हम मूरख अज्ञानी। जब तजा वेद० १॥

अर्जुन से क्षत्रिय वीर, बड़े रणधीर, युद्ध करते थे।
वह शस्त्र के थे धनी नहीं डरते थे॥
भीमसेन बलवान, ले तीरो कमान, जबकि चढ़ते थे।
तब शत्रुदल के साथ कैसे लड़ते थे॥

है तुमको याद लड़ाई । जब राम लक्ष्मण दो भाई ।
रावण पर करी चढ़ाई । लंका में मची दुहाई ॥
मन्तक रियाज़ी की कान, फ़लसफ़ादान, वही विद्वान ।
नजूमी ज्योतिष के बानी ॥ जब तजा० २ ॥

उन्हीं के हैं हम लाल, हमारा हाल, हुआ यह आकर ।
ग़ाफ़िल होकर सो रहे सब माल लुटाकर ॥
ऐसे हुए खामोश, जैसे बेहोश, धतूरा खाकर ।
लुटगये सभी नहीं देखा आंख उठा कर ॥

यहां ऐसी मची तबाही । हमें लूटन लगे ईसाई ॥
तब ईश्वर हुये सहाई । इक ऋषि दिये प्रगटाई ॥
जिन विद्या का प्रकाश, अविद्या नाश, वेदों का भाष्य ।
किया जो भगवत् की बानी ॥ जब० ३ ॥

वह महाऋषि दयानन्द, रैनके चंद, करके उजियाला ।
अज्ञान रूपी अन्धकार से हमें निकाला ॥
सब खोले मतों के भेद, लो चारो वेद का दीपकबाला ।
उड़गया साया जिन्न भूत होके मतवाला ॥

अब उठो चुस्त होजाओ । मत वृथा वक्त गँवाओ ।
वेदों को पढ़ो पढ़ाओ । फिर परम सुखों को पाओ ॥
कहे खन्ना बनो दिलेर, होजाओ शेर, सभी हों ज़ेर ।
सुफल हो आर्य ज़िंदगानी ॥ जब० ४ ॥

भजन ३१८

वेद पठन क्यों छोड़ दिया, तूने ॥ टेक ॥

हिंसा न छोड़ी चोरी न छोड़ी ।
होम करन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० १ ॥
मोह न छोड़ा मान न छोड़ा ।
इन्द्रि दमन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० २ ॥
ठगी न छोड़ी धोखा न छोड़ा ।
शास्त्र मनन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० ३ ॥
धन के गर्व में फिरे भुलाना ।
शुद्ध परन क्यो छोड़ दियारे ॥ वेद० ४ ॥
पाठक मिथ्या तजी न वासना ।
ईश भजन क्यों छोड़ दियारे ॥ वेद० ५ ॥

दादरा ३१९

प्यारो ! काहे धर्म को छोड़ के तुमने दुख है ग्रहण किया ।
शैर-सत्य को छोड़ असत्य को पकड़ा कैसा अनर्थ किया ।
अबभी जागो प्यारे मित्रो बहुत है दुखित हिया ॥
जो बोया था तुमने भाई वह ही काट लिया ॥ प्यारो० ।
शैर-धर्म कर्म सब छोड़के तुमने नाश में चित्त दिया ।
सम्भलो २ प्यारे भाइयो क्यों विष घोल पिया ॥
करो सन्ध्या पढ़ो नित गायत्री हो अति मगन जिया ॥ प्या०

शेर–शम दम धीरज दान दया को तुमने जो त्याग दिया ।
इसी सबब ने तुमको भाइयो इतना दुःखी किया ॥
अबभी सम्भलो अबभी सम्भलो कहना धारि हिया ॥ प्या०॥

ग़ज़ल ३२०

गया कहां पर बतादे भारत, वह पहिला जाहो जलाल तेरा ।
कहां गई तेरी शानो शौकत, किधर गया वह कमाल तेरा ॥
कहां गई तेरी वेद विद्या, वह ईश्वरी ज्ञान का ख़ज़ाना ।
अज़ल में ईश्वर ने था जो सौंपा, किधर गया है वह माल तेरा ॥
कहां वह ज्योतिष कहां वह मंतक, कहां है वह तपहुनर रियाज़ी ।
फ़लक़ से ऊपर जो पहुँचता था, किधर गया वह खयाल तेरा ॥
कहां वह प्रतिभा कहां वह बल है, कहां वह पूरी चमक दमक है ।
कि जिससे मानिन्द महिरे अनवर, चमक रहा था जमाल तेरा ॥
कहां गया तेरा सत्य भाषण, सुकर्म एवं सुधर्म धारण ।
गया कहां पर वह प्रेम पुर्वन, कि था जो अनमोल लाल तेरा ॥
समाधि किरिया व योग बलसे, अजर अमर के भजनमें खुश था ।
रहे था भरपूर ब्रह्म विद्या, ले देश ! हरदम कपाल तेरा ॥
नहीं था दुनिया में तेरा सानी, हसूले इलमो हुनर में कोई ।
था सब मुमालिक के माहेकामिल, से ज्यादा रोशन हलाल तेरा ॥
नहीं था तू ऐसा पाशिकिस्ता, नहीं था ऐसा खराबोखस्ता ।
नहीं था ऐसा ज़लीलो रुस्वा, नहीं ज़िबू था यों हाल तेरा ॥
नहीं थी तुझ में मुक़द्दमें बाज़ी, नहीं थी यों तुझमें कीनासाज़ी ।
हमेशा रहता था तुझसे राज़ी, वह क़ादिरे ज़ुलजलाल तेरा ॥

ववाल जां तेरे हां रहे है, इनाद बुग्रजो निफाक़ फ़ीना।
फ़ज़ूलख़र्ची व रस्मबद ने लिया है खू सब निकाल तेरा॥
दुबारा लेकर जनम जो आवें, इग्राद गौतम वो व्यास आदी।
यक़ीं है सर को पकड़ के रोवें, जो देखें ऐसा ज़वाल तेरा॥
कमाल अफ़सोस! हैफ़ हसरत! कि तेरी औलाद सो रही है॥
नहीं है कोई कि उठके देखे, कि क्यों है चेहरा निढाल तेरा॥
वकील मुख़तार बाबू पंडित, रईस और चौधरी हैं जितने।
सभी के सब तुझ से बेख़बर हैं, न कोई पुर्सान हाल तेरा॥
नक़्क़ारख़ाने में मिस्ल तूती, के ऐसी आवाज़ बेअसर है।
जगावें क्योंकर किसी को साजिग, बतावें क्योंकर ज़वाल तेरा॥

भजन ३२१

हा! देश तेरी हालत पै रोना हमें आता है। हा! देश०॥

हा! कि इस ऋषि भूमि में, भूमि में।
गउओं के प्राण निकालत, न कोई भी बचाता है॥ हा०॥

हा! ब्रह्मचर्य तज दीना, तज दीना।
छाई कि अजब जिहालत, सुकर्म नहिं भाता है। हा! कि रोना०॥

हा! हज़ारों मत फैले, मत फैले।
कोई न इन से बचाता, देश लुटा जाता है। हा०॥

हा! कि छज्जू सब मिलके, सब मिलके।
बनो धर्म प्रतिपालक, समय चला जाता है। हा देश०॥

भजन ३२२

क्या हुआ ढंग बेढंग है, बेहोश नशे में होकर।
नामी घर लुटगया तुम्हारा, यवन और ईसाइयों द्वारा।
पर तुमको आलस रहा प्यारा, कब हुआ भारत का जंग है।
नहीं उट्ठे तब से सोकर। बेहोश० १ ॥

आदि सनातन वेद बिसारे, मनगढ़न्त पुस्तक रचि डारे।
धर्मयुद्ध से बाज़ी हारे, कैसा किया कुसंग है।
निज धर्म कर्म सब खोकर ॥ बेहोश० २ ॥

अब तो होश में आओ भाई, वैदिक सूर्य दिया दिखलाई।
क्यों आलस ने दिया दबाई, कौन हुई मत भंग है।
अपना कर्त्तव्य विगोकर ॥ बेहोश० ३ ॥

महर हुई अब दयानन्द की, जिसने खोटी रीति बन्द की।
वासुदेव सब ने पसन्द की, चढ़ा धर्म का रंग है।
सब मैल पाप का धोकर ॥ बेहोश० ४ ॥

भजन ३२३

शेर–एक दिन यह देश सब देशों के सर का ताज था।
वेद मत का प्रचार था और आर्यों का राज था ॥
जब से इस ने भूलकर लिया फूट का मेवा जो खा।
दर बदर रुसवा ज़लीलो ख्वार बिलकुल हो रहा ॥
भाई का दुश्मन जो एक भाई ही जब से बन गया।
फिर तो बरबादी का पूरा ही इरादा ठन गया ॥

यहां तक विगड़ा कि अब हालत नजा में आरहा।
जिस के हाले ज़ार पर आलम जो आंसू बहा रहा॥
मैं भी इस का हाल अब रो २ के सबको सुनाऊंगा।
और सुनने वालों को भी रो २ आंसू रुलाऊंगा॥

टेक–भारत के हक़ीक़त हाल पर, अब गाना नहीं रोना है।

हुए पहिलवान गुणवान भारत में भारे।
जिन के डर से सुर नर कंपित थे सारे॥
हुए सतवादी धर्मज्ञ ईश के प्यारे।
तन मन धन जीवन दिया धर्म नहीं हारे॥

शैर–हुए इस भारत में पातंजलि, वशिष्ठ और अंगिरा।
कपिल और कणाद, गौतम जाने जिनको वसुन्धरा॥
हरिश्चन्द्र, दधीचि, नृप बलि कर्ण का जगयश भरा।
देदिया सर्वस्व नहीं पग धर्म से जिनका टरा॥
हम उन्हीं के कुल में प्यारे। अब सोते पांय पसारे।
धन, धर्म, कर्म सब हारे। हैं दर २ फिरते मारे॥

सब वैदिक धर्म विसार, हुए बेकार, तन अरु रुवार।
हार अब बैठ कर धरि गालपर, कुछ खो दिया अरु खोना है॥
यह गाना भी रोना है॥ भारत०॥ १॥

पहिले पुरुषों की नीति रीति विसराई।
पड़ गये कुफ्र में पाप से प्रीति लगाई॥
दिया खुदगर्ज़ों ने ऐसा हमें बहकाई।

रहा हित अनहित का विचार अब नहिं भाई ॥

शेर-हा अविद्या ने हमें हैवां से बदतर कर दिया ।
इज्जतो हुरमत गई ग़मोदर्द से दिल भर दिया ॥
सल्तनत भी छिन गई जब धर्म कर से धर दिया ।
वो भी दुशमन बन गये पहलू में जिन के सर दिया ॥

हम निज दुख किसे सुनावें । कोई हितू नज़र नहीं आवें ।
हम जिनकी शरण में जावें । मुँह वो भी हमसे छुपावें ॥
भारत पर आया ज़वाल, हुआ पामाल, हाल बेहाल, काल पड़गया जानो मालपर, अँसुओं से मुँह धोला है ॥
यह गाना क्या रोना है । भारत० २ ॥

तजी ब्रह्मचर्य की रीति जब से सुखदाई ।
बचपन में व्याह करने की बान ठहराई ॥
तब से बहु रोगन भारत लीन दबाई ।
भारतबासी हुए दीन हीन सौदाई ॥

शेर-बाल विधवा हो गईं लाखोंहि बाल विवाह से ।
होगया ग़ारत यह भारत उनकी पुरग़म आह से ॥
हमल गिरते हैं हज़ारों हिन्द में इस राह से ।
वेश्या बनती हैं लाखों पर पुरुष की चाह से ॥

बस इन पापों का मारा । हुआ मुफ़लिस मुल्क हमारा ।
पड़ें अकाल बारम्बारा । मरें भूख से लोग हज़ारा ॥
नहीं त्यागें कुटिल कुबान, अजहुँ नादान, करत विषपान,

हानिकर रीत हैं कलिकाल पर, दुख होगया अरु होना है ॥
यह गाना नहीं रोना है ॥ भारत० ३ ॥

हट्टे कट्टे मुस्टण्डे बने भिखारी।
चरसी भंगड़ बने पण्डे और पुजारी ॥
वेश्यागामी व्यभिचारी चोर अरु ज्वारी।
भारत में दान लेने के बने अधिकारी ॥

शेर–लाखो बेवा अनाथ भूखों से यहां चिल्ला रहे।
कूवक अन्धे अपाहिज लाखो धक्के खा रहे ॥
लाखों ईसाई यवन बन २ के धर्म गँवा रहे।
कुली और गुलाम बनकर ग़ैर मुल्कों को जारहे ॥
यहां भड़वे खाय मलाई ! रण्डी की हो पहुनाई।
बलदेव कहे समुझाई। कुछ शर्म करो प्रियभाई ॥
क्यों नाहक लोग हँसाओ, होश में आओ, अबतो शर्माओ,
अपनी कुचाल पर, या बाकी अभी सोना है ॥ यह० ४ ॥

भजन ३२४

शैर–हाय भारत वर्ष तेरी आज क्या हालत हुई।
देखकर दुश्मन के भी चुभती कलेजे में सुई ॥
दुख बयां करने में दिलको बेक़रारी हो रही।
तेरे अबतर हाल पर अब सारी खलकत रो रही ॥
कलम रुकती है ज़ुबां कहती न मुझ से काम लो।
करता हूँ कहने की हिम्मत अब कलेजा थाम लो ॥

टेक-रोवे भारत जननि तुम्हारी, कैसी विपति पड़ी है भारी ।
कैसा दुखो का पर्वत टूटा, सारा धर्म कर्म हा छूटा-जी !
हुआ भारत देश भिखारी ॥ रोवे भार० ॥
कैसा देश का दुर्दिन आया, सारे दुखों ने आन दबाया-जी !
लुट गई भारत की निधि सारी ॥ रोवे० २॥
लुटा सब ऐश्वर्य तुम्हारा, किया विधाते तुम से किनारा-जी !
तुम्हें छोड़ विदेश सिधारी ॥ रोवे० ३ ॥
कहीं आ भूडोल सतावे, जिस में महा नाश हो जावे-जी !
फैली रहे कहीं महामारी ॥ रोवे भार० ४॥
लाखों जन अकाल ने मारे, लाखों हैजे के बन गये चारे-जी !
कहीं ओलों ने खेती उजाड़ी ॥ रोवे० ५ ॥
किसको निज व्यथा सुनावें, क्या करें कहां पर जावें-जी !
हुई बन्द जुबान हमारी ॥ रोवे भार० ६ ॥
लाखों गउओं को नित मारें, लाखों विधवा शोक उचारें-जी !
होता न धर्म कहिं जारी ॥ रोवे० ७ ॥
अब तो सचेत में आओ, जननी को धैर्य बँधाओ-जी !
बनो बासुदेव हितकारी ॥ रोवे भारत० ८ ॥

भजन ३२५

दोहा-विद्या की हानी भई, छई अविद्या आप ।
फूट पड़ी कौतुक भये, भारत भरत विलाप ॥
टेक-महाभारत दुखदाई ने, भारत को गर्द मिला दिया ।

पहले भारत महाराज था, शोभायुत ताजों का ताज था।
दुनिया के काजों का काज था, अब मौताज बना दिया।
दुर्योधन अन्याई ने ॥ महाभारत० ॥

आपस में लड़ २ के मरगये, विद्यावान जगत से टरगये।
वेद के पाठी विप्र किधर गये, वैदिक धर्म गँवा दिया।
अपनी मूरखताई ने ॥ महाभारत० ॥

फूट पड़ी आपसकी दहगई, सुख सम्पति प्रभुता सब बहगई।
डेढ़ हाथ की लकड़ी रहगई, शास्त्रों को बिसरा दिया।
आपस की लड़ाई ने ॥ महाभारत० ॥

लखलहारी बाण कहां गये, गगनमंडल विमान कहां गये।
बल पौरुष गुण ज्ञान कहां गये, सारा तेज घटा दिया॥
भाई को मार भाई ने ॥ महाभारत० ॥

कोई हिंदू कोई मुसल्मीन भये, कोई जैनी, कोई क्रश्चीन भये।
कोई बौद्ध कोई नवीन भये, ऐसा विघ्न मचा दिया।
पोपों की ठगियाई ने ॥ महाभारत० ॥

एक धर्म का पता न पावे, आपस में कोई मता न पावे।
अज्ञान बिन कोई खता न पावे, जिसने होश भुला दिया॥
समझन की कच्चाई ने ॥ महाभारत० ॥

विप्र धर्म विप्रों ने छोड़ा, क्षत्रिन ने छत्रापन छोड़ा।
घीसा कहे बुद्धि का तोड़ा, जो समझा सो गा दिया।
हृदय की सुघड़ाई ने ॥ महाभारत० ॥

भजन ३२६

अविद्या पापिन जगत में जुल्म गुजारा।

खुदग़र्ज़ों ने खुदग़र्ज़ी से अपना धर्म बिगाड़ा॥ पा०॥
अनेक मत होगये जगत में, द्वेष भाव फैलाना।
वैर विरोध बढ़ा आपस में रच दिये ग्रन्थ हजारा॥ पा०॥
हाजिर नाजिर खुदा कुरानी, पद्मनिशीं बताना।
होगा न्याय कयामत के दिन, बन्द पड़ा अब द्वारा॥ पा०॥
श्रीभागवत में ईश्वर को कुच्छ सच्छ बतलाना।
कहां तक तुमको हाल सुनाऊं ऐसे ही पुरान अठारा॥ पा०॥
हाय शोक भारत की नारी, होगई पशू समाना।
क़ब्र ताज़िये फिरैं पूजती, पतिव्रत धर्म बिगाड़ा॥ पा०॥
पहले मिलकर प्रीति बढ़ाते, प्रेम भाव फैलाया।
बात २ पर अब लड़ते हैं, हाय शोक है भारा॥ पा०॥
ऐसी दशा में ऋषी दयानन्द, आगये सूर्य समाना।
छज्जू धन्य २ स्वामी को, बार २ गुण गाना॥ पा०॥

दादरा ३२७

आज भारत में छाय रही काली घटा।

बदल अविद्या के चढ़ आये, वेदों के सूरज को दीना हटा।
दान पुण्य में देते न कौड़ी, पापों में रुपये रहे हैं लुटा॥
अच्छे कामों में ढिग नहीं आवें, रंडो के चकले में जाता डटा।
अन्तिम विनय यह है तुमसे मेरी, वेदों का पकड़ो प्यारो पटा॥

भजन ३२८

गिरे हैं देखो वर्ण आश्रम चार।

निज २ धर्म सँभालो न जब तक, होगा न पुनर उद्धार ॥गि०॥

ऋषी मुनी थे पूरे त्यागी, हैं उनकी सन्तान अभागी।
प्रीति निमन्त्रण में अति लागी। मूर्ख दरिद्री हाथ कटोरा,
स्वर्ग बतावन हार ॥ गिरे हैं० ॥

क्षत्रिय सब की रक्षा करते, अष्टादश व्यसनों से डरते।
आज मद्य मांस खाते फिरते। हाय! दया की जगह,
मृग को खेलत फिरें शिकार ॥ गिरे हैं० ॥

वैश्य धर्म से जोड़े थे धन, कृषी बनिज करते थे निशदिन।
आज ब्याज की है इतनी धुन। दें पचास जो क़र्ज,
वर्ष पांचक में लेवें हजार ॥ गिरे हैं० ॥

शूद्र करें थे सेवा सार, तीन वर्ण के रहते प्यारे।
आज नहीं मिलते पनिहारे। करें सामना उच्च वर्णका,
बढ़ा रहे व्यभिचार ॥ गिरे हैं० ॥

गुरुकुल में बनते ब्रह्मचारी, आज मूर्ख सन्तान हमारी।
विद्या गई देश की सारी। घर से लड़ते जो कि,
बने ब्रह्मचारी फिरें हज़ार ॥ गिरे हैं० ॥

जो गृहस्थ था अति उपकारी, हो जवान जीतें नरनारी।
पञ्चयज्ञ करते सुखकारी। इनकी यह दुर्दशा सुने से,
बहै नयन से धार ॥ गिरे हैं० ॥

वनिस्थ था विद्या का द्वारा, उसका हमने नाम बिसारा ।
वस्त्र गेरुवा जिसने धारा । वही वनस्थी बना रहा,
बाबा का शब्द पुकार ॥ गिरे हैं० ॥

यह ब्राह्मण संन्यासी कहावे, ज्ञान यथारथ जिससे पावे ।
'अहम्-ब्रह्म' जो ध्वनी लगावे । आप ही भ्रम में पड़,
जगत् को मिथ्या माननहार ॥ गिरे हैं० ॥

आर्यसमाज यह याद दिलावे, हीन दशा सुन्दर बनजावे ।
कहे पाठक दुनिया सुख पावे । हो विद्या की वृद्धि,
उजाला करदो प्रति घर द्वार ॥ गिरे हैं० ॥

ग़ज़ल ३२६

मुल्क भारत की अविद्या से खराबी होगई ।
चाल खिल्लत की हक़ीक़त लाजवाबी होगई ॥
थे हज़ारों तत्त्वज्ञानी महा ऋषी इस देश में ।
उनकी यह औलाद जाहिल औ शराबी होगई ॥
होगये फ़िर्क़े हज़ारों मुख्तलिफ़ इक एक से ।
दीन मत के बाब में बिलकुल नवाबी होगई ॥
बाप शैवी बन गये बेटा उन्हीं के शाक्तिक ।
हैं मियां सुन्नी तो घर ज़ौजे वहाबी होगई ॥
एक घर में चार फ़िर्क़े, क्यों न हों खाने खराब ।
नेस्तो नाबूद की सूरत शिताबी होगई ॥
तंगदस्ती मुफ़लिसी भारत में घर २ घुस गई ।

दर्दगम से, जर्द रुख-रंगत गुलाबी होगई ॥
अब तो चेतो, भाइयों! बलदेव मुल्की खैरोख्वाह।
देखिये इस-मुल्क की क्या इनक़लाबी होगई ॥

भजन ३३०

यह वही ऋषी सन्तान है, वेदों का जिसे घमगड था ॥
भूमण्डल में जिनकी कहानी, सुनो जाय इतिहास जुबानी।
अब कैसी यह होगई हानी, जिन का नहीं निदान है ॥ वे० १ ॥
सब यहां के शागिर्द कहाये, इसी देश में पढ़ने आये।
जो सुख हैं सब यहां से पाये, गई कहां वह कान है ॥ वे० २ ॥
प्रभु तेरी है अद्भुत माया, वही देश हिन्द कहलायो।
किया पाप सब आगे आया, नहीं किसी पर तान है ॥ वे० ३ ॥
वेद छोड़ रच लई कहानी; तलफ़ करी लाखों जिन्दगानी।
जिन्दा फूक सती कर मानी, इस से बड़ी क्या हान है ॥ वे० ४ ॥
बाल्य विवाह की रीति चलाई, करके रांड लाखों बिठलाई।
कितने गर्भ नित होयँ सफाई, क्या खूब अनोखा दान है ॥ वे०५॥
झंडूसिंह अब मत पछताना, फिर के आवे वही जमाना।
प्रेमी कहे सब सुनियो दाना, जड़ गुरकुल का स्थान है ॥ वे० ६॥

भजन ३३१

जब से छोड़ी कला शिल्पकारी, तब से होगया देश भिखारी।
पहले विद्यालय थे जारी, ऋषि मुनि बनते ब्रह्मचारी जी।
जब से वैरिन अविद्या पधारी ॥ तबसे०-१ ॥

नल नील शिल्पकर भारी, बांधा बन्ध समुद्र सँस्कारी जी।
जब से हुई निर्बुद्धि तुम्हारी ॥ तब से० २ ॥
जो थीं विद्यायें यहां जारी, उन्हें पढ़ते थे ब्रह्मचारी जी।
भूले नाम तलक नर नारी ॥ तब से० ३ ॥
योरुप वालोंने चुम्बक शक्ति पाई, लिया कुतुबनुमाको बनाई जी।
तुम पै सुस्ती ने मोहनी डारी ॥ तब से० ४ ॥
बल भाप के रेलें चलाईं, बिजली तार खबर पहुँचाई जी।
तुमने कोई न बात विचारी ॥ तब से० ५ ॥
फोटू फोनोग्राफ़ बनाये, खींची सूरति गाने सुनाये जी।
रवि वेद की लखि उजियारी ॥ तब से० ६ ॥
थर्मामीटर व बैरामीटर, नापें गर्मी व दाब हवापर जी।
तुमको बैरिन निंदिया प्यारी ॥ तब से० ७ ॥
न तो प्राकृतिक उन्नति पाई, नहीं वर विद्या फैलाई जी।
छूटी रचनी विमान सवारी ॥ तब से० ८ ॥
लखो भारत के नर नारी, आलसी हुये हैं भारी जी।
जागें न चेत उर धारी ॥ तब से० ९ ॥
उठो अब भी आलस टारो, कौशलता उर में धारो जी।
कहे पाठक सुनो अनारी ॥ तब से० १० ॥

दादरा ३३२

दुख पावें क्यों ! भारतवासी । टेक ॥
कारण है इस का समय को न बांटें, प्रातः उठते, शौच न जाते।
पहले गुड़ २ हुक्के बजाते । हा ! दुख० ॥ १ ॥

दूजा है कारण उमर को न बांटें, बने वनस्थी, नहिं संन्यस्तो। सारी उम्र ही रहें गृहस्थी। हा! दुख० ॥ २ ॥
सन्ध्या स्नान करें बीत समय पै, पितृ ऋषी ऋण, बढ़ते दिन दिन। देवयज्ञ तक से भागें जन। हा! दुख० ॥३॥
पाठक कहे टाइमटेबिल बनाओ, नेम निभाओ, तब सुख-पाओ। उत्तम समय न व्यर्थ गँवाओ। हा! दुख० ॥ ४ ॥

दादरा ३३३

अमली जीवन को क्यों न ! सँवारो ॥
माना कि तुम हो बड़ी अक्लवाले। दिगरा नलीहत, खुदरा फजीहत। देखो अन्दर है बुरी हालत। हा! अम० ॥१॥
माना कि तुम हो वकील और मुंसिफ। ये बुद्धिमानी, है हैरानी, बुरी न समझो रिश्वत सितानी। हा! अम० ॥ २ ॥
माना कि देते हो लेक्चर सुहाने। प्रेम में पूरन, देश के भूषण। नाम पै मरते हो हा निशि दिन। हा! अम० ॥ ३॥
मित्रो! बुजुर्गों! नमूने बनाओ। सदआचारी, परहितकारी। पाठक हो सन्तान तुम्हारी। हा! अम० ॥ ४ ॥

दादरा ३३४

दिन २ भारत गिरे हैं ये प्यारे सुजन।
वेदों की शिक्षा है प्रीति परस्पर,
वंशों में ग्रामों में देशों में भूपर।
छोड़ा है उन का हा! पाठन पठन॥ दिन० ॥१॥

देखा है ये देश हमने बहुत सा,
जैसा है यह देश सबै देश वैसा।
ईर्षा की घर २ लगी है अगिन ॥ दिन० ॥२॥

रण्डी से प्रीति शराब उड़ रही है,
कहीं मांस मछली ये हालत सही है।
देखा अमीरों का चाल और चलन ॥ दिन० ॥३॥

मामूली नौकर बड़े ठाठ बांधे,
धनवान मैले फटे वस्त्र कांधे।
रिश्वत लेवें इनके रूखे वचन ॥ दिन० ४ ॥

बजरी मिठाई में चर्बी है घी में,
अपना नफ़ा! कुछ हो व्याधी सभी में।
बनियों को प्यारा है छलरूपी धन ॥ दिन० ५ ॥

रोज़गार पर लात जाती रही है,
घर २ दिवालों की चर्चा बही है।
सारी प्रजा अपनी धुन में मगन ॥ दिन० ६ ॥

अज्ञानी समझो हो जिन को सुहृद्वर,
पञ्चों के कहने में है क़ौम धीवर।
उस में है मेल एकता का परन ॥ दिन० ७ ॥

तुम भी करो मेल छोड़ो अनीती,
तबही बढ़ेगी आपस में प्रीती।
पाठक सफल हो रहन और सहन ॥ दिन० ८ ॥

अब और तीसरे से रिफ़ाक़त नहीं रही ॥
आये यहां पर कोई क्यों वहरे हुसूले इल्म ।
वह पहली इसको इल्म में शुहरत नहीं रही ॥
गौतम कपिल व्यास और पातंजली कणाद ।
उनकी सी अब किसी में लियाक़त नहीं रही ॥
कमज़ोरी नातवानी के ऐसे बने शिकार ।
घुटनों के बल भी उठने की ताकत नहीं रही ॥
छोटी उमर में बच्चों के होने लगे विवाह ।
ब्रह्मचर्य आश्रम की वह वक़अत नहीं रही ॥
बद पतक़ादियों के सब बन गये गुलाम ।
वैदिक धरम की हाय हुकूमत नहीं रही ॥
क़हतो वबा प्लेग हैं पीछे पड़े हुए ।
बचने की इनसे कोई भी सूरत नहीं रही ॥
घर २ में जल रही है निफ़ाक़ो हसद की आग ।
आपस में मेल जोल मुहब्बत नहीं रही ॥
दुनिया के मोह जाल में ऐसे फँसे हैं सब ।
शुभकार्यों के करने की रग़बत नहीं रही ॥
रंडी के नाच स्वांग में रातें गुज़ारदीं ।
लेकिन सभा में आने की फ़ुरसत नहीं रही ॥
उलफ़त धरम की छोड़के विषयों में फँसगये ।
परमात्मा के न्याय की दहशत नहीं रही ॥
जो काम तुझको करना है परदेशी जल्द कर ।
ज़्यादा यहां पर रहने की मोहलत नहीं रही ॥

दादरा ३३७

कैसी होगई हालत तुम्हारी रे।

आर्यावर्त्त कभी शिरोमणि था, आज भारत की होगई ख्वारी रे॥
कभी तो वेदों का डका बजे था, आज मिथ्या पुराण हुए जारी रे।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उच्च कुल, आर्यों से हो गये अनारी रे॥
भीष्मपिता जैसे ब्रह्मचारी थे, आज घर २ हुए व्यभिचारी रे।
ब्रह्मचर्य धर वेद पढ़ें थे, अब बाल विवाह हुए जारी रे॥
उपदेश कभी सन्यासी थे, आज कपड़े रंग होगये भिखारी रे।
कभी यहां वेदध्वनि होती थी, आज घर २ हैं रंडी पुकारी रे॥
यहां कभी हवन होते थे, आज चरस की उड़े धुन्धकारी रे।
धर्म अहिंसा छोड़ आज सब, मद्यपी और मांसाहारी रे॥
वासुदेव कहां तक समझावे, इस कारण सब दुखारी रे॥

कव्वाली ३३८

मदफन है हसरतों का हिन्दोस्तां हमारा।
गुलचीं ने हाय लूटा ये गुलिस्तां हमारा॥
इक दिन रहे तरक्की में हम भी रहनुमा थे।
अब लोग पूछते हैं नामो निशां हमारा॥
यूनान मिश्र रूमा इंगलैण्ड गाल जर्मन।
शागिर्द इक ज़माने में था जहां हमारा॥
दुनिया में हो रहा था भारत धर्म का चर्चा।

सबकी ज़बान पर था लुत्फ़ेबयां हमारा ॥
इल्मो अदब में कामिल और हिंदसे के मूजिद ।
था फ़िलसफ़ा में यकता हर नुकतादां हमारा ॥
गौतम व्यास भीष्म थे नामवर यहीं के ।
अर्जुन से तीर अफ़गन था इक जहां हमारा ॥
लीलावती अहिल्या अस्मत मआब सीता ।
इन देवियों से घर था रश्के जनां हमारा ॥
चर्खेकुहन ने हम पर लेकिन वह ज़ुल्म ढाया ।
मूनिस रहा न कोई ने मेहरबां हमारा ॥
रौनक़ चमन की सारी फ़स्लेखिज़ां ने लूटी ।
वीरान हो गया है सब गुलसितां हमारा ॥
इफ़लासो क़हितो ताऊन ने हाय मारडाला ।
फ़ाक़ों के मारे तन है अब नीम जां हमारा ॥
हा ! अहिलहिन्द उठो हालत ज़रा संभालो ।
नक़शा हुआ दिगरगूं है बेगुमां हमारा ॥
फिरभी अगर है ख़्वाहिश आवे वही ज़माना ।
गुरुकुल में सन्तान भेजो होगा नफ़ा तुम्हारा ॥
सहराय ग़म में बरसों से हम भटक रहे हैं ।
मंज़िल पै पहुंचे या रब अब कारवां हमारा ॥
अपनी ये आर्ज़ू है मेहनत लगे ठिकाने ।
आफ़त से रक्खे एमन वह राजदां हमारा ॥

ग़ज़ल ३३९

कभी हम जहां में थे आलीजाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
अन्य देशी पाते थे पनाह, तुम्हें याद हो कि याद हो॥
यहां थे पातञ्जलि नामवर, जिन योगशास्त्र बनाया कर।
किया राह हक से हमें आगाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
यहां राम थे दशरथ के जा, जिसने मारीच और ताड़का।
बालकपने में किये फ़नाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
जहां पाणिनि जैसे ऋषि, जिन अष्टाध्यायी थी रची।
कहां तक थे इल्म में यकता, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
गोतम से थे जो फ़िलासफ़र, जिसने कि न्यायशास्त्र रचा।
मन्तक की जान बना दिया, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
जहा वेदों जैसा खज़ीना है, उपनिषदों का भी दफ़ीना है।
देखो तो इनमें है क्या दवा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
क्यों तुमने इनको छोड़ा है, सत् विद्या से मुँह मोड़ा है।
कहदो पुराण में क्या धरा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
अब आंख खोल दो बरमला, नहीं वक्त है अब सोने का।
जैसे किसी ने है यूं कहा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
गया वक्त फिर आता नहीं, सदा पेश दिखलाता नहीं।
कई काल वक्त गुजर चुका, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
खन्ना सदा समझाता है, सब खुफ़तगां को जगाता है।
उठ देखो कितना दिन चढ़ा, तुम्हें याद हो कि न याद हो॥

ग़ज़ल ३४०

है बेकस अबतो यह भारत, सताले जिसका जी चाहे।
नहीं कोई यारो हामी है, रुलाले जिसका जी चाहे॥
दिया तज धर्म वैदिक को, न जाना नाम विद्या का।
किरानी या कुरानी अब, बनाले जिसका जी चाहे॥
दुहाई भद्र पुरुषों की, दुहाई राव राजों की।
मिटा ध्रुव धर्म जाता है, बचाले जिसका जी चाहे॥
मियां और भूत की पूजा, हना लाखों ही जीवों को।
निडर बन काज नीचों से, फुकाले जिसका जी चाहे॥
वरी धन देख कर कन्या, बड़ा छोटा न वर देखा।
नहीं कुछ झूठ यह सच, अज़माले जिसका जी चाहे॥
कहे कोई भी जो हित की, उसे समझें हैं ये वैरी।
नहीं शिक्षा को सुनते हैं, सुनाले जिसका जी चाहे॥
दशा बिगड़ी है भारत की, सुधारो दास मिलजुल कर।
पड़ा यह धर्म मिलता है, उठाले जिसका जी चाहे॥

❀ वैदिक विवाह ❀

भजन ३४१

दो०—करो विवाह विचार के, निगमागम विधि शोध।
बिना स्वयंवर क्या करो, यह सब नीति विरोध॥

टेक—शुभ रचो स्वयंवर शादी, सुख सम्पति प्रीति आराम हो।

घर कन्या गुन कर्म में समहों बुद्धि अवस्था में नहिं कमहों॥
तब तो विवाह अति उत्तम हो, सुख से उम्र तमाम हो।
होवे न वैर और व्याधी॥ शुभ०॥ १॥

बाल उमर में शादी करना, गुड्डा गुड़िया खेल ये वरना।
वेद विरुद्ध दोष सर धरना, विरोध आठों याम हो।
ऐसी मत करो उपाधी॥ शुभ०॥ २॥

क्या हासिल रण्डी का नचाना, हराम में पैसे का गंवाना।
भांड नचा के कुफ्र मचाना, महफिल भी बदनाम हो।
यह क्या बदरस्म चलादी॥ शुभ०॥ ३॥

आतिशबाजी बागोबहारी, धन खोने की राह निकारी।
कितने ही पछतायें पिछारी, जब कुर्की नीलाम हो।
रोवें सुन ढोल मनादी॥ शुभ०॥ ४॥

बखेर का करना फ़ज़ूल है, बहुत बखेरो फिर भी धूल है।
पोच कर्म सो दुख का मूल है, कभी सिद्ध नहिं काम हो।
हर तरह समझ बर्बादी॥ शुभ०॥ ५॥

तुरंग बैल की जोट मिलाओ, सुन पुत्रीपर ख्याल न लाओ।
कह चोखा पीछे पछताओ, बदनामी सुहाम हो।
मैं सांची बात सुनादी॥ शुभ०॥ ६॥

भजन ३४२

दोहा—करो विवाह विचार के, वेद शास्त्र से सोध।

जो कुछ तुम को बोध ॥

बुरी चाल को त्याग दो, जो कुछ तुम को बोध ॥

टेक-वेदोक्त विवाह किये से सुख सम्पति शोभा प्रीति हो।
सोलह वर्ष की कन्या चहिये, पच्चिस साल सुन्दर वर कहिये ॥
बल विद्या गुण कर्म देखिये, जैसी कुल की रीति हो।
समता को निरख लिये से। वेदोक्त० ॥

कन्या चित्र दिखाये वरको, वर का चित्र सुघर दुख्तर को।
उत्तम कुल ढूंढ हमसर को, समधी सम निज मीत हो ॥
सो चहिये ज्ञान हिये से। वेदोक्त० ॥

वेद रीति को जानें दोनों, गृहस्थ धर्म पहिचानें दोनों।
वाद विवाद न ठानें दोनों, सुख से उमर व्यतीत हो।
अधरम को त्याग दिये से। वेदोक्त० ॥

पुष्ट होयँ सन्तान जिन्हों के, उत्तम शोभावान जिन्हों के।
कुछ थोसा उर ज्ञान जिन्हों के, सोना स्वप्न फ़जीत हो ॥
गुणियों के चरन नये से। वेदोक्त० ॥

भजन ३४३

ख्याल-बिना परीक्षा किये कभी सम्बन्ध मिलाना नहिं चहिये।
नाई बारहन के हाथ कभी औलाद बिकाना नहिं चहिये ॥
ऐसी कन्या बरो न वर से जो हो पीत वरन वाली।
अधिक अंग हो पति से जिसका अति बकवाद करनवाली ॥
जो रोगों से युक्त जो कन्या निश दिन दुःख भरनवाली।

अमित लोम या लोम न तन पर हो भूरी अँखियनवाली ॥
खुदगर्जों के हाथ विका खुद धोखा खाना नहिं चहिये । ना ॥

दोहा—अजा गाय धन धान्य रथ, हाथी घोड़े राज्य ।
इतना दे कोई तब भी तु, कर दश कुलका त्याज्य ॥

टेक—दश कुलों का त्यागन कीजे, वर कन्या के सम्बन्ध में ।

प्रथम सत् क्रिया हीन जो कुल हो भाई ।
दोयम सत् पुरुषों में न हो आवा जाई ॥
सोयम वेदों से विमुख जो दे दिखलाई ।
चौथे तन पर हो लोमों की अधिकाई ॥

बुद्धि मे आप विचारो । आंखों से खूब निहारो ॥
ये हैं सन्तान तुम्हारी । क्यों इनकी सुरति बिसारी ॥

आगे छै कुल रहे और, कीजिये गौर, कहूँ इस तौर । बना के छन्द में, धर ध्यान मित्र सुन लीजे ॥ दश० ॥

है पांचवां कुल जो बवासीर का त्यागो ।
छठे दम खांसी और खई से कोसो भागो ॥
किस गफलत में तुम पड़े हो अबतो जागो ।
उठो अपने आप इन शुभ कर्मों में लागो ॥

सम्बन्ध बुरे न जुड़ाओ । खुद अपने आप मिलाओ ॥
क्या इस में चातुरताई । जो बेंचे बाम्हन नाई ॥

मत मिलो एक गुण कर्म, सुखी हो गर्भ, बड़े बेशर्म । डाल दें फन्द में, वर कन्या इन्हें न दीजे ॥ दश० ॥

है सातवां रुज आमाशय जगत में भारी ।
विपता में उस की कटे व्यवस्था सारी ॥
अष्टम मृगी है असाध्य अति दुखियारी ।
कर जोड़ जोड़ के कहूँ सुनो नर नारी ॥

नहीं इस पर ध्यान धरोगे । जीते जी दुःख भरोगे ।
नहीं झूठी बात हमारी । हो रही दुर्दशा तुमारी ॥

बुद्धी बिन हुये मतिहीन, अंग से क्षीण, द्रव्य बिन दीन । कटै दिन द्वन्द में, ये कुरीति विष मत पीजे ॥ दश० ॥

है श्वेत कुष्ट जिस कुल में नवां बताया ।
है गलित कुष्ट जिस कुल में दशवां गाया ॥
जो कोई इन कुलों से पुत्र या पुत्री लाया ।
उस ने भी इन रोगों से दुःख उठाया ॥

इस लिये जो मेल मिलाना । पता अच्छी तरह लगाना ।
जब ठीक पता लग जावे । दोनों का ब्याह रचावे ॥

तुम इस विधि रचो विवाह. बढ़े उत्साह. मिटे सब दाह । बीते जन्म अनन्द में, कहे तेजसिंह दुख छीजे ॥ दश० ॥

भजन ३४४

दोहा—इतनी बात विचारना, मात पिता का काम ।
उनका भी त्यागन करो, जिनका निन्दित नाम ॥

टेक—जो नाम निकम्मे भाई, करूं उनका हाल बयान मैं ।

कोई धरै नाम नक्षत्र नाम पर, भाई।
ज्यों अश्विनी, भरणी, रोहिणी रेवति बाई॥
कोई वृक्ष नाम पर नाम धरै अलबेली।
कोई तुलसिया गेंदा चम्पा और चमेली॥

कन्या का नाम बिगाड़ें, उसे उल्टी भांति पुकारें।
हो चन्द्रमुखी मुख वाली, कहें उसे भी कलियाकाली॥

रहे उल्टा भांत पुकार, सभी नरनार, न करते विचार।
आज इस आर्यावर्त स्थान में, क्या उल्टी रस्म सुहाई॥ जो०॥

कोई नदी नाम पर नाम धरें कन्या का।
कहें गंगा यमुना अजब रिवाज यहां का॥
कोई कन्या पर्वत नाम से नामवती है।
कहें विन्ध्या, हिमालय, कोई पार्वती है॥

ये निन्दक नाम बताऊं। कुछ और भी आगे गाऊं।
जरा सुनिये मित्र हमारे। हुये कैसे ख्याल तुम्हारे॥

बिन सोचे समझे धरो, न मन में डरो, शर्म नहीं करो।
रख निन्दित नाम जहान में, क्यों तुम्हें दया नहिं आई॥ जो०॥

बहुतेरी कन्या सर्प नाम वाली हैं।
कहें नागी, भुजंगी, जो बुद्धि से खाली हैं॥
कहीं पक्षी नाम से कन्या जांय पुकारी।
कहें कोकिला मैना धन२ बुद्धि तुम्हारी॥

कोई भीषण नामों वाली। भीम कुँवर चण्डिका काली।

बिन सोचे नाम धरैं हैं। कैसी अनरीति करैं हैं॥

है पूरी अनरीति, वेद विपरीति, अय मेरे मीत। सिवा नुक़सान के, न मिले नफ़ा एक पाई॥ जो०॥

कोई माधोदासी नाम से बोलें बानी।
कोई मीरादासी नाम धरैं अज्ञानी॥
ये धर्मशास्त्र ने नाम बुरे बतलाये।
फिर किस विधि ऐसे निन्दित नाम सुहाये॥

जो ऐसे नाम सुन पाओ। मत हर्गिज़ ब्याह रचाओ।
उस कन्या को तज देनो। यह धर्मशास्त्र का कहना॥

ये धर्मशास्त्र का लेख, समझकर देख, नाम रख नेक। खड़ा इस जलसे के दर्म्यान में, रहा तेजसिंह समझाई॥ जो०॥

भजन ३४५

दोहा—अब मित्रों सुनिये ज़रा, हो करके खामोश।
जो ऊपर समझा दिये, यह समझो दश दोष॥

टेक यही दस दोष बताये हैं, कर तलाश इन को त्यागो॥
ये रीति वेद अनुकूल है। नहीं इस में ज़रा भी भूल है।
मनुस्मृति का यही रूल है। छन्द पिछले में जो गाये हैं॥य०॥

और अब मौजूदा हाल बतायें। पड़े फेरे तो पानी मँगावें।
कहें दोष दूर होजावें। सो दस छींटे लगवाये हैं॥ यही०॥
खुदग़र्ज़ों ने छींटे लगाकर। दिये दश दोष हमारे हटाकर।

नहीं तलाश किये कहीं आकर। हाय ! हम कैसे भुलाये ॥ य० ॥
पद तेजसिंह ने गाया। अब कैसा ज़माना आया।
अपना कुल आप डुबाया। हाय ! हम तरस न लाये हैं ॥

दादरा ३४६

देखोरे भाइयो ! ऐसे विवाह रचाना।
वर कन्या हों जवान दोनों, सुन्दर जोड़ी मिलाना ॥ भा०
वर हो मन्त्र शुद्ध पढ़नेवाला, ऐसे ही हो विदुषी वाला।
अब है ज़माना आने वाला, गुण और कर्म स्वाभाव ॥
यथा विधि तुम को पढ़ मिलाना ॥ भाइयो ! ऐसे० १ ॥
चाहिये मंढप को सजवाना, बड़े २ पंडित बुलवाना।
उत्तम २ यज्ञ रचाना, सुन्दर हों व्याख्यान ॥
जगत से सारी कुरीति मिटाना ॥ भाइयो ! ऐसे० २ ॥
तुम तो बाल विवाह रचाते, मामा जिनके गोद उठाते।
फेरा*तो अब नहीं आते, कौन प्रतिज्ञा मन्त्र पढ़े ॥
जहँ नींद में हो गलताता ॥ भाइयो ! ऐसे० ३ ॥
रंडी भांड़ों को बुलवाना, अपनी बागो बहार लुटाना।
मतलब समझ नहीं शर्माना, आतिशबाज़ी फूक के ॥
पाठक धन की धूलि उड़ाना ॥ भाइयो ! ऐसे० ४ ॥

ग़ज़ल ३४७

हुआ वैदिक विवाह जो ये, हरेक वर हो तो ऐसा हो ॥

* वर मामा हुआ उठाया, फेरों को ऐसे समझता है।

सुने ध्वनि ओ३म् स्वाहा की, सुभग वर हो तो ऐसा हो।
उमर में हैं युवा दोनों, गुणों में भी बराबर हैं॥
जो कन्या हो तो ऐसी हो, अगर वर हो तो ऐसा हो।
बुलाया इष्ट मित्रों को, दिखाया ब्याह सतयुग सा॥
जमा किये देवता देवी समधि गर हो तो ऐसा हो।
नहीं है नाच रंडी का, नहीं भांड़ों की कुछ चर्चा॥
न आतिशबाज़ी फुलवारी, स्वयंवर हो तो ऐसा हो।
सजाया बेल बूटों से, बनाया खूब ही मण्डप॥
किया वेदोक्त सब कुछ ही, धरम पर हो तो ऐसा हो।
बुला पण्डित थे विद्वद्वर, सुनाये धर्म के लेक्चर।
रचा यों यज्ञ बड़ा सुंदर, निडर गर हो तो ऐसा हो॥
उठो पाठक सँभल बैठो, कि वैदिक वायु बहता है।
नहीं रोके रुकेगा अब, समा गर हो तो ऐसा हो॥

दादरा ३४८

सुन सज्जन हुए आनंद उत्तम शादी हुई।
धन्य २ प्रभु की प्रभुताई, जिसने अद्भुत सृष्टि रचाई।
जो है सच्चिदानन्द॥ उ० १॥
धन्य २ स्वामी को भाई, जिसने वैदिक रीति चलाई।
धन्य तुम्हें हो दयानंद॥ उ०२॥
कुल भूषण ब्याहनको आया, उत्तम वर कन्याने पाया।
है पूनो का सा चंद॥ उ० ३॥

वेद रीति से भँवर लड़ाई, हवन हुआ ग्रहपूजा हटाई।
मनरीति हुई सब वेद ॥ उ० ४ ॥
चिरंजीव प्रभु इसको कीजो, आयु तेज विद्या बल दीजो।
मिटे सकल दुख द्वंद ॥ उ० ५ ॥
वासुदेव कहै शुभ दिन आया, वर कन्या का योग मिलाया।
रहा न कोई फंद ॥ उ० ६ ॥

गज़ल ३४६

वचन दो सात जब हमको तभी प्रीतम कहाओगे।
करो इक़रार पंचों में उसे पूरा निबाहोगे ॥
पकड़ कर हाथ जो मेरा मुझे पत्नी बनाना है।
तो किश्ती उम्र की मेरी किनारे पर लगाओगे ॥
हमारे वस्त्र भोजन की फिकर करना तुम्हें होगी।
वचन मन कर्म से प्यारे मुझे अपना बनाओगे ॥
विपति सम्पति औ बीमारी ग़मी शादी आ सुख दुख में।
कभी किसी हाल में मुझ से जुदा होने न पाओगे ॥
जवानी औ बुढ़ापे में खिजां बाहार जोवन में।
निगाहे मिहर से हरदम खुशी मुझ को दिखाओगे ॥
तिजारत नौकरी खेती अर्थ और धर्म सम्बन्धी।
करो कोई काम जब जारी, हमें पहले जताओगे ॥
जो बिगड़े काम कुछ मुझ से करो एकान्त में शिक्षा।
मगर नँनदी सहेलिन में न तुम हम से रिसाओगे ॥
हमें तजि और तिरिया को दिया कभी दिल तो तुम जानो।

किये अपने को पाओगे जो मेरा जी जलाओगे ॥
अग्नि को साक्षी देकर जो अर्धांगिन किया मुझको ।
तो फिर बलदेव बायें पर मुझे अपने बिठाओगे ॥

ग़ज़ल ३५०

वचन देता हूँ मैं तुझ को तुझे प्यारी बनाऊंगा ।
मगर मैं चन्द बातों का अहिद तुझ से कराऊंगा ॥
तुझे मैं धर्म की खातिर जो अर्धांगिन बनाता हूँ ।
अहिद ता उम्र अपने से न पग पीछे हटाऊंगा ॥
मगर तामील हुकमों पर मेरे रहना कमरबस्ता ।
हुई इस काम में ग़लती तो फिर नीचा दिखाऊंगा ॥
सिवा मेरे जो कोई नर हो चाहे कितनाही वि[illegible]र ।
जो की कभी ख़्वाब में ख़्वाहिश तो दिल तुमसे हटाऊंगी ॥
गृहाश्रम के लिये तुम को किया संगिन व सहधर्मिन ।
कठिन इस धर्म आश्रम को तेरे बिन कर न पाऊंगा ॥
विपति सम्पति में हरदम हमारे साथ में रहना ।
गुज़ारा उस में ही करना कि जो कुछ मैं कमाऊंगा ॥
हवा रक्खो जो कुछ दिल में तो अपने दिलकी तुम जानो ।
मगर मैं धर्म से अपना वचन पूरा निबाहुंगा ॥
वचन बलदेव के इतने जो हैं स्वीकार सत. चित से ।
तो फिर दिलजान से प्यारी तेरी खिदमत बजाऊंगा ॥

क़व्वाली ३५१

तुम से वचन भरा के, पत्नी बनाऊंगा मैं ।

जो २ करूं प्रतिज्ञा, पूरी निभाऊंगा मैं ॥ १ ॥
पहली तो बात यह है, सुनलो ऐ प्राणप्यारी।
गर हो पढ़ी तो अच्छा, वर्ना पढ़ाऊंगा मैं ॥ २ ॥
सच्चा तो व्रत यही है, प्रण आज जो करोगी।
व्रत रख के भूखों मरना, हर्गिज़ न चाहूंगा मैं ॥ ३ ॥
अबतक पाखण्ड तुमने जो कुछ किया सो किया।
छुड़वा के पोप लीला, आर्या बनाऊंगा मैं ॥ ४ ॥
जब २ मिलो किसी से, तब २ झुकाके सिरको।
कर जोड़ कर नमस्ते, तुम से कराऊंगा मैं ॥ ५ ॥
ईश्वर बिना किसी की, पूजा न करने दूंगा।
मीरा मसान क़बरें, पूजन छुड़ाऊंगा मैं ॥ ६ ॥
तकलीफ में तुम्हारी, बेशक रहूंगा साथी।
लेकिन बुलाके स्याने, हर्गिज न लाऊंगा मैं ॥ ७ ॥
माता पिता सम्बन्धी, भाई बहिन कुटुम्बी।
कड़वा वचन किसी को, सुनने न पाऊंगा मैं ॥ ८ ॥
भारत की सारी नारी, मूर्खा हुई बेचारी।
उनको धर्म की शिक्षा, तुम से दिलाऊंगा मैं ॥ ९ ॥
माता पिता की सेवा, प्रीती से करनी होगी।
दीनों पशू की रक्षा, तुम से कराऊंगा मैं ॥ १० ॥
सन्ध्या हवन वो पितृ, बलिवैश्वदेव अतिथी।
नित पांच यज्ञ करना, तुमको सिखाऊंगा मैं ॥ ११ ॥

जहां पति और पत्नी मिल, करैं इक़रार ये बाहम।
वहां पर प्रोहितों ने मिल, वकालत अब चलाई है॥ ५॥
उमर जो वीर्य्य रक्षा करके, विद्या के थी पढ़ने की।
अक़ल औ वीरज की बरबादी को; हा शादी रचाई है॥ ६॥
नहीं पढ़ पाता है विद्या, कोई बिन वीर्य्य रक्षा के।
यही कारण है फैली चारसू, अब मूर्खताई है॥ ७॥
नहीं उगता है कच्चा बीज, चाहे लाख कोशिश हो।
मनाती देव देवी पुत्र हित, फिरती लुगाई है॥ ८॥
ग़रज़ हमने बहुत सोचा, हज़ारों हानि हैं इस में।
मिटा दो हानिप्रद यह रस्म, क्यों देरी लगाई है॥ ९॥

लावनी ३५५

शैर।

जब से बाल विवाह भारत में बहुत होने लगे।
तबसे ही भारत निवासी आयु बल खोने लगे॥
है रीति हानिप्रद छोड़ो इस को भाई।
लो ब्रह्मचर्य्य की शरण जो है सुखदाई॥ टेक॥
क्यों स्वयं शत्रु सन्तति के अपनी होते।
जो वीर्य्य से अनुपम रत्न को उनके खोते॥
तुम विषय सिन्धु में उनको हाय डुबाते।
जिसमें वह पकड़कर खायें दुख के गोते॥
बल बुद्धि वीर्य इन सब से हाथ वो धोते।

और यावत जीवन फर तुम्हीं को रोते ॥
इस में क्या देखी तुमने उनकी भलाई । लो ब्रह्म० ॥
हा मनु के वाक्य को भी तुमने बिसराया ।
जो बोधशून्य बच्चों का ब्याह कराया ॥
छत्तीस बार जब ऋतु स्त्री को आया ।
यह समय ब्याह का मनू ने शुभ बतलाया ॥
और वैद्यक में भी लिखा यही हम पाया ।
पच्चीस वर्ष में पुरुष वीर्य्य गुण लाया ॥
और सोलह वर्ष की स्त्री इस योग्य बताई । लोब्रह्म०॥
पूर्वोक्त अवधि लों ब्रह्मचर्य्य सधवाओ ।
और मोह त्यागकर गुरुकुल में भिजवाओ ॥
जब होवें पूर्ण विद्वान तब उनको लाओ ।
और समान उनके नारी उन्हें दिलाओ ॥
प्राचीन स्वयंवर रीति से ब्याह रचाओ ।
गुण कर्म समान हो उनका योग मिलाओ ॥
आनन्द गृहस्थ का तबही देय दिखाई । लोब्रह्म०॥
इस बाल विवाह का करो शीघ्र मुहँ काला ।
जिसने उन्नति पर डाला तुम्हारा पाला ॥
है बलन्द इस से विधवाओं का नाला ।
लाखों हा पड़ी हैं देश में विधवा बाला ॥
व्यभिचार को भी रस्ता है इसी ने निकाला ।
और गर्भ सैकड़ों को भी इसी ने डाला ॥
कह शर्म्मा अब इस रीति को शीघ्र मिटाई । लोब्रह्म० ॥

भजन ३५६

दोहा—भारत में होने लगे, जब से बाल विवाह ।
बल विद्या बुद्धी घटा, हो गया देश तबाह ॥
टेक—मित्रो ! तुम इसको टारियो है बाल व्याह दुखदाई ।
आठ वर्ष में व्याह कराया, विधवा कर घर में बिठलाया ।
फिर कर्मों का दोष बताया, मन में ज़रा विचारियो ॥
क्यों करी अधर्म कमाई ॥ है० १ ॥
जिस दिन युवा अवस्था आवे, बिना ज्ञान के रहा न जावे ।
आखिर को निज धर्म गँवावे, उसकी ओर निहारियो ॥
ये कैसी इज्जत पाई ॥ है० २ ॥
जब मर जाय पुरुष की नारी, दूजे व्याह की हो तैय्यारी ।
विधवा रोवें दीन विचारी, इनके संकट टारियो ॥
क्यों बने हो तुम अन्याई ॥ है० ३ ॥
अबतो बालविवाह को टालो, शीघ्रदोष पर मिट्टी डालो ।
वेद मनू की आज्ञा पालो, विधवा भार उतारियो ।
दो पुनर्विवाह कराई ॥ है० ४ ॥
जबसे बालविवाह हुआ जारी, बल विद्या बुद्धी गई मारी।
ब्रह्मचर्य्य की रीति बिसारी, अब तो इसे सँभारियो ॥
कहे वासुदेव समझाई ॥ है० ५ ॥

भजन ३५७

बच्चों का विवाह क्यों करते हो भाइयो ।

नहीं पुरुष नारि को जाने। नारि न पति को पहँचाने ॥
बहाया पाप प्रवाह ॥ १ ॥
जब बाल पुरुष मरजावे। बस नाम पती धर जावे ॥
तब हो कैसे निबाह ॥ २ ॥
वह शिर धुनि २ पछतावे। निशिवासर शोक मनावे ॥
न देखा दृगभर नाह ॥ ३ ॥
यह जिसके पास जाती है। अप शब्द वहां पाती है ॥
जिगर में लगती दाह ॥ ४ ॥
कोई पास नहीं बिठलाता। इन्हें भूमि भार बतलाता ॥
हुई यह क़ौम तबाह ॥ ५ ॥
जब काम बाण खाती हैं। व्यभिचारिन हो जाती हैं ॥
और न पातीं राह ॥ ६ ॥
चाहे मुसल्मान होजावें। चाहे गर्भ पात करवावें ॥
होय पर बाल विवाह ॥ ७ ॥
यह बाल विवाह मिटाओ। प्राचीन राह पर आओ ॥
शास्त्र दे रहे सलाह ॥ ८ ॥
पछताओगे तब मानोगे। जब इसका भेद जानोगे ॥
हठ है खाहमखाह ॥ ९ ॥
शर्मा यह सीख सुनाओ। मिल सभी कुरीति मिटाओ ॥
काम हो खातिरखाह ॥१०॥

१ मालिक, पति।

भजन ३५८

बच्चेपन में करें विवाह, बाप मां खुशी मनानेवाले।

क्या है किसका य सामान, जिसको खबर नहीं उसआन।
बालक है नन्हा नादान, ब्याहें जिसे गोद उठानेवाले॥
होवे बड़ी वहू धन भाग, लल्ला गलियों गावें राग।
रोटी मांगे सवेरे जाग, पपैये पीपी बजाने वाले॥
कितने भेंट शीतलामाय, कितने डूबे नदियों जाय।
रोवें शिर धुन २ पछताय, कुटुम्बी लाड़ लड़ाने वाले॥
जो कोई बचकर हुये जवान, उनसे निर्बल हों सन्तान।
जल्दी होजाय चिन्तावान, बैद्य घर स्याने बुलानेवाले॥
घर में बढ़ जावें तकरार, चूल्हे हों फिर दो के चार।
सोचें पांव कुल्हाड़ी मार, कुत्रां के बीच डुबानेवाले॥
पाठक होजाओ हुशियार, जल्दी करलो देश सुधार।
देखो उठकर नैन उघार, विदेशी हँसने हँसाने वाले॥

भजन ३५९

बचपन में ब्याह सन्तति को, फिर रोते हैं नादान॥ टेक॥

पितु कहते लाल पढ़ने को नहीं जाता है।
गुरु कहते इसे एक हर्फ भी नहीं आता है॥
मा कहती पूत मेरा दिन २ दुबराता है।
मुख पीला पड़गया भोजन नहीं भाता है॥

जिस दिन से ब्याहि घर आया। जाने किसकी होगई छाया।
सब खान पान बिसराया। हुई जर्द लाल की काया॥

गुरुओं की घात में आय, लग्न सुधवाय, पुत्र को ब्याहि।
हाय पड़गई गज़ब में जान, दुख होत देख दुर्गति को॥ १॥

कोई कहते मानी हम काशीनाथ की बानी।
दी आठ वर्ष की सुता ब्याहि शुभ जानी॥
गये भाग फूट वर को ले गई भवानी।
कर दई दैव ने विधवा सुता अयानी॥

विधना ने विपति क्या डाली। विधवा हुई कन्या बाली।
जरा होजाय चालकुचाली। जाय दोनों कुटुम्ब की लाली॥

हो गया दैव प्रतिकूल, हुई क्या भूल, दुख का मूल, शूल
सम लागत जगत मशान, कैसे राखे राम इज्जत को॥ २॥

इस बाल ब्याह की बरकत से विधवायें।
रोरो कर लाखों खूने जिगर को खायें॥
छुप २ के करतीं हराम हमल गिरवायें।
हो काम विवश बनती हैं लाखों वेश्यायें॥

यह घर में न मौका पावें। तब काशी को चली जावें।
वहा जाके कुकर्म कमावें। दिन खाल के मौज उड़ावें॥

बहुतों को विरह सताय, सहो नहीं जाय, ज़हर ले खाय,
धाय खंजर से खोवें प्रान, सिर आई देख विपति को॥ ३॥

कोई इस कुरीति को अब हूँ न हाय हटावे।

भारत आरत है दिन २ छीजत जावे ॥
आर्य्य समाज इन्हें कहां तलक समझावे ।
इन निर्गुणियों को क्या कोई ज्ञान बतावे ॥

हे ईश्वर सर्वाधारी । तुम से यह विनय हमारी ।
देव सुमति कुमति को टारी । लेव भारत नाथ उबारी ।

बलदेव की सुनें पुकार, करें स्वीकार, सुजन सर्दार, सार
यही वेदों का फ़र्मान, दीजै प्रभु दान सुमति को ॥ बचपन० ४ ॥

क़व्वाली ३६०

बचपन के ब्याहने से, अबहूँ तो बाज़ आओ ।
बच्चों की करके शादी, करते हो क्यों बर्बादी ।
बुधि बल औ ज्ञान शौकत मिट्टी में मत मिलाओ ॥ १ ॥

मित्रो ! ये मुल्क भारत, इसी से हुआ है ग़ारत ।
अब छोड़ो ये जिहालत, आलम से क्यों हँसाओ ॥ २ ॥

भारत की जो शुजाअत, मशहूर थी मुल्कों में ।
उस के बरक्स हालत, दुनिआ को क्या दिखाओ ॥ ३ ॥

माहिर थी सारी खलक़त, कहती थी जिसको जन्नत ।
उसी हिंद को अब यारो, दोज़ख न तुम बनाओ ॥ ४ ॥

इस ब्याह बालपन से, आजिज़ हैं लाखों तन से ।
शबरोज़ रो रहे हैं, औरों को मत रुलाओ ॥ ५ ॥

पथरी प्रमेह गठिया, घर घर बिछाई खटिया ।

सुस्ती औ नामर्दी से, दामन तो अब छुटाओ ॥ ६ ॥
इसी फ़ेल का फल पायें, लाखों हुई विधवायें।
शबरोज़ रो रही हैं, इनका भी दुख बँटाओ ॥ ७ ॥
रोती हैं मां बापों को, करती हैं बहु पापों को।
इस दुर्गति को यारो, भारत से अब हटाओ ॥ ८ ॥
इसकी ही बरकतों से, गमनाक हरकतों से।
लाखों ही गम उठाते, फिर भी तो कुछ शर्माओ ॥ ९ ॥
बलदेव की अर्ज़ी है, भारत के सज्जनों से।
सुनो गौर करके प्यारो, सुख हो अमल में लाओ ॥ १० ॥

भजन ३६१

भारतवर्ष से रे, अब तो बाल विवाह उठाओ।

बाल विवाह ने आर्यवर्त का, कर दिया सत्यानाश।
बल काया पुरुषार्थ हीनकर, मेटी सुख की आश ॥ भारत०
पाच साल की करोड़ों कन्या, रुदन करैं बिलखाय!
पति का अर्थ न जाने बेसुध, किया ग़ज़ब क्या हाय !! भारत०
लाखों कन्या होकर विधवा, गर्भ को रहीं गिराय।
लाखों कन्या बनगई वेश्या ! कुल को दाग़ लगाय ॥ भारत०
आठ वर्ष की होवे गौरी, इसका किया प्रचार।
लोन किया सब धर्म सनातन, फैलाया व्यभिचार ॥ भारत०

बड़ी आयु में वर कन्या का, भाइयो रचो विवाह।
तुलसीराम वह गृहस्थाश्रम में, अपना करैं निबाह ॥ भारत०

दादरा ३६२

टेक-शुभ डगरी यह कैसे भुला दई रे।

खोटे कर्म की अपने ही कर से, भारत में क्यों नींव जमा दई रे ॥ शुभ० ॥ शुभ गुण कहां से अब आयेंगे, विद्या की रीति छुड़ा दई रे ॥ शुभ० ॥ बाले से बच्चे से बाली सी कन्या, सोती उठाय के विवाह दई रे ॥ शुभ० ॥ कहे तेजसिंह खोटे कर्मों ने, भारत की नैया डुबा दई रे ॥ शुभ० ॥

भजन ३६३

हा ! क्यों कराओ बाल विवाह को प्यारे इज़्ज़त होती खराब।

रोती कलपती चिल्लाती है सारी, देखो यह कैसा हवाल।
कर्मों की मारी हैं विधवा बिचारी, होती फिरैं हैं खराब ॥
चश्मों से आंसू यों भर २ के रोतीं, करतीं पती को वह याद ॥
मुझे बाली अवस्था में छोड़ गया, नहिं माल है कुछ असबाब।
गले ऊंट के बकरी बांध दई, पर उन की खबर कुछ भी न लई।
धन ले ले के बेटी के ऊपर नर, बन बैठे हैं खासे नवाब ॥
मत बाल विवाह रचाओ रे भाइयो ! होता है देश तबाह।
कहे नत्थू समझ करो चेतो चेतो ले लो इनका सवाब ॥

❀ ९ अनमेल विवाह ❀

भजन ३६४

मैया मेरो बाप कुलीन कमाऊ ॥

जिन तेरे तन ते उपजाई, मैं बालिका बिकाऊ।
बेचन चार चमार पठाये, बारी भाट पुरोहित नाऊ ॥ १ ॥
सौदा कर लाये वे चारो, थैली एक अगाऊ।
बोले सुन यजमान मिलेंगे, पूरे पांच हजार पचाऊ ॥ २ ॥
लै बरात ब्याहन को आयौ, हाथी पै चढ़ हाऊ।
घर बाहर के ऊकन लागे, थूकन लागे लोग बटाऊ ॥ ३ ॥
जा शंकर को ससुर कहायौ, हा उर दाहक दाऊ।
सो बैरी बूढ़ो यजमारो, मेरो कन्थ कि तेरो ताऊ ॥ ४ ॥

भजन ३६५

वह पुरुष महा चंडाल है, जो कन्या बेचकर खावे।

बड़ा दुष्ट पापी वह जन है, जो कन्या पर लेता धन है।
दया धर्म का वह दुश्मन है, लोभी कुटिल कुचाल है ॥
जो कुल को दाग लगावे ॥ जो० १ ॥
लालच से धन के अन्याई, लड़की के लिये बना कसाई।

बुड्ढे खूसट से उसको व्याही, जिसका चरा मुंह गाल है ॥
और हिला चला नहीं जावे ॥ जो० २ ॥

रूपवती अति सुन्दर बाला, वर है महा बदसूरत काला ।
जल्द चिता में जाने वाला, तनकी लटक रही खाल है ॥
नित थर थर मूंड़ हिलावे ॥ जो० ३ ॥

नहीं जाने बेचारी अबला, बूढ़ा पती लगे या बाबा ।
ना उसले घूंघट ना पर्दा, खबर न क्या ससुराल है ॥
जो इसका घर कहलावे ॥ जो० ४ ॥

कुछ दिन में बूढ़ा मर जावे, कन्या को कर रांड बिठावे ।
सारी उम्र वह दुःख उठावे, सहती विपत कमाल है ॥
विरह अग्नी जिगर जलावे ॥ जो० ५ ॥

मोही मात पिता और भाई, चाचा ताऊ ब्राह्मण नाई ।
जो कन्या पर करते कमाई, पुख्ता मेरा ख्याल है ॥
हर एक नर्क में जावे ॥ जो० ६ ॥

सालिग ऐसे मात पिता को, जो बेचे अपनी दुहिता को ।
नज़र हिक़ारत से नित देखो, कहे मनु महा चंडाल है ॥
देखे से पाप लगजावे ॥ जो० ७ ॥

ग़ज़ल ३६६

बुढ़ापे की अवस्था में जो व्याह अपना कराते हैं ।
वह एक मासूम कन्या को मुसीबत में फँसाते हैं ॥

नहीं मालूम इन बुड्ढों बुजुर्गों को ये क्या सूझा।
कि जो मरते समय अपना अनोखा व्याह कराते हैं॥
कँपे तन और हिले गर्दन नहीं हैं दांत तक मुह में।
मगर देखो तो बुड्ढे जी फबन कैसी दिखाते हैं॥
जड़े सुर्मा मलें उपटन कटाकर मूछ और दाढ़ी।
बरस पन्द्रह या सोला का, यह अपने को बताते हैं॥
नहीं आती शर्म उनको जरा; नौशा कहाने में।
न जाने कौन सी उम्मीद, पर कंगना बँधाते हैं॥
बहत्तर साल के हैं खुद बदौलत, दस की है कन्या।
नहीं बुड्ढे मियां इस जोड़ पर दिल में लजाते हैं॥
महीना, दो महीने—बादही यह—पीर नाबालिग।
हमेशा के लिये मरघट में, जा, डेरा जमाते हैं॥
मज़े से आप तो जाकर चिता में लेट जाते हैं।
मगर ताजिन्दगी कन्या बिचारी को रुलाते हैं॥
टके के लोभ से पंडित जी भी झट खोल पत्र को।
बिना सोचे विचारे बेतुका साहा सुझाते हैं॥
उमर भर जान को रोती हैं उन मिश्रों की यह बेवा।
कि जिन के साथ में बुड्ढों के यह फेरे कराते हैं॥
समझ लें खूब यह मन में मियां बुड्ढे व पण्डित जी।
कभी वह सुख नहीं पाते जो औरों को सताते हैं॥
तअज्जुब है कि जो रोके उन्हें इस फेल बेजा से।
सनातन धर्म का उसको महा शत्रु बताते हैं॥

[illegible] हैं साक्तिगराम उनका शक नहीं इस में ।
[illegible] दुनिया से मिटाते हैं ॥

भजन ३६७

[illegible] मा बाप पुत्री बेचकर खावें ।

[illegible] बकरी की नाईं, बेचें हैं उन्हें अन्याई ।
[illegible] चुग आप ॥ पुत्री० ॥ १ ॥
[illegible] हजार लगावें, कोई बदले ब्याह करावें ।
[illegible] है पाप ॥ पुत्री० ॥ २ ॥
[illegible] ब्याहें, उन्हें करना विधवा चाहें ।
[illegible] नहीं पश्चात्ताप ॥ पुत्री० ॥ ३ ॥
[illegible] और चिल्लावें, और ऐसा रुदन मचावें ।
[illegible] आता कांप ॥ पुत्री० ॥ ४ ॥
[illegible] गालो, अब जुल्म से हाथ उठालो ।
[illegible] ॥ पुत्री० ॥ ५ ॥
[illegible] बतलाओ, मत पुत्री बेच कर खाओ ।
[illegible] पापी आप ॥ पुत्री० ॥ ६ ॥
[illegible] पुकारे, तुम मानो [illegible] हमारी ।
[illegible] मा बाप ॥ पुत्री० ॥७॥

भजन ३६८

[illegible]ल ।

[illegible] क्यों आफत आई ।

विवाह संस्कारों के बिगड़ने से सब कुछ बिगड़ी भाई ॥
कहां गई वह रीति वर्ष पच्चीस का होता ब्रह्मचारी ।
यह विवाह था कम दर्जे का सोलह वर्ष कन्या प्यारी ॥
पच्चीस वर्ष विद्या पूर्णकर शरीर से हो बलधारी ।
वर कन्या गुण कर्म मिलाकर थी विवाह की तैयारी ॥
अपने आप करते थे परीक्षा नहीं वकील ब्राह्मण नाई । वि० ॥

आज रीति विपरीत देश भारत की हम दिखलाते हैं ।
खुद करने का काम उसे गैरों के हाथ कराते हैं ॥
कैसा गुण और कर्म अवस्था बिल्कुल नहीं मिलाते हैं ।
कोई मरो कोई जियो पेट अपने का काम बनाते हैं ॥
फेरों पर बन वकील जाली झूठी रजिस्ट्री लिखवाई ॥ वि० ॥

हो लिखी कहीं बतलाइये, ऐसी बदरस्म तुम्हारी ॥ टेक ॥

काशीनाथ ने नहीं फर्माया, नहीं कहीं पुराणों में पाया ।
फिर अन्धेर ये कैसे आया, क्यों बेशर्मी छाई है ॥
वर बुड्ढा तो कन्या बारी ॥ ऐसी० ॥

और सुनो बुद्धि का टोटा । कन्या बड़ी और वर छोटा ।
अरे मित्र यह मारग खोटा । चलते लाज न आई है ॥
ब्रह्मचारी से हुये व्यभिचारी ॥ ऐसी० ॥

तेजसिंह कहे होश में आओ । मत फिजूल दुनिया को हँसाओ ।
डूब चुकी क्यों और डुबाओ । कुछ तो जरा शर्माइये ।
क्या बिल्कुल शर्म उतारी ॥ ऐसी० ॥

भजन ३६६

कैसा ग़ज़ब है आह! किया बुड्ढे ने ब्याह, तकें लकड़ी हैं राह हा! शोक शोक शोक, शोक शोक शोक।

तन उबटन लगाय, नैन अंजन लगाय, हा! मूछैं कटाय, हा! शोक ३ शोक ३ शोक ३ ॥ कैसा० ॥ ब्याह भये दिन चार, घर में आई नई नार, करैं ज्यौं २ से प्यार, हा! शोक ३ शोक ३ शोक ३ ॥ कैसा० ॥ नेक लागी न देर, लीन्हा कफ़ने हा घेर, रहे छत को यह हेर, हा! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ हाय बिधवा अनाथ, रोवें मत्थे धर हाथ तुमने दीन्हा न साथ, हा! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ नष्ट होगये सुहाग, लगी मदन को आग, गई नीचन संग भाग, हा! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ कहे तुलसी हे मीत, नष्ट करो कुरीति, हाय कैसी अनरीति, यह! शोक ३, शोक ३, शोक ३ ॥ कैसा० ॥

भजन ३७०

बूढ़े छैला का ब्याह रचाया, हा! हा! अविद्या धन्य है तुझे ॥

घोड़ी चढ़ि आई, जरा सुन लना भाई।
लाओ भाभी को और काजर गरन को ॥
जिससे बिकसे बुढ़ापे काया ॥ बूढ़े० १ ॥
भाभी कहां से आवे, सारी पुतबहू कहलावे।
अशर्फी की दादी को, जल्दी बुलवालो।
उसका भाभी रिश्ता बताया ॥ बूढ़े० २ ॥

हिलता छैला का सर, कांपे बुढ़िया के वार।
झट से काजल गेरन को, देर हो घोड़ी चढ़न को ॥
एक आंख में नाखून चुभाया ॥ बूढ़े० ॥ ३ ॥
नारी जो २ आई रहीं हँसी उड़ाई ॥
कहरहीं सेहरा गावनको, वह उसको वह उसको।
एक चतुरा ने सेहरा यह गाया ॥ बूढ़े० ४ ॥

सेहरा।

चिरंजीवै महाराज मेरा हरियाला बनरा।

मूंछ कटाय के छोटी करलई, दाढ़ी दई मुड़ाय ॥ मे० ॥
तन बन्ने के अतलस का बागा, लटक रही सब खाल ॥ मे० ॥
कमर बन्ने के गुजराती पटका, चले डगमगी चाल ॥ मे० ॥
सर बन्ने के सोने का सेहरा, सर के धौले बाल ॥ मे० ॥
मुख बन्ने के पानों का बीड़ा, जैसे ऊट चबात ॥ मे० ॥
क्या छबि बरनू मैं मुखड़े की, मुख में नहीं एको दांत ॥ मे० ॥
आठ वर्ष की कन्या कुमारी, बूढ़ को दो दया बिसारी ॥ मे० ॥

बिचारी अस्सी बरस के ने, और बूढ़ छैला ने।
रुपया देकर के ब्याह कराया ॥ बूढ़े छैला० ५ ॥
आठवर्ष की रांड़ होजावे, कैसे मित्रो उमर बितावे।
डाले गर्भ को, फैलावे हिंसा को।
इन्हीं पापों ने भारत यह डुबाया ॥ बूढ़े छैला० ६ ॥
पाप यहां आये, सब धर्म कर्म गँवाये।

रामप्रसाद कर ईश्वर को याद ॥
दुखड़ा भारत का कहां लौं जाय सुनाया ॥ बूहे छैला० ७ ॥

दादरा ३७१

बनि के बन्ना उमर वाली में।

बुद्धि विद्या बल सकल बिगास्यो, पड़े निपट खुमारी में ॥ उ० ॥
सुख शरीर को नेक न जान्यो, पड़े विपत भारी में ॥ उ० ॥
निर्बल भई प्रजा भारत की, भुगतत बीमारी में ॥ उ० ॥
दर दर फिरत न भरत पेट तहूँ, अब खिदमतगारी में ॥ उ० ॥
अति मतिहीन मलीन दीन है, रहे पशु बनचारी में ॥ उ० ॥
दियो बोय विष स्वर्ण-भूमि सी, या अमृत की क्यारी में ॥ उ० ॥
ऐसे निर्लज्ज अजहुं नहीं चेतत, भूले सर्दारी में ॥ उ० ॥
होश करो बलदेव आगि दे, इस दुनियादारी में ॥ उ० ॥

दादरा ३७२

बना बनिके की बुढ़ापे में सूझी।

होत महा अन्धेर देश में, कोई न बात सकै बूझो ॥ बु० ॥
दश की बधू साठ के बालम, भलो विधि मिलाई गुरूजो ॥ बु० ॥
तिय भइ तरुण वृद्ध भये बालम, अब नहीं बनत कछु जो ॥ बु० ॥
जब तिय और पुरुष तन चितवत, पति से राखत दूजो ॥ बु० ॥
लगी नारि धन धर्म बिगारन, कुरि २ मरत पशू जो ॥ बु० ॥
निशदिन कलह कलेश करत जब, तिय को आश न पूजो ॥ बु० ॥

बाधा करत भोग में बुढ़वा, तव विप देत बहु जी ॥ बु० ॥
नरक भोग बलदेव अन्त म, मरत मौत विन मूजी ॥ बु० ॥

दादरा ३७३

बना बनिवे को बुढ़ापे में डोले।

करत अनर्थ कोई नहीं बरजत, रस में विष मत घोले ॥ बु० ॥
करत अन्याय तरस नहीं खावे, पुण्य पाप नहीं तोले ॥ बु० ॥
दो पन गये तहूं नहीं समझत, जुलम करत हिय खोले ॥ बु० ॥
अव तो समझ वृथा मत खोव, नरतन रत्न अमोले ॥ बु० ॥
करि२ विषय तनक नहीं धोप्यो, अव क्यों खाक खखोले ॥ बु० ॥
नौबत गजे मौत की शिर पर, अब तो हाथ जरा धोले ॥ बु० ॥
अजहुँ वेगि बलदेव सुमिर प्रभु, क्यों न नींद सुख सोले ॥ बु० ॥

भजन ३७४

बुड्ढे बाबा करें विवाह, मौत के मुह में जाने वाले।

थर २ कांपे ये हैं हाल, सारी लटक गई है खाल।
दांतो सब गये हैं गाल, पोपले हलुवा खानेवाले ॥ १ ॥
मुड़ कर होगई कमर कमान, मुड़वा मूंछ बने हैं ज्वान।
बांधा मौर बैठ कर वान, बनगये मौश कहानेवाले ॥ २ ॥
अंजन आखों लीना सार, डाला गल फूलन का हार।
सिर पै पगड़ी गिन्तदार, सजगये हँसी करानेवाले ॥ ३ ॥
देख जीने से लाचार, नारी तब करती व्यभिचार।

बढ़ते पाप हैं बेशुम्मार, नहीं दिल में शरमानेवाले ॥ ४ ॥
कितनी रोवें जार बेज़ार, कितनी विष खाती हैं नार।
सुन २ बेटी के आचार, रोयें छुप २ धन खानेवाले ॥ ५ ॥
बढ़गई विधवों की तादाद, सुनता कोई नहीं फर्याद।
पाठक होवें बेबर्बाद, धनी जो ब्याह रचानेवाले ॥ ६ ॥

❀ १० विधवा विलाप और ❀ ❀ उनकी अपील ❀

ग़ज़ल ३७५

लगाके ईश्वर से ध्यान हरदम सुधारो भारत को अबतो प्यारो।
निगाह करके ज़रातो देखो, यह देश दुखिया है क्यों तुम्हारो ॥
तड़प रही हैं विचारी विधवा, हैं बहते आंखों से खूंके दरिया।
उदास बैठी बिलख रही हैं, नहीं है जिनका कोई सहारो ॥
न दूधका दांत जिनका टूटा, न पग महावर है जिनका छूटा।
यह व्याह रिश्ता है जिनका झूठा, ऐ मित्र अबले इन्हें उबारो ॥
एक २ साला उमर है जिनकी, अभी हैं माता का दूध पीतीं।
हों देश में जिनके ऐसी विधवा, न होवे [illegible] के मुख कारो ॥
अनाथ बच्चे तड़प रहे हैं, ज़मीं पै [illegible] को रगड़ रहे हैं।
बग़ैर भोजन बिलख रहे हैं, हे मित्र [illegible] उन्हें सहारो ॥
यह शिवनरायण है दस्तबस्ता, प्रभू तुम्हीं से विनय है करता।
ये देश भूखों जो मर रहा है, हे ईश अब तो इसे उबारो ॥

भजन ३७६

तुम क्यों नहिं मित्र विचारते, विधवा की विपति भारी को।

सासु ससुर देवर पितु माता, कोई इन्हें नहिं पास बिठाता।
कैसी करनी हुई विधाता, विष दे इनको मारते।
दुख में दुख दुखियारी को ॥ विधवा० १ ॥

अपने हाथ खाना नहिं खाया, बाली उम्र में व्याह रचाया।
जाने कौन पती कहलाया, विधवा उसे पुकारते। कुछ खबर न बेचारी को ॥ विधवा० २ ॥

रात दिना तुम ऐश उड़ाओ, नाना भोज्य पदारथ खाओ।
चंगों को तुम मुफ्त खिलाओ, लेकिन नहीं निहारते। दुखिया की आहो-जारी को ॥ विधवा० ३ ॥

इन का रोना हँसी तुम्हारी, ख्वारी में इज़्ज़त है भारी।
लाखों रोज़ बनें बाजारी, लेकिन नहीं सँभारते। शर्मा विधवा नारी को ॥ विधवा० ४ ॥

ग़ज़ल ३७७

दुखी रोती थीं विधवायें, जरूरत थी सभा होवे।
बचाना दुख के सागर से, जरूरी था नफ़ा होवे॥
बहुत थीं चोर फेरों की, नहीं हो पाया था गौना।
न जाना हो पती कैसा, रहा दिन रात का रोना॥
हज़ारों लेके धन घर का, गई संग भाग नीचन के।

हज़ारों ने जगत से डर, गिराये गर्भ विधवन के ॥
हज़ारों लकड़ी के ऊपर, बिकीं हैं बुड्ढे भारी को।
पड़ी बेज़ार रोती हैं, गया जब छोड़ नारी को ॥
हज़ारों खा गईं फांसी, कुओं में कितनी डूबी हैं।
ज़हर कितनों ने खाये हैं, ये सब क़िस्मत की खूबी है ॥
हज़ारों बस गये चकले, बढ़े व्यभिचार दल छाये।
हज़ारों बेगुनाह बच्चे, मरे रोने नहीं पाये ॥
बचाना चाहते हो गर, जो डूबा देश है भारत।
रचाना व्याह विधवों के, नहीं समझो हुआ ग़ारत ॥
प्रभू भगवन् की कृपा से, विवाह दिनरात होते हैं।
मगर अब भी बहुत सज्जन पड़े निद्रा में सोते हैं ॥
ये अबलाओं का हितचिंतक, कहे पाठक खड़ा तुम से।
न दुख दो बालविधवन को छुड़ाओ जल्द इस ग़म से ॥

ग़ज़ल ३७८

विनय सुनलो बुजुर्गों तुम हमारी।
करोड़ों रोरहीं बेवा बिचारी ॥
गुनह हमने किया क्या है बताओ।
मिला एवज़ में जिसके दुःख भारी ॥
तुम्हीं ने तो हमें बचपन में व्याहा।
तुम्हीं ने शास्त्र की आज्ञा है टारी ॥
मनु और वेद में क्या २ बताया।

रहें स्त्री पुरुष सब ब्रह्मचारी ॥
मगर तुमको नहीं कुछ ख्याल आया ।
बिना सोचे धरी गलपर कटारी ॥
वर्ण और वर्ग और जाति मिलाई ।
मिलाई लग्न राशी और नारी ॥
ग्रह नक्षत्र गण आदि मिलाये ।
मगर विधि की लिखी नहीं जाय टारी ॥
तुम्हीं ईश्वर हमें धीरज बँधाओ ।
लगा विधवों के सीने ज़ख़्म कारी ॥
जरा वासुदेव का कहना तो मानों ।
करो विधवों के फिर तुम ब्याह जारी ॥

भजन ३७६

विधवा नारि की रे, अपने मन में व्यथा विचारो ।
गौर करो टुक अपने दिल में, विधवा कहे पुकार ।
तुम तो ब्याहो दश २ नारी, हमको क्यों इनकार ॥ वि० ॥ २ ॥
साठ वर्ष की उम्र में भाई, मरे तुम्हारी वाला ।
काम कला को रोक न पाओ, फेर करो मुँह काला ॥ वि० ॥२॥
फिर जो ब्याह न होय तुम्हारा, करो नित्य व्यभिचार ।
इज्जत खोवो नहिं शर्माओ, बनो धर्म औतार ॥ वि० ॥ ३ ॥
बालेपन में पती हमारे, कर गये स्वर्ग पयान ।

चढ़ी जवानी मदन हिलोरे, तिनहिं सिखावत ध्यान ॥ वि० ॥ ४ ॥

ब्याह काज में हमें देख सब, लेती मुँह लटकाय ।
देख निरादर मन में आवे, मरें ज़हर का खाय ॥ वि० ॥ ५ ॥

कोई २ नारी शोक से, देतीं अपनी जान ।
अधिक भाग नीचों सँग जातीं, जाने सभी जहान ॥ वि० ॥ ६ ॥

घर २ में त्योहार तीज को करती हैं शृंगार ।
बिन पीतम के अंग २ पर, पड़ें अनंग अँगार ॥ वि० ॥ ७ ॥

दिब्या दर्शी के इकिस पति, कहा रखे नहिं नीच ।
पद्म पुराण खोल के देखो, भूमि खंड के बीच ॥ वि० ॥ ८ ॥

वेद और स्मृति देख के, ऋषी गया बतलाय ।
आपद्धर्म नियोग आदि को, सदाचार ठहराय ॥ वि० ॥ ९ ॥

राधाशरण कहे कर जोड़, ईश्वर सर्वाधार ।
पार करो अबलन की नैया, डूबत है मँझधार ॥ वि० ॥ १० ॥

एक दर्द अंगेज़ नज़ारा ।

एक कमसिन हिन्दू लड़की शादी के दूसरे ही दिन बेवा होजाती है ! शौहर की लाश को गोद में लेकर मातम करती है और आइन्दा ज़िन्दगी की बेवगी के मसाइब को याद करके बेतरह रोती है, कसरत अन्दोह से बेहोशी की हालत में उसका पति अपनी मजबूरी व क़ौम की बेपरवाही का गिला करते हुए राज़ी बरज़ा रहने की सलाह देता है ।

मगर बामुरौवत उसकी सलाह व तस्कीन ने और दिलको तड़पा दिया, होश आते ही आंख खोलकर वह चीखें मारती है, और हिन्दू कौम के जुल्मोसितम से पनाह मांगती हुई मौत के आगोश में मुंह ढांप लेती है !! एक के एवज दो जनाज़े उठते हैं !!!

मुसद्दस ३८०

[अज महाशय अमरनाथ मुहसन]

सर्ताज ! मेरे वाली, मेरे प्रान से प्यारे।
बेवक्त कहां जाते हो, क्यों हाय सिधारे॥
छोड़ा है मुझे आपने, अब किसके सहारे।
इन्साफ़ से कहना, थे यही वादे तुम्हारे॥

वह कौल कहां और वह इकरार कहां है।
दो दिनही में बदअहदी के उनवान अयां है॥ १॥

वादा तो था यह साथ न छोड़ेंगे कभी भी।
आइनये दिल तेरा न फोड़ेंगे कभी भी॥
इस रिश्तये उल्फ़त को न तोड़ेंगे कभी भी।
मुँह तेरी मुहब्बत से न मोड़ेंगे कभी भी॥

क्यों कहिये तो, क्या आपके यह ध्यान में आया।
क्यों नक्शेवफ़ा आपने इस तरह मिटाया॥ २॥

सोचो तो कोई ऐसी कभी करता है जल्दी।

जिस तरह कि ऐ जाने जहां, आपने अवधी ॥
कँगना है उधर ताज़ा इधर ताज़ी है मेंहदी ।
जामे की सफ़ेदी भी ज़रासी नहीं बदली ॥
सेहरे भी अभी सरके तो मुर्झाये नहीं हैं ।
चूड़े के भी रोग़न में शिकन आये नहीं हैं ॥ ३ ॥

दो चार घड़ी पहिले जो यह घर था गुलिस्तां ।
लो आप के जाने से हुआ साफ बियाबां ॥
रोते हैं इधर भाइ उधर बहनें हैं नालां ।
गरियां हैं इधर अपने उधर ग़ैर हैं हैरां ॥
क़िस्मत से अदावत की सज़ावार तो मैं हूँ ।
औरों पै है क्यों ज़ुल्म गुनहगार तो मैं हूँ ॥ ४ ॥

क्या भावजों ने इस लिये सुर्मा था लगाया ।
क्या बहनोंने था इसलिये घोड़ी पै चढ़ाया ॥
क्या इसलिये जामा था यह शादी का सिलाया ।
क्या इस लिये गुलगूना था चेहरे पै लगाया ॥
उड़ जाओगे ज्यूँ नकहते गुल बाग़ जहां से ।
जाओगे अभागिन के सुहागों को जला के ॥ ५ ॥

जिस वक्त से यूं आप ने बदली हैं निगाहें ।
उस वक्त से हि बन्द हैं सब प्यार की राहें ॥
हरएक मुझे देखते ही भरता है आहें !!!
नय मेरी मुहब्बत है किसी को, न हैं चाहें ॥

बेज़ार मेरी शक्ल से है सारा घराना।
वैरी है मेरा प्रानपती, सारा ज़माना ॥ ६ ॥

जिन आंखोंमें थी फूल कभी, खार हुई हूँ।
मैं अपने ही कुनबे के लिये भार हुई हूँ ॥
बेकस हूँ मैं ! बेवस हूँ मैं ! लाचार हुई हूँ।
सच कहती हूँ मैं जीने से बेज़ार हुई हूँ ॥

मनहूस कोई कहता है और कोई अभागिन।
कहता है कोई क्यों न मरी होते ही डाइन ॥ ७ ॥

ऐ प्रानपती ! यूं मुझे ताने न दिलाओ।
मुझ दुखिया पै दुनियाको न इसतरह हँसाओ ॥
देखो तो ! न जलती हुई को और जलाओ।
ले जाओ मुझे साथ जहां जाना हो जाओ ॥

जब आपने ही जाने जहां, ऐसी दशा की।
क्या और से मैं रक्खूंगी उम्मीद वफ़ा की ॥ ८ ॥

लो अब तो सहर होने लगी तुम को जगाते।
किस बात से रूठे कि नहीं मनने में आते ॥
क़िस्मत भी मेरी सोगई है तुम को जगाते।
यह आप के अन्दाज निराले नहीं भाते ॥

किस सोच में लेटे हो ज़रा सर तो उठाओ।
गो दिल नहीं मिलता है पै आँखें तो मिलाओ ॥ ९ ॥

मैं ग़ैर सही मुझ से भजी बोलो, न बोलो।

पर अपने अज़ीज़ों से तो यूं ज़हर न घोलो ॥
किस हाल में हैं घर के ज़रा आंख तो खोलो ।
माता की मुहब्बत को कुछ इनसाफ़ से तो ॥

क्या दूधकी धारों का यही मोल है प्यारे ।
सिर पीटती को छोड़ चले आप सिधारे ॥ १० ॥

कहने को अभी और थी दुख दर्द बिचारी ।
कहने भी न पाई थी मुसीबत अभी सारी ॥
इफ़रात ग़मो रंज से ग़श होगया तारी ।
इस ग़श में वह क्या देखती है कर्मोंकी मारी ॥

सर्ताज वही दूल्हा बना पास खड़ा है ।
और यास भरे लहजे में यूं गोया हुआ है ॥ ११ ॥

ऐ नेकसीयर ! असमतो इफ़्फ़त में य गाना ।
ऐ वायसे बहबूदी वो रौनक़ दहेखाना ॥
ऐ मूनिसे लासानी व हमदर्द ज़माना ।
सुनता हूँ तेरे ग़म का मैं मुद्दत से तराना ॥

मैं आजिज़ो लाचार हूँ कुछ कर नहीं सक्ता ।
गो तेरा ही हूँ! तेरा भी दम भर नहीं सक्ता ॥ १२ ॥

इस गुलशने हस्ती में यही फल थे तुम्हारे ।
किस्मत थे विधाता ने यही लेख तुम्हारे ॥
रो रो के उतारेगी तू अफ़शां के सितारे ।
और चूड़ा सुहागों का चिता पै तू उतारे ॥

तू बदले में शहनाई के सरकूबी सुनेगी।
फूलों की एवज़ रश्कचमन, फूल, चुनेगी ॥ १३ ॥

जो तुझ पै हुई है वह नहीं कोई निराली।
कोई भी तो घर होगा न इस गुद्नी से खाली ॥
जो आज चमन में है भरी फूलों से डाली।
फ़स्ल देखना होती है वही फूलों से खाली ॥

जिस शाख परदुना को बहार आके खिलाये।
लाज़िम है उसे फस्ले खिज़ां भूल न जाये ॥ १४ ॥

जाने का मुझे अपने नहीं रंज ज़रा है।
पर खौफ़ तेरा जानेजहां, मुझको बड़ा है ॥
जिस क़ौम में है तू वह अजब अहलजफ़ा है।
नय शर्म ही है इस को न कुछ खौफ खुदा है ॥

है नाला गरीबों का इसे एक तराना।
है अश्क यतीमों का इसे मोती का दाना ॥ १५ ॥

नय अक़्ल बतावें जो इसे, इसको यह माने।
नय शास्त्र और पाक किताबों को यह जाने ॥
नय मनु महाराज के लिक्खे को बखाने।
नय वेदों के अहकाम को अहकाम यह माने ॥

आई है अजब जिहलो जिहालत के ये बस में।
मनमानी बना रक्खी हैं इस कौम ने रस्में ॥ १६ ॥

जो रंज तुझे पहुँचा है कब मुझ से निहा है।

सूरत से तेरी हाले दिलेज़ार अयां है ॥
आहों से तेरी, दिल में मेरे उठता धुआं है।
लेकिन ऐ मेरी जान, यह बेसूद फ़िग़ां है ॥

तहरीर क़ज़ा आंसुओं से मिटती नहीं है।
आहों से कभी फ़ौजे अलम छुटती नहीं है ॥ १७ ॥

मैं चाहता कब हूं कि तुझे ताने दिलाऊं।
मैं चाहता कब हूं कि अक़ारिब को रुलाऊं ॥
मैं चाहता कब हूं कि इसी उम्र में जाऊं।
मैं चाहता कब हूं कि तुझे छोड़ के जाऊं ॥

लेकिन मेरी जां! इस में नहीं मेरी ख़ता है।
मैं जाने पर मजबूर हूं यह हुक्म क़ज़ा है ॥ १८ ॥

गो आलमे बेहोशी में थी दर्द र [illegible]दा।
इस आख़िरी फ़िक़रे से हुआ और इसे सदमा ॥
इस सदमे के लगते ही गिरा और कलेजा।
गिरते ही कलेजे के बिगड़ने लगा नक़्शा ॥

मुँह ज़र्द हुआ! नब्ज़ें छुटीं! रिक्क़ते तारी।
और देखते ही देखते दुखिया भी सिधारी ॥ १९ ॥

ऐ नाज़रीन! क्या यासोक़लक़ का है यह मंज़र?
दिल पानी हुआ जाता है! दो लाशें बराबर !!!
यह कमक़दरी है तो है वह माहे मुनव्वर।
दोनों की मुहब्बत तुली कांटे में बराबर ॥

मदवूवो मुहव कोई अजल ने नहीं छोड़ा।
वह कौनसा रिश्ता है जो इसने नहीं तोड़ा॥ २० ॥

ऐ भारतियो! हाय ये अन्धेर नहीं है।
औलाद पै भी ज़ुल्म सुना तुमने कहीं है॥
तुमने तो समझ रक्खा है जो कुछ है यही है।
नय हश्र का है खौफ न दावर का यक़ीं है॥

मासूम का यह खून न दामन से छुटेगा।
धुलने से धुलेगा न मिटाने से मिटेगा॥ २१ ॥

कहते हो कि है पुनर्विवाह बायसे खिजालत।
कुनबे के लिये फ़ेल है यह बायसे नफरत॥
है चादरे असमत के लिये दाग निदामत।
हां सोचिएगा जब तो नहीं आती है गैरत॥ (कब)

जब कोर्ट में पुलीस से चालान होते हैं।
किस वक्त? कहां? कौन के जब सुनते हो फिक़रे॥

गो लिखी हुई वेदों में है साफ़ इजाजत।
और की है मनु जीने भी खूब इसकी हिदायत॥
और अक़्ल ने भी दी है इसी ही की शहादत।
हैरान हूं फिर आप को है किस लिये नफरत॥

ये याद रहे आप को जीते ही मारोगे।
बेवाओं की शादी में जो ताखीर करोगे॥ २३ ॥

और बेवा भी वह जिसने नहीं देखा ज़माना।

है ख़्वेश बेगाना सें अभी एक यगाना ॥
बातों को समझती है जो मर्ग़ूब तराना ।
शादी है अभी जिस के लिये एक फ़िसाना ॥
अलक़िस्सा वह बेचारी जो मासूम रही है ।
और क़ुदरती जज़्बात से महरूम रही है ॥ २४ ॥

जिस क़ौम का यह हाल हो क्या उसको सुनाना ।
मुमकिन ही नहीं ज़ालिमों से दाद का पाना ॥
सोते का तो है मुश्किफ़े मन सहिल जगाना ।
कौन उसको जगाये जो करे महिज़ बहाना ॥
फिर याद रहे करते हैं जो हीले बहाने ।
किश्ती नहीं लगेगी कभी उनकी ठिकाने ॥ २५ ॥

हक़दारों का यूं बहरे ख़ुदा हक़ न गवांओ ।
महकूमों पै अहकाम तहद्दी न चलाओ ॥
मँझधार में है नाव ज़रा ज़ोर दिखाओ ।
बेवाओं की शादी में न अब देर लगाओ ॥
ऐ मुहसनो अर्बाब सितम की कोई हद है ।
कुछ करके दिखाओ कि यही वक्त मदद है ॥ २६ ॥

ग़ज़ल ३८१

कहां तक चुप रहूँ प्यारो, नहीं अब चुप रहा जाता ।
मुसीबत देख विधवों की, कलेजा मुहँ को है आता ॥१॥

बरस छै सात की बच्ची, बना कर राड़ बिठलाई।
कटे कैसे उमर उसकी, नहीं कोई यह बतलाता ॥२॥
बरस अस्सी में भी बीबी, किसो की गर है मरजाती।
बिला परिणाम सोचे झट, है सादी अपनी करलाता ॥३॥
कहो क्या साथ कुछ तालीम भी तुमने न दी इनको।
फक़त खाने को यक गम, दूसरे गाली पिता भ्राता ॥४॥
सिर्फ कूंड़ा व कर्कट, चौका बर्तन रोटी औ पानी।
कला कौशल सिवा इसके, न कोई और सिखलाता ॥५॥
हजारों कोशिशों से रोकते विधवों की शादी को।
मगर क़ानून कुदरत को, न कोई रोक है पाता ॥६॥
नहीं करते हैं शादी भ्रूणहत्या नित्य होती है।
एवज में एक के होता है, पैदा लाख से नाता ॥७॥
कहो इन बेकसों की दास्तां, गम कौन सुनता है।
सदा जिंदा नहीं रहते, किसी के भी पिता माता ॥८॥
दया कर मित्र हर लो बेगिहा अब दुःख विधवों के।
तुम्हारे बिन नहीं कोई, जगत में और सुख दाता ॥९॥

ग़ज़ल ३८२

दुख दर्द अपना किसको सुनायें कहां कहां।
ये दाग दिलका किसको दिखायें कहा कहां ॥
फैली कुरीति धर्म के विपरीत हिन्द में।
मुश्किल मुसीबतो से बचायें कहां कहां ॥
होते हैं बेकसों पै सितम नित नये नये।

ज़ख्मी जिगर को किसपै सिलायें कहां कहां ॥
होते हैं ज़ुल्म दुख्तरो जोरुओं पै शबो रोज़ ।
पुरदर्द पुकार किस को सुनायें कहां कहां ॥
करते विवाह अपने बुढ़ापे लों चार चार ।
ये बाक़ी उमर कैसे गँवायें कहां कहां ॥
करते हैं आप भोग हमें योग सिखायें ।
अन्याय इन के और बतायें कहां कहां ॥
किस भांति मन को मार इन्द्रियों को जीतकर ।
अपला अजान अलख जगायें कहां कहां ॥
रो रो तमाम उम्र कब तलक बसर करें ।
चश्मों से नदी खूं की बहायें कहां कहां ॥
बलदेव ग़मज़दों की तुम्हीं अबतो लो ख़बर ।
सोते हो सुध बिसार के शाह कहां कहां ॥

ग़ज़ल ३८३

सदमों की चोट सीने पै खाई नहीं जाती ।
ताउम्र ये तकलीफ़ उठाई नहीं जाती ॥
रोना ये शबोरोज़ [illegible] कहां तलक ।
चश्मों से नदी खूं की [illegible] नहीं जाती ॥
खुदग़र्ज़ होगया है ज़माना [illegible] इस क़दर ।
इन्साफ़ की बू तक यहां पाई नहीं जाती ॥
होता है ज़ुल्म रात दिन हम औरतों पै हाय ।
तिसपर भी ज़ुबां हमसे हिला ई नहीं जाती ॥

करते हैं व्याह नाई ब्राह्मणों की राय पर।
वाहम की शक्लो सिफत मिलाई नहीं जाती॥
बचपन में व्याह देते हैं नालायकों के साथ।
विद्या तलक भी हमको पढ़ाई नहीं जाती॥
हम नारी गँवारी हैं वह शौहर पढ़े हुये।
कितनाही मिलो दिल की जुदाई नहीं जाती॥
सुधलीजिये बलदेव हम अबलाओं की अबतो।
तुम से मरम की पीर छुपाई नहीं जाती॥

ग़ज़ल ३८४

अश्तर आंसू बहाना कोई हम से सीख जाय।
बेगुनाह ही मार खाना कोई हम से सीख जाय॥
आह निकलती है जिगर से और है हालत तबाह।
हर घड़ी जी का जलाना कोई हम से सीख जाय॥
बेवा को पर्दा रखें औ शक करें हैं हर घड़ी।
उम्र रो रो कर गँवाना कोई हम से सीख जाय॥
सासु मां भाभी ननँद सबकी सहारें झिड़कियां।
होंठ पर टाका लगाना कोई हम से सीख जाय॥
ख्वाहिशे दुनियां का ग़म हमको सतावे हर घड़ी।
गम में दम अपना घुटाना कोई हम से सीख जाय॥
मिस्ल हैवां साथ जिसके चाहे वह करदें हमें।
चुपके चुपके साथ जाना कोई हमसे सीख जाय॥
हों सती हमबाद शौहर तिस पै हम से ये सलूक।

आप खुद मर्घट को जाना कोई हम से सीख जाय ॥
हाथ से इन ज़ालिमों के होगई वस हम तमाम ।
बिन बुलाये मौत लाना कोई हम से सीख जाय ॥
पांव जंजीरें अलम है यह तने नाज़ुक मुदाम ।
खुद बनाना जलखाना कोई हम से सीख जाय ॥

विधवों की फ़रियाद ३८५

ग़मो दरदो मुसीबत से लबों पर जान आई है ।
कोई सुनता नहीं फ़रियाद ये कैसी तबाही है ॥
बहुत रोती बिलखती हैं तुम्हारी बेटियें बहुयें ।
बुज़ुर्गो ! भाइयो ! प्यारो ! दुहाई है दुहाई है ॥
बिला मर्ज़ी हमारे साथ जिसके चाहें वह कर दें ।
कहो शादी है या नाज़िल हुआ क़हरं इलाही है ॥
खरीदें और बेचें भेड़ बकरी की तरह हम को ।
बुज़ुर्गों ने करी क्या वाह ! ये [illegible] कमाई है ॥
बिठा कर रांड घर में जानते हैं आबरू अपनी ।
मगर इज्ज़त नहीं इस में सरासर रूस्याही है ॥
हमल गिरते हैं लाखों क्या नहीं मालूम है तुमको ।
अरे अन्यायियो ! लज्जा कहां तुम ने गँवाई है ॥
कहां जाती रही दिल से शफ़क्क़त मादरी पिदरी ।
करी दानिस्ता जो हमसे बस ऐसी दाग़अदाई है ॥
यही कलमा निकलता है ज़बां से अपने अब हरदम ।

न पाये सुख कभी वह जिसने यह रीति चलाई है ॥
करो मत ज़ुल्म हमपर हमतो आपही गमकी मारी हैं।
सुना होगा खुदा तक नाले की आखिर रसाई है ॥
कोई पूंछे है जब हमसे कि तुम क्यों रोती हो प्यारी।
बताओ तुम ने क्यों रो,रो के यह नदी बहाई है ॥
कहो तो क्या तुम्हें खाने पहनने को नहीं मिलता।
वृथा ही बेवजह क्यों तुमने ये शोजिश उठाई है ॥
तुम्हारा काला मुह जावो निकल तुम जल्द अब घरसे।
वृथा ही रंज क्यों तुमने करी हम पे चढ़ाई है ॥
पड़ोसिन कहती हैं अक्सर हमें शादी के मौके पर।
यहां मत आवो गाई जाती शादी की बधाई है ॥
दुलहन नहा धोके बैठी है अभी कंगना पहिन करके।
तू मत आ सामने उसके अभी मेंहदी लगाई है ॥
तेरा क्या काम है क्यों बदसगूनी है करी आकर।
चली जा तू यहां से सामने नाहक को आई है ॥
बेजुज़ आहे जिगर उस वक्त क्या मुँह से निकलता है।
कहैं दर्द अपना किससे किसको अपनी मित्रताई है ॥
हमारे रंजो ग़म की दास्ता को कौन सुनता है।
मुखालिफ बाप है और दुश्मने जां अपना भाई है ॥
मदन पीड़ा करी है दिल में है रंजो अलम अज़हद।
कभी है बिस्तरे गमगाह टूटी चारपाई है ॥
करें दो चार और छै सात तक तो अपनी सब शादी।
किसी के आज तक यह बात भी बस दिल में आई है ॥

कि इन बेचारी अबला देवीं का क्या हाल है अबतर।
है इनकी क्या खता इन पर जो यह ऐसी तबाही है॥
स्वयंवर होता था पहले यहां शादी के मौक़े पर।
जो उम्दा रस्म थी एक लख्त वह तुमने मिटाई है।
बजाये इस के की जारी रसूमाते कबीहा को।
न सोचा कुछ कि खुदगर्ज़ों ने यह रीती चलाई है॥
हुआ था मुश्फ़िक़ो ग़मख्वार अपना एक यहां पैदा।
ग़ज़ब देखो कि उसने भी करी हम से जुदाई है॥
अहो! वह वेद का ज्ञाता परम ज्ञानी परम कोविद।
कहां है जिसने हमको वेद की आज्ञा बताई है॥
दया थी नाम में आनन्द था उपदेश में जिस के।
हमारी हेतु अपनी जान तक जिस ने गँवाई है॥
मनू और वेद में जब आज्ञा है अक़दसानी की।
तो फिर करने में तुमने देर अब कैसी लगाई है॥
हज़ारों लाल ता रोई तुम अब भी क्या रुलाओगे।
बताओ तो सही क्या कुछ तुम्हारे मन समाई है॥
जो खारिज अक़्ल हैं उनका न तुम हर्गिज़ सुनो कहना।
हिये के अन्धे हैं आंखों में चरबी उन के छाई है॥
अकारण ही नहीं इस मुल्क की हालत हुई अबतर।
हमारी आह से इस हिन्द पर आई तबाही है॥
जवानी की लहर उठती है ज्यों मौजे बहर आज़म।
हया बहजाती है होती किनारे पारसाई है॥
सती होना ही अच्छा था हमारे रांड होने से।

कहां जायें कहें किस से, प्रभो! तेरी दुहाई है॥
हमारी ये जवानी और ये पैरहन है खाकी।
लिबासे सुर्ख की जा हैफ! ये धूनी रमाई है॥
करें आनन्द सब अखतर शुमारी हमको हो हासिल।
ये क्या इन्साफ है और यह तेरी कैसी खुदाई है॥
खिलाते हमको बालेपन में हैं, मा बाप गुड़ियों से।
जवानी में उन्हों ने हमको कर रँडिया बिठाई है॥
ज़ईफ़ी में कहें किस से कि हम पर ये मुसीबत है।
बजुज ईश्वर न सास अपनी न अपनी मा की जाई है॥
सिवा अपने पती या पुत्र के होता है कौन अपना।
जो आड़े वक्त काम आये अजब मुशकिल बनाई है॥
खिला दो जहर या दो तुम मुसीबत से छुड़ा हमको।
खुदा के वास्ते क्यों तुमने ये आफ़त मचाई है॥
किये पहिले जनम में क्या बुरे आमाल ये हमने।
जो हमको कैद बेजा से नहीं होती रिहाई है॥
सदा दिन एकसां रहते किसी के हैं नहीं हर्गिज़।
उठाया जिसने दुख उसने कभी राहत भी पाई है॥
वही काटेंगे बस इस रस्म बद को तेरा हिम्मत से।
जिन्हों ने दे दिलासा धीर कुछ अपनी बँधाई है॥
जो आली होसला हैं वह नहीं डरते हैं जोहला से।
बस अब अय आर्य भाईयो! दमे मुशकिल कुशाई है॥
मदद मज़लूम वाजिब है यही है फर्ज़ इन्सानी।
बहुत सों ने रिफाहे कौम में जां तक गँवाई है॥

तुही है सबका एक ईश्वर तेराही नाम जगदीश्वर।
दयालू और दयासागर तुही सब का सहाई है॥
रहीमा आदला बन्दा निवाज़ा नाम है तेरा।
तु कर बख़शिश सज़ा आमाल अज़हद हमने पाई है॥
दिले नाशाद क्योंकर शाद हों तेरी कृपा के बिन।
बिलाशक नालये बेदाद की तुझ तक रसाई है॥

भजन ३८६

विधवा अनाथ बिचारी, हा! सिसक २ रोती हैं॥ टेक॥

कठिन हृदय कैसा कर लीन्हा, दया धर्म सबही तज दीना।
पहाड़ दुख का ढकेल दीना, विधवा कर मन भारी॥
दबि पड़ी जान खोती हैं॥ हा० १॥

उठ उद्धार करो क्यों न इनका, लिखा देखलो मनु वेदन का।
तज खटका स्वार्थी दुर्जन का, महाकष्ट हो ढारी॥
वह अँसुवन मुख धोती हैं॥ हा० २॥

तुम तो जब रँडुवे हो जाओ, पुनर्विवाह कर चैन उड़ाओ।
कभी जियत शिर लाय बिठाओ, तुम सौतिन हत्यारी॥
यह जान अधिर होती हैं॥ हा० ३॥

खुदगर्जन की सुन गाथायें, जो हानी भई तुम्हें बतायें।
कई करोड़ बिलखें विधवायें, देके शाप अति भारी॥
आखिर इज्जत खोती हैं॥ हा० ४॥

दादरा ३८७

टेक-मत विधवायें बाली रुलाओ जो ॥

दो दो बरस कहीं चार २ बरस की। कोई बरस दस खेलें हँस हँस। विधवा हैं नहिं जाने कुछ बस ॥ हा! मत० १ ॥

ऐसी ऐसी कन्या जो फेरों की चोर हैं। तरस तो खाओ ब्याह रचाओ। उनका कुछ अपराध बताओ ॥ हा! मत० २ ॥

कितनी गई संग नीचों के धन ले। गर्भ गिराये ज़हर दिलाये। कितनों ने योंही प्राण गँवाये ॥ हा! मत० ३ ॥

कितनी बाजारों में बैठी हैं देखो। बनी हैं बेश्या, कर रहीं पेशा। हा! तुम को पर नहीं अन्देशा ॥ हा! मत० ४ ॥

पाठक कहैं मित्रो! इज्जत बचाओ। होश में आओ, जहां तक पाओ। इनके पुन: संस्कार कराओ ॥ हा! मत० ५ ॥

भजन ३८८

मा बाप बाल विधवन के, भर भर आंसू रोते हैं ॥ टेक ॥

चिट्ठी में जब खबर ये आई, चेचक में मर गये जमाई। तनमनकी सुध बुध बिसराई, विकलहों शिर धुन धुन के। दिल टूक टूक होते हैं ॥ भ० १ ॥

पीट २ शिर भरें गिलानो, हा! बेटी तू अभी अयानो। कैसे कटेगी हाय! जवानी, खेल खेल बालपन के। यों कह कह मुख जोते हैं ॥ भ० २॥

जब तेरी टीपना दिखाते, हाय! तुझे सुख बड़ा बताते।
दान ब्रत कुछ काम न आते, संगी हुये सब धन के।
हम दुख में खायें गोते हैं॥ भ० ३॥

क्यों अम्मा तू चूरी फोरे, भर २ नैन क्यों आवें तोरे।
क्या कहूं फूटे भाग हैं मोरे, रोवैं सभी सुन सुन के।
सुख दुनियां का खोते हैं॥ भ० ४॥

सुन २ दुख किसकी है छाती, टूक २ हो २ नहीं जाती।
पाठक को यही रीति सुहाती, करो ब्याह भाई इन के।
क्यों पाप बीज बोते हैं॥ भ० ५॥

भजन ३८९

कह रोई विधवा बाल, उमर मेरी कैसे कटे वाली।
ना जानो कब हुई सगाई, ना जानो कब जोर मिलाई।
ना मैं दुनिया देखी भाली, चाल चली जाली॥क०॥
हरा बाग फूल ले आया, बिन जल है अबतो मुर्झाया।
सूख चले पत्ते अरु डाली, छोड़ गया माली॥क०॥
एक तो थी मैं कर्म की हारी, दूजे बिपता पड़गई भारी।
तीजे चर्खा कात के खाऊं, चौथे गोद खाली॥क०॥
किससे कहूं विपत मैं तनकी, जाने कौन पराये मनकी।
कठिन है पीड़ा बालपन की, सही न जाय आली॥क०॥
किसपर मेंहदी हाथ रचाऊं, किसपर रूप औ रंग बनाऊं।
किसपर पहिनूं अनवट बिछुवे, किस पर नथ बाली॥क०॥

मात पिताने कौन विचारी, जन्मतही मोहिं क्यों ना मारी।
नवलसिंह कहे ईश्वर तू है सब का वाली ॥क०॥

भजन ३६०

विधवन की भारी भीर, भरगई भारत में।

जो सुहाग की सार न जाने, केवल पीहर को पहचाने।
ऐसी रांड़ घनी घर घर में, उपजावति हैं पीर ॥ १ ॥
इनमें आंट रहेगी कबलों, जबलों ये बारी हैं तबलों।
जा दिन आवेगी तरुणाई, कोई न धरैगी धीर ॥ २ ॥
मन मनोज पर प्यार करेंगे, नयना लाज उतार धरेंगे।
रस विलास बन में विहरेंगे, सब के रसिक शरीर ॥३॥
जब तुम रोक रोक हारोगे, गिन गिन गर्भन को मारोगे।
हा तब शंकर कौन बनेगो, पंचन में कुल वीर ॥ ४ ॥

भजन ३६१

विधवा रो २ करें पुकार भारत मान रखाने वाले।

पति दुख के कारन भाई, कितनी होगई हैं हर्जाई।
तुमको शर्म जरा नहीं आई, ऋषि सन्तान कहाने वाले ॥ १ ।
बाली आयु में कर व्याह, विधवा करके देत बिठाय।
फिर कर्मों का दोष बताय, छुप छुप गर्भ गिराने वाले ॥ २ ॥
क्यों तुम हत्या रहे कराय, हमतो कहते हैं शर्माय।
कुछ भी समझो दिल में भाय, ये व्यभिचार बढ़ाने वाले ॥ ३ ॥

कहां गये व्यास कृष्ण भगवान, नारद ब्रह्मा मनू महान।
अर्जुन भीमसेन बलवान, पुनर्विवाह चलाने वाले ॥ ४ ॥
मनुस्मृति को देखो जाय, महाभारत को लेवो उठाय।
अथर्व वेद पढ़ो चित लाय, कांड नवम बताने वाले ॥ ५ ॥
अर्जुन कीन्हा पुनर्विवाह, भीषम पर्व रहा बतलाय।
तुमने अब तक लखा न हाय, विधवा भार बढ़ाने वाले ॥ ६ ॥
बलदेव की यही पुकार, घर घर बीर होवो तैयार।
विधवन दीजो पार उतार, ऐ द्विज वर्ण कहाने वाले ॥ ७ ॥

ग़ज़ल ३६२

क्या २ सितम हम पर सितम आरा नहीं करते।
इस पर भी तो हम आह का नारा नहीं करते ॥
पहले तो जन्मते ही मारते थे माई बाप।
अब खौफ़ गवर्मेंट से, मारा नहीं करते ॥
करते हैं मगर और सितम नये नये हम पर
दुख दर्द दूसरों का विचारा नहीं करते ॥
बूढ़े मरीज़ मूर्खों के साथ व्याहते।
तकलीफ़ का कुछ ख्याल हमारा नहीं करते ॥
मौजूद एक नारि के करते हैं दूसरी।
खुदग़र्ज़ दिल में खौफ़ खुदारा नहीं करते ॥
इस सख्त सँगदिली से रुलाते हैं उम्रभर।
इकदम से सर को जिस्म से न्यारा नहीं करते ॥
अपने तो व्याह करते बुढ़ापे लों चार चार।

पर वेवा दुख्तरों का दुवारा नहीं करते ॥
खुदगर्ज़ हो गये हैं यह बाशिन्दगान हिन्द ।
कोई भी गमजदों का सहारा नहीं करते ॥
सुध लीजिये बल्देव अब अबलाओं की प्रभू ।
दीनों को इस क़दर तो बिसारा नहीं करते ॥

भजन ३९३

विधवों का सन्ताप रातदिन सबको दहता है ।
सम्बन्धी रोवें शिर धुन २, विकल हों इस अग्नी में भुन २ ।
हाय प्रभु हमें उठा पिता यों रो २ कहता है ॥ विधवों० १ ॥
गई विवाह में ताई के घर, जा २ असगुन होय यहां पर ।
बुरा मान चाहे भला, अपना शुभ सब कोई चहता है ॥ वि०२॥
हा हा व्यथा नहीं कहने की, बारी है दुख में जलने की ।
शिर पटके दीवार बहुत कुछ आंसू बहता है ॥ विधवों० ३ ॥
हैं हैं क्या है अम्मा बोली, क्यों रोती है मेरी भोली ।
जो चाहे सो पहन, भाई यों आकर कहता है ॥ वि० ४ ॥
अम्मा मैं कहीं भी नहीं जाती, ताई के घर गई हर्षाती ।
ललकारा मुझे हाय सब की दुरदुर तन सहता है ॥ वि० ५ ॥
कहा राड तू करती असगुन, अम्मा मुझ पर सहन न होतन ।
मन्द भागिनी ऐसी हाय मेरा जाना दहता है ॥ वि० ६ ॥
अबलों के हित दे तन मन धन, संस्कार पुनि करे यत्न सन ।
पाठक जो हो वीर जगत में वही यश लहता है ॥ वि० ७ ॥

कहां गये व्यास कृष्ण भगवान, नारद ब्रह्मा मनू महान ।
अर्जुन भीमसेन बलवान, पुनर्विवाह चलाने वाले ॥ ४ ॥
मनुस्मृति को देखो जाय, महाभारत को लेवो उठाय ।
अथर्व वेद पढ़ो चित लाय, कांड नवम बताने वाले ॥ ५ ॥
अर्जुन कीन्हा पुनर्विवाह, भीषम पर्व रहा बतलाय ।
तुमने अब तक लज्जा न हाय, विधवा भार बढ़ाने वाले ॥ ६ ॥
बलदेव की यही पुकार, घर घर वीर होवो तैयार ।
विधवन दीजो पार उतार, ऐ द्विज वर्ण कहाने वाले ॥ ७ ॥

गज़ल ३६२

क्या २ सितम हम पर सितम आरा नहीं करते ।
इस पर भी तो हम आह का नारा नहीं करते ॥
पहले तो जन्मते ही मारते थे माई बाप ।
अब खौफ़ गवरमेंट से, मारा नहीं करते ॥
करते हैं मगर और सितम नये नये हम पर ।
दुख दर्द दूसरों का विचारा नहीं करते ॥
बूढ़े मरीज़ मूर्खों के साथ व्याहते ।
तकलीफ़ का कुछ ख्याल हमारा नहीं करते ॥
मौजूद एक नारि के करते हैं दूसरी ।
खुदग़र्ज़ दिल में खौफ़ खुदारा नहीं करते ॥
इस सख्त सँगदिली से रुलाते हैं उम्रभर ।
इकदम से सर को जिस्म से न्यारा नहीं करते ॥
अपने तो व्याह करते बुढ़ापे लों चार चार ।

पर बेवा दुख्तरों का दुबारा नहीं करते॥
खुदगर्ज हो गये हैं यह बाशिन्दगान हिन्द।
कोई भी गमजदों का सहारा नहीं करते॥
सुध लीजिये बल्देव अब अबलाओं की प्रभू।
दीनों को इस क़दर तो बिसारा नहीं करते॥

भजन ३९३

विधवों का सन्ताप रातदिन सबको दहता है।
सम्बन्धी रोवें शिर धुन २, विकल हों इस अग्नी में भुन २।
हाय प्रभु हमें उठा पिता यों रो २ कहता है॥ विधवों०१॥
गई विवाह में ताई के घर, जा २ असगुन होय यहां पर।
बुरा मान चाहे भला, अपना शुभ सब कोई चहता है॥वि०२॥
हा हा व्यथा नहीं कहने की, बारी है दुख में जलने की।
शिर पटके दीवार बहुत कुछ आसू बहता है॥ विधवों० ३॥
हैं हैं क्या है अम्मा बोली, क्यों रोती है मेरी भोली।
जो चाहे खा पहन, भाई यों आकर कहता है॥ वि० ४॥
अम्मा मैं कहीं भी नहीं जाती, ताई के घर गई हर्षाती।
ललकारा मुझे हाय सब की दुरदुर तन सहता है॥ वि० ५॥
कहां रांड तू करती असगुन, अम्मा मुझ पर सहन न होतन।
मन्द भागिनी ऐसी हाय मेरा जाना दहता है॥ वि० ६॥
अबलों के हित दे तन मन धन, संस्कार पुनि करे यत्न सन।
पाठक जो हो धीर जगत में वही यश लहता है॥ वि० ७॥

भजन ३६४

माय मेरी तुरियां चू फोरे, मुझे नन्दा तरती हाय ।

तू तो तहे थी बनेदी नौद्री, पत तुझे घड़वा दूँ तिलदी ।
आज उतारे है चूंसिदरी, नथ बिछुवे मोरे ॥ मुझे० १ ॥

तड़े छड़े झांझन अरु चाली, झांवर नुइयां मेरी निताली ।
हार पँचलड़ी भू में दाली, चों फेंदे तोरे ॥ मुझे० २ ॥

हाय माय तू हो दई वैरिन, छोड़ मुझे मैं जाऊं हूं खेलन ।
लाले तरोदे है चों हाथन, है दोरे दोरे ॥ मुझे० ३ ॥

माता सुन २ खाय पछाड़, खून बहे शिर दे दे मारे ।
छिपे चन्द्र नैनों के तारे, फूटे भाग तोरे ॥ मुझे० ४ ॥

हाय शोक दिल टुकड़े होवे, ज्यों वह विधवा कन्या रोवे ।
पाठक लाले कूदे सोवे, झूले हिंडोरे ॥ मुझे० ४ ॥

भजन ३६५

छोड़ दे अब मेरी मैया मेरा हाथ दूघने लदा ।

छोर्ती २ फूर्ती सारी, अच्छी अब मत फोले प्यारी ।
नई मँगा दई बन्दी वारी, लादे या मैया ॥ मेरी० १ ॥

तुरियां तो सब फूर्ती मेरी, छन कंगन तो सासू केरी ।
खन्दुये निकाले से मुँह वाले, दी संदयासी ग्रैया ॥मे०२॥

चूं अम्मा तु रोये जावे, चूं तेरी अँखियां भर २ आवे ।

भूख लगी रोती नहिं लावे, दे दे दे दिया ॥ मेरी० ३ ॥
हाय शोक यों रोवे बाला, कोई नहीं रहा समझानेवाला ।
पाठक ईश्वर तू रखवाला, सबका रखवैया ॥ मेरी० ४ ॥

भजन ३९६

विधवा लाचार, व्यथा सुने जिया धड़के ।
गोदी ले फिराये फेरे, बालम मृत्यू ने घेरे ।
नहीं कुछ जानी सार ॥ १ ॥
वह मात पिता की प्यारी, मांगे गहना नई सारी ।
देख तीजो त्योहार ॥ २ ॥
बे सुध हो माता बोली, नहीं पहना करते भोली ।
बही नैनन जलधार ॥ ३ ॥
तू तो विधवा है बेटी, लिखी किस्मत जाय न मेटी ।
न कर सकी श्रृंगार ॥ ४ ॥
गई बीत उमर सब बाली, और उसन सुधि सँभारी ।
रोवे छुप २ घर बार ॥ ५ ॥
टेहले में चाची के जावे, गुस्से हो नाक चढ़ावे ।
सौ सौ दे ललकार ॥ ६ ॥
कोई आत्म घात करती है, कोई फांसी खा मरती है ।
कोई विष खाती नार ॥ ७ ॥
इतिहास पुराणस्मृती, श्रुति भी क्या आज्ञा करती ।
व्यवस्था लो नर नार ॥ ८ ॥

पातक योंही नाश कर दीना, भारत लेहु विचार ॥ जो० ॥
नाम अहल्या जिसका आया, इन्द्रादिक सँग गमन बताया ।
फिर पीछे कन्या ठहराया, धन धन बुद्धि तुम्हार ॥ जो० ॥
दिव्या देवी थी यक्ष नारी, इकिस पति की भई पियारी ।
देखो पद्मपुराण मँझारी, फिर कैसी तकरार ॥ जो० ॥
एक नारि ग्यारह भरतारा ऐसा, भजन बनाकर सारा ।
अब तक भी वह नहीं सँभारा, अब तो देहु बिसार ॥ जो० ॥
एक पुरुष सँग एकही नारी, इससे अधिक न कहीं उचारी ।
आर्य सभा समझाने हारी, समझावे कर प्यार ॥ जो० ॥
न्याय तुला पर तौलो प्यारा, हठधर्मी से करो किनारा ।
पाठक कहे ये हितू तुम्हारा, तजो अलत व्यवहार ॥ जो० ॥

भजन ४०१

मेरे प्यारे मित्रो ! विधवा विवाह रचाना ।

आत्मघात अरु बदनामी से इज्जत चहिये बचाना ॥
ब्राह्मण संग ब्राह्मणी व्याहो, क्षत्री अरु क्षत्राणी मिलाओ ।
वैश्य और वैश्यानी लाओ, शूद्र और शूद्रानी सुन्दर ।
ऐसे जोड़े मिलाना भाइयो ॥ वि० १ ॥
छै ही वर्ष की आयू माहीं, व्याह भयो गौना भयो नाहीं ।
कौन कहै वह कन्या व्याही, पति गये परलोक उसे ।
क्यों न कन्या पदवी दिलाना ॥ वि० २ ॥

जैसे एक कागज लिखवाया, उसे रजिस्ट्री जाय कराया।
नाजायज मुंसिफ ने पाया, लेन देन नहीं हुआ था।
उस को समझो चतुर सुजाना ॥ वि० ३ ॥

कितनी स्वतन्त्र आयु खोतीहैं, कितनी आत्महत्या होतीहैं।
कितनी हा ! प्रति घर रोती हैं, महा अनर्थ को देख के।
पाठक तुम को पड़ा जगाना ॥ वि० ४ ॥

भजन ४०२

विधवा कह रहीं पुकार के, मेरा दुश्मन हुआ ज़माना।

प्रथम तो मेरा जननाही किसी को न भाया।
मेरे मा बापों ने पुत्र को होना चाहा॥
हुआ रंज बहुत गर पुत्री हुई सुन पाया।
पर खैर करी जो मुझे नहीं मरवाया॥

कितनी मेरी संग सहेली, नहीं मां की गोद में खेली।
ले घुट २ चलीं अकेली, सुन ईश्वर सब के बेली॥

ह हुये घोर अन्याय, गले घुटवाये, दया नहीं लाये, चले
नियम सरकार के, जो मारे होय जेलखाना ॥ मेरा० १ ॥

मुझे उरे परे कर पांच वर्ष तक पाला।
बच्चों के खेल में समय मेरा सब घाला॥
गुड़ियों के विवाह का संस्कार यह डाला।
कर दिया बन्द विद्या पढ़ने का ताला॥

ब्राह्मण और नाई बुलाये, वर देखन को भिजवाये।
जहां घी और बूरे उड़ाये, झट वहीं तिलक कर आये॥

बूढ़े या बच्चे सजन, मिली नहीं लगन, हुये फिरें मगन।
सभी घर बार के, जल्दी से विवाह रचाना॥ मेरा० २॥

पन्ना पांड़े ने आकर लगन सुझा दी।
कह मीन मेष दोनों की राशि मिलादी॥
सबनेजुड़ मिल यही कहा जल्द करो शादी।
कर गुड़ियों काखेल में बाल विवहादी॥

झूलना।

कुछ दिन में खबर ससुराल से जब यह आई।
मरगये पति सिर के सुहाग सुखदाई॥
मैं खेल रही थी मां ने लिया बुलाई।
लगी कहने बेटी फूटगया तेरा कर्म है॥१॥

रोते २ हाथों की चुड़ियां तोड़ी।
पैरों में से काढ़ी बिछुओं की जोड़ी॥
मेरे माथे पर बिन्दी थी वह भी फोड़ी।
हाय मैंने ऐसा कौन किया कुकर्म है॥२॥

अब सोचो तो सब भाई, कहां घुसड़ गई पंडिताई।
यह कैसी लगन सुझाई, जो विधवा कर बिठलाई॥

सब कहैं फूट गया भाग, रहा न सुहाग, गई लग आग।
सब शृंगार उतार के, दे दिया फ़क़ीरी बाना॥ मेरा० ३॥

पर जब तो मेरी उमर बहुत थी बाली।
जो खेल कूद में, मां बापों ने टाली ॥
पर अब तो आने लगे फूल और डाली।
सभी छोड़ चला मैं करूं हाय! क्या आली ॥

छंद ।

कुछ तो कहो मैं क्या करूं जाता रहा सरताज है।
मेरे जी में थी हूंगी सती नहीं होने देता राज है ॥
माँ बाप से कैसे कहूं मुझे कहते आवे लाज है।
मैं आप से गई जगत से गई इसका कौन इलाज है ॥
अब क्या करूं जाऊं कहां रो २ पड़ी आवाज है।
किससे कहूँ कोई ना सुने बिगड़ा मेरा सब काज है ॥
मैं काम अग्नि से जरूं, जी मैं आये मरूं, खुदकुशी करूं,
पुलिस से डरूं। बस बैठ रहूं मन मार के, था इस से शुभ मरजाना ॥ मे० ४ ॥

कुछ तो मेरा इन्साफ करो अब भाई।
क्या आर्यावर्त में सभी हुये अन्याई ॥
अब करो दया की दृष्टि बहुत दुख पाई।
मैं कैसे काटूं उमर रहा नहीं जाई ॥

छन्द।

दुनिया के सुख-भोग वही जिनका जिये भर्तार है।
मेरा जन्म वृथा ही जारहा जानी नहीं कुछ सार है ॥

मन की विथा किस से कहूं मतलब का सब संसार है।
मैं रात दिन तड़पूं पड़ी जीना हुआ दुशवार है॥
जब पुरुष की नारी मरे विवाह दूसरा तैयार है।
पर बेखता विधवा विचारी को नहीं अधिकार है॥
अब तो यह कुरीति निकालो, बखता न मारे डालो।
वेदों की आज्ञा पालो, मेरा जाता धर्म बचालो॥
मत वासुदेव अब डरो, पुनर्विवाह करो, इनके दुख हरो।
देखो स्मृति विचार के, सब ऋषि मुनियों ने माना॥ म०५॥

भजन ४०३

बहे नयन जलधार देख बाल विधवन को।
हाय कैसी चिट्ठी आई, चेचक में मरे जमाई।
हिये में लगे कटार॥ देख० १॥
मां बाप भाई रोते हैं, आंसु से मुख धोते हैं।
बेटी क्या जाने सार॥ देख० २॥
झट मां ने सुता बुलाई, लिया गोद उसे बिठलाई।
फोड़ी चुरियों की लार॥ देख० ३॥
अनवट बिछुवे नथ वाली, सब रोते २ निकाली।
निकाला गले से हार॥ देख० ४॥
सिर पीट मात रोती है, पर कन्या खुश होती है।
मांगे गुड़ियों की पिटार॥ देख० ५॥

सिर का शृंगार उतारा, और नीला वस्त्र डाला।
बनादी विधवा नार ॥ देख० ६ ॥
मुझे बालेपन में ब्याहा, सारा सुहाग हुआ स्वाहा।
नहीं देखा भर्त्तार ॥ देख० ७ ॥
कहे ऊधोराम समझाई, बनो वेदों के अनुयाई।
करो फिर से सस्कार ॥ देख० ८ ॥

दादरा ४०४

खड़ी रोवे एक विधवा विचारी रे।
हाय ! नाश जइयो काशीनाथ का, गर्दन पै धर गया भारी रे ॥
होतेही पैदा करदे सगाई, फिर ब्याह की तैयारी रे ॥ खड़ी० ॥
फेरों से पीछे प्रीतम को लेगई, वो माता की बीमारी रे ॥ ख० ॥
चढ़ी जवानी अब कैसे काटूं, जब देखूं दुनियादारी रे ॥ खड़ी० ॥
हाय वैरी हुआ है बाप हमारा, दुश्मन हुई महतारी रे ॥ ख० ॥
अपने विवाह तो करते हैं चार २ हम करलें तो जुर्मभारी रे ॥ ख० ॥
छिपर हम पाप लाखों कमावें, लाखों जान जांय मारी रे ॥ ख० ॥
कहे तेजसिंह तुम अबभी तो सोचो, क्यों हुए मूर्ख अनारी रे ॥ ख० ॥

दादरा ४०५

उन्हें मुझपर तरस नहीं आयारे।
सात बरस की मैं, साठ के बालम, कैसा ये जोड़ मिलायारे ॥
ले करके नक़दी पापी, पिता ने, कुये में मुझको गिरायारे ॥ उ० ॥

सड़ २ के मरियो वह पंडित पुनीता, जिसने लगन वह सुझायोरे ॥ उ० ॥ कीड़े पड़ें उस मिस्सर के तन में, जिस ने विवाह यह करायोरे ॥ उन्हें ॥ काटूंगी क्यों कर उमर का रँडापा, यह न उन्होंने बतायोरे ॥ उन्हें० ॥ लालच के वस हो इन सब ने सालिग, कैसा पाप कमायोरे ॥ उन्हें० ॥

ग़ज़ल ४०६

हम से शौहर की जुदाई अब सही जाती नहीं ।
चैन दिन को रातको आंखोंमें नींद आती नहीं ॥
ऐसे दुष्टों का बुरा हो ब्याह बचपन में करें ।
विधि मिलाते पंडितों को कुछ समझ आती नहीं ॥
रांड होकर उम्र भर हम दुःख सहती ही रहें ।
तब भी अंधों के हृदय में कुछ शरम आती नहीं ॥
पति के जीते औरतों का दुःख सुख पूछें सभी ॥
साथ छोड़ा जब सनम ने फिर कोई साथी नहीं ।
हाल दिल किससे कहें अपना सुनावें किसको ग़म ।
है शरम की बात औरों से कही जाती नहीं ॥
देखकर हमपर मुसीबत कुछ यतन करते नहीं ।
ऐ अधर्मी पापियों ! तुम को हया आती नहीं ॥
सोच लो अपने ही दिलमें जो मुसीबत हम पै है ।
काम की पीड़ा ये तुम से भी सही जाती नहीं ॥
करते हो दो चार शादी और भी रंडी से प्यार ।

क्या खता हम से हुई तुम को दया आती नहीं ॥
रस्म तोड़ो बचपने के ब्याह की सब सज्जनों ।
श्रीराम भारत की भलाई और दिखलाती नहीं ॥

ग़ज़ल ४०७

तड़पती हैं पड़ी बेवा जरा इस ग़म पै दिल दीजै ।
है छोड़ा साथ खाविंदने, रहिम कुछ आपही कीजै ॥
किया वादा था स्वामी ने, न पूरा कर चले कुछ भी ।
छुटी मँझधार में किश्ती, पकड़ कर पारही कीजै ॥
नहीं माता पिता साथी, न साथी कोई ससुरारी ।
तरस खाकर ज़रा इनपर, यही तदबीर अब कीजै ॥
रचाकर ब्याह फिर इनका, रहिम दिल होके सब सज्जन ।
रिहाई ग़म से कर इनकी, यही दुनिया में यश लीजै ॥
कहां जावें कहें किस से, सुनेगा कौन अब इनकी ।
हितैषी हो जो भारत के, तो इनका साथ ही दीजै ॥
न भूलें उमर भर नेकी, जो होगी साथ में इनके ।
उठाओ ब्याह का बीड़ा, न कुछ अब देरही कीजै ॥
मुसीबत देख बेवों पर, तरस श्रीराम आता है ।
सो अब मिलकर सभी सज्जन, मुसीबत से रिहा कीजै ।

❋ ११ अबला-विनय ❋

ग़ज़ल ४०८

विद्या का हम सबों को पिता दान दीजिये।
हमारी विनय ज़रासी है यह ध्यान दीजिये॥
पशुवत् हमारी आज कल जो होरही गती।
किसका है यह नतीजा इसे जान लीजिये॥
शिक्षा में अपने पुत्रों के हों इस क़दर यतन।
क्या हम नहीं हैं बेटी ज़रा कान कीजिये॥
सत शास्त्र और वेदों में देखो है क्या लिखा।
समदृष्टि रख सब का पिता मान कीजिये॥
सोना न रूपा मोती न कुछ मांगती हैं हम।
ज़ेवर हमें विद्याही फ़क़त दान दीजिये॥
लीलावती सुमित्रा सी बनना है क्या कठिन।
सम्भव है सभी इससे हां अनुमान कीजिये॥
सुलभा ने जनक की जो परीक्षा वेदांत ली।
कारण वह कौन था अनुसन्धान कीजिये॥
ज्ञानी पती अपने को चुडैला ने जो किया।
बस विद्याही की महिमा थी यह जान लीजिये॥
कन्यों की पाठशाला यहां ठौर ठौर हों।
उपकार हो सुधार हो प्रमाण कीजिये॥
पढ़ने से ज्ञात होता है सीता के ज्ञान का।

विद्यावती बनाओ हमें ज्ञान दीजिये ॥
स्वीकार निर्बलों की सदा से हुई पुकार ।
विद्या को देदो औषधि बलवान कीजिये ॥

भजन ४०६

दोहा–जिस घर में होता नहीं, नारिन का सत्कार ।
नरक तुल्य वह भवन है, निष्फल सब व्यवहार ॥
स्त्री-शिक्षा का न हो, जबतक मित्र प्रचार ।
करो हज़ारों यत्न पर, हरगिज हो न सुधार ॥

टेक—मित्रों कैसे हो कल्याण, जब तक पुत्री नहीं पढ़ाओ ।
ईश्वर ने दिया अधिकार बराबर सब को ।
जल वायु अग्नि आहार बराबर सब को ॥
ऋतु सर्दी गर्मी बाहार बराबर सब को ।
ऐसे ही विद्या भण्डार बराबर सब को ॥

जितने ही नर नारी हैं, सब विद्या अधिकारी हैं ।
जब प्रभू न्यायकारी हैं, सब केही हितकारी हैं ॥

पर तुम ने किया अन्याय, शूद्र बतलाय, शोक है हाय,
बनाया उनको पशु समान ॥ जब तक० १ ॥

गाड़ी के तुल्य सबने यह गृहस्थ बताया ।
स्त्री पुरुषों को दोनों धुरे ठहराया ॥
इस दोनों धुरों को जिसने सम बनवाया ।
इस गृहस्थी रूप गाड़ी को उसने चलाया ॥

दो यह सिकन्दराबाद कांगड़ी, चौथा बदायूं में भी तुमने ढंग डाला ॥ कन्या० १ ॥

विद्यावान पूर्ण ब्रह्मचारिन, शीघ्र बनाओ वाला ।
पढ़ पढ़ाय कर दूजा आश्रम, जिस से बनेगा मित्रो पूरे सुख वाला ॥ कन्या० २ ॥

नाड़ी[1] गर्ण[2] अरु वर्ण[3] यथा विधि, मिले मित्र तेहि काला ।
फिर स्वभाव गुण कर्म देखके वर कन्या का सम्बन्ध हो निराला ॥ कन्या० ३ ॥

बनें गार्गी सुलभा जैसी, यह तत्वज्ञ विशाला ।
पाठक को तब हो प्रसन्नता, जीतें सभायें काट डारें भ्रम जाला ॥ कन्या० ४ ॥

भजन ४१६

नर पैदा हों ऋषि मुनि नारियों से ।

गौतम ऋषि जिसने न्याय बनाया, पातंजलि जिसने योग दिखाया ।
दुग्ध पिये महतारियों से ॥ नर० ॥

कपिलदेव जी सांख्य के कर्त्ता, जैमिनिजी मीमांसा रचायता ।
पाई शिक्षा महतारियों से ॥ नर० ॥

हुये कणाद वैशेषिक वारे, व्यास वेदान्त के रचने हारे ।
पाले माताओं ने भाड़ियों से ॥ नर० ॥

मित्रो तुम इनका आदर सत्कार करो, जा चाहैं सालाके सामनेधरो।
कड़ुवा न बोलो विचारियों से ॥ नर० ॥

सुन्दर उपदेश दे कुसंग छुड़ाओ, विद्या में जप तप में लगाओ।
रक्खो सम्बन्ध सत्कारियों से ॥ नर० ॥

पाठक जो अपना चाहोभला तुम मातायें शिक्षक अपनी बनाओतुम।
बच जाय भूमको बीमारियों से ॥ नर० ॥

❀ २१ स्त्री-शिक्षा ❀

गजल ४१७

उठो बहनो! पढ़ो विद्या, यही शिक्षा हमारी है।
बिना विद्या के पढ़ने से, बुरी हालत तुम्हारी है ॥ १ ॥

तुम्हारा नाम शूद्रों में हुआ शामिल है ऐ बहनो।
बनी हो पैर की जूती यही दुख हमको भारी है ॥ २ ॥

तुम्हारा मान और इज्जत नहीं अब कुछ रहा बाक़ी।
सबब इसका यही है री अविद्या तुमको प्यारी है ॥ ३ ॥

तुम्हीं को कहते थे लक्ष्मी तुम्हाराही नाम था देवी।
तुम्हारे ही मूर्ख होने से हुआ भारत दुखारी है ॥ ४ ॥

यही वसुदेवकी विनती, न जबतक तुम पढ़ो विद्या।
तभी तक यह बुरी हालत, हमारी और तुम्हारी है ॥ ५ ॥

भजन ४१८

दोहा ।

कौशल्या माता भई, जग में परम अनूप ।
तासु पुत्र श्रीरामजू, भये आर्य कुल भूप ॥ १ ॥

सीता सुमति सुशीलता, सब जग में विख्यात ।
जिहि चरित्र उपमा लिखत, कविजन मन सकुचात ॥ २ ॥

देवहुती विद्याधरी, अनुसूया गुण गेह ।
पति व्रत धर्म सिखावती, विद्या सहित सनेह ॥ ३ ॥

नारि गार्गी जग विदित, अति विरक्त संसार ।
ब्रह्मचारिणी परम दृढ़, विद्या सिन्धु अपार ॥ ४ ॥

सभा बीच गर्जत रहीं, वेद शास्त्र मुख द्वार ।
ज्ञानी पण्डित जय किये, रहे सभी मन मार ॥ ५ ॥

ज्ञानवती मन्दालसा, परम शील सन्तोष ।
विद्या बुद्धि सुलभ्यता, धर्म धैर्य धन कोष ॥ ६ ॥

गान्धारी शुभ कुलवती, पतिव्रत धर्मागार ।
सुख में सुख दुख में दुखी, रही स्वपति अनुसार ॥ ७ ॥

श्रीपटरानी रुक्मिणी, पतिव्रत धर्म निकेत ।
तन मन धन अर्पण कियो, पती प्रेम के हेत ॥ ८ ॥

पार्वती शुभ गुणवती, पती प्रेम आधार ।
जिहि गुण सुन शिक्षा लई, सब कुलवन्ती नार ॥ ९ ॥

विद्यानिधि लीलावती, भारत जीवन प्राण।
तासु रचित पुस्तक सुभग, मानत सभी प्रमाण ॥ १० ॥

दमयन्ती के चरित सुन, बहन नयन से नीर।
जिहि न होय रोमाच तन, का जग में अस धीर ॥ ११ ॥

क्षत्रिय सुता शकुन्तला, सत्य शील सुविवेक।
लाखन सकट वन सहे, पर्क धर्म की टेक ॥ १२ ॥

पतिव्रत कोटिन भई, गिनि सकैन अस कौन।
जिहि चरित सुन होत हैं, सभी कवीश्वर मौन ॥ १३ ॥

पहिले बाला जो भई, सब विद्या की खानि।
हाय! आज अक्षर पढ़त, अवज्ञा करत गज्ञानि ॥ १४ ॥

एक दिवस भारत हतो, सुख सम्पति भरपूर।
भई नारि विद्या रहित, कीनो चकनाचूर ॥ १५ ॥

दादरा ४१६

कैसी शिक्षा दें माता हमारी।
बचपन से नहिं देवीं सुन्दर सिखावन।

सोता पावें, तकिया लगावें, माँ सोवे यों धोखा सिखावें। हा! कैसी० १ ॥ जब कहतो बेटा पढ़ावेंगे तुमको। क्यों? यहाँ यों सुनावें, रंडी बुलावें, नन्हीं बहू ले ब्याह करावें, हा! कैसी० २॥ महात्माओं के जीवन सुनाती जहँ, वहाँ कहानी चुड़ैल मसानी सुना किये डरोक महानो। हा! कैसी० ३ ॥ जहाँ कहनी

देखो बेटा चोरी न कीजो । बच्चा किसी का उठा लाये पैसा, उस का मंगा दें वर्फ़ी पेड़ा । हा ! कैसी० ४ ॥ क्यों ना ? पढ़ाती हो, तो दें ये उत्तर जो जीवेगा, तो पढ़ लेगा उमर पड़ी है क्या है चिन्ता । हा ! कैसी० ५ ॥ पाठक कहे बहिनो ! अब भी समझ लो, यही तुम्हारे, प्राण अधारे, सुधर सके हैं। जबलों बारे । हा ! कैसी० ६ ॥

भजन ४२०

सुख नहिं मिलना यार, मूर्ख नारि से हर्गिज़ ।

मुंशी मास्टर और पण्डित, घर में हो जायँ सब खण्डित ।
जब होती तक़रार ॥ मू० १ ॥

अंगरेजी अर्बी वाले, सब फिर किल दांत कराले ।
मिले जब मूर्खा नार ॥ मू० २ ॥

जो एम. ए. की डिगरी पाते, खुद उनकी हँसी उड़ाते ।
घर में तिरिया निपट गँवार ॥ मू० ३ ॥

विरिंग वाटर मांगा आई, बासी रोटी ले आई ।
हुआ अनुचित व्यवहार ॥ मू० ४ ॥

बाहर चलती पण्डिताई, घर में आ सब रिल जाई ।
तिरिया जब दे ललकार ॥ मू० ५ ॥

ये सारे दुःख उठाते, बुरा त्रियों का पढ़ाना बताते ।
कहां दई बुद्धि बिसार ॥ मू० ६ ॥

इस दुख से जो बचना चाहो, कन्याओं को जल्दी पढ़ाओ।
करो विद्या विस्तार ॥ मू० ७ ॥

भजन ४२१

आलसी नार।

फूहर आई घर में नार, धन्य भाग तेरे भर्तार।
सूद साद रक्खे नहीं घर की आलो में है पड़ी अंदर की ॥
एक ताक में रुपया धरा, दूजे में है गहना पड़ा।
दो दो दिन में लखती सुनी, घर में ढेरी लगी है दूनी ॥
चांवल दाल बँधी है पोट, वही पोट रही भू में लोट।
छपड़े में जो पापड़ धरे, चूहे ले ले भट में पड़े ॥
बिखरे बरतन बिखरी दाल, उघरे पड़े हैं सारे माल।
आंगन बीच में चर्खा खड़ा, धुरे उलटा पीढ़ा पड़ा ॥
हरदम घरके खुले किवाड़, कुत्ते बिल्ली करें बिगाड़।
रोटी टुकड़े जहँ तहँ परे, कौवे उड़ आंगन में गिरे ॥
चून चान घर बिगड़ा पड़ा, मालिक देखे टुक २ खड़ा।
जब फूहर ने रोटी करी, आधी कच्ची आधी जरी ॥
निमक पड़ा है बेतादाद, साग दाल कुछ नहीं सवाद।
जो पूछो लड़ने का हाल, इस में पूरा करे कमाल ॥
ध्यान लगा लड़नेमें सारा, इसी सबब भिनका घर द्वारा।
अच्छा मिला अगर घरवाला, अपना घर उन आप समाला ॥
जो मिल गये ऊन के ऊन, तो मारन लगे पड़ापड़ जूत।
आया बसन्त यों पाठक कहे, फूहर नारी हरदम दहे ॥

भजन ४२२

सुघड़ नार।

सुघड़ नार का सुनों हवाल, सभी चीज की करे संभाल।
लीप पोत घर करे सफ़ाई, चन्दा सी उजियाली छाई।
जो चीजें उसने मँगवाई, तोल जांच घर में लिखवाई।
हर एक चीज की जगह ठहराई, काम किया नहिं घबराई।
कुगडे में भी पड़ा है ताला, काली गुच्छा कील में डाला।
रुपया अलग अलग है जेवर, छाट रक्खे हैं एक कोने पर।
धुलकर धोती खूंटी धरे, कपड़े बड़े डारगनी परे।
बूंट फूल, मोजक जाने, गुलबन्द बुने दस्ताने।
अच्छा २ कहे कहानी, बने बहादुर बालक ज्ञानी।
पिता वचन तुम मानो ऐसे, रामचन्द्र ने माने जैसे।
बालक यावे हों या स्याने उनसे रहे यह कहना माने।
कपड़े धोबी लेजाय लावे, गिन गिनाय उसे लिखवावे।
लिखे हरएक घर का असबाब, आमद खर्च का अलग हिसाब।
जो खुद पै लिखना नहिं आवे, किसी पड़ोसिन से लिखवावे।
प्रीतम ले निज राजी रहे, काम करे जैसे वह कहे॥
जब बोले तब मीठी बानी, लजवन्ती चतुरा गुणखानी।
पाठक समझो जीवनमूर, होंय दरिद्दर सारे दूर॥

भजन ४२३

बहनो! तुम यह गुण धारलो, मन चाहा फल पाओगी।

वाली उमर में विद्या पढ़ना, घर में नहीं किसी से लड़ना।
यथा योग प्रिय भाषण करना, कडवे वचन सहार लो॥
सब दुख से छुट जाओगी॥ म० १॥

धर्म कमाई से धन जोड़ो, बुरे कर्म से मुखड़ा मोड़ो।
करना फजूल खर्ची छोड़ो, घर का खर्च विचार लो॥
नहीं मूर्खा कहलाओगी ॥ म० २॥

घर के कामों में चतुराई, तन वस्त्रों की करो सफ़ाई।
अब त्रियो सुनो कान लगा, गर्भाधान सुधा लो॥
अति उत्तम सुत जाओगी॥ म० ३॥

सेवा करना सासु ससुर की, माता पिता पती देवर की।
यह आज्ञा है परमेश्वर की बिगड़ी दशा सुधार लो॥
पतिव्रता कहलाओगी॥ म० ४॥

धीरजता धारो हे नारी, ज्यों द्रौपदी सीता ने धारी।
तेजसिंह कहे सुनो हमारी, भारत नाव उबार लो॥
जग में यश फैलाओगी॥ म० ५॥

होली ४२४

क्यों बनी हो गँवारी, पढ़ी नहीं विद्या भारी।
बिन विद्या के पावें न आदर, पुरुष होवें या नारी।
विद्या से जो नहि शोभित हो, समझे हैं उसको अनारी, सुनो तुम भारत नारी॥ क्यों० १॥

सुख सम्पति जो चाहो जगत् में, रहो पति आज्ञाकारी।
सासु ससुर अरु ननँद जिठानी, उनकी करो सेवा भारी, मानो यह सीख हमारी ॥ क्यों० २ ॥

पति आज्ञा जो करे है उल्लंघन, जानो उन्हें व्यभिचारी।
ऐसों की संतति जो छूटे हैं, वह भी हों हत्यारी, हों कितनी ही रूप सँवारी ॥ क्यों० ३ ॥

पहली नारी देखो दुलारी, कैसी थी सीता नारी।
पतिव्रता कहलाई जगत् में तजकर महल अटारी, चली वन जनक दुलारी ॥ क्यों० ४ ॥

श्यामसुन्दर कहैं तुम्हारो हितैषी, कीजो शोच विचारी।
प्राण जायँ पर धर्म न छोड़ो, दुख हो कितनाही भारी, मरो चाहो खाय कटारी ॥ क्यों० ५ ॥

सुहाग ४२५

बहनोंरी करलो सच्चा शृंगार।
जिस शृंगार से प्रभु मिल जावें, सब का प्राण अधार।
जिस भूषण में होवे न दूषण, करलो उसी से प्यार ॥ ब० १ ॥
सच्चा भूषण वह है विद्या, लूटे न चोर चकार।
नहिं वह टूटति नहिं वह घिसती, जिसका लगे न भार ॥ ब० २ ॥
पति के प्रेम की माला पहनो, सेवा समझ लो हार।
धर्म की चरचा चूड़ी समझो, आर्सी तत्त्व विचार ॥ ब० ३ ॥
पति आज्ञा को नथ एक समझो, भक्ति को कंगन जान।

ब्याहले प्रथम हॅसलीसो हॅसली, शीलको हॅसली मान ॥ व० ४ ॥
दया धर्म दो झुमके बना लो, टीका परउपकार ।
लौंग बुलाक है घर की सेवा, गहना यह कीमतदार ॥ व० ५ ॥
होय बिछोवा ना सन्ध्या का, यह बिछुवा दरकार ।
विद्या धरम में कीरति होवे, झांझन की झनकार ॥ व० ६ ॥
वेदी बन्दना कर स्वामी की, ज्ञान का सुरमा डार ।
मुकुन्द कहे सब सुख से रहोगी, मान करे संसार ॥ व० ७ ॥

दादरा ४२६

चेतोरी भारत नारी ओ भारत नारी । होगई बड़ी हानि ॥ चे० ॥
विद्या में तन मन देदो, हां तन मन देदो । करे यही कल्याण ॥
विद्या का पढ़ना सीखो, हां पढ़ना सीखो। जिस से हो फिरमान ॥
कीजो पतिकी सेवा, पति की सेवा । यही नियम व्रत दान ॥
कब्रों पै जाना छोड़ो, हां जाना छोड़ो । भ्रष्ट हुई सन्तान ॥
निद्रा से अबतो जागो, हां अबतो जागो । कैसी सोई चादरतान ॥
मूर्खों ने तुमको लूटा, हां तुमको लूटा । नहीं सूझे लाभ हानि ॥
अबभी जो बचना चाहो, हां बचना चाहो । विद्या में दो दान ॥
बहनो ! धर्मव्रत धारो, धर्मव्रत धारो । करे मुकुन्द बयान ॥ चे० ॥

भजन ४२७

मेरी प्यारी बहनो सोई हो बड़ी हो गाढ़ी नींद मे ॥ बड़ी० ॥
पती की तो सेवा करना, बालकों को शिक्षा देन। ।
तुमने तो भुलाया गाढ़ो नींद में ॥ मेरी० ॥

अच्छी २ विद्या पढ़ना, धर्म का तो संग्रह करना।
सारा ही गँवाया गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

ईश एक सच्चा तुम ने, सारी रचना की है जिस ने।
उसको भी भुलाया गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

देवता हज़ारों माने, कब्र भूत मुल्ला स्याने।
तुमने स्वप्न देखा गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

क्या बतावे पाठक आगे, अग्निहोत्र आदि त्यागे।
धर्म तो बिसारा गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

भजन ४२८

विन विद्या नहीं टलेगी बहनो मूरखता जोई।

कोई गुरू कर कंठी पहने, कोई बहुत व्रत लगी रहने।
तुलसा व्याह किये क्या कहने, गुड्डा रचे कोई ॥वि०॥
तैंतिस कोटि देवता पूजे, मथुरा आदि तीर्थ रह दूजे।
इनको छोड़ ताजिये सूझे, सब इज्जत खोई ॥वि०॥
मीरा माने सैयद मुल्ला, डोरी गंडे की हा हुल्ला।
भूत भवानी खुल्लमखुल्ला, कैसे मुक्ति होई ॥वि०॥
कुछ तो सोचो बहनो! मन में, पति पूजा करलो यौवन में।
पाठक शील रखो निज तन में, पूजो क्या होई ॥वि०॥

भजन ४२९

बहनो! है फ़रियाद सुनियो ज़रा हमारी ॥ सुनि० ॥

अब तुम से पढ़ना आवे, जैसे यह नीति सिखावे ।
तभी सुधरे औलाद ॥ सुनि० ॥

तुम नहीं व्यवहार को जानो, बरताव नहीं पहचानो ।
तभी होता है विवाद ॥ सुनि० ॥

तुम सदा दुखी रहती हो, मालूम है क्यों सहती हो ।
अविद्या करे फिसाद ॥ सुनि० ॥

विद्या ही दुःख मिटावे, मन माना नर सुख पावे ।
करो तन मन से याद ॥ सुनि० ॥

भजन ४३०

ख्याल ।

अपना पतिव्रत धर्म स्त्री जो जग बीच निभाती है ।
रहे सदा आज्ञा में वही सतवन्ती नारि कहाती है ॥
चाहे बुरा गुणहीन पती हो उसको शीश नवाती है ।
निर्धन रोगी क्रोधी से वह मन में नहिं दुख पाती है ॥
यज्ञ नियम व्रत धर्म समझ सेवा में चित्त लगाती है ।
मन बानी काया से प्रेम पद में वह खुशी मनाती है ॥
अपने पती का ध्यान गैर का सुपने में भी नहीं लाती है ।
निस्सन्देह छूट वह दुख से शर्म सुख को पाती है ॥
टेक–एक पतिव्रत धर्म निबाहलो, जो चाहो मुक्तिपद लहना ।
कीजे नित्य पती की सेवा, दोनों लोकों में सुख देवा ।

आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिल के सभी, क्या मजाल जो शील को मेरे हरें। तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया, मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं ॥ अय० ३ ॥

तू ने सहस्र अठारह जो रानी वरीं, तुझे इतने पर आया सबर ही नहीं। पर तिरिया पै जो तु ने ध्याद दिया, क्या नर्क का तुझ को खतर ही नहीं ॥ अय० ४ ॥

मेरी चाह जो थी तेरे दिल में बसी, क्यों न जीत स्वयंवर तु लाया मुझे। वह था कौन शहर मुझे दे तू बता, जहां स्वयंवर की पहुँची खबर ही नहीं ॥ अय० ५ ॥

जो हुआ सो हुआ अब भी मान कहा, मुझे राम पै जल्दी से दे तू पठा। कहे सीता वगर्ना तू देखेगा क्या, चन्द रोज़ में अब तेरा सर ही नहीं ॥ अय० ६ ॥

भजन ४३८

दोहा-अब तो चेतो नींद से, प्रिय भगिनी और माय।
तुम्हरी ग़फ़लत नींद से, भारथ उजरा जाय ॥

टेक-अरज ये बहनो हमारी है उठो बैरिन अविद्या को त्यागो ॥

तुम फँस के अविद्या में प्यारी, गृह आश्रम की करदी ख़्वारी।
हुई भारत की संतति अनारी, फिरत दर बदर दुखारी है ॥अ०१॥
तुम्हें अविद्या ने यह दिन दिखाया, गुण गौरव भी सारा गँवाया।
कोई सूझे न अपना पराया, न कुछ इज्जत रही तुम्हारी है॥अ०२॥
कुल लज्जा तुम्हारा धर्म है, उसे तजना ही खोटा कर्म है।

गाली गाते न तुमको शर्म है, लोग सब कहते गँवारी हैं।अ०३॥
पढ़ो विद्या धर्म को सँभारो, और सन्तान अपनी सुधारो।
मत आलस में समय गुज़ारो, उठो सुधि बुधि क्यों विसारी हैं॥४॥
सती सीता की ओर निहारो, सावित्री की करनी विचारो।
दमयन्ती ने दुख सहो भारो, धर्म अपने से न हारी है॥५॥
तजो मेलों मढ़ारों का जाना, है इन में धर्म का गँवाना।
निज प्रीतम से प्रीति लगाना, पन्थ यह कल्याणकारी है॥६॥
तजो नशे की चीजों का खाना, बल बुद्धी का नित्य बढ़ाना।
मत धूर्तों के फन्दे में आना, कुशल इस में ही तुम्हारी है॥७॥
तजो परघर का सोना और खाना तजो आपस का लड़ना लड़ाना।
कहें बलदेव यह नाज़ुक ज़माना, समझ पग धरना हुशियारी है॥८॥

भजन ४३६

नींद क्यों ऐसी है छाई मेरी बहनो ! खोलो आंख।
सीता रुक्मिण कुन्ती प्यारी अनसुइया मन्दोदरि नारी।
विद्योत्तमा द्रौपदी सारी कीरति जग पाई॥१॥
लीलावती भोज की रानी, जिसकी महिमा जाय न जानी।
हुसी पढ़ी गणितज्ञ बखानी, बहुत कविताई॥२॥
विद्याधरी गार्गी तारा, ऋषि पत्नी बहु जगत मँझारा।
जिन का गावे यश संसारा, सुन सुन पण्डिताई॥३॥
विद्या बिना पशू है जैसा, तिनको कहा शास्त्र में ऐसा।
यह क्या जाने धर्म है कैसा, पाठक समझाई॥४॥

दादरा ४४०

गिरी हुई है दशा ये सुधारोरी, गिरी हुई है ॥ टेक ॥

पहिली थीं विदुषी वेदों की ज्ञाता।
तुमने तो पढ़ना बिसारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

रोगों में वैद्यों को वे थीं बुलातीं।
तुमने तो स्याना पुकारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

वे तो विवाहों में सुन्दर गीत गातीं।
तुम तो सीठने प्रचारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

वे तो हवन से पवन थीं सुधारें।
धूनी से तुम तो बिगारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

आग लगा घर सब कुछ लुटाओ।
तुम तो उतार उतारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

नजर हुई जान मिर्चें जलाओ।
टुटके करो हो हज़ारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

दाने दिखाओ चामुण्डा पै जाओ।
मुर्गों को नाहक में मारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

ज्ञानी बनो शिक्षा दो जग को सुन्दर।
पाठक हितू है तुम्हारोरी ॥ गिरी हुई० ॥

भजन ४४१

टेक—पत्थर पूजो पति छोड़ के, तुम क्यों नहीं शर्माती हो।
पति के सँग फेरे पड़े प्यारी, क़ौलोक़रार हुये थे सारे ॥

सदा टहलनी रहूँगी तुम्हारी, उस से नाता तोड़ के।
जल ईंटों पै छिड़कानो हो॥ तुम० क्यों० १॥
सब नारी आओ घर घर स देखो ईंट उठाकर कर से।
इस में देवी दुर्गा किधर स देखो इस को तोड़ के।
अब क्यों दर्शन खानो हो॥ तुम क्यों० २॥
धोबी धीमर नीच वरण हैं, जिनकी तुमने लई शरण है।
तुम को तो नहीं जरा शरम है, दोनों हो कर जोड़ के।
झट पैरों पड़ जानो हो॥ तुम क्यों० ३॥
तेजसिंह माता चोखी है, घरों गोल में सोई है।
तुमने बुद्धि कहां खोई है, उन माता को छाड़ के।
अब क्यों धक्के खानो हो॥ तुम क्यों० ४॥

दादरा ४४२

करो पति पूजा बनो पिया प्यारी॥
पति अतिरिक्त पूज्य नहीं कोई, मानो सत् श्रुति कहत पुकारी॥ करो०॥
मत तुम फिरो वृथा झख मारत, बड़ पीपल जड़ पूजत भारी॥ करो०॥
इन बातन से धर्म नशत है, पूजो कबहूँ मत पीर मदारी॥ करो०॥
भूतन पै नहीं पूत मिलन कहूँ, बिगड़ गई कैसी अकल तुम्हारी॥ करो०॥

विद्या पढ़ मूरखता मेटो, फिर मन में शुभ देखो विचारी ॥ करो० ॥
भई पूर्व भारत में विदुषी, शुभ गुण खानि अनेकन नारी ॥ करो० ॥
पशुवत भई तहां तुम सुभगे, अपनो पतिव्रत धर्म बिसारी ॥ करो० ॥
आजहुँ त्याग बलदेव मूर्खता, लेहु शीघ्र निज धर्म सँभारी ॥ करो० ॥

दादरा ४४३

मेरी बहनो ! अक्ल कहां गँवाय दई ॥

पीरों फ़क़ीरों के पावों में लागी । अपने पती की सेवा भुलाय दई ॥ मेरी० ॥
मीरा मुहर्रम व गाजी मियां की । खीलों बताशों से क़बरें भराय दई ॥ मेरी० ॥
आप ही मरे क्या जिलावें किसी को । क्या कुछ समझ के तू बहिनी वहां गई ॥ मेरी० ॥
झाड़ों को वृक्षों को पत्थरों को पूजो । चेतन दलाकर हाय देवी बताय दई ॥ मेरी०
गाली बको बुरी ब्याह के समय में । हा ! हा !! अविद्या यह किसने सिखाय दई ॥ मेरी० ॥

ग्रह के फलों को यहां सच्चा मानों। झूठों ने अपनी माया फेलाय दई ॥ मेरी० ॥

पाठक है मन से हितैषी तुम्हारा। उसने तुम्हें चुन के शिक्षा बताय दई ॥ मेरी० ॥

भजन ४४४

लो पतिव्रत धार हैं यह धर्म तुम्हारा।
पति की आज्ञा शिर धारो, सारे मन वाद विसारो।
कहैं सत्पुरुष विचार ॥ १॥
गृह काज में दक्ष कहायो, अज्ञान अनीति मिटाओ।
गावे यश संसार ॥ २ ॥
पर पुरुष बन्धु सम जानो, निज पति ही को पतिमानो।
शास्त्र के मत अनुसार ॥३॥
जग में जीवन है थोड़ा, जो नियम धर्म व्रत तोड़ा।
तो मुर्खी धिक्कार ॥ ४ ॥

दादरा ४४५

हाय कैसा ये काम भूली हो अपना पतीव्रत।
अपने पतिको दो२ सौ गारो, स्याने दिवानों को झुक२ सलाम।
अपने ससुरजी की घनतीन रोटो, पीरों फकीरों को पर्फी बदाम ॥
अड़ोसिन पड़ोसिनसंहिलमिलकरद्दतोंमासुमैजड़नेमैंसमकाहेनाम
अपने देवों की तो सार न जानी, भूतों प्रेतों को मानो तमाम।

अच्छी कथाओं से सौ कोस भागो, मेल तमाशों में चारपहुजान
पाठक कहे देव पति जो तुम्हारा, उस के चरण धोवो सुजान

दादरा ४४६

बहिनो करना विचार कैसी दशा है तुम्हारी।

माता भी प्यारी भैया जी भी प्यारे,
भाभी को देती हो ताने हज़ार।
अड़ोसिन भी प्यारी पड़ोसिन भी प्यारी,
दुश्मन है सासू का सब परिवार।
लड़ती तो सास नन्दों से तुम हो,
गुस्सा उतारो हो बच्चों को मार।
छुप २ सामग्री को बेचो हो घर की,
दो आने में देती आने हो चार॥
जाने पहचानों से घूंघट करो हो,
मेलों में जाती हो मुंह को उघार।
ईश्वर की भक्ती न सन्ध्या हो करती,
पाठक हा पूजो हो ज़ाहिर मदार॥

सुहाग ४४७

बहनोरी करलो ऐसे शृंगार।
१ अंग शुचीकर २ फिर कर मंजन ३ वस्त्र अनूपम धार।
राग द्वेष को तन मन जल से विद्या बसन सँभार॥ १ ॥

केश ४ सँवारहु मेल परस्पर न्याय की माग ५ निकार।
धीरज रूपी ६ मढाउर धारहु यश हो ७ टीका लजार ॥ २॥
लया न व्यर्थ पैसो ८ तिलधारो ६ मिस्सी पर उपकार।
लाज रूपी १० कज्जल नयन में ज्ञान ११ अर्गजा चार ॥३॥
१२ आभूषण यह तन में पहनो १३ शम सन्तोष विचार।
मेंहदी पुष्प १४ कलिसों कर शोभित दान सुभग आचार ॥४॥
१५ बीडी विनय की रसना मुख में १६ गंध सुसंगति धार।
पिया तेरा देखत ही रीझ लखि सोलह शृंगार ॥ ५ ॥

भजन ४४८

मेरी बहिनो ने अपना धर्म नहिं जाना ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥

सासू का देतीं ताना, सुसरे को जुदा बताना। प्रीतम को नहिं पहिचाना, नाहक को झगड़ा ठाना ॥ मेरी० १ ॥ ढोरों पर झगड़ा डाला, गयडों का पन्थ निकाला। दुष्टों का हाल निराला, वैद्यों का कहा न माना ॥ मेरी० २ ॥ आपस में करी लड़ाई, हँसवायें लोग लुगाई। जो जरा रोग हो जाई, बुलवाया घर में स्याना ॥ मेरी० ३ ॥ पाठक कहे प्रीति बढ़ाओ, मत मूर्खों को बुलवाओ। मिल मिल कर बैठो गाओ, सुख पाओ बड़ा निदाना ॥ मेरी० ४ ॥

दादरा ४४६

पहनो पहनो री सुहागिन ज्ञान गजरा।

दया धर्म की ओढ़ो चुनरिया, शील का नेत्रों में डारो कजरा ।
लाज करो तुम पर पुरुषों से, अपने पति का देखो मुखरा ॥
सास ससुर की सेवा कीजो अपने पति से न कीजो झगरा ।
कहे अनाथ विना विद्यारी बहिनो! सहती हो तुम अति दुखरा ॥

भजन ४५०

दोहा—जिस घर में नहीं होत है, नारिन को सत्कार ।
कहत मनू निज शास्त्र में, सो घर होत उजार ॥
भारतवासी आज यह, मनु का वचन भुलाय ।
भांति भांति के करत हैं, अबलन पर अन्याय ॥

टेक–इन भारत की अबलान पर, हा ! कैसा जुलम होता है ।
जन्मतही सब शोक मनाते, पालन में नहीं प्रेम दिखाते हैं ॥
विद्या तक नहीं इन्हें पढ़ाते, व्याह करत नादान पर ।
मुख पै कलंक पोता है ॥ हा ! ० १ ॥

बूढ़े बालक और प्रमादी, बिना मेल की करते शादी ।
फिर हो जब उनकी बर्बादी, इस कुरीति अज्ञान पर ।
सारा कुटुम्ब रोता है ॥ हा ! ० २ ॥

अनमिल समन मिले न भाई, नित दोनों में होय लड़ाई ।
घर की फूट ने लंका ढाई । वेश्या टिकी मकान पर ।
पति उसके संग सोता है ॥ हा ! ० ३ ॥

आतिश में पति सड़कर मरगये, तिय के मागपर पत्थर धरगये ।

वाली उम्र में विधवा करगये, आफ़त उसकी जान पर।
खाती भारी गाता है ॥ हा ! ० ४ ॥
रो २ कैसे आयू काटे, मन मतंग अबला कैसे डाटे।
लखि यह दशा वज्र हिय फाटे, जो बीतत विधवान पर।
लखि दुश्मन भी रोता है ॥ हा ! ० ५ ॥
अबलन पर मत जुल्म गुजारो, शुभ शिक्षादे इन्हें सुधारो।
अपना धर्म बलदेव सँभारो, हरदम राखो ध्यान पर।
निज धर्म ही दुख खोता है ॥ हा ! ० ६ ॥

भजन ४५१

दया अब भी नहीं उठेगी, बहिनो सोई हो पांव पसार।
सीता को हुआ बनवास, सहा सब त्रास, न कोई पास, सोच नहीं कीना। विद्या ने जिसका सभी दुःख हर लीना ॥
भई कृष्णाकुमारी एक, धर्म की टेक, कि जिसने विवेक, पिता हित कीना। दया नहीं उमड़े जी, जिसने प्राण तज दीना ॥

चौपाई।

दुर्गावती अहिल्या बाई। दमयन्ती कुन्ती समुदाई ॥
जिनकी कीरति जगमें छाई। दिखलागई अपनी पंडिताई।

शेर।

शस्त्र विद्या में कोई थी शास्त्र में कोई चतुर।
ब्रह्म विद्या में कोई कोई रसायन की थीं घर ॥

कोई वैद्यक शिल्प में व्याकरण ज्योतिषमें कोई।
धनुरविद्या गणित में पुरुषों से बाज़ी लेगई॥

लीलावती भोज की रानी। थी गणित शास्त्र की खानी॥
पुस्तक रची है लासानी। तज मान गणित अभिमानी॥
अरी तुम होकर अज्ञान, सोवो नादान, पड़ी क्या बान!
हाय क्या तुम नहीं जानो सार, अबे कितने दुख भरोगी॥
क्या अब०॥ १॥

एक विद्योत्तमा महान, रूप गुण खान, महा विद्वान, थी जब
वह क्वांरी। नहीं शास्त्रार्थ में विद्वानों से हारी॥
विप्रों ने मिल छल किया, मूढ़ संग लिया, मौन कर दिया।
है पंडित भारी। लिखला पढ़ाय कर लाये सभा मँझारी॥

चौपाई।

कन्याने एक अंगुली उठाई। आशय था एक ईश है भाई॥
मूढ़ ने अपनी आंख बचाई। झटपट दो अंगुली दिखाई॥

शैर।

पांच कन्या ने उठाई पंच इन्द्री वश में हैं।
मूढ़ ने थप्पड़ समझ मुक्का दिखा संकेत में॥
पहली दो अंगुलियों से समझा था माया ईश को।
अब यह समझो इन्द्रियां वश में है मुट्ठी बन्द जो॥
बस इतने पर वह हारी। और ब्याह की की तैयारी।

फिर खुला जाल यह भारी। नहीं घबड़ाई वह नारी ॥
रख उसने अपने पास, ज्ञान में फांस, सो कालीदास, नाम जिसका जाने संसार, क्या उसकी रीस करोगी ॥ क्या० २ ॥

मण्डन अरु शंकर गुनी, शास्त्र के धनी, तर्क की ठनी, बाद हुआ भारी। तहां उभय भारती तिय मध्यस्थ निचारी ॥
यह थी मण्डन की नार, जाने संसार, मगा दो हार, दीन गले डारी। जो सुखे पहिले हार कि उसकी बारी ॥

चौपाई।

मंडन मिश्र से प्रथम पुकारा। पतिजी गिरगया पक्ष तुम्हारा ॥
फिर यह कहा ए शंकर स्वामी। हूँ अर्धांगी पति अनुगामी ॥

शैर।

पती जी जीते हैं मेरे मुझ को भी अब जीतला।
तबहि समझो जीत को नहीं जीत हो नहिं हार हो ॥
आप मेरे सामने इस भांति ही उद्यत रहें।
अंग आधे को न जीता आप इस मुख से कहें ॥
शंकर जी करें बहाना। पर उसने एक न माना।
विद्या का प्रश्न ले जाना। नहीं उत्तर बना निदाना ॥

ऐसी यह विदुषी भई, नाम कर गई, कीर्ति जग छाई, अरी कुछ मन में लेउ विचार, गुण उसके चित्त धरोगी ॥ क्या० ३ ॥
कुछ अपनी दशा निहार, न जानो सार, शास्त्र आगार, में क्या २ भरा है। तुमने पति देखा कहा जावो वेजा है ॥

जो चाहती हो इसको पहना। रहो पती की दासि तुम॥
नित आज्ञा उसकी पालो॥ इक०॥

करो नित्य केवल पति पूजा। नारी के लिये देव न दूजा।
अन्य देव सेवा है बेजा। करो यहां विश्वास तुम॥
या रामायण पढ़ डालो॥ इक०॥

नारि धर्म नहीं दूसर देवा। नारि धर्म केवल पति सेवा।
जो चख लोगी तुम यह मेवा। होगी न कभी निराश तुम॥
बस मन चाहा फल पाओ॥ इक०॥

राखो ऐसी शुद्ध तुम काया। अन्य पुरुष का पड़े न साया।
जो तुम ने यह व्रत निभाया। बनोगी देवी खास तुम॥
जब चाहो तब अजमालो॥ इक०॥

पीर फ़क़ीर पुजारी पण्डे। स्याने और भगत मुस्टण्डे।
जिन्हों ने गाड़े ठगी के झण्डे। जाओ न उनके पास तुम॥
मत उनसे कुछ पूछा लो॥ इक०॥

भूत परेत चुड़ैल मसानी। काली और शीतला रानी।
इनको पूजना है नादानी। नाहक़ भरो न त्रास तुम॥
ईश्वर से ध्यान लगालो॥ इक०॥

सीता और सावित्री नारी। द्रौपदी तारा और गान्धारी।
सब थीं पति की आज्ञाकारी। पढ़ देखो इतिहास तुम॥
उन जैसा चलन बनालो॥ इक०॥

दया धर्म का राखो पर्दा। सत्य से शुद्ध करो मन छिद्रा।

बैठे न जिस पर पाप का गर्दा । पहनो ऐसा लिबास तुम ॥
और ब्रह्मज्ञान में न्हालो ॥ इक० ॥

कभी न घरमें करो लड़ाई । सास ससुर की करो बड़ाई
टहल करो उनकी चितलाई । करो न उन्हें उदास तुम ॥
खाओ जब उन्हें खिलालो ॥ इक० ॥

गन्दे राग कभी मत गाओ । ब्याहों में कोयल न बुलाओ ।
स्वांग तमाशे में मत जाओ । कभी न देखो रास तुम ॥
इन सब पर मिट्टी डालो ॥ इक० ॥

सालिगराम कहैं क्या कीन्हा । तुमने अपना धर्म न चीन्हा ।
ठगियों ने तुम्हें धोखा दीना । सत् की करो तलाश तुम ॥
सत् धर्म से प्रीति बढ़ालो ॥ इक० ॥

भजन ४५७

जो चाहती हो सुख मेरी बहना, तौ तुम यह गुण धार लो ।
पतिव्रत धर्म का पालन करके, शुभ जीवन का सार लो ॥जो०॥
घर में कलह लड़ाई झगड़े, रूठ मनावा त्यागकर ।
चतुराई और हुशियारी से, घरके काम सँवार लो ॥जो०॥
पढ़ो आप सन्तान पढ़ाओ मूरखता को छोड़ दो ।
बिना पढ़े कुछ अक्ल न आवे, मन में खूब विचारलो ।जो०॥
प्रीति प्रेम कुटुम वालों से तुम को रखना चाहिये ।
सास जिठानी नन्द देवरानी, के तुम वचन सहारलो ॥जो०॥

क़ब्र ताज़िये पीर सीतला, को मत पूजो भूलकर।
अपने पति और परमेश्वर को, पूज के जन्म सुधारलो ॥जो०॥
पतिव्रता नारी की जग में, होवे यश और कीर्ती।
सीता सावित्री दमयन्ती, की तुम ओर निहारलो ॥जो०॥
अन्य पुरुष का स्वप्ने में भी, साया तक मत देखना।
पतिव्रत धर्म का उत्तम गहना, तन अपने में डारलो ॥जो०॥
पति आज्ञा को भंग न करना, जब तक घट में प्रान हैं।
सालिगराम कहे मेरी बहनो, सब तुम यह गुण धारलो ॥जो०॥

दादरा ४५८

देखो अबला धरम गई भूल! हा०।

उत्तम विचारों को उर में न लावें, सुख के करम गई भूल-हा।
पतियोंसे लड़ती न करतीं सुकरनी, कुल की शरम गई भूल-हा
स्यानों दिवानों पै विश्वास राखें, सच्चा मरम गई भूल-हा।
माने नहीं कहना हित की कही को, हरिका भजन गई भूल-हा।

भजन ४५९

सुनोरी! बहना बहना बहना, धरो धीरज न हमें रुलाओ।

यह सुन करके दुखड़ा तुम्हारा, कांपै है यह शरीर सारा॥
दुखी हुआ है हृदय हमारा, भरे नैना नैना नैना॥ सुनो०॥
हमने जब से व्रत तोड़ा, पुत्रियों का पढ़ाना छोड़ा।
हमने अपने हाथों फोड़ा, अपना लहना लहना लहना॥सुनो०॥

हम पुत्री पाठशाला बनायेंगे, उसमें पुत्रियों को
जब थोड़ी सी फुर्सत पायेंगे फुर्सत देना देना।
यह तेजसिंह ने गाया, तुमने अति दुःख पाया।
बस वही ज़माना आया, सुखसे रहना रहना।

भजन ४६०

दो०—चार तरह की पतिव्रता, जग में पड़ें लखाय।
उत्तम, मध्यम, नीच, लघु, सकल कहूँ समझाय॥
जो नारी इस भेद को, सुन ले कान लगाय।
इस में संशय है नहीं, भवसागर तर जाय॥

टेक—उसे क्यों त्यागोरी, जो था पतिव्रत धर्म तुम्हारा।

थ ड़े सुख के देने वाले, मात पिता और भाई।
बेशुमार सुख पतिही देता, दोउ लोकन के ताईं॥ उसे०॥
आपतकाल परखिये चारी, जिनका करूँ बयान।
धीरज, धर्म, मित्र और नारी, कर जग में पहचान॥ उसे०॥
वृद्ध रोगी मूरख निर्धन, अन्ध दीन और बहरा।
करे घृणा तिया एसे पति से, भोगे नरक दुख गहरा॥ उसे०॥
मन और कर्म से रक्खे, पति चरणों में प्रेम।
स्त्री का एकही जग में, यही धर्म व्रत नेम॥ उसे०॥
पतिव्रता हैं चार जगत में, सुनलो कान लगाय।
उत्तम मध्यम और नीच लघु, सकल कहूँ समझाय॥ उसे०॥

उत्तम नारी है वह जग में, सुनियो कान लगाये ।
नहीं पुरुष दूजा कोई जग में, स्वप्ने पड़े लखाये ॥ उसे० ॥

मध्यम नारी की तुम जानो, जग में यह पहचान ।
भाई बाप और सुत के सम परपति को रहीं हैं मान ॥ उसे० ॥

जो करे पराये पतिकी इच्छा, भोग करन की ताईं ।
धर्म विचार दूर हट बैठे, नीच नार बतलाई ॥ उसे० ॥

समय न मिले रहे डर करके, भोग बिना पर पति से ।
महा नीच वह नारि बताई, कह रामायन इस गत से ॥ उसे० ॥

जो अपने पति से छल कर, रति करे पराये पति से ।
वह स्त्री सौ कल्प नरक में, वास करे संगत से ॥ उसे० ॥

क्षण भर के जो सुख के लिये, सौ जन्म के दुख को न सूझी ।
उस से खोटी और जगत में, कौन नार है दूजी ॥ उसे० ॥

जो छल छोड़ करे पति सेवा, उत्तम गति को पावे ,
विरोधिनी स्त्री जहां जन्मे, जवाँ रांड होजावे ॥ उसे० ॥

पति की सेवा जो करती है, तन मन धन से नारी ।
रघुनन्दन कहे वही स्वर्ग की, बनती हैं अधिकारी ॥ उसे० ॥

भजन ४६१

कैसी पतिव्रता वह नारी हैं, द्रौपदी दमयन्ती सीता ।

जब रामचन्द्र ने आज्ञा बन की पाई ।

चले रामचन्द्र और लक्ष्मण दोनों भाई ॥

जब सीता ने सुनी सग तुरत उठ धाई।
पर रामचन्द्र ने बहुतक करी मनाई॥

डर बहुतेरा दिखलाया। पर संग नहीं बिसराया
तज सुख सम्पति और माया। संग चौदह वर्ष निभाया॥

वह नंगे पैरों बन फिरी, रावण न हरी, पर धर्म से ना ि
देखो कैसे दुःख की वारि है, यह धर्म पतिव्रता सीता॥ द्रौ०

जब कौरवों से पांडव जुये में हारे।
धन धर्ती और वस्त्र हार गये सार॥
उस बिपति काल में संग द्रौपदी पग धारे।
परदेश में जा बैराट में किये गुजारे॥

वहां कीचक योधा भारा। द्रौपद से पाप विचारा॥
धोखा दे काम निकारा। द्रौपद ने धर्म नहीं हारा॥
कहा भीमसेन से जाय, हाल समझाय, दुष्ट को जाय।
दिया तुरत भीम ने मारही, सब कर लीना मनचीता॥ द्रौ०॥

जब नल पुष्कर से सर्व जुये में हारा।
फरवाय मनादी दे दिया देश निकारा॥
जब नल दमयन्ती छोड़ चले घर सारा।
बन २ में भूखे फिरें दुःख सहा भारा॥

चली भूखी मनिलकी मारी। वन में जब सोगई नारी॥
नल ने तरस देख के भारी। वन सोवत छोड़ी प्यारी॥
नल ने हृदय किया कठोर, मोह को तोड़, चला मुख मोड़।
कुछ किया न सोच विचारही, रानी का किया फजीता॥ द्रौ०॥

जब सोवत से रानी उठी बहुत घबराई।
वहां नल को देखा पड़ा न कहीं दिखाई॥
फिर डाढ़ मार कर रो रो कर चिल्लाई।
रोना सुन एक व्याध ने घेरी आई॥

ईश्वर से ध्यान लगाया। उस व्याध से धर्म बचाया॥
घर पिता का पता लगाया। जा स्वयम्बर जब ठहराया॥

वहां नलको लिया ढुंढवाय, दुःख बहुपाय, मिले दोउ आय।
रघुनन्दन कहै पुकार ही, नहिं तजा धर्म दुख बीता॥ द्रौ०॥

दादरा ४६२

पति पूजो तो मुक्ति तुम्हारी है।

जो पति सेवा करे प्रेम से। सब दिन सुखी वही नारी है॥ प०॥ पिय को छोड़ न पूजो पत्थरे। सींचो न भर भर झारी है॥ प०॥ अपने पति को न्हिलाय धुलाय कर। भोजन में मत कर अवारी है॥ पति०॥ रक्खो शुद्ध सदा सब चीज़ें। मैले से हो बीमारी है॥ पति०॥ तेजसिंह पति आज्ञा जो माने। पति को सदा वही प्यारी है॥ पति०॥

दादरा ४६३

विचार करोरी, प्यारी बहनों यह मन में।

वह देश भक्ति जो पहले थी तुममें। कहां गई अब इसका इज़हार करोरी॥ प्यारी०॥ जो तुमने जाये शूर और वीर

कहाये। अब इनको, किन में शुमार करोरी
तुम-इस देश की करतीं भलाई। अब क्यों तुम
री ॥ प्यारी० ॥ ये दुख का कारण अविद्या
चाहो तो विद्या प्रचार करारी ॥ प्यारी० ॥
और पुत्री-सबको। विद्या पढ़ाने का प्यार करोरी

भजन ४६४

फट गई है बुद्धि हमारी, शुद्र पग उलटे
कोई बने देवी के पंडे। माल हराम खा हो
अबलाओं के धागे गंडे। महन्त कहलावें,
नर और नारी ॥ फट० ॥
किसी ने बांधी सरपे सेली। बना लिये सब चेला
आंख दिखावें काली पीली। सब दहशत खावें, डर
मात का भारी ॥ फट० ॥
करामात का झूठा जाल है। यह सब इन दुष्टों की चाल है।
और धोखे से खा पुष्ट माल है। मोटे हो जावें, फिर करते
हैं बदकारी ॥ फट० ॥
जो हम तुम सब विद्या पढ़ते। तो क्यों इन दुष्टों से डरते।
क्यों ये माल हमारा हरते। तेजसिंह गावें, है आगे खुशी
तुम्हारी ॥ फट० ॥

भजन ४६५

बहै नयनों से नीर सुनकर ये दुखड़ा तुम्हारा।